वन्श नाश मोहबे का कर दिया आगे बेल चलेगी नाय ॥
चीख मारकर आल्हा गिर गया उसको खबर रही कुछनाय॥
यह गत देखी जब ऊदलने वह भी गिरा जमीं पर जाय ॥
दे दे खिड़की सारे रोवें लेकर नाम इन्दलसी राय ॥
दाग बुरा है अरे बेटेका जीते जन्य मिटेगा नाय ॥
जब वहां होश हुआ आल्हा कोउन तीनों से कहा सुनाय ॥
सच्ची हाल मुझे बतलादो क्या गत हुई इन्दलसी राय ॥
इतनी सुनके ऊदल बोला दादा सुनलो कान लगाय ॥
मैंने ही मारा है इन्दल को और गंगा में दिया बहाय ॥
सच्ची बात कही यह मैंने इसमें झूठ जरा है नाय ॥
जब यह बात सुनी आल्हा ने फिर ऊदल से कहा सुनाय ॥
ऐसी बातों को मत बोले तुमको जेबा देता नाय ॥
थोड़ी देर में सोच समझ कर आल्हा ने कहा सुनाय ॥
भेद बतादे मुझे इन्दल का अब तक कुछ बिगड़ाहैं नाय ॥
फिर वही जवाब दिया ऊदल ने इन्दल मैंने डाला मार ॥
इसमें भइया झूठ नहीं है मैंने सच सच कहा पुकार ॥
इतनी सुनकर नर आल्हा ने फिर सइयद से कहा सुनाय ॥
तुम भी गये थे संग उदलके और इन्दल को संग लिवाय ॥
क्या कुछ गुजरा गंगा जी पर हमको भेद खुला कुछनाय ॥
क्या हुई लड़ाई किसी राजा से इन्दल खेत बुहारा जाय ॥
जो वह मर गया रन खेतों में मुझको कोई परेखा नाय ॥
जो भागा हो रन पर चढ़के उसका मुंह देखुंगा नाय ॥
ना कुछ सनद हुई मामा की ना कुछ ऊदल का इतबार ॥
यह दुख देकर मेरे इन्दल को किसने दिया जान से मार ॥

बलख बुखारा



मटरूलाल अत्तार

बाजार शाहग्रासा, शहर मेरठ

मूल्य १५-००

कारी-अग्रवाल बुकडिपो ... ०]’० खारी बावली दि... ल्ली-

फौज छिपाओ किसी जगह पर या खोलेमें देओंछिपाय ॥
बावन राजा छप्पन सूबे बलख बुखारे पहुँचे आय ॥
यह दल टूटेगा आल्हा का जहां पर जगह मिलेगी नाय ॥
इतनी जगह यहां तुम छोड़ो जहां पर पड़ें बनाफल राय॥
यह मन मान गई लाखन के और हिरदे में गई समाय ॥
फौजें छिपाई सब खोले में किसी को पड़ें दिखाई नाय ॥
बड़े बड़े डेरों को गढ़वाया और तम्बू को दिया गढ़वाय ॥
कलशे लग रहे हैं सोने के रेशम डोरी दी खिंचवाय ॥
किला बांध दिया है तोपों का और चोंबन्दी ली करवाय॥
जीन उतार धरीं घोड़ों की हाथी बन्धे थान से जाय ॥
कमरें खुल गईं हैं ज्वानों की सबने खोल धरे हथियार ॥
पहरेदार फिरें पहरों पर नंगी सूंत रहे तलवार ॥
बन्दोवस्त लशकर का करके फारिग हुआ कनौजी राय ॥
एक तरफ डेरा है लाखन का दूसरी तरफ उदयचन्दराय ॥
अपने अपने अब डेरों पर दोनों नाच रहे करवाय ॥
यहां की बातों को यहां छोड़ाअब मोहबेका देऊं सुनाय ॥

आल्हा का चिट्ठी लिखकर ताला सइयद के पास भेजना

बोली मछला जब आल्हा से मैं बालम का लेऊं बलाय ॥
जोकुछ कहगया सिरसे वाला तुमने ख्याल कियाकुछनाय॥
पात न मानी जो मलखेकी तुमको मिले भलाई नाय ॥
बिना सहारे नर मलखे के कोई तेरे संग चलेगा नाय ॥

१-६-१९८८ से लागू

मटरूलाल अत्तार की असली पुस्तकों रिटेल नया सूची-प

१—राजा परमाल का ब्याह यानि मोहबे का असली हाल	४—
२—जस्सराज बच्छराज का यानि ऊदल की पैदाइश	२—
३—आल्हा की मगाई यानि हिंगलाज की लड़ाई	७—
४—निरसे की पहली लड़ाई यानि पंच फैसला	७—
५—माडौ की लड़ाई यानि बाप का बदला लेना	१०—
६—आल्हा का ब्याह यानि नैनागढ की लड़ाई	१४—५
७—मलखान का ब्याह यानि कांसो की लडाई	१३—
८—मनोकामना तीरथ की लड़ाई यानि मलखान की बहादुरी	४—
९—ब्रह्मा की मगाई यानि गंगा घाट की लड़ाई	५—८
१०—ऊदल का ब्याह यानि मोहरम गढ की लड़ाई	१३—०
११—चांद का ब्याह यानि बौनागढ की लडाई	९—६
१२—ब्रह्मा का ब्याह यानि दिल्ली की लडाई	९—६
१३—इन्दौरी की लड़ाई यानि सुरजा हरन	१०—०
१४—पथरीगढ़ की लडाई यानि मछला हरन	१२—०
१५—बलख बुखारे की लड़ाई यानि इन्दल हरण	१५—०
१६—मस्मल की लड़ाई यानि फुलवा हरन	५—०
१७—चन्द्रावल की चौथी यानि भौरीगढ़ की लडाई	५—०
१८—बौना चोर का ब्याह यानि रतनगढ की लड़ाई	८—
१९—जादूगढ़ की लड़ाई यानि सिवानन्द का ब्याह	१३—
२०—सिंगलदीप की लडाई यानि इन्दल का तीसरा ब्याह	५—
२१—भयंकर राय का ब्याह यानि समन्दर पार की लडाई	८—
२२—जागन का ब्याह यानि उडन बिहार की लडाई	७—
२३—शंकर गढ की लडाई यानि नौले का ब्याह	७—
२४—आल्हा निकासी यानि बनाफलों का दिसोटा	६—
२५—गांजर की लड़ाई	५—
२६—लाखन का गौना यानि बूंदी की लडाई	६—
२७—सिरसे की आखिरी लडाई यानि मलखान संग्राम	७—
२८—आल्हा मनौआ यानि नदी बेतवा की लडाई	५—
२९—ढेवा का ब्याह यानि इन्दर गढ की लडाई	६—
३०—गुजरियों की लडाई यानि दिल्ली की लड़ाई	५—
३१—बहोरन लाल का ब्याह यानि दिल्ली की लडाई	८—
३२—आल्हा रामायण आठो काण्ड	१२—
३३—ब्रह्मज्ञान शंकरदास कृत (मूल्य प्रति सैट २७४ रुपये)	१३—

उपरोक्त पुस्तकों पर डाक खर्च अलग होगा।

प्रकाशक-अग्रवाल बुकडिपो [रजि॰] ४९०, खारी बावली दि॰

नेग इन्हों का मैं नहीं जानू तुम ताला को लेओ बुलाय ॥
अब भेजा है खूबी नाई को वो कम्पू में पहुंचा जाय ॥
करी सलामी जब खूबी ने और सइयद में कहा सुनाय ॥
घोड़ी चढ़के इन्दल आया दरवाजे पर पहुँचा जाय ॥
इन्द्रजीत ने वहां पर आकर अब घोड़ी को रोका जाय ॥
बाग पकड़ रक्खी घोड़ी की और वह सबसे रहा बताय ॥
नेग हमारा हमको दे दो जब तुम बढ़ो अगाड़ी जाय ॥
अपने नेग को वो मांगे हैं अब तुम चलकर दो निमटाय ॥
इतनी सुनकर ताला बोला और आल्हा से कहा सुनाय ॥
अब तुम चले जाओ जल्दी से दरवाजे पर पहुँचो जाय ॥
ग्यारह मोती सोलह हीरे इन्द्रजीत को दो दिलवाय ॥
इतनी सुनकर आल्हा चल दिया दरवाजे पर पहुँचा जाय ॥
ग्यारह मोती सोलह हीरे इन्द्रजी को दिये मंगाय ॥
बाग छोड़दी इन्द्रजीत ने घोड़ी बढ़ी अगाड़ी जाय ॥
बोली मछला जब महलों में रोकर कहे मछलदे नार ॥
आज के दिन जो ऊदल होता सारे लेता काम संवार ॥
फिर बुलवाकर नर मलखेको रानी मछलाने कहा सुनाय ॥
जैसे ले जाओ मेरे इन्दल को वैसेही फेर मिलइयो लाय ॥
जब यह बात सुनी मछलाकी मलखे काल बरन हो जाय ॥
लौटके जवाब दिया मलखे ने और मछलाने कहा सुनाय ॥
धोके न रहियो तू ऊदल के तुझे आगे से देऊं बताय ॥
ऐसी बातों को मत बोल मेरे जामे में नहीं समाय ॥
ना कुछ नौकर हूं आल्हा का ना कुछ रइयत रहूं तुम्हार ॥
एकदिन सौंपा था ऊदल को जब गो न्हाने गया हरिद्वार ॥

...ा अग्रवाल बुकडिपो (रजि०) ४६० खारी ... । छापना ९

बिना दस्तखतों की मोहर के पुस्तक जाली समझी जायेगी, कृपया देखकर खरीदें।

इन्दल हरण



मटरूलाल अत्तार

बाजार शाहघासा, शहर मेरठ।

कॉपी राइट रजिस्ट्रेशन नं०-ए-१४०।६४७५

नं० १५

...ारी प्रकाशक: अग्रवाल बुकडिपो (रजि०) ४६० खारीबावली दिल्ली-

सात पान का बीड़ा लेकर;चन्दन चौक में दिया रखवाय ॥
बोला राजा सब ज्वानों से क्षत्री सुनलो कान लगाय ॥
जो कोई फतह करे दुशमन को कंचन कड़े देऊं पहनाय ॥
इतनी सुनकर केहरसिंह ने पन्जे ली तलवार उठाय ॥
झपट के उट्ठा वह कुरसी से और बीड़े पर पहुँचा जाय ॥
मैं देखूंगा उन ज्वानों को जिनकी जात बनाफल राय ॥
यह गत कर दूंगा खेतों में सबका डालूं खोज मिटाय ॥
बोला गनपत जब ललकारा केहरसिंह से कहा सुनाय ॥
जिनके नौकर खड़े सामने अफसर कौन पड़ी परवाय ॥
अब तुम बैठ जाओ कुरसीपर गनपत वहांपर पहुँचे जाय ॥
उठा के बीड़े को गनपत ने और उसको यह गया चबाय ॥
करी तइयारी गनपतसिंह ने रन का बाना लिया सजाय ॥

पहली लड़ाई गनपतसिंह की मैदान जंग में जाना

फिर ललकारा पीलवान को हाथी जल्द करो तइयार ॥
मुण्डे हौदे कोधर वाया चारों तरफ चले तलवार ॥
हुक्म सुनाया गनपतसिंह ने सारे अफसर लिए बुलाय ॥
जितना लशकर गनपतसिंह का सबको जल्दी लेओसजाय ॥
करी तइयारी गनतसिंह ने अपने बांध लिए हथियार ॥
लगी नशीनी जब हाथी पर वह हौदे में हुआ सवार ॥
रन की मब्बर जब बजने लगी सब रनशूर हुए तइयार ॥
पैदल पलटन और रिसाले सबने बांध लिये हथियार ॥

ॐ

बलख बुखारे की लड़ाई

यानी

इन्दल हरण

दोहा—सदा भवानी दाहिनी गौरी पुत्र गणेश ।
पांच देव रक्षा करें ब्रह्मा विष्णु महेश ॥

जाग जाग जगदम्बा तू सोते से जग जाय ॥
मुझ से निपट अधीन की तू प्रतिज्ञा रख आय ॥
उत्तर सुमरू बद्रीनाथ को दक्खन रामेश्वर महाराज ॥
पच्छिम सुमरू जगदम्बा को पूरब जगन्नाथ महाराज ॥
सुमरू भवानी और अम्बिका कलकत्ते की कालका माय ॥
चन्डी सुमरू काशमीर की दहनी भुजा बिराजो आय ॥
कोट कलंजर कोट कांगड़ा बावनगढ़ में बना स्थान ॥
भुमियां मनाऊं और महामाई नितउठ धरूं तुम्हारा ध्यान
रामचन्द्र अब कृपा कीजो दूसरे अंजनी के हनुमान ॥
अब सुध ले धौलागढ़ वाली पूजा करूं चढ़ाऊं पान ॥
सुमरू सरस्वती मेरठ वाली निरङ्कार का ध्यान लगाय ॥
भुमियां सुमरू मैं खेड़े की हरदम करती रहे सहाय ॥
पहले मनाऊं धरनीधर को गुरू अपने का ध्यान लगाय ॥
जिसने जोड़ा पार्वती का शिव शंकर से दिया मिलाय ॥
अद्भुत माया है भोले की ओढे शेर बबर की खाल ॥
बिच्छू डंक की जपे सुमरनी गरदन शेषनाग लिया डाल ॥

जब ललकारा पीलवान को हाथी जल्द करो तइयार ॥
मुन्डा हौदा धरो हाथी पर चारों तरफ चले तलवार ॥
यह मन मानी पीलवान के और हिरदे में गई समाय ॥
घड़ी ना गुजरी ना पल बीता इकदन्ताको दिया सजाय ॥

खेत की पहली लड़ाई इन्द्रजीत का मुकाबले को जाना

सब सरदारों का बुलवाकर इन्द्रजीत ने कहा सुनाय ॥
जितना लशकर इन्द्रजीत का सब दल कमरबन्द होजाय ॥
इतनी सुनकर इन्द्रजीत से सबके दिल में गई समाय ॥
अपने अपने सब लशकर को सबने जल्दी लिया सजाय ॥
हाथी घोड़े तोप रहकले और सब रफल हुये तइयार ॥
पैदल पलटन और रिसाले सबने बांध लिये हथियार ॥
इकदन्ता हाथी सजवाकर इन्द्रजीत जब हुआ सवार ॥
मुन्डे हौदों को धरवाया चारों तरफ चले तलवार ॥
बजा नकारा जब चलने का सारे हुए इकट्ठे आय ॥
गुम्मट बन्ध गया रजपूतों का कैसे घटा टोप हो जाय ॥
हुक्म सुनाया इन्द्रजीत ने वहां से कूंच दिया करवाय ॥
कोई घड़ी के अब अरसे में दाखिल हुआ खेत में जाय ॥
बजा नकारा इन्द्रजीत का डन्का पड़ा बम्ब पर जाय ॥
अली गोल में धौंसा बाजा गनपत चौंक चौंक रह जाय ॥
झन्डे गाड़ दिये खेतों में जिनकी ध्वजा रही फहराय ॥
गनपत वाले अब मौंडे पर अपना मोरचा दिया लगाय ॥

बनी मंढइया महादेव की जो पर्वत कैलाश कहाय ॥
बैल नादिये की असवारी गङ्गा रही लटों में छाय ॥
आंक धतूरे के बन लग रहे जहां पर भंवर लपेटा खाय ॥
गले में माला है रुण्डों की माथे रहा चन्द्रमा छाय ॥
सृष्टि रचने को ब्रह्मा हैं भोलानाथ करें संहार ॥
करी तपस्या बानासुर ने उसको शिव ने किया सरदार ॥
शीश पानसौ बानासुर के और भुजा थीं एक हजार ॥
सारी पृथ्वी बस में करके गरभी गया गरभ में छाय ॥
कर अभिमान लड़ा शिवजी से उसका मेट दिया अरमान ॥
सोने की लंका थी शिवजीकी वह रावण को दे दी दान ॥
कुनबा बढ़गया जब रावण का उसने बहुत किया अभिमान
जब वह हर लाया सीता को उस पर चढ़े श्री भगवान ॥
दशों शीश काटे रावण के कुनबे का दिया खोज मिटाय ॥
यह गत करदी गढ़ लंका की मानो बसी भूमि पर नाय ॥
जागे शिवजी जब पर्वत पर और नादिया हुँचा आय ॥
गांझे भंग के रङ्ग चढ़ाये आंक धतूरा लिया चबाय ॥
फैंट लगाई है सांपों की इधर उधर को गई निघाह ॥
कूद नादिया पर चढ़ बैठे हस्तिनापुर की पकड़ी राह ॥
भीमसेन सहदेव और अर्जुन नकुला और युधिष्ठिर राय ॥
पांचों पण्डे जहां पर बैठे शिवजी वहां पर पहुँचे जाय ॥
बड़े लड़इया यह पांचों थे जिनको जग जाने संसार ॥
महाभारत में कथा जिन्हों की चारों खूंट करें तलवार ॥
बैल नादिये का घन्टा बजा जब पन्डों ने सुनी आवाज ॥
यह गत हो गई उन पांचों की जैसे गिरे कुई पर बाज ॥

खोली आंखें जब लछमन ने और धरतीसे खड़ा होजाय ॥
कौली भरली रामचन्द ने और छाती से लिया लगाय ॥
बजा नकारा राजा इन्द्र का देवता सारे खुश हो जाय ॥
जै जै कार मचा लशकर में शोभा कुछ ना बरनी जाय ॥
तुरई और नरसिंहा बजरहा औरवहां आरही अजब बहार ॥
घन्टा बज रहा घड़ियालों में और शंखों को नहीं शुम्मार ॥
बड़ी खुशी लशकर में हो रही कुछ तारीफ करीना जाय ॥
हुई तइयारी फिर लंकाकी औरसब लशकर लिया सजाय ॥
जैसे रामऔर लछमन मिलगये ऐसा मिला उदयचन्दराय ॥
कौली भरली यहां आल्हा ने और छातीसे लिया लगाय ॥
मेरे जाने मौहब बस गया मुझको मिला उदयचन्द राय ॥
भग चलो २ अब मोहबे को अपनी ले चलो जान बचाय ॥
भारी लड़ाई हरनन्दन की यहां पर जान बचेगी नाय ॥
जोगी झिलमिला ने खेतों में सबको पत्थर दिया बनाय ॥
जब यह बात सुनी ऊदन ने नंगी ली तलवार उठाय ॥
खा खा टुकड़े गढ़ मोहबे के खोटा हुआ बनाफल राय ॥
क्या मुंहलेकर जाओ मोहबेको क्या रहतबसे कहोसुनाय ॥
पड़े हंसाई सब मुल्कों में बिगड़ी बात बने फिर नाय ॥
राजा हरनन्दन की दहशतसे बिगड़ी बात बने फिर नाय ॥
पूत बिरानों के मरवाके और सब गढ़ मोहबे को जाय ॥
क्याकहीं मरगया सिरसेवाला क्या मरगया उदयचन्दराय ॥
खोद के बङ्गला हरनन्दन का पक्का ताल देऊं बनवाय ॥
आग लगादूं बलख बुखारे और दिन की दूं रात कराय ॥
क्या है मसाला उस पाजी पर खोटे दार उदयचन्द राय ॥

बोला अर्जुन जब ललकारा भइया सुनो नकुल सरदार ॥
चौकस हो जाओ अब जल्दी से नङ्गी सूंत लेओ तलवार ॥
कौन अपराधी है फाटक पर घन्टा यहां बजाया आय ॥
मुश्क बांधकर उस पाजी को मेरी नजर गुजारो लाय ॥
इतनी बात सुनी पन्डा ने उसके दिल में गई समाय ॥
झपट के उट्ठा वह बङ्गले से और फाटक पर पहुँचा जाय ॥
सूरत देखी जब शिवजी की दिल में गया सनाका खाय ॥
हाथ जोड़कर दी परकम्मा और चरनों में लोटा जाय ॥
बोला पन्डा महादेव से मैं भोला का लेऊं बलाय ॥
तुम्हें ना जाना शिवशंकर हो मेरी तकसीर माफ होजाय ॥
इतनी सुनकर शिवजी कोपे गरज घोर कर कहा पुकार ॥
अब तुम जाओ मृत्युलोक में पन्डा सुनो नकुल सरदार ॥
भीमसेन सहदेव और अर्जुन नकुला और युधिष्ठिर राय ॥
पांचों चल दिए हस्तिनापुर से कोप हिमालय पहुँचे जाय ॥
उनको श्राप दिया शिवजीने तुम कलयुग में लो औतार ॥
जब तुम जन्म लेओ कलयुग में तुमको जग जाने संसार ॥
कैरों के कुल में पिरथी होगया दुर्योधन ने लिया औतार ॥
पन्डों के कुल में हुये बनाफल जिनकी जग जाहिर तलवार
उसी श्राप से गढ़ बक्सर में पैदा हुए बनाफल राय ॥
उत्तर दक्खिन पूरब पच्छिम चकियाचाल दई मचवाय ॥
मौजे बक्सर की बस्ती में पन्डा आन लिया औतार ॥
उन्हीं के कुल में आल्हा हो गया धर्म युधिष्ठिर का औतार
उन्हीं के कुल में हुआ उदयचन्द जोधा भीमसेन औतार ॥
उन्हीं के कुल में ब्रह्मा हो गया पन्डा अर्जुन का औतार ॥

अब पत रक्खे मेरी गंगा जी वहां पर लगा जोगीके बाद ॥
ऐसी पत रक्खो अमरा की जैसी पत रक्खी प्रहलाद ॥
जिस पर पंजा नारायण का वह नहीं मरे किसी से नाय ॥
जिस पर कोप गये तिरलोकी वह नर बचे किसी से नाय ॥
भर भर चुटंजी भबूती की वह लशकर में रहा उड़ाय ॥
जागी मुरछा सब ज्वानों की सबका जादू दिया हटाय ॥
जैसे थे हाथी जैसे ये घोड़े सबको वसा दिया बनाय ॥
बड़ी खुशी लशकर में हो रही छत्री हंस हंस रहे बताय ॥
कील सिवाना दिया राजा का अपनी चौकी दई बिठाय ॥
बीर छोड़ दिये हैं बुरजों पर उनका पहरा दिया हटाय ॥
गली गली में फिरे चुड़ैलें और तिरियों से लिपठे जाय ॥
यही मसायन अब घर में बालक पकड़ कलेजा खाय ॥
चौदह सौ बीर गुरू अमरा के आगे बीर मौहम्मदा जाय ॥
जितनी विद्याजोगी झिलमिलाकी सबकोकैदलिया करवाय ॥
दिन धौले लूटो दुशमन को जब अमरा ने कहा सुनाय ॥
तेग लड़ाई को तुम जानो विद्या मैंने छोड़ी नाय ॥
जब यह बात सुनी अमराकी सब खुश हुये बनाफल राय ॥
फटी पपीड़ी जब दिन निकला वक्त सुबह का पहुँचाआय ॥
मरद संवारे सिर की पगड़ी तिरिया चीर संवारे जाय ॥
आल्हा संवारे है फौज को छत्री उठे फरेरा खाय ॥
बजा नकारा जब लशकर में डंका पड़ा बम्ब पर जाय ॥
एक तरफ लशकर गढ़ मौहबे का तरफ पड़ा कनौजी राय ॥
सौ सौ तोपों की बाढ़ों में एक दम आग दई लगवाय ॥
दगी मलागी जब तोपों की धुवां गया सुरग में छाय ॥

उन्हीं के कुल में इन्दल होगया बबरा वाहन का औतार ॥
जोधा कर्या का धांदू होगया जिसके बल का नहीं शुमार ॥
उनका किला बना हस्तिनापुर इनका सिरसा हुआ तैयार ॥
उनके कांसी थी अर्जुन की इनके ब्रह्मा के हथियार ॥
उनके गदा भीम की नामी इनके सांग बीर मलखान ॥
उनका दुशमन दुर्योधन था इनका हुआ धनी चौहान ॥
रावण बढ़ गया जब लंका में मोहबे बढ़ा चन्देला राय ॥
उसके लंका थी सोने की इसके थी पारस की खान ॥
उनके नामी कुम्भकरण था जिसके बल का नहीं शुमार ॥
उनने नामी नर ऊदल था जो हाथी को डाले मार ॥
उसके जोधा अहिरावण था इनके शूरवीर मलखान ॥
उनका बेटा मेघनाद था इनके था इन्दल बलवान ॥
उसके हो गया विभीषण भइया इनके था जागन सरदार ॥
उसके जादू शिव शंकर था इसके अमर गुरू की मार ॥
वह हर लाया सिया जानकी इसने हरी बेलदे नार ॥
इनका बाद लगा रघुवर से इसका लगा पिरथी से आन ॥
वह लड़ मर गया रामचन्द्र से यह लड़ मरे धनी चौहान ॥

इन्दल का आल्हा से हठ करके हरिद्वार को ऊदल के साथ जाना

गुरु मनावें गुरु को गावें गुरु अपने का धर कर ध्यान ॥
लिखूं हकीकत हरिद्वार की इन्दल करने गया स्नान ॥

जब तू देखे उन ज्वानों को जिनकी जात बनाफल राय ॥
यह गत होजाय उन्हें देखकर मुंहसे बात कही ना जाय ॥
जोधा तुम्हारा जो गनपत था जिसकी कोई बराबर नाय
इकले ऊदल ने खेतों में एक धड़ के दो दिये बनाय ॥
चुटिया पकड़ी तेरी होनी ने सर पर मौत पुकारी आय ॥
कोई घड़ी के अब अरसे में तेरा खटका देऊं मिटाय ॥
इतनी सुनकर भैरों जल गया गुस्सा भरा बदन में जाय ॥
एक पांव कलशे पर टेका एक हौदे में धरा जमाय ॥
लई सरोही मानाशाही नङ्गी ली तलवार उठाय ॥
करा झड़ाका है मकरन्द पर दोनों हाथ से दई झुकाय ॥
ढाल पर रोक लई मकरन्दने दुशमनका दिया वार बचाय॥
खाया तमाका फिर भैरों ने और खांडे को लिया उठाय ॥
दांत बतीसोंको भर दाबा और मकरन्द पर दिया झुकाय ॥
ओट पकड़ गया वह कलशेकी मकरन्द हटा पिछाड़ी जाय
भारी फिकर हुआ भैरोंको दिल में कर रहा सोच विचार॥
चौदह मन का सेल शनीचर जिसकीजुल्म कठिन है मार॥
सांग उठाई फिर भैरों ने दोनों हाथ में लई दबाय ॥
सुमरन करके रामचन्द्र का वह भैरों पर दई झुकाय ॥
बड़ा भरोसा था भैरों को मेरी सांग न खाली जाय ॥
आती सांग देख मकरन्द ने अपना हाथी लिया हटाय ॥
अजगर सांग पड़ी भैरों की जो धरती में गई समाय ॥
होश बन्द भैरों के हो गये मकरन्द सामने पड़ा दिखाय ॥
जितने वार किये भैरों ने सब मकरन्द ने दिये बचाय ॥
सम्भल के बैठा मकरन्द जोधा और हाथी को दिया बढ़ाय

लगी कचहरी मण्डलीक की अजगर जहां लगा दरबार ॥
नांच पातरों का जहां हो रहा चोंरी करें चंवर वरदार ॥
चकवा बोल गया सागर में बोला हंस समन्दर पार ॥
इन्दल बोला जब बङ्गले में और आल्हा से कहा पुकार ॥
बारह बरस में परभी पड़ गई जिसको कुम्भ कहे संसार ॥
बहुत से राजा वहां को जा रहे रइयत जा रही बेशुम्मार ॥
हाथ जोड़कर इन्दल बोला मैं दादा का लेऊं बलाय ॥
हमें निल्हादे तू गङ्गाजी जिन्दा गुन भूलुंगा नाय ॥
इतनी बात सुनी इन्दल की आल्हा काल बरन हो जाय ॥
छुटा पसीना जब आल्हा को जामा सराबोर हो जाय ॥
क्यों चुटिया होनीने पकड़ी क्यों जम चढे भुजों पर आय ॥
बड़े बड़े राजा गये वहां पर जिनकी कोई बराबर नाय ॥
क्यों मरवावे है कुनबे को बेटा मेरे इन्दलसी राय ॥
नौलख घोड़ों के दङ्गल में वहां पर गया पिथौरा राय ॥
जन्म का दुश्मन लगे हमारा वहां पर खैर रहेगी नाय ॥
तुम राड़ी लौंडे हो मोहबे के बिन झगड़े मानोगे नाय ॥
जिन्दे नहीं लौटो गङ्गा से चाहे खबर कोई ले जाय ॥
सारे राजा वहां दुशमन हैं अपना कोई सनीपी नाय ॥
जो वहां बिगड़े किसी राजा से जिन्दा एक बचेगा नाय ॥
मांस पलहियों में बट जाएगा ढूंडे हाड मिलेंगे नाय ॥
इतनी सुनकर इन्दल बोला दादा सुनलो कान लगाय ॥
या तो न्हाऊं हरिद्वार में नहीं मैं मरूं कटारी खाय ॥
क्या वोही क्षत्री के जन्मे हैं क्या हम हैं गीदड़ के लाल ॥
खेद खेद दूर तक मारूं दादा कहां तुम्हारा ख्याल ॥

भारी खटका था हाथी का सो ब्रह्माने दिया मिटाय ॥
लपक के ब्रह्मा अब जल्दी से फिर भैरों पर पहुँचा जाय ॥
झपट भैरों बैठा हो गया और भुजबल पर ठोकी ताल ॥
हाथी घोड़ों को क्यों मारे बेटा चन्द्रवन्श के लाल ॥
जो दम रक्खो रजपूती का मेरे डटो सामने आय ॥
मेरी तेरी कुश्ती रनखेतों में सारा हाल अभी खुलजाय ॥
इन्धे बेटा हरनन्दन का उन्धे चन्द्रवन्घ औतार ॥
दोनों जोधा मिले बराबर जिसको देय श्री करतार ॥
किया इशारा जब ब्रह्माने और मकरन्द से कहा सुनाय ॥
किसके पहरे अब तुम देखो अपना लशकर देओ बढ़ाय ॥
ये मन मान गई मकरन्द के और हिरदे में गई समाय ॥
हाथी हूल दिया आगेको और लशकर को दिया बढ़ाय ॥
पैदल से तो पैदल मिल गये असवारों से मिले सवार ॥
सूंड लपेटा हाथी हो गये ऊपर है अंकुश की मार ॥
खदबद खदबदतेगा चलरहा चलरही छनकछनक तलवार॥
छोड़ आसरा जिन्दगानी का त्तत्री कर रहे मार ही मार ॥
इन्धे लड़ रहे दोनों जोधा धरती मांगे धरन दुवार ॥
उन्धे फौज लड़े दोनों की चल रही अंधाधुन्द तलवार ॥
भैरों दावे जब ब्रह्मा को साढ़े सात कदम ले जाय ॥
ब्रह्मा दावे जब भैरों को उसे दूर तक दे है हटाय ॥
कभी तो दोनों गिरें जमीं पर और कभी लड़ेखेतमें आय ॥
दाव पेच से दोनों लड़ रहे अपनी अपनी घात लगाय ॥
बड़ा लड़इया यह भैरों है जिसके बल का नहीं शुम्मार ॥
बहुत जतन ब्रह्मा ने कर लिये बहां कुछ नहीं शुम्मार ॥

बारह बरस तक कुत्ता जीवे सोलह बरस तक जीवेस्यार ॥
तीस बरस तक क्षत्री जीवे ज्यादा जीने को धिक्कार ॥
खटिया पड़कर जो मर जावे उसका मांस चील ना खाय ॥
जो मर जावे रनखेतों में उसको ले जाय हूर उठाय ॥
जा । क्षत्री दूजा बकरा दोनों कटें तेग की धार ॥
या तो जाऊं हरिद्वार को और नहीं मरूं कटारी मार ॥
इन्दल मचल गया बङ्गले में कहना एक मानता नाय ॥
होश बन्द आल्हा के हो गये मुंह से बात कही ना जाय
इन्हीं बातों के अरसे में वहां आ गया उदयचन्द राय ॥
हाथ पकड़ कर नर इन्दल का उसे छाती से लिया लगाय
क्यों घबरावे मन्डलीक के बेटा मेरे इन्दलसी राय ॥
सारी बातें मैंने सुनलीं तुझे आगे से देऊं बताय ॥
तुझे निलहादूं हरिद्वार में दिल में अपने मत घबराय ॥
मैं देखूंगा उन राजों को जिनकी दहशत बहुत सिवाय ॥
गुस्सा खाकर नर आल्हा ने और ऊदल को लिया उठाय
हाथ पकड़ के फिर इन्दल का जब महलों की पकड़ी राय
कोई घड़ी के अब अरसे में शीश महल में पहुँचे जाय ॥
आते देखा जब मछला ने पचरङ्ग पलंग दिया बिछवाय ॥
कैसे नयनों में सुरखी है कैसे खड़े मूंछ के बाल ॥
क्यों घबरा रहे हो तुम ऐसे अपना सच बतादो हाल ॥
इतनी सुनकर आल्हा बोला रानी सुनलो कान लगाय ॥
बड़ा अनोखा तेरा इन्दल है और किसी के बेटा नाय ॥
अपने बेटे को समझाले न्हाने हरिद्वार को जाय ॥
चार घरों में एक बेटा है कोई दीवा सा देय बुझाय ॥

सूंता तेगा जब ब्रह्मा ने म्यान से बाहर लिया निकाल ॥
अब सर काट देऊं साले का तुझे जान से डालूं मार ॥
बोला मलखे जब ललकारा और ब्रह्मा से कहा पुकार ॥
ताना मारे हरनन्दन की मेरे भइया को डाला मार ॥
जान से मत मारो भैरों को नाता साले का मिट जाय ॥
मुश्क बांधलो तुम भैरों की उल्टे दण्ड लेओ कसवाय ॥
यह मन मान गई ब्रह्मा के और हिरदे में गई समाय ॥
हाथ हथकड़ी पांव में बेड़ी गले में तौक दिया डलवाय ॥
मुश्कें बन्ध गई जब भैरोंकी हलचल पड़ी फौज में जाय ॥
पांव उखड़ गये सब ज्वानों के कोई सरदार दीखता नाय ॥
गोल फूटगया हल्ला पड़गया सबदल तिड़ीबिड़ी होजाय ॥
मकरन्द ब्रह्मा की दहशतसे किसीने कान हिलाया नाय ॥
बहुत से क्षत्री मरे खेत में घायल हुए बहुत से ज्वान ॥
जिन्दे बच गये जो खेतों में वहां से लेकर भागे जान ॥
बोला मलखे जब ब्रह्मा से मैं भइया का लेऊं बलाय ॥
कूच बोलदो अब लशकरका अब क्यों रक्खी देर लगाय ॥
इतनी बात सुनी ब्रह्मा ने उसके दिल में गई समाय ॥
जीत के बाजे को बजवाकर वहां से कूच दिया करवाय ॥
मारू बाजा जब बजता जावे घूमते जावें लाल निशान ॥
जहां दरबार लगा आल्हाका दाखिल हुए वहां पर आन ॥
मुश्कें बन्धी देख भैरों की खुश होगया बनाफल राय ॥
ब्रह्मा मलखे दोनों पहुँचे बैठा जहां तलन्सी राय ॥
हाथ पकड़ के अब भैरों का फिर मलखे ने कहा सुनाय ॥
चोर तुम्हारा यह हाजिर है ओ महाराज तलन्सी राय ॥

इस पर जवाब दिया रानी ने बालम सुनलो कान लगाय
दूत पूत और धन दौलत यह चारों छिपती है नाय ॥
इसे निल्हावे गङ्गाजी पर देवर मेरा उदयचन्द राय ॥
क्या परवाह पड़ी है ऐसी जो राजों से दहशत खाय ॥
क्या कहीं मरगया ताला सइयद या मरगया जगन्सी राय
क्या कहीं घोड़े बूढे हो गये या हथियार धरे सकुवाय ॥
इतनी बात सुनी आल्हा ने आल्हा भरा रोस में जाय ॥
गुस्सा खाकर वहांसे चल दिया और बङ्गले की पकड़ी राय
आकर सलाम किया सइयदको चाचा सुनो तलन्सी राय॥
जब से मर गया बाप हमारा गोद तुम्हारी गया बिठाय ॥
इन्दल जा है हरिद्वार को कहना एक मानता नाय ॥
तुम्हीं सम्भालो अब इन्दलको जिन्दा गुन भूलुंगा नाय॥
बोली मछला फिर महलों में देवर मेरे उदयचन्द राय ॥
जैसे ले जाय बारे इन्दल को ऐसेही फेर मिलइयो लाय ॥
गोद तुम्हारी में सौंपू हूं अपना कंठ पुतरिया लाल ॥
सारे दुशमन गये गङ्गा पर इसका रखना बहुत ख्याल ॥
बाली उमर का मेरा इन्दल है यों मैं तुमको रही समझाय
कहीं निकल कर वह डेरों से और गङ्गा में डूबे जाय ॥
इतनी सुनकर चला उदयचन्द और माता पर पहुँचा जाय
हाथ जोड़कर करी स्तुति और चरनों में शीश नवाय ॥
आज्ञा लेने को आया हूं माता सुनलो कान लगाय ॥
आज्ञा दे दो तुम जल्दी से मैं गङ्गा पर पहुँचूं जाय ॥
इतनी सुनकर माता बोली बेटा सुनो उदयचन्द राय ॥
जाओ शौक से तुम गङ्गा को दहशत किसी बात की नाय

जो तेरी मन्शा हो लड़ने की अपना खेत बुहारो जाय ॥
जो ना मन्शा हो लड़ने की यहां से कूच देओ करवाय ॥
जब यह बात सुनी कासिद की मलखे भरा रोस में जाय ॥
बोला मलखे जब ललकारा मैं चाचा का लेऊं बलाय ॥
लिखो तलाक तुम हरनन्दनको जिसका केहरसिंह सरदार ॥
जो वह हट जावे खेतों से उसके जीने को धिक्कार ॥
बोला सइयद जब मलखे से मैं बेटे का लेऊं बलाय ॥
कौन शूरमा की बरनी है जो दुशमन पर झोका खाय ॥
जब यह बात सुनी मलखे ने उसके दिलमें गई समाय ॥
बोला मलखे जब ललकारा और जोगा से कहा सुनाय ॥
लगो हो मामा तुम नौशे के भानजा लगे इन्दलसीराय ॥
पहले काम है यहां भानी का अपना खेत बुहारो जाय ॥
इतनी सुनली जब जोगा ने बोली गई कलेजा खाय ॥
बोला जोगा जब मलखे से ओ महाराज बनाफल राय ॥
ऐसी बातों को मत बोलो मेरे जामे में नहीं समाय ॥
जहां मोरचा भारी देखो वहां जोगा को देओ हटाय ॥

जोगा का मुकाबले के वास्ते जाना

हुक्म सुनाया जब जोगों ने सरदारों को लिया बुलाय ॥
उल्टी बंब सब सीधी करदो मारू बाजा दो बजवाय ॥
पैदल पलटन और रिसाले सबको जल्द करो तइयार ॥
ऐसी तोपों को सजवालो जिनकी जाय दूर तक मार ॥
रन का बाजा जब बजने लगा सब रनशूर हुए तइयार ॥
कमरबन्द सब लशकर हो गया पैदल पलटन और सवार ॥

गंगा जमना का जल बढ़ियो तेरी रन बढ़ियो तलवार ॥
कोई न दीखे है राजों में जो अब सहे तुम्हारा वार ॥
इतनी सुनकर दोनों चल दिये ऊदल और इन्दलसी राय ॥
आकर पहुँचे जब बङ्गले में और सइयद की गई निघाय ॥
बोला सइयद जब इन्दल से बेटा मेरे इन्दलसी राय ॥
बड़े बड़े जोधा गये गंगा पर जिनसे कुछ नहीं पार बसाय ॥
कहा बड़ों का जो नहीं माने उसके दीपक जले न सांझ ॥
वह नर डूबे हैं अधबर में जिनकी तिरियां रह जाय बांझ ॥
गुस्सा खाकर ऊदल बोला चाचा सुनो तलन्सी राय ॥
उमर खिसकगई अबमत कटगई क्या तेरी अकलगई बौराय॥
बावन गढ़ में तुम फिर आए कहीं तेरा मान घटा है नाय ॥
अब तुम संग में चलो हमारे वहां असने में करो सहाय ॥
यह मन मान गई सइयद के और हिरदेमें गई समाय ॥
हुक्म सुनाया सरदारों को फौजें जल्द लेओ सजवाय ॥
लिख दो चिट्ठी जगनेरी को बेटा मेरे उदयचन्द राय ॥
जल्द बुलाओ तुम जागन को अब क्यों रक्खी देर लगाय ॥
तोप दरोगा को बुलवाया मेरी तोपों के सरदार ॥
अपनी तोपें तोपखानों में तुम जल्दी से करो तइयार ॥

फौज की तइयारी हरिद्वार की

जितनी तोपें थीं मोहबे में सब चरखों पर दई चढ़ाय ॥
धुन्द मचावन किले उड़ावन और घुड़चढ़िन दई चढ़ाय ॥
लिये जमूरे अपने साथ में गोला पांच सेर का खाय ॥
सत्यानाशन को सजवाया गोला डेढ़ मने का खाय ॥

धूप दक्खनी गली वहां पर लम्बी सैफ झड़ाका खाय ॥
यह गत हो रही लशकर में सबको मार ही मार सुहाय ॥
सर सर सरसर सेहटी चल रही जैसे मघा नक्षत्रगहराय ॥
मेह के माफिक गोली बरसे धरती ना कहीं पड़ दिखाय ॥
केहर जोगा दोना लड़ रहें चलरही अन्धा धुन्द तलवार ॥
तीन घाव केहर के आगये जो हरनन्दन का राज कंवार ॥
चल पड़ी जोड़ी हलकारे की जहां राजाका लगा दरबार ॥
हाथ जोड़ हलकारा बोला और राजा से कहा सुनाय ॥
क्या तुम बैठे सुख नीदों में अब कुछ रहा ठिकाना नाय ॥
बड़ा लड़इया वह क्षत्री है जिसने खेत बुहारा आय ॥
तोपें छीन लईं केहर की और मोंडे से दिया हटाय ॥
तीन घाव केहर के आ गये अब हथियार चले है नाय ॥
मुझको अगवां यह सूझे है उसकी जान बचेगी नाय ॥
जल्दी भेजो किसी जोधाको उसकी धीर बन्धावे जाय ॥
आग बुरी है रे भइया की रोंडा उठा तमाड़ा खाय ॥
हुक्म सुनाया सरदारों को और ज्वानों से कहा सुनाय ॥
जितना लशकर रोडासिंहका सबको जल्दी लेओ सजाय ॥
बड़ी बड़ी तोपों को सजवाकर सब चरखों पर देओचढ़ाय ॥
दल गरजन और फाटक तोड़न जिनकी जाय दूरतक मार ॥
किला उड़ावन और रन जूझन सारी तोपें करो तइयार ॥
यह मन मानी है ज्वानों के और हिरदे में गई समाय ॥
हुक्म सुनाया सरदारों ने सब दल कमरबन्द हो जाय ॥
सजे रिसाले काशमीर के और कन्धारी सजे सवार ॥
रूम शाम की पैदल पलटन जिनकी नहीं पड़े शुम्मार ॥

खोल कोठरी बख्तर वाली और ज्वानों से कहा सुनाय ॥
पहनो पहनो मेरे शहजादो जैसा जिसके अङ्ग समाय ॥
किसीने पहना जिरह और बख्तर किसीने कबालई कसवाय॥
किसी ने पहना अरे जालपा गोली लगे चीप हो जाय ॥
पहना जांगिया नरवर गढ़का जो जांघों में गया समाय ॥
टोपा ओढ़ लिया कम्बल का गोली असर करे है नाय ॥
खोल कोठरी हथियारों की चौक में ढेर दिया करवाय ॥
बांधो बांधो मेरे शहजादो जैसा कब्जा जिसे सुहाय ॥
इतनी बात सुनी ज्वानों ने सबके दिल में गई समाय ॥
ले लिया भाला नागदमन का जो पसली में जाय समाय ॥
चला गोलिया पानीपत का जो बख्तर को दे है उड़ाय ॥
सागें ले ली नैनागढ़ की एक घड़ के दो देय बनाय ॥
लई कमानें हैं मुल्तानी गोशे से गोशा मिल जाय ॥
सौ सौ तीरों के तरकश हैं सब ज्वानोंने लिये उठाय ॥
लई सरोही मानाशाही कोटा बूंदी की तलवार ॥
कत्ता लिया विलायत वाला जिसका जाय न खाली वार ॥
तेगा ले लिया बरदवान का जिस पर छः॥अंगुलकी धार ॥
लम्बी सेफ आगरे वाली जो हड्डी के हो जाय पार ॥
कुरमपुर की लीं पिस्तौलें जिनकी साठ कदम तक मार ॥
बावन छुरी बांधी कमरों से और कोयल की मूंठ कटार ॥
लई कटारी दक्खन वाली जो जहरों में धरी बुझाय ॥
कराबीन कन्धों पर धरली जिनकी बातें लई अड़ाय ॥
रन के दूल्हे रन को सज गये कफ्फन बंधे मूंह से जाय ॥
बन्दोबस्त लशकर का करके फारिग हुआ उदयचन्द राय ॥

अब तुम चले जाओ जोगा पर उसकी धीर बन्धाओ जाय
मैं देखूंगा अब लशकर को सबका खटका देऊं मिटाय ॥
बोला मुन्शी सरदारों से और ज्वानों से कहा सुनाय ॥
एक कदम पर एक अशरफी दो दो कदम अशरफी चार ॥
पांच कदम जो बढे अगाड़ी उसको दूं जागीर बताय ॥
लोभ की मारी यह दुनियां है क्षत्री गये लोभ में छाय ॥
शीश हथेली पर रख लीना रटना लगी राम से जाय ॥
छोड़ आसरा जिन्दगानी का सारे बढे अगाड़ी जाय ॥
अली अली करके बढे रुहेले सइयद बढ़गये मुगल पठान ॥
हर हर करके क्षत्री बढ़गये जिनका लगा राम से ध्यान ॥
एक तरफ़ को मुन्शी बढ़गया एकतरफ जस्सराज का लाल
जैसे भेड़िया पड़े रेवड़ में चीर फाड़ कर करे हलाल ॥
फौज के अन्दर मलखे घुस गया गाजीमनसुख पर असवार
पैदल से तो पैदल अड़ गये असवारों से अड़े सवार ॥
सूंड लपेटा हाथी हो गये हौदे मिले बराबर जाय ॥
पीलवान आपस में लड़ रहे अपना अंकुश रहे चलाय ॥
जैसे तोता आम को काटे और दराती काटे साग ॥
ऐसे ही काटे सिरसे वाला जैसे कामन खेले फाग ॥
नदी नर्वदा का जल गरजे और गंगा की गरजे धार ॥
मलखे वाली अब झपटों में क्षत्री छोड़ भगे हथियार ॥
एक को मारे दो गिर जावें तीसरा दहशत से गिर जाय ॥
यह गत करदी है मलखे ने दल पूला सा दिया बिछाय ॥
दहने बांवे क्षत्री मारें बीच में मलखे करे हलाल ॥
मारता जावे बढ़ता जावे बेटा बच्छराज का लाल ॥

ऊदल घूम रहा फौजों में और ज्वानों से कहा पुकार ॥
नौकर चाकर तुम्हें न जानू भाई लगो सभी सरदार ॥
पानी रखियो गढ़ मौहबे का रखियो मां बापों का नाम ॥
लौट के आवो तुम गंगा से तुमको गहरा मिले इनाम ॥
घोड़े दरोगा को बुलवा कर ऊदल ने दिया हुक्म सुनाय ॥
जितना घोड़ा है मौहबे में सब पर जीन देओ कसवाय ॥
हाथी दरोगा को बुलवाकर नर ऊदल ने कहा सुनाय ॥
जितने हाथी हाथी खानों में हौदा एक सङ्ग धर जाय ॥
मुन्डे हौदों को धरवादों चारों तरफ़ चले तलवार ॥
दो चार हौदे तुम जल्दी से अब रख देओ अम्बारी दार ॥
हाथी चढ़इया चढ़े हाथी पर और घोड़ों पर चढ़े सवार ॥
पैदल पलटन और रिसाले आगे चले छड़ी बरदार ॥
पांचों कपड़े सइयद पहने पांचों बांध लिये हथियार ॥
पकड़ बकसुवा रघुनन्दन का ताला कूद हुआ असवार ॥
घोड़ी चतुरङ्गी सजवा कर जागन जल्द हुआ तइयार ॥
पांचों कपड़ों को पहना है पांचों बांध लिए हथियार ॥
ऊदल बोला चोबदार से मेरा घोड़ा लाओ सजाय ॥
जीन सुनहरी को कसवा कर सांबर का दो तंग लगाय ॥
उमची दुमची को कसवाओ और गजबेल देओ छुट वाय ॥
मोहन माला गले में कण्ठा सारा जेवर दो पहनाय ॥
मोती चूर की चढें लजामें और चांदी की पड़ें रकाब ॥
सज कर घोड़ा ऐसा हो गया जैसे छोड़ दई महताब ॥
सज गया घोड़ा नर ऊदल का कुछ तारीफ करी ना जाय ॥
घोड़ी चतरङ्गी जागन ने अपनी जल्द लई सजवाय ॥

इतनी सुनकर रोड़ा बोला और जोगा से कहा सुनाय ॥
देख सहारा तू ऊदल का और आपे में नहीं समाय ॥
बढ़गया ऊदल अब आगे को और रोड़ा से कहा सुनाय ॥
लड़े लड़ाई बेईमानी की तुमको शरम आवती नाय ॥
इकले जोगा के मौंडे पर दो दो रहे तलवार चलाय ॥
अब चिट्ठी भेजो तुम रानी पर और महलों में दो पहुँचाय
किस पर पहनी हरीहरी चुड़िया किसपे रही सिंगार बनाय
दर्पण लेकर रानी देखो मुंह पर रहा रण्डापा छाय ॥
धोके न रहियो तुम जोगा के ऊदल यहां पर पहुँचा आय
जितने राजा छत्रपति थे सबका डाला मान घटाय ॥
पटहत भइया कोई ना छोड़ा सब हलजोता किये किसान ॥
जान कंगला तुझे छोड़ा था बलख बुखारे के मैदान ॥
हाथ बमी में तूने डाला सोते नाग को दिया जगाय ॥
जिन धवलों पर तू गरजे था उनको यहां पर लेओ बुलाय
लौट के जिन्दा तुम ना जाओ सारा खटका देऊं मिटाय ॥
बोला रोड़ा जब ललकारा घाती जात बनाफल राय ॥
जब से जीत लिया पिरथी को फूले अङ्ग समाते नाय ॥
मुल्कमें त्रियां तुमको मर गईं ब्याहने बलखबुखारे आय ॥
ना तो हमने टीका भेजा और ना गरी सगाई जाय ॥
बिना बुलाये तुम चढ़ आये तुमको शरम आवती नाय ॥
जैसा डोला तू ले जायेगा वैसा छिपा रहेगा नाय ॥
अब तू जिन्दा नहीं जाएगा ऊदल सुनले कान लगाय ॥
डोर खैंच ली नारायण ने अब तुम सुनो बनाफल राय ॥
लेखा चूक गया धरमराय के कागज रहे राम के नाय ॥

फौज ठहरादो इसी नदी पर ऐसी जगह मिलेगी नाय ॥
सारे क्षत्री अब भूके हैं घोड़े रहे गरद में छाय ॥
फौजें उतर पड़ीं मोहबे की जहां नदी का था मैदान ॥
बड़े बड़े डेरों को गढ़वाया और खाने का किया सामान ॥
क्षत्री बैठ गये डेरों में घोड़े लगे थान से जाय ॥
हुक्म सुनाया है सइयद ने दाना घास देओ पहुँचाय ॥
बन्दोबस्त लशकर का करके फारिग हुआ उदयचन्द राय ॥
जहां जहां पर मौका देखा पहरे डबल दिये लगवाय ॥
चढ़ी रसोई है हिन्दुओं की सइयद खाना रहे पकाय ॥
ऊदल चला गया न्हाने को संग में गया इन्दलसी राय ॥
न्हाय धोय कर फारिग होगये फिर डेरे में पहुँचे आन ॥
मार पलोथी बैठ गये हैं क्षत्री गढ़ मोहबे के ज्वान ॥
भोजन करके जब फारिग हुए इतनेही ताला पहुँचा आय ॥
अब क्यों देर करो चलने में बेटा शूरवीर बलवान ॥
ये मन मान गई ऊदल के और हिरदे में गई समाय ॥
हुक्म सुनाया सरदारों को अब क्यों रक्खी देर लगाय ॥
बजा नकारा जब चलने का क्षत्री सभी हुए तइयार ॥
अपने कपड़ों को पहना है सबने बांध लिये हथियार ॥
आगे आगे गांझे वाले पीछे चले छड़ी बरदार ॥
इनके पीछे पैदल पलटन उनके पीछे शुतर सवार ॥
रात को चलते दिन को चलते रात में कहीं ठहरते नाय ॥
रात दिना की दौड़ धूप ने अब गंगा पर पहुँचे जाय ॥

मोहबे वालों का गंगा पर पहुंचना

हुकम सुनाया सरदारों को मैं ज्वानों का लेऊं बलाय ॥
अपनी अपनी सब फौजों को अब जल्दी से लेश्रो सजाय ॥
जितना लकशर है राजा का पैदल पलटन और सवार ॥
कोई घड़ी के अरसे में सबको जल्दी करो तइयार ॥
इतनी बात सुनी राजा की सबके दिल में कई समाय ॥
उल्टी बम्ब सब सीधी हो गई डन्डा पड़ा बम्ब पर जाय ॥
हाथी चढ़इया चढ़े हाथी पर और घोड़ों पर चढ़े सवार ॥
तोप दरोगा को बुलवाकर अब राजा ने कहा पुकार ॥
जितनी तोप हैं तोपखाने में सब चरखों पर देश्रो चढ़ाय ॥
बड़ी बड़ी तोपे हैं अष्टधात की गोला मन पक्के का खाय ॥
और सजालो घुड़चढ़यन को जिनको मार दूर तक जाय ॥
जहां जहां तोप लगीं बुरजों पर गोलन्दाज देश्रो बिठलाय॥
आवें बनाफल जब फाटक पर उसमें दीजी आग लगाय ॥
किला बना है यहां कैंची का गोला डेढ़ कोस तक जाय ॥
जब यह बात सुनी राजा की सब आपस में रहे बताय ॥
जितनी तोपें हैं बुरजों पर सबके मोंडे देश्रो घुमाय ॥
किला बांध दिया है तोपों का और चौबन्दी दी करवाय ॥
बुरज बुरज पर तोपें चढ़ गईं खाली बुरज रहा कोई नाय॥
बत्ती दहक रहीं तोपों की गोलन्दाज खड़े तइयार ॥
दुशमन आवे जिस दम यहां पर हम तोपोंकी करें भरमार॥
जितनी तोपें रन को जावें सब सड़कों पर पहुँचीं जाय ॥
जहां पर फौजें थीं मोहबे की मोरचा लगा बराबर जाय ॥
करी तइयारी हरनन्दन ने रन का बाना लिया सजाय ॥
बख्तर पहना काशमीर का ऊपर कवा लई कसवाय ॥

इन्धे उन्धे पैदल पलटन दहने बांवे शुतर असवार ॥
बन्दोबस्त डेरों का हो गया चारों तरफ फिरें असवार ॥
फ़रश कराया है डेरों में और कालीन दिये बिछवाय ॥
हाथी बन्ध गये हाथीखानों में घोड़े बन्धे थान से जाय ॥
इनको छोड़ा है गंगा पर अब आगे का करूं बयान ॥
सुपना देखा चन्द्रकला ने बलख बुखारे के दरम्यान ॥

राजा हरनन्द की बेटी चन्द्रकला
यानी पैमा के सुपने में देवी का आना

सोहनी सूरत मोहनी मुरत चन्दा सूरज की उनियार ॥
बेटा हैगा नूनी आल्हा का बावन गढ़ का जो सरदार ॥
वो आया है हरिद्वार में पैमा सुनले धर के ध्यान ॥
चारों घरों में एक बेटा है जोधा शूरबीर बलवान ॥
इतनी बात सुनी देवी की क्वारी चौंक चौंक रह जाय ॥
हाथ जोड़कर दी परकम्मा और चरनों में शीश निवाय ॥
मुझे बता दे तू जल्दी से कब गंगा पर पहुँचुं जाय ॥
सूरत देखूं उस चत्री की घर अपने पर लाऊं लिवाय ॥
इतनी सुनकर देवी गरजी चन्द्रकला से कही ये बात ॥
पूरनमासी का दिन आये इन्दल लगे तुम्हारे हात ॥
इतनी कह कर देवी छिप गई और मन्दिर में पहुँचीजाय ॥
सोच हुआ है चन्द्रकला को कैसा सुपना पड़ा दिखाय ॥
आंख खुली जब चन्द कलाकी और बांदीको लिया बुलाय ॥
ऐसा सुपना मैंने देखा जिनका हाल कहा ना जाय ॥

जब रग दाबी है घोड़े की घोड़ा उड़ अम्बर को जाय ॥
काले बादल की लालों में जैसे बाज रहा मण्डलाय ॥
नजर घूम गई जब सइयद की उसको ऊदल पड़ा दिखाय ॥
केहर वाले अब मौंडे पर ऊदल रहा तलवार चलाय ॥
कूदा कन्हैया कालीदह में जिस दिन नथा नाग को जाय ॥
गिरा बछेरा अब ताला का और ऊदल पर पहुँचा जाय ॥
देख लड़ाई नर ऊदल की ताला बहुत खुशी हो जाय ॥
बोला ताला जब खेतों में और ऊदल से कहा सुनाय ॥
सिया भरोसे रामचन्द्र के राम भरोसे अन्जनी कुमार ॥
तेरे भरोसे चन्देले ने अपने खोल धरे हथियार ॥
मुझे भरोसा था ऊदल का जब ताला ने कहा सुनाय ॥
इकले ऊदल के मौंडे पर दोहरे ज्वान गये घबराय ॥
लौट के जवाब दिया ऊदल ने चाचा सुनो तलन्सी राय ॥
ऐसी बातों को मत बोलो मेरे जामे में नहीं समाय ॥
हुक्म तुम्हारा यह हमको था तुम राजा को मारो नाय ॥
जान बूझ कर हमने छोड़ा अपना लशकर लिया हटाय ॥
क्या है मसाला उस राजा पर जो ऊदल का झेले वार ॥
नहीं मुनासिब यह हमको था जो राजा पर डालें हाथ ॥
तुम्हारी बराबरी का राजा है उसके लड़ो सामने जाय ॥
यह मन मान गई ताला के और हिरदे में गई समाय ॥
बोला ऊदल फिर ललकारा और ज्वानों से कहा सुनाय ॥
आगे से घोड़ा पीछे करलो अब क्यों रक्खी देर लगाय ॥
कदम कदम पर मिले अशरफी दोदो कदम अशरफी चार ॥
पांच कदम जो बढे अगाड़ी उनको मोहरें मिलें हजार ॥

बोली बांदी चन्द्रकला की तुझे आगे से देऊं बताय ॥
क्यों घबराये हरनन्दन की तुमको कौन पड़ो परयाय ॥
सारा हाल कहा सुपने का सुनकर बांदी गई घबराय ॥
थर थर थर थर पिंडली कांपी मुंहसे बोल निकलता नाय ॥
सुपना ना है ये होनी है कामन सुनले कान लगाय ॥
बड़े जलइया का बेटा है जिसका नाम इन्दलसी राय ॥
मान घटाया पिरथी का ब्रह्मा का लिया ब्याह कराय ॥
जिस दिन आवें बलख बुखारे पगिया बन्द बचेगा नाय ॥
होती बातों को तुम ओलो और अनहोत कहो तुम नाय ॥
सब देशों के राजा मर गए मोहबे इश्क लगाया जाय ॥
जिसकी दहशतसे पिरथी कांपे बून्दी हाल हाल रह जाय ॥
जौन किले पर वो गरजे हैं उन पर दूब जमे है नाय ॥
इतनी सुनकर पैमा बोली बांदी तेरा बुरा हो जाय ॥
ओछी बातों को मत बोलो ओछी सलाह भावती नाय ॥
जैसा बेटा है आल्हा का ऐसा बावन गढ़ में नाय ॥
या तो ब्याही मोहबे जाऊं और नहीं मरूं कटारी खाय ॥
पूरनमासी के दिन आ गए दिन परभी के पहुँचे आय ॥
झपट के बोली है बांदी से सब सखियों को लाओ बुलाय ॥
करके मशवरा सब सखियों से फिर माता पर पहुँचूं जाय ॥
आज्ञा लेकर अपनी माता से फिर भइया को लेऊं बुलाय ॥
इतनी सुनकर बांदी चल दई सब सखियों पर पहुँची जाय ॥
गली गली में फिरे घूमती और सखियों से कहा सुनाय ॥
तुम्हें बुलाया चन्द्रकला ने जल्दी चलो हमारे सात ॥
होले सजवालो जल्दी से तुम से कहूं धरम की बात ॥

मिले इजाजत जो बौना को मैं भी लूं हथियार लगाय ॥
करूं चौकसी मैं पीछे की तुमको कौन पड़ी परवाय ॥
इस पर जवाब दिया मलखे ने बौना खबरदार हो जाय ॥
बिना लूट के तू ना माने सबका ले सिंगार उतार ॥
नहीं बिगड़जाय महलोंमें और वहांचलने लगे तलवार ॥
बिना लूट के तू ना माने सबका ले सिंगार उतार ॥
लौट के जवाब दिया बौना ने कसमें महादेव की खाय ॥
बिना इजाजत के महलों में किसी को हाथ लगाऊं नाय ॥
हाथी सजगया मोहबे वाला हथनी सजी कनौजी राय ॥
अपने अपने अब घोड़ों पर सब चढ़ गये बनाफल राय ॥
ढोल और ताशे बजा नकारा डंकापड़ा बम्ब पर जाय ॥
तुरई नरसिंहा बज रहा कुछ तारीफ करी ना जाय ॥
इन्दल बैठ गया पीनस में गुरु अमरा का ध्यान लगाय ॥
खूबी नाई चला वहां से बगल में रहा तलवार दबाय ॥
सारे राजों को संग लेकर वहां से कूच दिया करवाय ॥
आगे आगे चली पालकी पीछे चले बनाफल राय ॥
दन्वे उन्वे चले इन्दल के जगनक और सियानन्द लाल ॥
ऊदल मलखे हैं मौडे पर नंगी रहे तलवार निकाल ॥
मारू बाजा बजता जावे घूमते जावें लाल निशान ॥
खबर पहुँच गई हरनन्दन को मोहबे वाले पहुँचे आन ॥
बोला राजा जब दुरगा से मैं मुन्शी का लेऊं बलाय ॥
फरश करादो तुम जल्दी से अब आगये बनाफल राय ॥
इतनी बात सुनी मुन्शी ने उसके दिल में गई समाय ॥
फरश कराया है मखमल का और कालीन दिये बिछवाय ॥

यह मन मान गई सखियों के और हिरदे में गई समाय ॥
अपने घर से अब सब चलदीं और महलों में पहुँची जाय ॥
सखियां पहुँच गईं महलों में चन्द्रकला के बैठी पास ॥
कैसे नयनों में पानी है कैसे तबियत आज उदास ॥
इतनी बात सुनी सखियों की चन्द्रकला ने दिया जबाव ॥
रात कटी है बेचैनी से जब से देखा मैंने ख्वाब ॥
इतनी सुन सुखनन्दन बोली और बांदी से कहा सुनाय ॥
कैसा सपना इसने देखा क्यों ना हमको दे बतलाय ॥
इतनी सुनकर चन्द्रकला के आंसू भरे आंख में जाय ॥
हाल सुनाऊं क्या सपने का मुझसे हाल कहा ना जाय ॥
जो तुम हाल सुनो सपने का ठट्ठा करो हमारा आय ॥
देवी आई मेरे सपने में सारा हाल गई बतलाय ॥
अटने के धोरे एक पटना है जहां पर बसें बनाफल राय ॥
बेटा है कोई नर आल्हा का जिसका नाम इन्दलसी राय ॥
नाम सुना सूरत ना देखी मेरी अकल गई बौराय ॥
पण्डों के कुल में वह जन्मा है जिसको देख हूर शरमाय ॥
मुझे बताया है देवी ने तेरा वही बने भरतार ॥
बड़ा शूरमा है मोहबे में बबरा वाहन का अवतार ॥
इतनी सुनकर शकुन्तला ने जब कामन से कहा सुनाय ॥
बड़े भाग हैं उन त्रियों के जिनको मिले बनाफल राय ॥
जब यह बात सुनी रानी ने उसे छाती से लिया लगाय ॥
तुमने बहना सच कहा हैं मेरी गया समझ में आय ॥
देवी कह गईं जो सपने में सब सखियों को दिया सुनाय ॥
मैं अरदास करूं शिवजी से मुझे वर मिले इन्दलसी राय ॥

तीसरे रानी उठती जवानी चौथे सोलह किये सिंगार ॥
सजकर पेमा ऐसी हो गई जैसे चन्दा की उनहार ॥
पहले पेमा मिली माता से दोनों मिल गई भुजा पसार ॥
पीछे बरनी हैं सखियों से सबसे मिली पदमनी नार ॥
जितनी सहेली थीं पेमा की सारी हुई इकट्ठी आय ॥
सबने मिलकर अब डोले में रानी पेमा को दिया बिठाय ॥
पेमा बैठ गई डोले में पटका ले लिया और कटार ॥
चल पड़ा डोला शीश महल से जिसमें सोलह लगे कहार
बोला केहर जब दुर्गा से मैं मुन्शी का लेऊं बलाय ॥
जो कुछ चीजें हैं देने की सब सामान लेओ मंगवाय ॥
हाथी घोड़े ऊंट पालकी सबको करो इकट्ठा लाय ॥
सोने चांदी के हौदों को सबके ऊपर धरो सजाय ॥
मैंमूदी कमख्वाब नीमजरी बहुत से धरे रेशमी थान ॥
मोहर अशर्फी इतनी दे दो जिसका ना हो सके बयान ॥
गांव जागीरें जो उनको दो सब पेमा के लिखदो नाम ॥
बिना भूमि के वह राजा हैं वक्त पड़े पर आवे काम ॥
हुई तइयारी जब चलने की सब सामान लिया लदवाय ॥
अपने अपने अब घोड़ों पर सब चढ़ गये बनाफल राय ॥
गाजी मनसुख पर मलखे चढ़ा रसबेंदुल पर उदयचन्द राय
रघुनन्दन पर ताला सइयद दाढ़ी रही थोंद पर छाय ॥
बहुत से बैठ गये हाथी पर बाकी घोड़ों पर असवार ॥
हिरनागिर घोड़े के ऊपर आल्हा कूद हुआ असवार ॥
लगी नशीनी जब भूरी पर उस पर चढ़ा लखन्सी राय ॥
निकला डोला दरवाजे से चन्दन चौक में पहुँचा जाय ॥

इतनी सुनकर सखियां बोली पेमा सुनलो कान लगाय ॥
एक तदबीर तुझे बतलावें जो तेरी जाय समझ में आय ॥
अभी चलें हम संग तुम्हारे और माता से करें अरदास ॥
हमें निल्हादे तू गङ्गाजी बहुत दिनों से लग रही आस ॥
जेठ दशहरे की परभी है ऐसा वक्त मिलेगा नाय ॥
दूर दूर से खलकत जा रही मेला चला बराबर जाय ॥
हम भी जावेंगे गंगा को रानी देओ हुक्म सुनाय ॥
जब यह बात सुनी पेमा ने दिल में बहुत खुशी हो जाय ॥

पेमा का माता के पास जाना और गंगा नहाने की इजाजत मांगना

चल पड़ी पेमा अब महलों से सब सखियों को संग लिवाय
जाकर पहुँची है महलों में माता को दिया शीश नवाय ॥
बोली माता अब पेमा की और छाती से लिया लगाय ॥
कैसे बेटी तुम आई हो हमको हाल देओ बतलाय ॥
इतनी सुनकर अब माता से झट पेमा ने कहा सुनाय ॥
मुझे निल्हादे तू गंगाजी जिन्दा गुन भूलूंगी नाय ॥
इतनी सुनकर रामकला ने फिर बेटी को दिया जवाब ॥
क्यों चुटिया होनी ने पकड़ी क्यों तेरी होरही अक्ल खराब
बड़े बड़े राजा वहां पहुँचेंगे जोधा एक से एक सिवाय ॥
राजा आवे दिल्ली वाला जिसका नाम पिथौरा राय ॥
नौलख घोड़ों का मालिक है राजा दिल्ली का सरदार ॥
सोलह शूरमा नौ शहजादे जिनमें बड़े बड़े सरदार ॥

जिनके बालम यहां पर जूझे उनकी त्रियां कहैं सुनाय ॥
ऐसा ब्याह हुआ पैमा का हमको रांड दिया गरवाय ॥
यह मन मान गई लाखन के और हिरदे में गई समाय ॥
हाथ उठा दिया नर मलखे ने बन्द बखेर दई करवाय ॥
करी तइयारी अब चलने की लेकर रामचन्द्र का नाम ॥
राम राम आदाब बन्दगी पांलागन और करी सलाम ॥
उन्ते क्षत्री गये राजा के इन्धे चले बनाफल राय ॥
जंगी बाजे को बजवाकर सबने कूंच दिया करवाय ॥
मारू बाजा बजता जावे घूमते जावें लाल निशान ॥
कोई घड़ी के अब अरसे में अपने लशकर पहुँचे आन ॥

मौहबे वालों का बलख बुखारे से रवाना होना

बोला सइयद नर मलखे से बेटा सिरसे के सरदार ॥
जब हम आये थे मौहबे से चन्देले से किया इकरार ॥
कहकर आये छः महीनेकी एक साल यहां दिया लगाय ॥
कूच करादो तुम लशकर का अब क्यों रक्खी देर लगाय
ना कुछ खबर लगी मौहबेकी ना कोई कासिद पहुँचाआय
चलकर जल्द मिलो राजा से धीरज बन्धे चन्देला राय ॥
जिस कारज को आये यहां पर वह दा॥ ने दिया बनाय
करो तइयारी अब मौहबे की यहां से कूच देओ करवाय ॥
इतनी बात सुनी ताला की सबके दिल में गई समाय ॥
हुक्म सुनाया सरदारों को सब दल कमरबन्द हो जाय ॥

राजा आवे गढ़ कनवज का जिसका नाम ललन्सी राय ॥
बड़े बड़े जोधा हैं फौजों में जिनकी कोई बराबर नाय ॥
आवें उपादी गढ़ मोहबे के बिन झगड़े मानेंगे नाय ॥
मनबढ़ हो रहे वह दुनियां में कड़िया का दिया मान घटाय
जङ्ग जीत कर वहां जम्बे से ऊदल का लिया ब्याह कराय ॥
बदला ले लिया बाप अपने का घर घर रांड दई बिठलाय ॥
हाथ जन्मे कजरी बन में घोड़ा काबुल और कंधार ॥
जन्मे शूरमा गढ़ मोहबे में जिनका लगे वार ना पार ॥
बावनगढ़ उनकी चौधर है जिनको जग जाने संसार ॥
श्वेतबन्द और रामेश्वर तक चमकी मलखे की तलवार ॥
बड़ा लड़इया नर ऊदल है जिससे कुछ ना पार बसाय ॥
जिस गढ़िया पर वह चढ़ जावे उसका धक्का लगे है नाय ॥
उससे ज्यादा नर धांदू है जोधा कर्ण का औतार ॥
ऊदल की पट्टी का ब्रह्मा हैं जोधा अर्जुन का औतार ॥
जो नहीं काम बने औरों से उसको करें बनाफल राय ॥
इन्हीं के कुल में आल्हा होगया देवी को दिया शीश चढ़ाय
उनके क्वारा पूत इन्दलसी बबरा वाहन का औतार ॥
चार घरों में एक बेटा है उस पर रहे सभी का प्यार ॥
कोई न जोधा तेरे बाप के उनका करे सामना जाय ॥
मुझको दहशत यह भारी है बेटी सुनले कान लगाय ॥
सुनकर बातें अब माता की फूली अङ्ग में नहीं समाय ॥
ऐसी खुशी हुई पेमा को चारों बन्द तड़ाके साय ॥
क्यों घबरावे अपने मन में मैं माता का लेऊं बलाय ॥
जोगी झिलमिला की चेली हूं बावन विद्या दई बताय ॥

यह मत जाने अपने दिल में अब डर गया लखन्सी राय ॥
जहां मोरचा भारी जानो वहां लाखन को देओ डटाय ॥
फिर ललकारा पीलवान को मैं सुवना का लेऊं बलाय ॥
बजे कुहाड़ा मेरी हथनी पर अब क्यों रक्खी देर लगाय ॥
बजा कुहाड़ा जब हथनी पर भूरी भरी रोस में जाय ॥
अरबल हथनी कनवज वाली बारह कोस अगाड़ी जाय ॥
दाबता जावे है फौजों को बेटा रतीभान का लाल ॥
ताला सइयद मामा जागन पीछे करते चले सम्भाल ॥
कालनेम और देवी मरहटा उनकी लगे बराबर जाय ॥
बीच में डोला रानी पेमा का चारों तरफ बनाफल राय ॥
मारू बाजा बजता जावे घूमते जावें लाल निशान ॥
मन्जिल मन्जिल के चलने में मोहबे की सींव दबाई जाय ॥
बोला लाखन नर ऊदल से मैं मितर का लेऊं बलाय ॥
बहुत रोजसे कनवज छोड़ा अब तक खबर मिली है नाय ॥
चिन्ता होगी मेरी माता को आया नहीं लखन्सी राय ॥
आज्ञा दे दो जो लाखन को गढ़ कनवज में पहुँचूं जाय ॥
लौट के जवाब दिया ऊदल ने मैं मितर का लेऊं बलाय ॥
आठ रोज मोहबे में रह कर वहां से दीजो कूच कराय ॥
इतनी सुनकर ताला बोला बेटा सुनो उदयचन्द राय ॥
अब तुम जाने दो लाखन को मानो कहा कनौजी राय ॥
बोला जागन फिर आल्हा से अब तुम सुनलो कान लगाय
हुक्म तुम्हारा जो मैं पाऊं अगनेरी में पहुँचूं जाय ॥
कालनेम और देवी मरहटा उन दोनों ने कहा पुकार ॥
अब तो आ पहुँचे मोहबे में आल्हा मण्डलीक औतार ॥

जो कोई हमसे वहां बोलेगा सबको तोता देऊं बनाय ॥
सुनकर बातें चन्द्रकला की गुस्सा भरा बदन में जाय ॥
क्यों बकवास करे है हमसे तुझको अक्ल जरा है नाय ॥
क्या तूही अनोखी बाप अपनेके और किसी के बेटी नाय ॥
हम नहीं जाने दें गंगा को चाहे मूंड मार मर जाय ॥
इतनी सुनकर पेमा रोई जिसका रोज थमे है नाय ॥
हिड़की बन्ध रही है पेमा की जैसे कुंज रही डकराय ॥
इन ही बातों के अरसे में हंसाराम वहां पहुँचा आय ॥
रोती देख बहन अपनी को उसे छाती से लिया लगाय ॥
माता माता को ललकारा मैं जननी का लेऊं बलाय ॥
कौन बात पर यह रूठी है मुझे जल्दी से दो बतलाय ॥
इतनी सुनकर रामकला ने हंसाराम से कहा सुनाय ॥
बोली रानी हंसाराम से इसका बुरा बन्धा है ख्याल ॥
कैसे भेज देऊं गंगा पर मेरे कन्ठ पुतरिया लाल ॥
बड़े बड़े राजा वहां जायेंगे रइयत जावे बहुत सिवाय ॥
आवें वहां सब मोहबे वाले जो मरने से डरते नाय ॥
इतनी सुनकर हन्सा बोला माता कौन पड़ी परवाय ॥
इसे निल्हा दूंगा गंगा पर खटका किसी बात का नाय ॥
क्या वोही बहादुर हैं दुनियां में और दूसरा जन्मा नाय ॥
क्या हम बेटे हैं गीदड़ के जो नहीं उनसे पार बसाय ॥
खेद खेद मोहबे तक मारूं जो मेरा नाम है हन्साराम ॥
रन्डिया दुखिया को लूटा है ना कहीं पड़ा मरद से काम ॥
इन ही बातों के अरसे में राजा हरनन्द पहुँचा आय ॥
आता देखा जब रानी ने अन्दर पलंग दिया बिछवाय ॥

चुप और चाप वहां सब हो गये अब कोई बात करे हैं नाय
बोला राजा जब हन्सा से मैं बेटे का लेऊं बलाय ॥
क्या मशवरा हुआ महलों में हमको हाल देओ बतलाय ॥
भबकी रानी जब महलों में और राजा से कहा सुनाय ॥
बेटी बिचल गई महलों में उसको आप लेओ समझाय ॥
मेरे कहने को नहीं माने इसकी अकल गई बौराय ॥
इतनी सुनकर राजा बोला ओ शहजादी राजकंवार ॥
कौन बात पर तू रूठी है आंसू जा रहे जार बेजार ॥
इतनी सुनकर चन्द्रकला ने बांहें दई गले में डाल ॥
हिड़की देकर पेमा रोई राजा का हो गया हाल बेहाल ॥
क्या कुछ कहदिया तेरी माताने क्या हन्सा ने कहा सुनाय
मुझे बतादे तू जल्दी से अब क्यों रक्खी देर लगाय ॥
हाथ जोड़कर चन्द्रकला ने चरनों में दिया शीश नवाय ॥
मुझे निलहादो तुम गंगाजी जिन्दा गुन भूलुंगी नाय ॥
जब यह बात सुनी राजा ने फिर बेटी से कहा सुनाय ॥
बड़े बड़े राजा जांय गंगा पर जिनकी कोई बराबर नाय ॥
आवें छलिया मोहबे वाले जिनकी जुल्म कठिन है मार ॥
बावनगढ़ उनको जाने हैं उनकी जग जाहिर तलवार ॥
कोई न जोधा मेरी फौजों में उनका करे सामना जाय ॥
होती बातों को तुम बोलो और अनहोत कहो तुम नाय ॥
मारी दुहत्तड़ चन्द्रकला ने उल्टी गिरी धरन पर जाय ॥
जुल्म गुजार दिये कुनबे ने हिम्मत मेरी बन्धाई नाय ॥
अलख निरंजन अरे विधाता कैसी रची मेरे भगवान ॥
जहर खायकर मैं मर जाऊं अपने तज दूं अभी पिरान ॥

इतनी सुनकर हरनन्दन ने जब बेटी से कहा सुनाय ॥
क्यों घबरावे अपने मन में तुमको गंगा देऊं निल्हाय ॥
इतनी सुनकर बाप अपने से खुश हो गई पदमनी नार ॥
मन का चाहा मेरा हो गया बाबल धन्य घड़ी अवतार ॥

राजा हरनन्दन का हंसाराम को गंगा जाने का हुक्म देना

बोला हरनन्द जब ललकारा हन्साराम से कहा सुनाय ॥
फौज सजालो तुम जल्दी से अब क्यों रक्खी देर लगाय ॥
थोड़ा लशकर साथ में लेकर गंगा की लो सुरत लगाय ॥
चन्द्रकला को साथ में लेजा और गंगाजी देओ निल्हाय ॥
यह मन मान गई हन्सा के और हिरदे में गई समाय ॥
हुक्म सुनाया सरदारों को और ज्वानों से कहा सुनाय ॥
माह के महीने में घी खिचड़ी आठवें रोज खाये पकवान ॥
जिस दिन की खातिर पाला था वह दिन लगा बराबर आन
जिनको प्यारे बालक बच्चे अपने रहो घरों में जाय ॥
जिनको प्यारा हन्साराम है दोहरे लो हथियार लगाय ॥
बेटा मर जाय मुसलमान का उसकी दूंगा कबर बनाय ॥
जो रजपूत मरे गंगा पर सीधा स्वर्गलोक को जाय ॥
इस पर जबाब दिया ज्वानों ने और हंसा से कहा सुनाय ॥
इन बातों को मतना बोलो तुमको जेबा देता नाय ॥
मोटे बेटे साहूकारों के बैठे जपें राम का नाम ॥
पतली फांस हम रजपूतों की नित उठ रहे लोहे से काम ॥

नमक तुम्हारा हमने खाया जो काया में गया समाय ॥
नमक हरामी नहीं करेंगे चाहे जान बचे या जाय ॥
उङ्गल उङ्गल पर बरछी लगे चाहे दो दो पर लगे भाल ॥
हम नहीं हटने के मौंडे से जो हम हैं क्षत्री के लाल ॥
जब तक शीश रहे कन्धे पर लोहा करता रहे सहाय ॥
जहां मोरचा भारी देखो वहां ज्वानों को देश्रो अड़ाय ॥
इतनी बात सुनी ज्वानों की हन्सा बहुत खुशी हो जाय ॥
हुक्म सुनाया हलकारे को सब पर हुक्म देश्रो पहुँचाय ॥
गली गली में पैदल फिर रहे डेरे डेरे पर असवार ॥
जिनके बालम घर में सोवें उनकी खड़ी जगावें नार ॥
उट्ठो बालम कुल्ला करलो तुमको राजा रहा बुलाय ॥
किसी देश को हुई चढ़ाई उनकी जाकर करो सहाय ॥

हंसाराम की गंगा जाने की तइयारी

इतनी बात सुनी ज्वानों ने जल्दी उठे फरेरा खाय ॥
जाकर पहुँचे आमखास में राजा को दिया शीश नवाय ॥
खोल कोठरी बख्तर वाली चौक में ढेर दिया करवाय ॥
पहनो पहनो मेरे शहजादों जैसा जिसके अङ्ग समाय ॥
तोप दरोगा को बुलवा कर कंचन कड़े दिये पहनाय ॥
जितनी तोपें तोपखानों में सब चरखों पर देश्रो चढ़ाय ॥
हाथी दरोगा को बुलवाकर माला दई गले में डाल ॥
जितने हाथी हैं लशकर में सब पर हौदे धरो सम्भाल ॥
पीलवान बोले हन्सा से बलख बुखारे के सरदार ॥
कहो तो हौदे मुन्डे धर दें और कहो धरें अम्मारीदार ॥

बोला हन्सा जब ललकारा पीलवान से कहा पुकार ॥
मुण्डे हौदों को धरवादो मतना धरो अम्बारीदार ॥
ओट लड़ाई को ना जाने हम ना लड़े ओट की मार ॥
क्षत्री होकर लड़े ओट से रन में डूब जाय तलवार ॥
हाथी चढ़इया चढे हाथी पर और घोड़ों पर हुए सवार ॥
पहले नकारे के बजने में सबने बांध लिए हथियार ॥
पैदल पलटन और रिसाले आगे चले छड़ी बरदार ॥
फौजें चल दी हैं गंगा को धरती मांगे धरन द्वार ॥
सजकर बेटा हरनन्दन का और घोड़े पर हुआ सवार ॥
गनपत जोधा को ललकारा तुम भी बांध लेओ हथियार ॥
तुम भी सङ्ग में चलो हमारे चन्द्रकला को देय निल्हाय ॥
यह मन मान गई गनपत के और हिरदे में गई समाय ॥
पांचों कपड़ों को पहना है और सब लिए हथियार लगाय
हुक्म सुनाया चोबदार को मेरा घोड़ा लाओ सजाय ॥
इनको छोड़ा साथ फौज के हन्सा ने दिया हुक्म सुनाय ॥
जितनी तोपें तोपखानों में सब चरखों पर देओ चढ़ाय ॥
बन्दोबस्त फौजों का करके कहने लगा यह हन्साराम ॥
अब मैं जाता हूं महलों को और माता को करूं प्रणाम ॥
कोई घड़ी के अन्न अरसे में वह महलों में पहुँचा जाय ॥
सजा देख अपने भइया को पेमा फूली नहीं समाय ॥
बड़ी खुशी हुई चन्द्रकला को जब माता से कहा सुनाय ॥
जैसा भइया मेरा हन्सा है ऐसा कोई जगत में नाय ॥
बोला हन्सा चन्द्रकला से मैं बहना का लेऊं बलाय ॥
करो तैयारी तुम चलने की अब क्यों रक्खी देर लगाय ॥

मोती धींवर को बुलवालो डोला जल्द करो तइयार ॥
दो बुरजों का डोला लावे जिसमें सोलह लगें कहार ॥
इतनी सुनकर चन्द्रकला ने चौबदार से कहा सुनाय ॥
मोती धींवर से कह जाकर दूसरा डोला लाये सजाय ॥
ये मन मानी चोबदार के और हिरदे में गई समाय ॥
जाकर कह दिया मोती धींवर से पैमा डोला रही मंगाय ॥
दूसरे डोले को मंगवाया जिन पर दो बुरजों की छाय ॥
इतनी बात सुनी मोती ने सब भइयों से कहा सुनाय ॥
डोला मांगा चन्द्रकला ने तुम जल्दी से दो पहुँचाय ॥
इतनी सुनके उसके भाईया सब डोले को लिपटे जाय ॥

राजा हरनन्द की बेटी पैमा की तैयारी

डोला सजन लगा पैमा का अब मैं उसका करूं बयान ॥
परदे डाले पशमीने के गुल पने का करके ध्यान ॥
सब्ज सुरख झिलमिलके परदे जिनमें हवा न शोका खाय ॥
सच्चे मोती की झालर है हीरा कनी दमकती छाय ॥
जड़े सितारे रूक डिरङ्क के जैसे तारे करें बहार ॥
डोला चलदिया है कन्नू से सोलह लेकर चले कहार ॥
खबर हुई जब चन्द्रकला को डोला यहां पर पहुँचा आय ॥
हुक्म सुनाया है बांदी को पानी गरम लेओ करवाय ॥
चोकी बिछ गई है चन्दन की जिसकी महक दूर तक जाय ॥
पैमा बैठ गई न्हाने को बांदी झुकी सामने आय ॥
बारह बांदी हैं खिदमत में जो पैमा को रही न्हिलाय ॥
कोई कोई थाम रही लोटे को कोई कलसे को रही उठाय ॥

कोई कोई भरदे गंगा जल से कोई ऊपर से दे है गिराय ॥
कोई कोई मलरही है टांगोंको कोई पिंडली को री दबाय॥
जितनी बांदी हैं पैमा की सारी लिपट गई एक साथ ॥
कोई कोई मल रही भुजदण्डोंको कोई छाती पर फेरे हाथ॥
न्हाय धोय कर फारिग होगई जल सूरजको दिया चढ़ाय ॥
कंघी लेली हाथी दांत की शीशा हलबी लिया उठाय ॥
जब कसवाया है मींडी को चोटी पड़ी कमर पर जाय ॥
जुल्फ छोड़ दीं हैं माथे पर जैसे नाग लपेटा खाय ॥
बाल बाल में सौ सौ मोती कुछ तारीफ करी ना जाय ॥
भरी सलाई है सुरमे की और आंखों में लिया लगाय ॥
पलकों ऊपर जड़े सितारे माथे बिन्दी लई लगाय ॥
टीका लटका जब माथे पर हीरा दमक दमक रह जाय ॥
कमर बन्द बांधा सिमरू का पतली कमर लपेटा खाय ॥
ताश बदली का चीरा है जो छाती में गई समाय ॥
चीर दक्खनी को ओढ़ा है जिस पर तारकशी का काम ॥
डिब्बा खोला फिर गहनेका लेकर गुरू अपने का नाम ॥
टिकड़ी पहनी काशमीर की जो गरदन में रही लहराय ॥
हार नौलखे को जब पहना वह टूंडी पर पहुँचा जाय ॥
रतनजड़ाऊ मोहन माला दुलड़ी तिलड़ी लई सजाय ॥
पहनी धुक धुकी जब पैमा ने ऊपर जुगनी लई सजाय ॥
सबके नीचे हंसली पहनी जैसे नाग लपेटा खाय ॥
रतन जड़ाऊ बिन्दी बैना जिसकी चमक दूर तक जाय ॥
जड़े फिरोजे चारों खूंट में चांद में ज्यों कुन्डल छा जाय ॥
झलका लगजा विरह्मी का अरबल काम छीन हो जाय ॥

ढेढ़ी पहनी जब पैमा ने मूसके पड़े कनौती आय ॥
बाली पहन लई कानों में पत्ते रहे बहार दिखाय ॥
रतन जड़ाऊ बाले पहने जो कानों में गये समाय ॥
सात मोहर की नथली पहनी तोता होठों पर लहराय ॥
झलका झलक रहा नथलीका चुन्नी दमक दमक रहजाय ॥
औरे घौरे लौंग कतकी जो जोबन को करें सवाय ॥
जब बुलाक पहना पैमा ने झोका लगा होट पर जाय ॥
बाले और बाजू बन्द पहने जो भुजदण्डों में गये समाय ॥
जोशन पहन लिये हाथों में और नौनगे लिये कसवाय ॥
पहन पछेली छनको पहना कंगन हाथ में लिये चढ़ाय ॥
चूहे दन्त की पौंहची पहनी जो पौंहचो में गई समाय ॥
परीबन्द पहने पैमा ने घुंघरू रहे लपेटा खाय ॥
बन्द सुनहरे और पचमेले बीच में पड़े घूमेढा आय ॥
पहनी नौगरी दोनों हाथ में पीछे मठिया लईं चढ़ाय ॥
बांवे अंगूठे में आरसी है बीच में शीशा करे बहार ॥
उंगली उंगली में छल्ले जिनमें बहुत से जालीदार ॥
गोल कड़े और बांकदार है झांवर बाजा रही बजाय ॥
जब पहना है पाजेबों को धरती पांव तले थर्राय ॥
दो दो जोड़ी कड़े छड़ों की जिनकी जाय दूर झंकार ॥
रामझोल और लच्छे पहने जो पैरों में करें बहार ॥
छल्ली छल्लों को पहना है और जंजीर लपेटा खाय ॥
बहुत सा गहना ऐसा पहना जिसका नाम जानता नाय ॥
सज गई बेटी हरनन्दन की जिसका रूप न बरना जाय ॥
शीश निवाया है माता को और डोले में बैठी जाय ॥

पीछे डोले हैं सखियों के आगे चलदी प्रेम कंवार ॥
करी तइयारी अब हंसा ने और घोड़े पर हुआ सवार ॥

हंसाराम का पैमा को गंगा न्हाने के लिये ले जाना और माता का गंगा न्हाने के लिये हुक्म देना

हाथ जोड़ कर कहा माता से मैं जननी का लेऊं बलाय ॥
आज्ञा देदे अब हंसा को मैं पैमा ना लाऊं न्हिलाय ॥
इतनी सुनकर रामकला ने फिर बेटे से कहा सुनाय ॥
राजी खुशी से बहन अपनीको तुम गंगाजी लाओ न्हिलाय ॥
चौकस रहियो तुम गंगा पर रहियो खबरदार हुशियार ॥
बड़ेबड़े राजा वहां पर आवें जिनके बलका नहीं शुम्मार ॥
लौट के जवाब दिया हंसा ने माता सुनलो कान लगाय ॥
बैठी रहियो तुम महलों में तुमको कौन पड़ी परवाय ॥
जब तक शीश रहे कन्धे पर कब्जा बनी रहे तलवार ॥
चाहे चढ़ आओ देश बंगाला काबुल गजनी और कन्धार ॥
चाहें चढ़ आओ दिल्ली वाला जिसका नाक पिथौरा राय ॥
मैं नहीं छोड़ूंगा डोले को तेरी नजर गुजारूं लाय ॥
वह मन माना जब माता के और हिरदेमें गई समाय ॥
देदी आज्ञा फिर बेटे को तुम गंगा पर पहुँचो जाय ॥
आज्ञा लेकर हंसा राम ने कम्पू की दी तुरत लगाय ॥
हुक्म सुनाया है माता को कम्पू डाले चलो लिवाय ॥

आगे पीछे सब डोले हैं हंसा चला बराबर जाय ॥
कोई घी के अरसे में दाखिल कम्पू में हो जाय ॥
बोला हंसा गनपतसिंह से जोधा सुनलो कान लगाय ॥
अब मत देर करो चलने में जल्दी कूच देओ करवाय ॥
यह मन मान गई जोधा के और हिरदे में गई समाय ॥
मारू बाजे को बजवा कर वहां से कूच दिया करवाय ॥
पीछे पीछे चले सिपाही आगे चले छड़ी बरदार ॥
बीच में डोला चन्द्रकला का जिसमें सोलह लगे कहार ॥
डबल कूच हंसा ने बोला और करता नहीं मुकाम ॥
देश मालवा आया रस्ते में वहां पर दिया फौजको थाम ॥
फटी पपीड़ी जब दिन निकला सोते उट्ठे नर और नार ॥
हंसा कह रहा है फौजों में अब चलने को हो तइयार ॥
चलते जावें बढ़ते जावें गंगा जी की सुरत लगाय ॥
एक दिना की मंजिल करके फिर गंगा पर पहुँचे आय ॥

हंसाराम और पैमा का गंगा पर पहुंचना

अच्छी जगह देख मेले से अपना कैम्प दिया डलवाय ॥
बीच में डेरा चन्द्रकला का हंसाराम ने दिया डलवाय ॥
फौजें उतरी हंसाराम की झन्डा लगा स्वर्ग में जाय ॥
कलसे लग रहे हैं सोने जिनकी लाल ध्वजा फर्राय ॥
किला बांध दिया है तोपोंका जिनकी जाय दूर तक मार ॥
पहरेदार खड़े डेरों पर नंगी सूंत रहे तलवार ॥
दहने हाथ पीछे डेरों के खाली जहां पड़ा मैदान ॥
वहां बाजार लगा चौपड़ का जिसमें कई लाख दुकान ॥

कदम कदम पर खड़े सन्तरी देखें चारों तरफ को जाय ॥
बीस कदम पर खड़े सिपाही बन्दूकों को रहे उठाय ॥
कोतवाल और फिरें दरोगा चौकीदार से कहैं पुकार ॥
जिनका पहरा लगा जहां पर रहियो खबरदार हुशियार ॥
इन्धे उन्धे पैदल पलटन दहने बांये शुतर सवार ॥
बन्दोबस्त लशकरका हो गया चारों तरफ फिरें असवार ॥
इनको छोड़ा उरली पार में परली पारमें देऊं सुनाय ॥
जैसे ठहरें मोहबे वाले उनका हाल देऊं बतलाय ॥
अब तुम हाल सुनो गंगाका जहांपर ऊदल ठहरा जाय ॥
फरश कराया है डेरों में और कन्नातें दी लगवाय ॥
पड़ो बिछौने सात रंग के और दरियाई गोट लंगाय ॥
एक तरफको कुरसी लग गईं बीचमें तख्त दिये बिछवाय ॥
मखमली गद्दे नर ऊदल ने तख्तके ऊपर दिये बिछवाय ॥
लगी कचहरी नर ऊदलकी अफसर ज्वान लिये बुलवाय ॥
कुरसी कुरसी पर शहजादे मूंढे मूंढे पर सरदार ॥
सात हात के सिंहासन पर बैठा धवल उदयचन्द राय ॥
दहनी भुजा पर नौले मुन्शी बांवे बैठा इन्दलसी राय ॥
तख्त के ऊपर अब ऊदल के सइयद बैठ सायने जाय ॥
तीनों चारों वहां पर बैठे और वे नाच रहे करवाय ॥
एक दिन बीता दो दिन हो गये कईरोज वहां बीते जाय ॥
अरसा होगया आठ रोजका दिन परभीका पहुँचा आय ॥
चिंता पण्डित को बुलवाया खुबी नाई को लिया बुलाय॥
डाली चौकी मलियागिरकी ऊपर दिया कालीन बिछाय ॥
ग्यारह मोती सोलह हीरे पण्डित को दी भेंट चढ़ाय॥

खोल पत्तरा छांट महूरत अब जल्दी से देओ सुनाय ॥
कैसी घड़ी हमारे ऊपर हमको हाल देओ बतलाय ॥
इतनी बात सुनी पण्डित ने उसके दिल में गई समाय ॥
पत्तरा खोल लिया पन्डित ने रामचन्द्र का ध्यान लगाय ॥
पहले पन्ने को घर लौटा और दूसरे पर गई निघाय ॥
तीसरे पन्ने को जब देखा पण्डित ने लिया हाथ उठाय ॥
बोला पण्डित नर ऊदल से मैं चत्री का लेऊं बलाय ॥
कहो तो कहदूं खुशामदकी और कहो सच २ दूं बतलाय ॥
हाथ जोड़ कर ऊदल बोला पण्डित सुनलो कान लगाय ॥
झूंठी बातों को मत कहियो झूठी सलाह भावती नाय ॥
जो कुछ शास्त्र में लिखा है हमको सच सच दो बतलाय ॥
चौथे पन्ने को जब लौटा और पांचवें को देखा जाय ॥
बोला पण्डित नर ऊदलसे अब तुम सुनलो कान लगाय ॥
यजुर्वेद ऋग्वेद को देखा शामवेद को देखा जाय ॥
वेद अथर्वन को जब देखा फिर पण्डित ने कहा सुनाय ॥
अश्वनी भरनी कृतका रोहनी मूल नक्षत्र पहुँचा आय ॥
छवों जगनी हर की पैड़ी खप्पर लिये खड़ी है हात ॥
चढ़ा शनीचर तेरी राशि पर और तुम रोवोगे दिन रात ॥
राहू केतू के डेरे हो गये बारहवीं पड़ी बृहस्पतति आय ॥
नों ग्रह अब तुम पर चढ़ गईं चौथी ढ़इया पहुँची आय ॥
पड़ी बारहवीं तेरी राशि पे अब तुम सुनलो कान लगाय ॥
बुरा लिखा है तुम दोनों को ऊदल और इन्दलसी राय ॥
चार घड़ीको चुपके हो जाओ तीसरे पपर करो अस्नान ॥
पहले न्हाने दो औरोंको इसमें तुम्हारा क्या नुकसान ॥

जो कुछ हाल लिखा शास्तरमें मैंने तुमको दिया सुनाय ॥
सुनके बातें अब पण्डित की ऊदल गया सनाका खाय ॥
इतनो बात सुनी इन्दल ने गुस्सा भरा बदन में जाय ॥
चौकी खींच लई पण्डित की उसे धरती में दिया गिराय ॥
बोला इन्दल चिन्तामन से पण्डित सुनलो कान लगाय ॥
छोटे मोटे के नहीं बेटे और कुछ नीच जात के नाय ॥
हम बेटे हैं रजपूतों के जो मरने से डरते नाय ॥
ओछी बानीको मत बोलो ओछी सलाह भावनीनी नाय ॥
इतनी सुनके पण्डित बोला छत्री गढ़ मोहवे के राय ॥
होनी होनी रहे है होकर भार बिन हुए टले है नाय ॥
होनी जल में सबसे भारी जो ऋषियों से टली है नाय ॥
जोकुछ लिखदिया त्रिलोकीने उसको कोईना सके मिटाय ॥
होनी बैठ गई ककई पर जब रघुवर को दिया बनवास ॥
एक दिन बैठ गई रावण पर सब लंका का होगया नाश ॥
एक दिन बैठी राजा नल पर घर तेली के हांकी पाट ॥
होनी बैठ गई कैरों पर कुनबा हो गया बारह बाट ॥
बहुत सा बरजा श्री कृष्ण ने उनकी आई समझमें नाय ॥
दुरयोधन अगवानी बनकर कुछ खातिर में लाया नाय ॥
भाले की अनी सुईका नकवा इतनी भूम देनेका नाय ॥
तुम क्या जानो राजनीत को अपनी गऊ चराओ जाय ॥
एक ना मानी श्री कृष्ण की सबका नाश दिया करवाय ॥
ऐसे ही बातें यहां पर होरहीं अब यहां खैर रहेगी नाय ॥
होनी आई नर ऊदल पर पण्डित बहुत रहा समझाय ॥
बात न मानी जब दोनों ने होनी गई मूंड पर छाय ॥

ऊदल बोला है तम्बू में अब क्यों रक्खी देर लगाय ॥
इच्छा हो रही है भोजन की नहाने चलो इन्दलसी राय ॥
यह मन मान गई कुनबे के और हिरदे में गई समाय ॥
मामा जागन बोले मुन्शी देवा और इन्दलसी राय ॥
सुरत लगाई है गंगा की ओर नहाने को हुये तइयार ॥
बोला ऊदल फिर मुन्शी से और देवा से कहा पुकार ॥
हीरा धींवर को बुलवालो और खूबी को लेओ बुलाय ॥
ले चलो वस्त्र तुम न्हाने को अब क्यों रक्खी देर लगाय
जब सब पहुँच गये गङ्गा पर और नहाने को हुए तैयार ॥
नहाय धोयकर जब फारिग हुए क्षत्री मोहबे के सरदार ॥
भर के लोटा गङ्गाजल का फिर सूरज को दिया चढ़ाय ॥
पूजा करके नारायण की फारिग हुआ उदयचन्द राय ॥
वहां से चलकर आये कम्प में और डेरों में पहुँचे आय ॥
बोला बेटा चोबदार का ओ रनजीत बनाफल राय ॥
धरी रसोई बहुत देर की पन्डित तुमको रहा बुलाय ॥
यह मन मान गई ऊदल के और हिरदे में गई समाय ॥
चढ़ी रसोई जिन डेरों में वहां पर गये बनाफल राय ॥
चौकी बिछ रही मलियागिरकी कलशे धरे सुनहरी जाय ॥
लेकर लोटा गङ्गाजल का धींवर खड़ा बराबर आय ॥
हाथ पांव धोकर ज्वानों ने फिर चौके में पहुँचे जाय ॥
भर भर लोटे गङ्गाजल के उनके धरे सामने लाय ॥
थाल परोसे हैं पन्डित ने वह सब बैठ बराबर जाय ॥
मुनवां चावल को परसा है थोड़ी खीर दई करवाय ॥
छत्तीस भोजन धरे थाल में और सब धरी मिठाई लाय ॥

पहला ग्रास धरा गऊओं का और अग्नि को दिया जिमाय
भोग लगाकर नारायण का खाने लगे बनाफल राय ॥
भोजन करके फारिग हो गये पान के बीड़े लिये चबाय ॥
चल पड़े क्षत्री अब डेरे से आमखास में पहुँचे जाय ॥
बिछे गलीचे तरह तरह के जिनमें जावें पांव समाय ॥
तकिये लगरहे हैं मखमल के जिन पर नजर जमे है नाय ॥
बोतल खुल रही हैं तम्बूमें प्याली भर भर पी रहे ज्वान ॥
बड़े बड़े जोधा हैं डेरों में क्षत्री शूरबीर बलवान ॥
पी पी दारू हुए नशे में उनको खबर रही कुछ नाय ॥
बहुत नशा इन्दल को हो गया उसके होश ठिकाने नाय ॥
रक्त गुलाबी नयना हो गये जैसे अग्नि ज्वाल हो जाय ॥
सुधबुध नहीं रही इन्दल को उसको खबर रही कुछ नाय ॥
ऐसे लोट गया तकिये पर जैसे कला कबूतर खाय ॥
कोई कोई हवा करे पंखे से कोई खुशबू को रहा सुंघाय ॥
और कोई थाम रहा गोदी में कोई छाती से रहा लगाय ॥
जब कम नशा हुआ इन्दल को उसे गद्दे पर दिया लिटाय
डाल दुशाला उसके ऊपर कहने लगा उदयचन्द राय ॥
बोले मुन्शी को ललकारा अब तुम सुनलो कान लगाय ॥
सारे राजा सैर करने गये हमने सैर करी है नाय ॥
पिला के दारू तूने इन्दल को और बेहोश दिया करवाय ॥
इन्दल लेट रहा डेरे में मुन्शी जलकर के सरदार ॥
अब मैं जाता हूं मेले को रहियो खबरदार हुशियार ॥
पहला पहरा लगा तुम्हारा मुन्शी सुनलो कान लगाय ॥
दूसरा पहरा है चाचा का जिसका नाम तलंसी राय ॥

गोद तुम्हारी में सौंपा है अपना कन्ठ पुतरिया लाल ॥
इतने आऊं मैं मेले में इसका रखना बहुत ख्याल ॥
नौले मुन्शी के पहरे में इन्दल सोवे पांव पसार ॥
इतनी कहकर ऊदल चल दिया और घोड़े पर हुआ सवार
ऊदल घूम रहा मेले में चारों तरफ देखता जाय ॥
जिसकी नजर पड़े ऊदल पर छत्री जाय सनाका खाय ॥
बड़े उपाठी मोहबे वाले जिनकी जात बनाफल राय ॥
बिना राड़ के यह नहीं माने झगड़ा करें किसी से जाय ॥
जो यहां बिगड़े किसी राजा से परभी फेर मिलेगी नाय ॥
हलचल मच गई है राजों में अब यहां खेर रहेगी नाय ॥
बढ़गया ऊदल अब आगे को दहनी खूंट में पहुँचा जाय ॥
तिरियां देखे हैं राजों की ओर ऊदल पर करें निघाय ॥
देख देख सूरत नर ऊदलकी ओर आपस में रही बताय ॥
जिस घर बेटा यह जन्मा है उनके रहे दिलद्दर नाय ॥
चलदिया ऊदल अब आगे को बांवीं खूंट की सुरत लगाय
डेरा देखा जब सुवना का दिल में बहुत खुशी हो जाय ॥
बढ़कर ऊदल अब आगे को और डेरे में पहुँचा जाय ॥
आता देखा जब नटनी ने जल्दी उठी फरेरा खाय ॥
देखके सूरत नर ऊदल की सुवना बहुत मगन हो जाय ॥
कुरसी डाल दई सुवना ने और ऊदल को लिया बिठाय ॥
सुवना बोली नट अपने से साजिन्दों को लेओ बुलाय ॥
आया छत्री मोहबे वाला इसको गाना देओ सुनाय ॥
यह मन मान गई नटवों के और हिरदे में गई समाय ॥
जल्द बुलाकर साजिन्दों को बाजा शुरू दिया करवाय ॥

तबला टुकन लगा तम्बू में नटनी उठी फरेरा खाय ॥
बजी सारङ्गी जब डेरे में सुबना गाना रही सुनाय ॥
दे दे झूमर नटनी नाचे जैसे मोर कला खा जाय ॥
खूब रिझाया नर ऊदल को ऊदल गया इश्क में छाय ॥
तेग का मारा कोई दम जीवे नैन का मारा तुरत मर जाय
चोट बुरी है दो नयनों की जिसका वार न खाली जाय ॥
कामन नार खड्ग से पतली जिसके लगे निकलजा पार ॥
अब यहां नयन लगे ऊदल के क्षत्री भूल जाय घर बार ॥
यह गत हो गई है ऊदल की उसको खबर रही कुछ नाय
अब मैं हाल लिखूं डेरे का जिसमें सोवे इन्दलसी राय ॥
बोला मुन्शी जब ताला से मैं सइयद का लेऊं बलाय ॥
खड़े खड़े मुझको पहरों हो गए ताकत रही बदन में नाय
इतनी सुनकर अब सइयदने उसे छाती से लिया लगाय ॥
दी शाबाशी है मुन्शी को अपना पहरा दिया जमाय ॥
बे खटके तुम रहो पहरे पर दहशत किसी बात की नाय ॥
इतनी सुनली जब मुन्शी ने फूला अङ्ग में नहीं समाय ॥
कर सलाम सइयद को मुन्शी अपने डेरे पहुँचा जाय ॥
जाकर सो गया वह गद्दे पर उसको खबर रही कुछ नाय
एक पहर बीता दो पहर बीते पहर तीसरा पहुँचा आय ॥
तीन पहर सइयद को होगये उसे सुस्ती ने लिया दबाय ॥
सोच समझकर फिर सइयद ने चोबदार को लिया बुलाय ॥
जाकर कहदे तू मुन्शी से ताला तुझको रहा बुलाय ॥
चोबदार डेरे में पहुँचा और नौले से कहा पुकार ॥
उठो मुन्शी तुम जल्दी से और नींद से हो हुशियार ॥

गुस्सा खाकर मुन्शी बोला चोबदार से कहा सुनाय ॥
क्यों चुटिया होनी ने पकड़ी क्यों जम चढे भुजों पर आय
कच्ची नींद में हमें जगाया क्या तेरी अकल गई बौराय ॥
मार के तेगा दो कर दूंगा तुझको जिन्दा छोडूं नाय ॥
इतनी सुनकर वहां से भागा पीछा फिर कर देखा नाय ॥
जो कुछ गुजरा था डेरोंमें सब सइयद को दिया सुनाय ॥
परदा खोल दिया डेरे का कमर के नीचे लिया दबाय ॥
निदरक होकर सइयद सोया उसको खबर रही कुछ नाय ॥
आंखे खुल गई जब इन्दल की बैठा हुआ इन्दलसी राय ॥
बैठा हो गया विस्तर पर से दिल में सोच सोच रहजाय ॥
चारों तरफ को इन्दल देखे ऊदल कहीं दीखता नाय ॥
झपट के कपड़ों को पहना हैं अपने लिए हथियार लगाय
भारी फिकर हुआ इन्दल को दिलमें करने लगा विचार ॥
डेरा काट दिया पीछे से और तम्बू के हो गया पार ॥
नाकहीं घोड़ा नाकहीं चाचा अब कहां गया उदयचन्दराय
चारों तरफ डेरों के ढूंडा चाचा कहीं दीखता नाय ॥
ना वह किसीसे बोला चाला ना कुछ किसीसे कहा सुनाय
एक हाथ में ढाल सम्भाली एक में ली तलवार उठाय ॥
ना घोड़े पर करी सवारी और ना सङ्ग में लिए जवान ॥
चला ढूंढने आप अकेला धर कर गुरु अपने का ध्यान ॥
डेरे डेरे फिरे ढूंडता और ऊदल को रहा पुकार ॥
बहुतसी तिरियां उसको देखे और इन्दलको रही निहार ॥
कोई बुलावे कोई उठावे कोई छाती से रही लगाय ॥
चूमे चाटे और पुचकारें उसे कुरसी पर लेंय बिठाय ॥

बोली तिरियां जब इन्दल से शहजादे का लेऊं बुलाय ॥
कौन देश का रहने वाला अपना पता देओ बतलाय ॥
क्या तेरा खोगया हैं गंगा पर मुंह पर रही उदासी छाय
कैसे यहां पर फिरे अकेला हमको हाल देओ बतलाय ॥
इस पर जबाव दिया इन्दल ने और त्रियों से कहा सुनाय
मेरे दुखो को मतना पूछो क्या असने में करो सहाय ॥
अटनेके धोरे एक पटना है जहां पर मोहबा लिया बसाय ॥
वहां का राजा चन्देला है और वहां बसें बनाफल राय ॥
बेटा हूं मैं मन्हलीक का और मछला का राजकुमार ॥
चचा हमारा नर ऊदल हैं जो घोड़े पर फिरे सवार ॥
फिरूं ढूंडता मैं चाचा को मेरा नाम इन्दलसी राय ॥
मुझे मिलादे जो चाचा से जिन्दा गुन भूलुंगा नाय ॥
इतनी बात सुनी इन्दल की तिरियां गई सनाका खाय ॥
बड़े जलइयों का बेटा है किसे डेरों में लिया बुलाय ॥
जो जो नाम सुने मोहबे का त्रियां सहसदम्म पड़ जाय ॥
वह भिड ततइयों का छत्ता है सारे लिपट गात से जाय ॥
सौ सौ हाथी का बल रक्खे जिसका नाम उदयचन्दराय ॥
जौन खेत में ऊदल गरजे हाथी खेत छोड़ भग जाय ॥
कांटा लगजाय जो कीकर का और मरघट ला लगे मसान
जौन किले पर मलखे गरजे उसका रहता नहीं निशान ॥
जो कोई थामेगा लौंडे को उसकी खैर रहेगी नाय ॥
ये गत हो जाय उसके गढ़ की मानो बसी भूमि परनाय ॥
पान मिठाई दई गोद में और इन्दल से कहा सुनाय ॥
हमको उसकी खबर नहीं है जिसका नाम उदयचन्द राय ॥

इतनी सुनकर इन्दल चलदिया आंसू गये आंख में आय ॥
किससे पूछूं मैं मेले में जो मिल जाय उदयचन्द राय ॥
ढूंडते ढूंडते पहरों हो गये पहर तीसरा पहुँचा आय ॥
नाकहीं खोज मिला चाचा का नाकहीं मिला उदयचन्द राय
प्यास के मारे व्याकुल हो गया चेहरा कमल गया मुर्झाय ॥
जहां किनारा था गंगा का वहां पर गया इन्दलसी राय ॥
लोटा लेकर घाट वाले से और जल पिया वहां पर जाय ॥
प्यास बुझाकर गङ्गाजल से खड़ा हो गया इन्दलसी राय ॥
नाव डूब रही थी ऐसा की और गङ्गा की लहरें खाय ॥
तम्बू तन रहा नाव के ऊपर कुछ तारीफ करी ना जाय ॥
और चिक चुट रही तम्बू में झालर मोतियों की लहराय ॥
नजर घूम गई जब रानी की और पैड़ी पर पड़ी निगाय ॥
सामने खड़ा देख इन्दल को रानी बहुत मगन हो जाय ॥
बोली रानी जब धींवर से मैं खेवा का लेऊं बलाय ॥
नाव फेर दो तुम दहने को हर की पैड़ी देओ लगाय ॥
छोड़ी बल्ली जब मल्लाह ने नाव को आगे दिया लगाय ॥
हर की पैड़ी खड़ा जहां इन्दल वहां नावको दिया लगाय ॥
लंगर छोड़ दिया मल्लाह ने और वह बैठ नाव पर जाय ॥
बोली बेटी हरनन्दन की और बांदी से कहा सुनाय ॥
कौन देश का शाहजादा है दिल में बहुत रहा घबराय ॥
बोली बांदी जब इन्दल से शहजादे का लेऊं बलाय ॥
कौन देश का रहने वाला अपना नाम देओ बतलाय ॥
इतनी सुनकर इन्दल बोला और बांदी से कहा सुनाय ॥
मैं बेटा हूं मंडलीक का मेरा नाम इन्दलसी राय ॥

शहर हमारा गढ़ मौहबा है मेरी जात बनाफल राय ॥
माता मेरी रानी मछला है चाचा लगे उदयचन्द राय ॥
इतनी सुनकर बांदी बोली और इन्दल से कहा सुनाय ॥
कैसे नयनों में पानी है मुंह पर रही उदासी छाय ॥
क्या तू डेरे को भूला है या रस्ते को भूला जाय ॥
कैसे यहां पर फिरे अकेला तेरे साथ मरद कोई नाय ॥
क्या तू बिचल रहा कुनबे से तेरी हो रही अकल खराब ॥
क्या कहीं लड़ आया चाचा से हमको जल्दी देओ जवाब ॥
ना मैं कुनबे से बिचला हूं नहीं चाचा से हुआ तकरार ॥
कई पहर से फिरूं ढूंडता मैं चाचा को रहा पुकार ॥
सोता छोड़ मुझे डेरे में जाने कहां गया उदयचन्द राय ॥
सारे मेले में देखा है अब तक पता चला कहीं नाय ॥
जो कोई मिलावे मुझे चाचा से उसको गहरा मिले इनाम ॥
कई पहर से फिरूं ढूंडता और ना रहा मुझे कुछ काम ॥
कान भनक रानी के पड़ गई दिल में बहुत मगन हो जाय
यही बहादुर है मौहबे का जिसको देवी गई बताय ॥
घर आया तू नाग न पूजे बाहर बमी पूजने जाय ॥
जिसके कारण मैं यहां आई वह दाता ने दिया बनाय ॥
ओखा बेटी बानासुर की जिसका रूप न बरना जाय ॥
अति स्वरूप कुमर सपने में देखा उसे इश्कने लिया दबाय
चार भंवरिया सङ्ग में लेकर बाकी कर गया कौल करार ॥
चौपड़ खेल गया सेजों पर गोट की दई झड़ाझड़ मार ॥
देखा पोता श्रीकृष्ण का ओखा बहुत खुशी हो जाय ॥
ब्याही जाऊं यादव कुल में और द्वारिका पहुँचूं जाय ॥

ऐसे ही देखा है इन्दलको मुझे वर मिला बनाफल राय ॥
मेरी इच्छा पूरी हो गई मुझे गंगा ने दिया मिलाय ॥
पेमा बोली फिर बांदी से बांदी सुनले कान लगाय ॥
जल्द बुलाओ इसे नाव पर अब क्यों रक्खी देर लगाय ॥
यह मन मान गई बांदी के और हिरदे में गई समाय ॥
झपट के बांदी अब नाव में एक किनारे पहुँची जाय ॥
बोली बांदी नाव के ऊपर और इन्दल से कहा सुनाय ॥
कूद नाव के अन्दर आजा तेरे चाचा से देऊं मिलाय ॥
लौट के जवाब दिया इन्दल ने त्रिया मत मारी करतार ॥
ऐसी बात कहीं गंगा पर मेरे सुनने को धिक्कार ॥
लौट जीभ को मुंह में देले नहीं तुझे जिन्दा छोड़ूं नाय ॥
मैं बेटा हूं राजपूत का मेरे जामे में नहीं समाय ॥
ना है चाचा तेरी नाव में नाहक मुझको रही बहकाय ॥
जिसके कहने से तू आई मेरे सामने लाओ बुलाय ॥
इतनी बात सुनी बांदी ने वह पेमा के पहुँची पास ॥
आप बुलाला तू क्षत्री को और वह खड़ा नाव के पास ॥
यह मन मान गई रानी के और हिरदे में गई समाय ॥
दक्खन खूंट के अब कोने में पेमा लगी बराबर जाय ॥

पेमा का इन्दल को नाव में बुलाना

बोली बेटी हरनन्दन की जिसका पेमा नाम कहाय ॥
जन्म के झूंठे मोहबे वाले उनके पूत हुआ कोई नाय ॥
तुम दीखो बेटे किसी बांदी के और बांदी के गोद खिलाय
नाम डुबोवे तू आल्हा का क्यों तू हमको रहा बहकाय ॥

मैंने सुना पिता अपने से उनकी कोई बराबर नाय ॥
बावनगढ़ में वह फिर आये सामना करा किसी ने नाय ॥
आल्हा गया था हिंगलाज को देवी पूजन शारदा माय ॥
बावनगढ़ के सब राजा थे और वहां गया पिथौरा राय ॥
जब वह पहुँच गये झांडे में सबने डेरे दिये लगाय ॥
बारह कोस तक शेर और हाथी आगे दाना बुरी बलाय य
दो रास्ते थे हिंगलाज के क्षत्री मोहबे के सरदार ॥
एक में दहशत मर जाने की दूसरे में पानी की मार ॥
बरस रोज का जो रस्ता था पानी कहीं मिले था नाय ॥
जो रास्ता था छः महीने का उसमें दहशत बहुत सिवाय ॥
खूनी हाथी रहें वहां पर और शेरों की नहीं शुमार ॥
इन दोनों से जो बच जाता उस पर पड़े गजब की मार ॥
आगे चौकी थी दाने की नकटा देव था बुरी बलाय ॥
नकटे दाने के मौंडे पर जिन्दा कोई बचे था नाय ॥
शेर हाथी नकटे दाने की वहां पर दहशत बहुत सिवाय ॥
सारे राजा उनसे डर गये जयचन्द और पिथौरा राय ॥
ऊदल मलखे और धांदू ने हाथी शेरों को डाला मार ॥
उन्हीं का भइया जो आल्हा है उसके बल का नहीं शुमार
इकला चला गया झांडे में और दाने को दी ललकार ॥
एक धड़ से दो धड़ कर डाले उसे जान से डाला मार ॥
पकड़के गरदन उस दानेकी खांडाबिजलिया लिया निकाल
गरदन काट दई खांडे से उसकी जान को किया हलाल ॥
जब सारे राजा हुए इकट्ठे जयचन्द और पिथौरा राय ॥
करा मशवरा सबने मिलकर और आल्हाको लिया बुलाय

बोले राजा सारे मिलकर और आल्हा से कहा सुनाय ॥
तुम्हें सरदार किया राजोंने आल्हा सुनलो कान लगाय ॥
इतनी कहकर चन्द्रकला ने फिर इन्दल से कहा सुनाय ॥
आल्हा ऊदल ऐसे नामी जिनका हाल कहा ना जाय ॥
क्यों बदनाम करे तू उनको नाहक हमको रहा बहकाय ॥
ना तू बेटा है आल्हा का छत्री सुनलो कान लगाय ॥
जो तुम बेटे हो आल्हा के तुरत नाव में जाते आय ॥
कड़वा पानी गढ़ मौहबे का जिन पर बात न झेली जाय ॥
कूद छलांग इन्दल ने मारी दाखिल हुआ नाव पर जाय ॥
देखी बेटी हरनन्दन की दिल में बहुत मगन हो जाय ॥
चार चार आंख हुई दोनों की फिर इन्दल ने कहा पुकार
मुझे मिलादे मेरे चाचा से बीते घड़ी घड़ी का वार ॥
देखी सूरत जब इन्दल की पेमा बहुत खुशी हो जाय ॥
बेशक बेटे तुम आल्हा के मेरे दिल में गई समाय ॥
खेलो बाजी मेरी नाव में अब क्यों रक्खी देर लगाय ॥
जो तुम बेटे हो आल्हा के मुझसे चौपड़ खेलो आय ॥
चाचा तुम्हारे को बुलवादूं दिल में अपने मत घबराय ॥
लौट के जबाव दिया इन्दलने रानी सुनलो कान लगाय ॥

पेमा और इन्दल का नाव में चौपड़ खेलना

खाली बाजी हम नहीं खेलें कुछ बाजी पर धरो लगाय ॥
चौपड़ बिछ गई अब दोनों की इन्दल बैठ सामने जाय ॥
हाथ के कंगन धरे पेमा ने गले का धरा नौलखा हार ॥
कान के कुण्डल धरे इन्दल ने हाथ के कड़े धरे उतार ॥

जो जो पांसे पेमा फैंके ओछे दाने पड़े हैं आय ॥
इन्दल पांसे को जब फैंके गुरू अमरा का ध्यान लगाय ॥
फैंके बारह पड़ें अठारह करता से रहा ध्यान लगाय ॥
जेवर जीत लिया रानी का जब खुश हुआ इन्दलसी राय
हाथ खेंच लिया है चौपड़ से और रानी से कहा सुनाय ॥
मुझे मिलादे मेरे चाचा से मैं रानी का लेऊं बलाय ॥
सुनकर बानी नर इन्दल की कहने लगी पदमनी नार ॥
सारा जेवर तुमने जीता और अब दई सार की मार ॥
अब की बाजी है जानों की जिसको देय शारदा माय ॥
फांसा लेकर रानी फेंके जिसका दाव पड़ा है नाय ॥
मनियादेव को जब सुमरा है और आल्हाको लिया मनाय
फांसा पकड़ा है इन्दल ने गुरु अमरा का ध्यान लगाय ॥
मनियादेव को जब सुमरा है और आल्हाको लिया मनाय
फांसा फेंक दिया इन्दल ने माता सुमर मछलदे माय ॥
फेंके बारह पड़े अठारह रखली लाज इन्दलसी राय ॥
जीती बेटी हरनन्दन की जब खुश हुआ बनाफल राय ॥
बैठा हो गया वह चौपड़ से नङ्गी ली तलवार उठाय ॥
पल्ला पकड़ लिया रानी ने और इन्दल से कहा सुनाय ॥
लेचल लेचल मुझे मोहबे को भांवर लीजो वहां डलवाय ॥
मैं नाम छोड़ दूं मां बापों का अपने लेचल सङ्ग लिवाय ॥
इस पर जबाव दिया इन्दल ने रानी सुनले कान लगाय ॥
होकर बेटी तु राजा की क्यों तेरी अकल गई बौराय ॥
ना डर है तुमको ठट्ठे का और फजियतसे डरती नाय ॥
चार विलायत में जाने हैं नामी जात बनाफल राय ॥

जो तुम क्वारी को लेजाऊं कुल मेरे को दाग लग जाय
भर भर बोली दुशमन मारें यह क्वारी को लाये भगाय ॥
कोई न जाने तुम्हें राजों की सब वहां नीच जात बतलाय
ब्याहकर लेजाऊंगा मैं तुमको जोमेरी जात बनाफल राय
बावन राजा छप्पन सूबे और चौरासी चढे नवाब ॥
वह दल टूटे तेरे ब्याह में तेरी हो रही अकल खराब ॥
इतनी सुनकर इन्दल बोला चन्द्रकला से कहा सुनाय ॥
अब मैं ढूंढ लेऊंचाचा को जहां कहीं मिले उदयचन्द राय

इन्दल को तोता बनाना

बोली बेटी हरनन्दन की और बांदी से कहा सुनाय ॥
किसके पहरे अब तू देखे अब क्यों रक्खी देर लगाय ॥
लाओ पिटारी मेरी विद्याकी निकला बाज़ हाथ से जाय ॥
इतनी बात सुनी बांदी ने उसके धरी सामने लाय ॥
जोगी झिलमिला की चेली है जिस पर विद्या बेशुम्मार ॥
देवी शारदा को सुमरा है गुरु अपने का किया विचार ॥
पढ़ पढ़ सरसों को मारा है अपनी विद्या दई चलाय ॥
बेहोश होकर इन्दल गिर गया उसको खबर रही कुछनाय
डोरा बांध दिया गरदन में तोता उसको लिया बनाय ॥
पकड़ के पिंजरे में डाला हैं खिड़की बन्द दई करवाय ॥
बना देख तोता अपने को इन्दल फड़क फड़क रह जाय ॥
बहुतसा जोर किया इन्दलने वहां कुछ पार बसाई नाय ॥
बोली बेटी हरनन्दन की और इन्दल से कहा सुनाय ॥
बैठे चैन करो पिंजरे मे तुमको कौन पड़ी परवाय ॥

दाल चने की तुम यहां लाओ खीर खांड मिलने की नाय
नाम छोड़ दो तुम मोहबे का मैं ले जाऊं सङ्ग लिवाय ॥
अब मैं तुमको संग ले जाऊं बलख बुखारे के दर्म्यान ॥
चचा तुम्हारे को देखूंगी कैसा शूरवीर बलवान ॥
इतनी सुनली जब इन्दल ने धक्का लगा कलेजे जाय ॥
जुल्म बीच गये परलो हो गई दुशमन तेरा बुरा होजाय॥
चाचा मर जाएगा गंगा पर लाखों के दे खून बहाय ॥
यह गज़ब कर देगा गंगा पर ऐसी हुई जगत में नाय ॥
सुनते ही ताऊ मरेगा मेरा माता मरे कटारी खाय ॥
मुझे छोड़दे तू पिंजरे से जिन्दा गुन भूलूंगा नाय ॥
सौ सौ बार इन्दल ने बरजा रानी एक मानती नाय ॥
बहुतसा जोर किया इन्दल ने पिंजरा उससे टूटा नाय ॥
बोली बेटी हरनन्दन की जिसका नाम पेमदे नार ॥
अब नहीं छोड़ूंगी पिंजरे से चाहे लाख धरो औतार ॥
लौट के जवाब दिया इन्दल ने रानी सुनले कान लगाय॥
जिनका बेटा मैं लगता हूं वह नर कहिये बुरी बलाय ॥
मार मवासे बावनगढ़ के सब मोहबे से दिए मिलाय ॥
छत्रपति और मुकुटबन्द थे सबके डाले मान घटाय ॥
पटहत भइया कोई ना छोड़ा सब हलजोता किएकिसान ॥
श्वेतचन्द और रामेश्वर तक सबका मेट दिया अरमान ॥
लाख कोस कोई ना मोहबाहे जो उन्हें खबर मिलेगी नाय
क्यों मरवावे है कुनबे को तेरे भइया को छोड़ें नाय ॥
अब भी छोड़दे तु पिंजरे से अब तक कुछ बिगड़ा है नाय
बहुतसा समझाया इन्दल ने पेमा एक मानती नाय ॥

बोली बेटी हरनन्दन की और हंस हंस कर रही बताय ॥
ऐसी बातों को मत बोलो मेरे जामे में नहीं समाय ॥
जब ललकारा है खेवा को मैं धींवर का लेऊं बलाय ॥
नाव खोलदो मेरी जल्दी से अब क्यों रक्खी देर लगाय ॥
इतनी सुनली है धींवर ने उसके दिल में गई समाय ॥
लंगर खेंच लिया नाव का और वह पड़ी धार में जाय ॥
तोते का पिंजरा लिया पेमा ने अपने संग में गई लिवाय
मोंहबे वालों की दहशत से अपने डेरे पहुँची नाय ॥

पेमा का बलख बुखारे पहुंचना

बीच धार में नाव को छोड़ा रस्ते में ना किया मुकाम ॥
सीधी पहुँची बलख बुखारे और ना कहीं पर किया मुकाम
महल बना था जहां पेमा का दाखिल हुई वहां पर जाय ॥
देख देख सूरत नर इन्दलकी फूली अङ्ग में नहीं समाय ॥
यहां की बातों को यहां छोड़ो अब ऊदल का सुनो बयान
आधी रात का जब अरसा हुआ उसे डेरोंका आया ध्यान
लई इजाजत है नटनी से और सुबना से करा बयान ॥
अब मैं जाता हूं डेरों को फिर किसी वक्त पहुँचूंगा आन
पांच अशरफी दी सुबना को और नटों को दिया इनाम ॥
पकड़ बकछुआ रसबेंदुल का हाथ में जाकर लई लगाम ॥
कूद बछेरे पर जा बैठा और डेरों की पकड़ी राय ॥
घड़ी ना गुजरी ना पल बीता दाखिल डेरों में हो जाय ॥
पहरेदार डेरों में सोवें किसी को खबर किसी की नाय ॥
यह गत देखी जब ऊदल ने गुस्सा भरा बदन में जाय ॥

इन्दल वाले अब डेरे को सीधा गया उदयचन्द राय ॥
जब वहां फटा देखा डेरे को धक्का लगा कलेजे जाय ॥
चाचा चाचा को ललकारा चाचा मेरे तलन्सी राय ॥
कौन से डेरे में सोवे है पोता तेरा इन्दलसी राय ॥

इन्दल का डेरों में न मिलना

इतनी सुनकर सइयद उट्ठा आंखे मींड़ मींड़ रह जाय ॥
अन्दर डेरे में सोवे है इसकी खबर हमें कुछ नाय ॥
पहला पहरा था मुन्शी का जिसका नाम नवल चौहान ॥
दूसरा पहरा लगा हमारा इन बातों को निश्चय जान ॥
पांच पहर रक करी चौकसी ऊदल सुनले कान लगाय ॥
पहर छठा जब लगा गुजरने हमें नींद ने लिया दबाय ॥
कमर के नीचे परदा दाबा भीतर कोई न जाने पाय ॥
बन्दोवस्त डेरे का करके और मैं सोया पांव फैलाय ॥
डेरे डेरे में देखे हैं ऊदल और तलन्सी राय ॥
होश बिगड़ रहे हैं ऊदल के सइयद बहुत रहा घबराय ॥
बोले मुन्शी को ललकारा सब सरदार लिए बुलवाय ॥
जल्दी देखो अब इन्दल को अब क्यों रक्खी देर लगाय ॥
तुरत बुलाकर अब देवा को अपने सङ्ग में गया लिवाय ॥
अपने सब डेरों में देखा इन्दल कहीं मिला है नाय ॥
कोई चला गया पूरब को कोई पच्छिम में पहुँचा जाय ॥
और कोई चला गया दक्खन को इन्दलकी दी ढूंढ मचाय
ऊदल पहुँच गया नौलखा में जहां दरबार पिथौरा राय ॥
करी सलामी जब धांदू को और वह ले गया शीश चढ़ाय

कौली भर कर धांदू बोला भइया मेरे उदयचघण्द राय ॥
कैसे नयनों में पानी है कैसे रही उदासी छाय ॥
मुझे बतादे तू जल्दी से किस बिपता ने घेरा आय ॥
इतनी सुनकर ऊदल बोला धांदू सुनले कान लगाय ॥
तेरा बैर लगा आल्हा से हमसे बैर लगा कुछ नाय ॥
कैसे दुबकाया इन्दल को अब तुम उसको देओ बताय ॥
इतनी सुनकर धांदू बोला और ऊदल को दिया जवाब ॥
कैसे अकल बिगड़ी गंगा पर क्या तूने पीली आज शराब ॥
जब से जनम लिया इंदल ने मैंने उसको देखा नाय ॥
कैसी सूरत का इन्दल है हमको जल्दी दो बतलाय ॥
हमारे डेरों में नहीं आया उसकी खबर हमें कुछ नाय ॥
इतनी सुनकर ऊदल बोला भइया मेरे चन्देले राय ॥
तुम भी साथ अब चलो हमारे और ढूंढने में करो सहाय ॥
अब तुम ढूंढ देओ इन्दल को जिन्दा गुन भूलुंगा नाय ॥
वक्त पड़े भइया को जांचे तिरिया टोटे में जांची जाय ॥
अब पड़ गया वक्त हमारे ऊपर भइया इसमें करो सहाय ॥
यह मन मान गई सइयद के और हिरदे में गई समाय ॥
पांचों कपड़ोंको पहना हैं और सब लिये हथियार लगाय ॥
दोनों चल दिये हैं डेरों को जहां से गया इन्दलसी राय ॥
सारी फौजें करी इकट्ठी और सब अफसर लिए बुलाय ॥
हुक्म सुनाया है धांदू ने नाकेबन्दी दो करवाय ॥
थोड़ी फौज भेजो पार को दोनों रस्ते घेरो जाय ॥
जो कोई राजा घर को जावे उसकी लेओ तलाशी जाय ॥
जो कोई तलाशी दे राजी से नाराजी से छोड़ो नाय ॥

बहुतसी फौज लगी नाकों पर सारे रस्ते दिये थिरवाय ॥
जो कोई राजा जाय गंगा से उसको जाने दीजो नाय ॥
बोला धांदू जब ललकारा सफरमैना को लेओ बुलाय ॥
जाल डाल दो गंगाजी में अब क्यों रक्खी देर लगाय ॥
इन ही बातों के अरसे में वहां पर सइयद पहुँचा आय ॥
करी सलामी है धांदू ने चरनों में दिया शीश नवाय ॥
कमर थपक कर जब धांदूकी उसे छाती से लिया लगाय ॥
यही धरम है रजपूतों का जो बिगड़ी मे करै सहाय ॥
करा मशवरा सबने मिलकर और आपस में करी सलाह ॥
तुम ही बड़े हो गढ़ मोहबे में दूसरा कोई और है नाय ॥
जतन बतादो अब जल्दी से कैसे मिले इन्दलसी राय ॥
बोला सइयद जब ऊदल से बेटा सुनों बनाफल राय ॥
काम बने है सब राजी से नाराजी से बनता नाय ॥
डेरे देखो सब राजों के अब क्यों रक्खी देर लगाय ॥
जब यह बात सुनी चाचा से सबके दिल में गई समाय ॥
ढेवा धांदू दोनों चल दिये और संग चला उदयचन्द राय ॥
तीनों बढ़ गये अब आगे को जहां पर कैद पिथौराराय ॥
जाकर जगाया पिरथीराज को सारा हाल सुनाया जाय ॥
सुनकर बातें नर ऊदल की घबरा गया पिथौरा राय ॥
बोला पिरथी जब ऊदल ने और ढेवा से कहा सुनाय ॥
क्या तुम सब सो गये डेरों में पहरा कोई लगा था नाय ॥
इकला बेटा तुम चारों के और कोई पूत दूसरा नाय ॥
कहो तो मैं भी चलूं साथ में और गंगा पर ढूंढू जाय ॥
इतनी सुनकर धांदू बोला राजा सुनो पिथौरा राय ॥

पहले देखो अपने डेरे में और ऊदल को संग लिवाय ॥
यह मन मान गई पिरथी के उसने उजर किया कुछ नाय ॥
सारे डेरों को देखा है इन्दल कहीं मिला है नाय ॥
फिर जा देखे जयचन्द को और संग लिया लखन्सी राय ॥
वहां भी लौंडा नहीं मिला है जिसका नाम इन्दलसी राय ॥
अब जा पहुँचे हैं जोगा के और भोगा को लिया उठाय ॥
इन्दल आया है क्या डेरे में तुमने उसको लिया बुलाय ॥
इतनी सुनकर जोगा बोला और भोगा से कहा सुनाय ॥
इन्दल यहां पर नहीं आया है जीजा सुनलो कान लगाय ॥
हमने ना देखा इन्दल को उसकी खबर हमें कुछ नाय ॥
इतनी सुनकर ऊदल बोला तुमसे कहूं धरम की बात ॥
हमको यही ख्याल था अब तक इन्दल गया तुम्हारे साथ ॥
इतनी सुनकर जोगा बोला ऊदल सुनो हमारी बात ॥
जल्दी ढूंढो तुम इन्दल को हम भी चलें तुम्हारे साथ ॥
जोगा भोगा दोनों हो लिए दलपतसिंह के पहुँचे जाय ॥
आधीनी से सब बोले हैं राजा धौलागढ़ के राय ॥
हमने सुना है बेटा आल्हा का तुमने डेरेमें लिया सुलाय ॥
इतनी सुनकर दलसिंह बोला सब ज्वानों से कहा सुनाय ॥
हमने नहीं देखा लड़के को जिसका नाम इन्दलसी राय ॥
खाया तमाचा जोगा बोला राजा धौलागढ़ के राय ॥
मुझे दिखादो अपने डेरे जो मिल जाय इन्दलसी राय ॥
इतनी सुनकर दलसिंह बोला तुम ऊदल को लेओ बुलाय ॥
डेरे देख लेओ तुम सारे इसमें उजर हमें कुछ नाय ॥
सारे डेरों का अब देखो यहां नहीं मिला इन्दलसी राय ॥

अब सब मिलकर चले वहां से माहिपाल के पहुंचे जाय ॥
उनके सब डेरों में देखा जब नहीं मिला इन्दलसी राय ॥
सारे मिलकर चले वहां से राघोमच्छ के पहुँचे जाय ॥
देखा संग में नर ऊदल को राजा गया सनाका खाय ॥
बोला राजा है ऊदल से यहां पर कैसे पहुँचे आय ॥
इस पर जवाब दिया ऊदल ने हमको इन्दल देओ बताय ॥
इतनी सुनकर राजा बोला और ऊदल से कहा सुनाय ॥
यहां पर इन्दल नहीं आया है जो हम तुमको दें बतलाय ॥
डेरे लोहा के में पहुँचे जो है गजराजा का लाल ॥
ढूंढने इन्दल को आये हैं उनसे कह दिया सारा हाल ॥
आधीनी से आल्हा बोला और मोती से कहा सुनाय ॥
यहां पर इन्दल नहीं आया है जीजासुनो उदयचन्द राय ॥
सोच के चल दिये अपने दिल में नरपतसिंहके पहुँचेजाय ॥
डेरे देखे धरमसिंह के वहां भी पता चला कुछ नाय ॥
गढ़ पूना राजा के पहुँचे सारे गये सनाका खाय ॥
डेरे देख लिये राजा के वहां नहीं मिला इन्दली राय ॥
जाकर पहुँचे कण्ठीसिंह के उसके डेरों को देखा जाय ॥
वहां नहीं पता लगा इन्दल का मानसिंह के पहुँचे जाय ॥
देख भाल डेरों को चल दिये जम्बूराज के पहुँचे जाय ॥
डेरे देख लिये जम्बू के इन्दल उन्हें मिला कहीं नाय ॥
जंग सियाले के डेरे में जब नहीं मिला इन्दलसी राय ॥
भीकमपुर के डेरे देखे टीकमपुर के लिये ढुंढवाय ॥
डेरे कड़ंगा के में पहुंचे वहां इन्दल को देखा जाय ॥
पता नहीं चला इन्दल का रतीभान के पहुँचे जाय ॥

लई तलाशी रतीभान की जो हैं भूनागढ़ का राय ॥
उसके सारे डेरे देखे वहां नहीं मिला इन्दलसी राय ॥
फिर पहुँचे हैं सूरजसिंह के जो हैं मैनपुरी का राय ॥
वहां नहीं मिला उन्हों को इन्दल कवरसिंहके पहुँचे जाय ॥
वहां भी इन्दल नहीं मिला हैं फतहसिंह के ढूंडा जाय ॥
फूलसिंह के डेरे देखे जीतसिंह के पहुँचे जाय ॥
सारे डेरों को देखा हैं इन्दल कहीं मिला है नाय ॥
अब सारे मिलकर चले वहां से भौरीसिंह के पहुँचे जाय ॥
सूरत देख के नर ऊदल की भौंरीसिंह ने कहा सुनाय ॥
आओ बहादुर गढ़ मोहबे के ओ रनजीत बनाफल राय ॥
कैसे आये मेरे डेरे में हमको हाल देओ बतलाय ॥
इतनी सुनकर नर ऊदल ने भौंरीसिंह से कहा सुनाय ॥
हमने सुना है तेरे डेरों में मेरा सोवे इन्दलसी राय ॥
खाय खाय कस्में अपने कुनबेकी जब राजाने कहा सुनाय ॥
नाम सुना सूरत ना देखी जिसका नाम इन्दलसी राय ॥
सारे डेरे उसके देखे इन्दल कहीं मिला है नाय ॥
छौनागढ़ में फिर डेरों की ऊदल लई तलाशी जाय ॥
वहां भी इन्दल नहीं मिला है उलटे फिरे बनाफल राय ॥
पटियाला काबुल और पिंडी सबके डेरे ढूंडे जाय ॥
वहां भी इन्दल नहीं मिला है ऊदल बहुत रहा घबराय ॥
जितने राजा थे गांजर के सबके डेरे देखे जाय ॥
बारह कोठी मारवाड़ की सबमें ढूंढ मचाई जाय ॥
सब राजों के डेरे देखे इन्दल कहीं मिला है नाय ॥
गुस्सा खाकर नर ऊदल ने हर की पैड़ी ढूंडा जाय ॥

जाल डाल रहे जो गंगा में उनसे कहा उदयचन्द राय ॥
सारी गंगा में तुम देखो जो मिल जाय इन्दलसी राय ॥
ढूंड के इन्दल को जो लावे मुंह का मांगा मिले इनाम ॥
एक बार में सौ सौ कूदो इसमें नहीं देर का काम ॥
डाल के जालों को देखा है गोताखोरों ने जान लगाय ॥
इन्दल नहीं मिला गंगा में उसका पता लगा कहीं नाय ॥
उरली ार और परली पारके सब राजोंमें ढूंडा जाय ॥
कहीं ना पता चला इन्दलका और ना मिला इन्दलसीराय ॥
सोच समझकर धांदू बोला और ऊदल से कहा सुनाय ॥
फौजें ले आऊं मैं अपनी और तुम अपनी लाओ सजाय ॥
मेला घेर लेओ अब सारा बाहर कोई न जाने पाय ॥
रात बीत जाय जो गङ्गा पर वक्त परभी का पहुँचे आय ॥
इतनी सुनकर ऊदल चल दिया और डेरों में पहुँचा जाय ॥
धांदू आया वहां से चलकर फौजों को दिया हुक्म सुनाय ॥

ऊदल और धांदू का इन्दल को सब राजाओं के डेरों में देखना

अस्सी हजार फौज धांदू की अपने लाया सङ्ग लिवाय ॥
इन्धे फौज चली ऊदल की दोनों मिलीं बराबर आय ॥
बोला धांदू सब ज्वानों से तुम योद्धा के सुनो सवार ॥
आज बिगड़ गई मेरे भइया की हरिद्वार के बीच मझार ॥
घेर के मेला नरघा करलो यहां का कुत्ता न बाहर जाय ॥
जो कोई राजा केड़ा बोले उसका दीजो खोज मिटाय ॥

पूत पड़ोसी घोरे चहिए बेटी अच्छी है सुसराल ॥
सभा बिरानी में दो चाहिये एक माई के दो लाल ॥
एक से बिगड़े जो खेतों में दूसरा ठोक देय तलवार ॥
इकला घिर जाय रनखेतों में उसका लगे वार ना पार ॥
ऐसा घेर लिया मेले को हंसली ने पकड़ी हो नाड़ ॥
लंका घेरी रामचन्द्र ने रावण का दिया होश बिगाड़ ॥
ऊदल धांदू की फौजों में दल की नहीं पड़ें शुमार ॥
पैदल से तो पैदल मिल गये आगे बाग थाम असवार ॥
दल बादल सब हाथी हो गये हौदे से हौदा मिल जाय ॥
सारे मेले को घेरा है और चौबन्दी ली करवाय ॥
एक दरवाजे को छोड़ा है जिससे मेला बाहर जाय ॥
दहनी भुजा पर धांदु होगया बांवे खड़ा उदयचन्द राय ॥
भाला दे दिया है फांदू को और ऊदल ने कहा सुनाय ॥
जिसका डोला बाहर निकले उसका परदा देओ हटाय ॥
लेओ तलाशी सब डोलों की बिना तलाशी कोई न जाय ॥
गोर से देखो तुम इन्दल को ना कोई लेजाय सङ्ग लिवाय ॥
हौलदली मेले में पड़ गई चकियाचाल दई मचवाय ॥
कान भनक मछला के पड़ गई खोया गया इन्दलसी राय ॥

माहिल का आल्हा से चुगली खाना

यह गत हो गई महिला भूप की फूला अङ्ग समाता नाय ॥
जिन शोगों को मैं ढूंढ़ूं था सो दाता ने दिया बनाय ॥
ऐसी घड़ी नहीं मिलने की फिर यह दाव मिलेगा नाय ॥
झपट के कपड़े माहिल पहने पांचों लिये हथियार लगाय ॥

कूद सांडनी पर चढ़ बैठा और मोहवे की पकड़ी राह ॥
बगल बगल कर चली सांडनी तलवे धूल लगे है नाय ॥
रात दिना की अब मन्जिल में गढ़ मौहवे में पहुँचा जाय ॥
लगी कचहरी जहां आल्हा की दाखिल हुआ वहांपर जाय ॥
छोड़ सांडनी दई चौक में आमखास में पहुँचा जाय ॥
कुरसी डाल दई माहिल को और आल्हाने लिया बिठाय ॥
बोला आल्हा जब माहिल से ओ महाराज महलिया राय ॥
कहां से आये कहां जाओगे बहुत दिनों में पहुँचे आय ॥
केसे नयनों में पानी है मुंह पर गई उदासी काय ॥
इतनी सुनकर माहिल बोला आल्हा सुनलो कान लगाय ॥
अब हम आये हरिद्वार से गङ्गा करने गये स्नान ॥
इतनी सुनली जब आल्हा ने फिर माहिल से करा बयान ॥
राजी खुशी कहो गंगा की केसे न्हाये उदयचन्द राय ॥
इतनी सुनकर माहिल बोला ओ महाराज बनाफल राय ॥
हाल न पूछो तुम गंगा का हमसे हाल कहा ना जाय ॥
जो सच कहूं तो जग रूठे है और बिन कहे रहा ना जाय ॥
जिसके बंगले में पहुँचू हूं मुझको चुगल बतावें हाल ॥
मैंने बरजा तेरे भइया को मत इन्दल को करे हलाल ॥
एक न मानी हाय माहिल की उसे जान से डाला मार ॥
काट के सिर तेरे इन्दल का गंगाजी में दिया बहाय ॥
जैसा काम किया ऊदल ने ऐसा हुआ जगत में नाय ॥
इतनी बात सुनी आल्हा ने गुस्सा भरा बदन में जाय ॥
सोच समझ कर आल्हा बोला इसने हम पर डाला जाल ॥
बान पकड़कर अब मासिलका मेरे बंगलेसे देओ निकाल ॥

जन्म का दुशमन ये माहिल है बिन चुगली के चूके नाय ॥
फूट डालने को भइयों में चुगली खाई यहां पर आय ॥

आल्हा का माहिल को धक्का दिलवाकर बंगले से बाहर निकाल देना

इतना प्यारा ना आल्हा को जितना लगे उदयचन्द राय ॥
ऐसा काम करा ना होगा माहिल झूठ रहा बहकाय ॥
देदिया धक्का अब माहिलको और बङ्गलेसे दिया निकाल
यहां की बातों को यहां जोड़ो अब गङ्गा का सुनलो हाल
चारों तरफ वहां मेले में फौजें फिरें उदयचन्द राय ॥
दहशत गालिब है ऊदल की कोई कान हिलावे नाय ॥
परभी से पहले सब राजों ने अपने डेरे दिये लदवाय ॥
ऐसी परभी हम नहीं न्हावें यहां पर जान बचेगी नाय ॥
सारे राजा चले गङ्गा से सबने कूच दिया करवाय ॥
जिनके डोले बाहर निकलें धांदू भाला दे हैं चलाय ॥
परदा लौट दे है ऊपर को जिनमें बैठी पदमनी नार ॥
जिन त्रियों के पांव ना देखे उनका मुंह देखे संसार ॥
धांदू ऊदल की दहशत से किसी ने नहीं किया इन्कार ॥
जो जो नाम सुने ऊदल का कब्जा छूट जांय तलवार ॥
डोले आये जब सांडों के कड़िया हाथी पर असवार ॥
साठ हजार लशकर कड़िया का दलकी नहीं पड़े शुम्मार ॥
भाला चलाया जब धांदू ने और कड़िया ने देखा जाय ॥
गरजा कड़िया जब हौदे में धांदू खबरदार हो जाय ॥

क्यों कम्बख्ती ने घेरा है सर पर काल पुकारा आय ॥
हाथ चलावे जो डोले पर अभी जमघाट देऊं पहुँचाय ॥
इतनी सुनली जब ऊदल ने गुस्सा भरा बदन में जाय ॥
झपटके बढ़गया वह आगे को और कड़िया पर पहुँचा जाय
पिछली टाप रही धरती में दो हौदे से दई मिलाय ॥
सूंता तेगा बरधवान का जिसका वार न खाली जाय ॥
दांत बतीसों को धर दाबा और कड़िया पर दिया चलाय ॥
कड़ियां छूट गई बख्तर की और पंजे में टहकी जाय ॥
गद्दी कट गई है मखमल की ढाल के टुकड़े दिए उड़ाय ॥
बोला कड़िया जब ऊदल से मैं जीजा का लेऊं बलाय ॥
कैसे धांदू के बदले में हम पर तेगा दिया चलाय ॥
इस पर जवाब दिया ऊदल ने अब तुम सुनो कहूंगा राय ॥
एक दिन चढ़गये तेरी मांडों पर बापका दाव लियाथा जाय
मार के मांडों नरधा करदी दिन में लूट लई करवाय ॥
निकली त्रियां तेरी महलों से और जंगल में दुबकी जाय ॥
ऊदल मलखे की दहशत से जंगल में बेर बीन के खाय ॥
कब से कड़िया मनबढ़ हो गया कब से परदा लिया कराय
ब्याह काज गङ्गा मेले में परदा लगा किसी से नाय ॥
पीछे ढूंढूंगा इन्दल को तेरा खटका देऊं मिटाय ॥
लौटके जवाब दिया कड़ियाने मेरी तकसीर माफ होजाय ॥
मुझको खबर नहीं थी इसका इन्दल अभी मिला है नाय ॥
बोला कड़िया सब ज्वानों से क्षत्री सुनलो कान लगाय ॥
बनी बनी के सब साथी हैं और बिगड़ी का कोई नाय ॥
आज बिगड़गई मेरे जीजा की अब कोई धीर बन्धइया नाय

झण्डा गाड़ देओ गंगा पर आगे कदम धरूंगा नाय ॥
उस दिन कूच करूं गंगा से जिस दिन मिले इन्दलसी राय
सारे मेले में ढूंडा है कहीं नहीं मिला इन्दलसी राय ॥
क्या तू डूब गया गंगा में क्या धरती में गया समाय ॥
झाड़ और झांडों को खुदवाकर गंगा को दिया बन्द कराय
जाल डालकर गंगाजी में इन्दल खूब लिया ढुंडवाय ॥
खबर दई है जब मकरन्द को वह ऊदल पर पहुँचा आय ॥
क्यों घबरावे मोहबे वाले मैं जीजा का लेऊं बलाय ॥
जितना लशकर है मकरन्दका जहां चाहे वहां देओ झुकाय
कौनसा चत्री हैं मेले में जिसने इन्दल लिया छिपाय ॥
काठ का घोड़ा सेल शनीचर हम पर है जादू की मार ॥
जिस राजा के इन्दल पावे उसकी देख लेऊं तलवार ॥
बोला धांदू जब इन्दल से भइया सुनो उदयचन्द राय ॥
यों नहीं खोज चले इन्दल का चाहे सौ सौ करो उपाय ॥
काढ़ कुण्डली लो गंगा पर गङ्गाजली देओ धरवाय ॥
सब राजों को वहां बुलवाकर सबसे वचन लेओ भरवाय ॥
इतनी बात सुनी धांदू की सबके दिल में गई समाय ॥
काढ़ कुण्डली गङ्गाजी पर गङ्गाजली धरी मंगवाय ॥
जितने राजा थे गङ्गा पर सबको वहां पर लिया बुलाय ॥
बोला ऊदल जब ललकारा सब राजों से कहा सुनाय ॥
जिसने देखा हो इन्दल को हमको जल्दी दो बतलाय ॥
लौट के जबाब दिया राजों ने ओ रनजीत बनाफल राय ॥
बदन छिपावे कोढ़ी होवे उनको मारे गङ्गा माय ॥
जो कोई झूठ कहे पंचों में उसकी कुली नरक में जाय ॥

हमने नहीं देखा इन्दल को इसमें झूठ जरा है नाय ॥
इतनी सुनल्ली सब राजों से ऊदल सोच सोच रह जाय ॥
सेला पटक दिया धरती में और सब फेंक दिये हथियार ॥
हिड़की देकर ऊदल रोया और मरने को हुआ तइयार ॥
यह गत देखी जब राजों ने फिर ऊदल से कहा सुनाय ॥
क्यों तू विघ्न करै गङ्गा पर क्यों ना राम को लेय मनाय ॥
ऊदल गिर गया है धरती पर अपनी जान को रहा गंवाय
ऐसा विघन किया ऊदल ने सबका हिला कलेजा जाय ॥
इन्दल इन्दल कहकर रोवे बांका धवल उदयचन्द राय ॥
अरे विधाता अलख निरंजन मेरे बेटे को देओ मिलाय ॥
या तो संग इन्दल को लेजाऊं और नहीं मोहबे जाऊं नाय
किसको बेटा कहकर बोलु किसे छाती से लेऊं लगाय ॥
चार घरों में एक बेटा था सो दाता ने लिया छिपाय ॥
कौन अधरमी था गङ्गा पर जिसने दीवा दिया बुझाय ॥
एकतो धक्का उसको लगजाय जिसका सावनमें घर ढःजाय
दूसरा धक्का उसको लगजाय जिसकी लेंन भैंस मर जाय ॥
तीसरा धक्का उसको लगजाय जिसकीभरी चिलम गिरजाय
पूरा धक्का उसको लग जाय जिसका ज्वान पूत मरजाय ॥
होनी आ गई अब ऊदल पर होनी डाले जुल्म गुजार ॥
इन्दल खप गया यहां गङ्गा पर मोहबे मरे कुटम परिवार ॥
मुझको मना किया पण्डित ने पहले मत कर तू स्नान ॥
एक ना मानी मुझ दुखियाने यहां मौत का हुआ सामान ॥
किस्मत फूट गई ऊदल की विपता दई राम ने डाल ॥
अबमैं जिन्दा नहीं रहने का अब यहां मेरा आया काल ॥

सारे राजा जाओ यहां से अपना अपना कूंच कराय ॥
जैसी बीचेगी गङ्गा पर वैसी सहे उदयचन्द राय ॥

सारे राजों का परभी से पहले दिन बिना स्नान किये ही घर चले जाना

इतनी सुनकर नर ऊदल से सबने मिलकर करी सलाम ॥
अब तुम निकल जाओ मेले से अपना अपना कूच कराय ॥
ये कपटी राजा हैं मौहबे के घाती जात बनाफल राय ॥
जो ऊदी खबर लगे मलखे को और वो यहांपे पहुँचे आय ॥
वह नहीं जाने दे गङ्गा से सबकी लेगा कैद कराय ॥
गोल फूटगया हल्ला पड़गया सब दल तिड़ीबिड़ी होजाय ॥
मेला उखड़ गया गङ्गा से सबने कूच दिया करवाय ॥
हुक्म सुनाया है कड़ियाको और मकरन्दको दिया सुनाय ॥
तुम भी चले जाओ गंगा से अपने किले संवारो जाय ॥
सारा मेला वहां से चल दिया इकला रहा उदयचन्द राय ॥
बोला ऊदल जब मुन्शी से नोले मैंनपुरी चौहान ॥
तुम भी चले जाओ मौहबे को मैं यहां अपने तजूं प्रान ॥
हाथ जोड़कर मुन्शी बोला ओ महाराज बनाफल राय ॥
पहले सिर मुन्शी का काटो पीछे जाओ कूंच कराय ॥
भइया जानकर तुम्हे छोड़ेगा मुझे कोल्हू में दे पिलवाय ॥
जो मर जाते रन पर चढ़कर रहता कोई परेखा नाय ॥
बिन आई मौत मरें मौहबे में नाहक जान हमारी जाय ॥
भरली कौली है ऊदल ने और छाती से लिया लगाय ॥

नाकहीं खोज चला इन्दल का हिम्मत गई मेरी यहां हार ॥
यही यक़ीन पड़े आल्हा को बेशक इन्दल डाला मार ॥
मार कटारी मैं मर जाऊं अपनी दूंगा जान गंवाय ॥
सारे मिलकर लहाश को फूंको गंगा में दो फूल बहाय ॥
बेशक चले जाओ मोहबेको और आल्हा से कहियो जाय ॥
इन्दल मार दिया ऊदल ने और गङ्गा में दिया बहाय ॥
इतनी सुनकर सद्यद बोला और नोले से कहा सुनाय ॥
सारे साथ चलो तुम यहां से और मोहबे में पहुँचो जाय ॥
या इन्दल मोहबे पहुँचा हो घर अपने की सुरत लगाय ॥
जोनहीं इन्दल मिले मोहबेमें फिर सब मिलकर करो सलाह
यह मन मान गई ज्वानों के और हिरदे में गई समाय ॥
अपने लशकर को संग लेकर गङ्गा से दिया कूंच कराय ॥
मन्जिल मन्जिल के चलने में मोहबा तीन कोस रहजाय ॥
फौज थाम कर अब घोरे पर कहने लगा उदयचन्द राय ॥
बोला ऊदल जब मुन्शी से मैं नोले का लेऊं बलाय ॥
नील का टीका लगा हमारे आगे कदम धरा ना जाय ॥
सूरज छुपजाय जबदिन मुंदजाय हम जब बढे नगरमें जाय
सूरज छुपगया जब दिन मुंदगया रात जन्धेरी पहुँचीआय

ऊदल का मोहबे में आना

फौजें भेज दई बारग को सब हथियार धरे संगवाय ॥
मुन्शी चला गया महलों को उल्टा पड़ा पलंग पर जाय ॥
चुप और चाप बढे मोहबे में किसीको खबर किसीकी नाय
यहां से ऊदल चला अकेला सीधा बढ़ा महल में जाय ॥

जा आवाज दई महलों में रानी फुलवा को दिया जगाय ॥
जब आवाज सुनी ऊदल की सारी रानी पहुँची आय ॥
किसी ने पकड़ा है घोड़े को किसी ने कुरसी दई बिछाय ॥
कोई लोटा पानी का लाई कोई बीड़े को रही लगाय ॥
ऊदल बैठ गया कुरसी पर मुंह पर रही उदासी छाय ॥
लेकर लोटा गंगाजल का मन्तोखा भी पहुँची आय ॥
बीड़ा लेकर सात पान का फुलवा ने धरा सामने लाय ॥
बोला बिजना गढ़ मांडों की बालम सुनलो कान लगाय ॥
राजी खुशी कहो गंगा की कैसे नहाये बनाफल राय ॥
कौन पीहर से मेरे आया था उसका हाल देओ बतलाय ॥
इस पर जबाव दिया ऊदल ने मैं रानी का लेऊं बलाय ॥
देश देश के राजा आये और वहां आया पिथौरा राय ॥
आठ हजार के वहां हल्ले में मुझको मिला कड़ंगा राय ॥
पर बादल फट गये गंगाजी पर जिसका हाल कहा ना जाय
बेटा खोय गया आल्हा का जिसका पता लगा कहीं नाय ॥
काट काट झाऊ गंगाजी के मैंने बन्द दिये लगवाय ॥
जाल डाल दिए गंगाजी में उसका पता लगा कहीं नाय ॥
ना जाने डूबा गङ्गा में या धरती में गया समाय ॥
इतनी सुनकर अब ऊदल से रानी पड़ी धरन पर जाय ॥
मारी दुहत्तड़ है छाती में उल्टी गिरी धरन पर जाय ॥
हार नौलखे की लड़ टूटी हीरा गरदन का गिर जाय ॥
खिसके के बाजू भुजडंडों से वह चूड़ियों पर पहुँचे आय ॥
टप टप आंसू गिरे धरती पर मुंह पर गई उदासी छाय ॥
छूट के काजल अब आंखों से चोली स्याह बरन हो जाय ॥

भवकी रानी मोहरमगढ़ की मैं बालम का लेऊं बलाय ॥
तेल जो डाला है बालों में आंखों सुरमा लिया लगाय ॥
गलियां खूंदी हैं मोहवे की तुमने तकीं पराई नार ॥
तिरियां कारन बने जनाने नाती बने हमारे द्वार ॥
मैं जात तुम्हारी को जानूं हूं तुमने कहां करी तलवार ॥
धुआं ना देखा बारूदों का ना नंगी देखी तलवार ॥
किसी दुशमन के मौंडे पर नर इन्दल को दिया झुकाय ॥
बाली उमर का वो इन्दल था उसकी वहां क्या पार बसाय
पुत्र बिराने को मरवाकर अब तुम बढे महल में आय ॥
वन्श नाश मोहवे का कर दिया और कोई पूत दूसरा नाय
भर भादों की बिजली मारे सावन डसे पवनिया नाग ॥
जो कफ खांसी में मर जावे उसका कुण्ड बने है आग ॥
जो मर जाते संग इन्दल के रहता कोई परेखा नाय ॥
लोथ छोड़ करके इन्दल की और महलों में दुबके आय ॥
सुनते ही भइया मरे तुम्हारा भावी मरे कटारी खाय ॥
अब घर बिगड़ गया मोहवे का तुमने वन्शको दिया मिटाय
समय समय नर अब क्या करिए मर्दो समय बड़ा बलवान ॥
भीलों ने लूटी गोपिका मरदों वही अर्जुन वही बान ॥
वही समय ऊदल पर पड़रहा रानी गरज गरज रह जाय ॥
सौ सौ हाथी का बल जिसमें उसका बोल निकलता नाय ॥
कुछ तो थका हुआ गंगाका कुछ इन्दलकी आग खाजाय ॥
कुछ बोली मारी रानी ने औंधा पड़ा धरन पर जाय ॥
झगड़ा हो रहा है महलों में रानी रोवे जार बेजार ॥
बालाखाने की खिड़की से झांकने लगी मछलदे नार ॥

जबवहां हाल सुना इन्दलका मछला खाकर गिरी पछाड़ ॥
बांदी बांदी को ललकारा क्या कहीं तेरी कट गई नाड ॥
अभी चली जा तू महलों को अटखम्बे पर चढ़ियो जाय ॥
वहां पर सोवे मेरा बालम उसको जल्दी लाओ जाय ॥
इतनी सुनकर बांदी चल पड़ी और महलों में पहुँची जाय ॥
सीढ़ी सीढ़ी बांदी चढ़ गई पहुँची अठखम्बे पर जाय ॥
पहरेदार खड़ा पहरे पर आल्हा सोवे पांव फैलाय ॥
बोली बांदी पहरेदार से तुम आल्हा को देओ जगाय ॥
पहरेदार कहे आल्हा से ओ महाराज बनाफल राय ॥
बांदी आई है महलों से तुमको रानी रही बुलाय ॥
उठ कर आल्हा बैठा हो गया और बांदी पर पड़ी निगाय ॥
बोला आल्हा जब बांदी से कैसे हमें जगाया आय ॥
हाथ जोड़ कर बांदी बोली ओ महाराज बनाफल राय ॥
तुम्हें बुलाया है महलों में रानी मछला रही बुलाय ॥
पलंग से नीचे आल्हा उतरा और चलने को हुआ तइयार ॥
झपट दुशाला धरा कन्धे पर पंजा में लई ढाल तलवार ॥
आल्हा चल दिया हैं महलों को जैसे शेर बनी को जाय ॥
आगे आगे आल्हा चल रहा बांदी लगी बराबर जाय ॥
कोई घड़ी के अब अरसे में दाखिल हुआ महल में जाय ॥
जहां पर रानी मछला बैठी वहां पर आल्हा पहुँचा जाय ॥
कुरसी डाल दई मछला ने और आल्हाको लिया बिठाय ॥
बोला आल्हा जब मछला से मैं रानी का लेऊं बलाय ॥
क्याकोई मोहबेपर चढ़ आया या किसीनेदी है तोपचलाय ॥
कौन मुसीबत तुम पर पड़गई आधी रातको लिया बुलाय ॥

लौट के जवाब दिया रानीने बालम सुनलो कान लगाय ॥
सारे आ गये मोहबे वाले इन्दल कहीं दीखता नाय ॥
जबतक नहीं देखूं इन्दल को मेरा फटा कलेजा जाय ॥
इतनी बात सुनी आल्हा ने गुस्सा भरा बदन में जाय ॥
गुस्सा खाकर आल्हा बोला और रानी से कहा सुनाय ॥
पहले तो भेज दिया गंगाको अब क्यों रही है मकरबनाय ॥
जिसदिन भइया ऊदल आवे तुझे मिल जाय इन्दलसीराय ॥
तुम बैठी चैन करो महलों में तुमको कौन पड़ी परवाय ॥
पांव पकड़ लिये हैं आल्हा के और मछलाने कहा सुनाय ॥
ऊदल आ गया है गंगा से और महलों में पहुँचा आय ॥
पलंग के ऊपर वह सोवे है मैंने उसको देखा जाय ॥
मुझको अगवां यह सूझे हैं इन्दल को दिये भेंठ चढ़ाय ॥
इतनी बात सुनी आल्हा ने और रानीसे कहा सुनाय ॥
तू तो जाने अपने दिल में वो इन्दल को आया गंवाय ॥
जितना प्यारा तुझे इन्दलहै उससे ज्यादा उदयचन्द राय ॥
सुनके बातें नर आल्हा की फिर मछला ने कहा सुनाय ॥
बातें हो रहीं थीं फुलवासे मैंने सुन लिया उसका हाल ॥
अब तुम जा खिड़की से देखो वो सोवे दिवला का लाल ॥
उठकर आल्हा चला वहां से और खिड़कीमें पहुँचा जाय ॥
सोता देखा वहां ऊदल को और इन्दल को देखा नाय ॥
गुस्सा खाकर आल्हा चल दिया और बंगलेमें पहुँचाजाय ॥
जाकर बैठा तख्त के ऊपर चोबदार को लिया बुलाय ॥
हुक्म सुनाया जब आल्हा ने चोबदार से कहा सुनाय ॥
नौले मुन्शी को बुलवालो और ढेबा को लाओ बुलाय ॥

भेज के हलकारा जल्दी से और सइतद को लेओ बुलाय ॥
जल्द बुलाओ मेरे भइया को जिसका नाम उदयचन्द राय ॥
हुक्म सुना जब चोवदार ने हलकारे से कहा सुनाय ॥
अब तुम वहांसे जल्दी जाओ और तीनोंको लाओबुलाय ॥
चल पड़ी जोड़ी हलकारे की और तीनों पर पहुँची जाय ॥
बोला बेटा हलकारे का और ऊदल से कहा सुनाय ॥
अब तुम संग में चलो हमारे तुमको आल्हा रहा बुलाय ॥
सुनकर बातें हलकारे की ऊदल उठा फरेरा खाय ॥
देखी सूरत हलकारे की जब पौंपा ने कहा सुनाय ॥
सुखी की नींदें तोअब होलीं अब तुम सहो दुखोंकी जाय ॥
सोहनी सूरत मोहनी मुरत ऐसे लाल को दिया गंवाय ॥
मार के बेटा अरे जेठ का और तू सोवे पांव फलाय ॥
तुम्हें बुलाया मन्डलीक ने जल्दी जाओ बनाफलराय ॥
मुझको अगवां यह सूझे है अब वहां खैर रहेगी नाय ॥
चुगली खाई है मामा ने जिसका नाम महलिया राय ॥
अपने बेटे के बदले में तुमको फांसी दे लगवाय ॥
इतनी सुनकर ऊदल बोला तिरिया मत मारी करतार ॥
आधे मौहबे का मालिक हूं आधी फौजों का सरदार ॥
खोद के बंगला तेरे जेठ का पक्का ताल देऊं बनवाय ॥
तख्त लौट दूंगा आल्हा का जो मेरा नाम उदयचन्द राय ॥
हण्ड बांध कर मैं आल्हा के उसकी लूगा कैद कराय ॥
उस दिन छोडूंगा आल्हाको जिसदिन मिले इन्दलसीराय ॥
कड़वा पानी है मौहबे का जिसन पर बात न झेली जाय ॥
झपटके कपड़ोंको पहनाहै और सब लिये हथियार लगाय ॥

अब जाकर देखूं आमखास में कैसे तलवरिया बलवान ॥
जो कोई बात करेगा कड़वी उसकी लूंगा खींच जबान ॥
वह गत देखी जब फुलवा ने कहने लगी पद्मनी नार ॥
एक तो बेटा जेठ का मारा दूसरे लड़ने को तइयार ॥
हाथ जोड़कर फुलवा बोली मैं बालम का लेऊं बलाय ॥
तुम्हें मुनासिब यह न चाहिये उनका करो सामना नाय ॥
चाहे उड़ा वह तोपों से चाहे फांसी दे लगवाय ॥
जवाब न देना तुम भइया को उसका करो सामना नाय ॥
इतनी सुनकर अब रानी से ऊदल शरमिन्दा होजाय ॥
ढाल पटक दई गैंडे की तेगा हाथ से दिया गिराय ॥
ऊदल चलदिया आमखास को गुरु अमराका ध्यानलगाय ॥
जैसी गंगा उसको भावे वैसी करे बनाफल राय ॥
जाकर पहुँचा है बंगले में और कुरसी पर बैठा जाय ॥
दहने हाथ को मुन्शी बैठा बांवे ढेवा बैठा आय ॥
तख्त के ऊपर अब आल्हाने नर सइयदको लिया बिठाय ॥
हाथ जोड़कर आल्हा बोला चाचा मेरे तलंसी राय ॥
तुम तो आगये सब गंगा से इन्दल कहीं दीखता नाय ॥
सच सच हाल कहो गंगा का कैसे न्हाये बनाफल राय ॥
ऊदल आया ढेवा आ गया बोले मुन्शी पहुँचा आय ॥
इन्दल अबतक क्यों नहीं आया इसका भेद देओ बतलाय ॥
मैंने हाल सुना गंगा का मामा मुझको गया बताय ॥
तुमने सर कटवा ऊदल से और गंगा में दिया बहाय ॥
क्या तकसीर हुई इन्दल से तुमने उसको दिया मरवाय ॥
राज दन्ड इसको दे देता या उसको लेते कैद कराय ॥

इस पर जवाब दिया सइयदने आल्हा सुनले कान लगाय ॥
मेरा पहरा था डेरे पर मुझको नींद ने लिया दबाय ॥
गाफिल होकर मैंवहां सोगया मुझको खबर रही कुछनाय ॥
फाड़ के डेरा बाहर निकला जाने कहां पर पहुँचा जाय ॥
ना राजों में हुई लड़ाई ना वहां लड़ा इंदलसी राय ॥
खबर नहीं मरने जीने की तुमको सच सच दिया बताय ॥
ना जानू ऊदल ने मारा या धरती में गया गया समाय ॥
मुझको खबर नहीं इन्दल की बेटा सुनो बनाफल राय ॥
जब यह खबर हुई नगरी में चरचा गलियों में हो जाय ॥
इन्दल खप गया है गंगा पर उसका पता लगा कहीं नाय ॥
हा हा कार मचा मोहबे में कोई रंधा भात ना खाय ॥
रइयत रोवे है मोहबे की ले ले नाम इन्दलसी राय ॥
मोहनी सूरत का शहजादा चन्दा सूरज की उनिहार ॥
क्या तो डूब गया गंगा में या दुशमन नेडाला मार ॥
रोना पड़ रहा है महलों में जिसका रोस थमे है नाय ॥
दिवला मछला फुलवा रोवें पोपा रही है रुदन मचाय ॥
बिना इन्दल के कैसे जीवें यहां कोई पूत दूसरा नाय ॥
छाती पीट सन्वोखा बोली अपने देंगे प्राण गंवाय ॥
जब ये हाल सुना मछलाने इन्दलका दिया खोज मिटाय ॥
बेहोश होगई रानी मछला और वह गिरी धरनपर जाय ॥
होश हुआ जब रानी को वह इन्दलको रही बुलाय ॥
पीट पीट छाती रानी मछलाने और देहीको लिया सुजाय॥
बहुत रुदन महलों में हो रहा रइयत रोवे जार बेजार ॥
रोरही पलटन गढ़ मोहबेकी और सब रोवें नर औरनार ॥

जब ये बात सुनी सहयद से आल्हा भरा रोस में जाय ॥
बेशक ऊदल ने मारा है बेटा मेरा इन्दलसी राय ॥
राज के कारन बेटा मारा ऊदल तेरा बुरा हो जाय ॥
जोतू भूका था मौहबेका क्योंना मुझसे लिया लिखवाय ॥
फिर ललकारा जल्लादोंको अबतुम सुनलो कान लगाय ॥
मतना बेर करो तुम इतनी ये मैं तुमसे कहूं सुनाय ॥
डन्ड खींचलो अब ऊदलके आल्हाने दिया हुक्म सुनाय ॥
हुक्म जो पाया जल्लादों ने और ऊदल को पकड़ा जाय ॥
होनी होनी रहें है होकर और बिन हुए टले है नाय ॥
जोकुछ लिखदिया नारायणने उसको मेट सके कोई नाय ॥
हाथ हथकड़ी पांवमें बे बेड़ी गलेमें तोक दिया डलवाय ॥
नौ नौ फांसे नाखूनों में कान में चोंप दई ठुकवाय ॥
जिनको दहशत थी ऊदलकी उनको बहुत कुशी होजाय ॥
जिनको प्यारा लगेथा ऊदल सब पर गई उदासी छाय ॥
लिख लिख परचे अब कागजके चिट्ठी पड़ी तख्तपर जाय ॥
जो तुम मारोगे ऊदल को हम रोजगार करेंगे नाय ॥
लोहे की टट्टी तेरा ऊदल है तुमको आंच आने दी नाय ॥
रइयत बरगे है आल्हा को आल्हा एक मानता नाय ॥
जब तम आंखेंना निकलवाऊं तबतक दाग मिटेगा नाय ॥
त्राः त्राः मौहबे में हो रही रइयत हाथ मींड़ रह जाय ॥
बोला आल्हा है बंगले में और ज्वानों से कहा सुनाय ॥
जब तक आंखें नहीं देखलूं तब तक दाग मिटेगा नाय ॥
ऐसा ना है कोई मौहबे में जो आल्हा को दे समझाय ॥
मतना मरवावे भइया को ऐसा बघल मिलेगा नाय ॥

जितने मुसाहिब थे आल्हाके जितने यार उदयचन्द राय ॥
सबने मिलकर समझाया है आल्हा एक मानता नाय ॥
बालाखाने की खिड़की में मछला लगी बराबर जाय ॥
ये गत देखी जब देवर की रानी गई सनाका खाय ॥
बांदी बांदी को ललकारा क्या कहीं ले गई मौत उठाय ॥

मछला का बांदी को भेजकर आल्हा को बुलवाना और उसको समझाना

जल्द बुलाला मेरे बालमको अब क्यों रक्खी देर लगाय ॥
झपट के बांदी वहांसे चलदी और आल्हा पर पहुँचीजाय ॥
बोली बांदी आमखास में ओ महाराज बनाफल राय ॥
बालाखाने की खिड़की में तुमको रानीर ही बुलाय ॥
इतनी सुनकर आल्हा चलदिया और बांदीको संग लिवाय॥
आता देखा जब आल्हा को कुरसी वहां पर दई बिछाय ॥
आल्हा आगया जब छज्जेपर उसको वहांपर लिये बिठाय॥
चिकें छोड़ दीं हैं खिड़की की रानी बैठ पलंग पर जाय ॥
हाथ जोड़ कर मछला बोली मैं बालम का लेऊं बलाय ॥
मुश्क खोल दो तुम देवर की ऐसा तुम्हें मुनासिब नाय ॥
कहना अब तुम मेरा मानो अब तक कुछ बिगड़ा है नाय॥
इतनी सुनकर आल्हा बोला रानी सुनलो कान लगाय ॥
शोला फुंक रहा मेरी छातीमें जिन्दे दाग छुटेगा नाय ॥
बालक ना जाने दुशमनको जब तक अपनी पार बसाय ॥
बैर पुराना ना पड़ता है चाहे मुद्दत कितनी हो जाय ॥

उसने मारा तेरे बेटे को आगे वन्श चलेगा नाय ॥
बदला ले लुंगा इन्दल का मानूं बात किसी की नाय ॥
फिर समझाया है रानी ने बालम सुनलो कान लगाय ॥
अब मत काटो नारायण ने तेरी अक्ल ठिकाने नाय ॥
जब तुम गये थे नयनागढ़ को मेरे बाबुल के दरबार ॥
मच्छ ने निगला तुम्हें ताल में तब कहां चली गई तलवार
जोट छोड़दी थी हाथी की जब भी नहीं खिंचा था जाल ॥
भला हूजियो नर ऊदल का तुझे ताल से दिया निकाल ॥
जोगा भोगा के मौंडे पर देवर डटा सामने जाय ॥
जंग जीतकर नयनागढ़ में तेरा ब्याह लिया करवाय ॥
इन्दल बन्ध गया संकलदीप में राजा सरनागा के द्वार ॥
सात समन्दर पड़े बीच में जहां ना लशकर उतरे पार ॥
लोहा पहुँचा संकलदीप में और मलखे को संग लिवाय ॥
मौड़ उतार लिया लोहा का इन्दलका लिया ब्याह कराय ॥
बन्द छुड़ाये तेरे इन्दल के ब्याह कर लाया पदमनी नार ॥
उस दिन ना मारा इन्दल को क्या तेरी मत मारी करतार ॥
इन्दल की जननी घर बैठी है दूसरा इन्दल दे भगवान ॥
मत मरवावे तू देवर को यह है शूरवीर बलवान ॥
तीन लोक चारों परदों में ऐसा भाई मिलेगा नाय ॥
इकला रह जाएगा मोहबे में फिर तेरी बात रहेगी नाय ॥
गढ़ चौरासी बसे हैं दुशमन दिन में लेंगे लूट कराय ॥
इकले ऊदल की दहशत से कोई तेरा करे सामना नाय ॥
गई बात फिर हाथ न आवे चाहे जितने जतन बनाय ॥
ऊदल भइया फेर मिले ना चाहे सौ सौ करो उपाय ॥

बनी बात मोहबे की बिगड़े फिर मरजाद बन्धेगी नाय ॥
अब तुम छोड़ देओ देवर को अब तक कुछ बिगड़ा है नाय
सौ सौ बार मछला ने बरजा आल्हा एक मानता नाय ॥
फैली बगावत जब कोरवों में सब राजों को लिया बुलाय ॥
श्रीकृष्ण और पांचों पण्डा यह भी वहां पर पहुँचे जाय ॥
श्रीकृष्ण बोले राजा से दुरयोधन का लेऊं बलाय ॥
पांच गांव पण्डों को दे दो बाकी राजा को देओ बताय ॥
सुनकर बातें श्रीकृष्ण की राजा भरा रोश में जाय ॥
गरजा राजा जब ललकारा श्रीकृष्ण से कहा सुनाय ॥
भाले की अनी सुई का नकुआ इतनी भूमि भी देऊं नाय ॥
क्या तुम जानो राजनीति को गऊवें अभी चराओ जाय ॥
लौट के जवाब दिया कृष्ण ने दुर्योधन का लेऊं बलाय ॥
अन्ध का अन्ध महाबली राजा तुमको अन्धा दिया बनाय ॥
कैरों पण्डों में युद्ध होगा सर पर काल पुकारा आय ॥
पांच गांव मेरे कहने से तुमने दिए पण्डों को नाय ॥
सारा राज मिले पण्डों को तेरी जान बचेगी नाय ॥
एक न मानी दुर्योधन ने कृष्ण ने बहुत लिया समझाय ॥
हुई लड़ाई जब पण्डों में कौरवों का दिया खोज मिटाय ॥
ऐसे ही ना मानी आल्हा ने मछला बहुत रही समझाय ॥
महल से आकर अब बङ्गले में जल्लादों से कहा सुनाय ॥

जल्लादों के हाथ ऊदल को मरवाने के वास्ते वन को भेजना

ले जाओ इसको तुम जल्दी से बबरी बन में पहुँचो जाय ॥
आंखे काढ़ के तुम ऊदल की मेरी नजर गुजारो लाय ॥
ज्वान पान्सौ करे साथ में बीच में ऊदल दिया घिरवाय ॥
इकले ऊदल के जिवड़े पर नङ्गी रहे तलवार उठाय ॥

दिवला और ऊदल की बातचीत

जब वह पहुँचे महलके नीचे तिरियां लगी झरोके आय ॥
बन्धा देखकर नर ऊदल को दिवला गई सनाका खाय ॥
बोली दिवला जल्लादों से खिड़की में से कहा सुनाय ॥
मैंने पाला है ऊदल को और शेरों का दूध पिलाय ॥
बावनगढ़ में यह फिर आया इसकी जग जाहिर तलवार ॥
अब यह गत हो रही ऊदल की मेरे जीने को धिक्कार ॥
लाओ कटारी मेरी जल्दी से जो जहरों में धरी बुझाय ॥
मरा सुनूंगी जब ऊदल को अपनी दूंगी जान गंवाय ॥
कैसे रानी उसकी जीवे ब्याह कर लाया पदमनी नार ॥
मारी दुहत्तड़ है छाती में और ऊदल से कहा पुकार ॥
सौ सौ हाथी की ताकत थी अब तेरी कहां गई तलवार ॥
जब यह बात सुनी माता की फिर ऊदल ने कहा पुकार ॥
बाप बराबर वह आल्हा है जिसका हुक्म न टाला जाय ॥
चाहें उड़ादे वह तोपों से चाहे फांसी दे लगवाय ॥
धरम नहीं है यह ऊदल का उसका करूं सामना जाय ॥
शिला अड़ालो तुम छाती में मेरा सोच करो कुछ नाय ॥
दिल अपने को तुम समझालो ऊदल हुआ तुम्हारे नाय ॥
नहीं जन्मा था तूने ऊदलको दिल अपने को लो समझाय

इन्हीं बातों के अरसे में वहां पर कासिद पहुँचा आय ॥
हुक्म सुनाया जल्लादों को अब क्यों रक्खी देर लगाय ॥
जल्दी लेजाओ तुम बनखंडको इसकी लाओ आंख निकाल
हुक्म अदूली की ऐवज में तुम्हें बकरा सा करूं हलाल ॥
यह मन मानी जल्लादों के और हिरदे में गई समाय ॥
लेकर चल दिये नर ऊदल को और बनखंड की पकड़ीराह
देखती रह गई सारी तिरियां ऊदल बढ़ा अगाड़ी जाय ॥
कोई कोई मीड़ रही हाथों को कोई सर को पीटे जाय ॥
रइयत रो रही है मोहबे की ले ले नाम उदयचन्द राय ॥
भर भर पल्ला वह कोसे हैं आल्हा तेरा बुरा हो जाय ॥
ऐसे जोधा को मरवावे जिसकी कोई बराबर नाय ॥
हंस उड़ा दिये हैं मोहबे से बगले ताल बिगाड़े जाय ॥
बसना छोड़ेंगे मोहबे का और हम बसें विदेशों जाय ॥
मैंढ टूट जायेगी मोहबे की जो मर गया उदयचन्द राय ॥
चल पड़ी बांदी रनवासों से और महलों में पहुँची जाय ॥
बीस कदम से फुलवा बोली और बांदी से कहा सुनाय ॥
क्या गत बीती सङ्ग बालम के हमको भेद देओ बतलाय ॥
दे दे हिड़की बांदी रोवे जिसका बोल निकलता नाय ॥
किसपे पहनी हरीहरी चूड़ियां किसपे लिया सिंगार बनाय
दर्पण लेकर रानी देखा मुंह पर रहा रण्डापा छाय ॥
जैसा वक्त तेरे बालम पर ऐसा पड़े किसी पर नाय ॥
ज्वान पानसौ के हल्ले में ऊदल पड़ा कैद में जाय ॥
हुक्म सुनाया है आल्हा ने तुम ऊदल को लेजाओ हाल ॥
उसको मारो बबरी बन में दोनों आंखे लाओ निकाल ॥

कोई घड़ी का दीखे पावना फिर मर जाय उदयचन्द राय ॥
इतनी बात सुनी फुलवा ने जब बांदी से कहा सुनाय ॥

फुलवा का मलखान पर चिट्ठी भेजना

जल्दी ला तू कलमदान को कोरा कागज लेओ उठाय ॥
चिट्ठी लिखूं मैं सिरसे को और जेठ को लेऊं बुलाय ॥
कोरा कागज लिया हाथ में कलमदान को लिया उठाय ॥
श्री सिद्ध नारायण लिख दिया और गंगाजी रहे सहाय ॥
सदा भवानी तू दहने रह कृपा करो शारदा माय ॥
तुम्हें गुसइयां मुझे परमेश्वर गंगा यमुना लिखी बनाय ॥
राम राम लिखदी गजना को और तिलका को शीश नवाय
शख्त कसम लिखदी मलखेको चिट्ठी देखकर पहुँचो आय ॥
बालम जेठा में बिगड़ी है जिसका हाल लिखा ना जाय ॥
बादल फटगये परलो होगई अब कुछ रहा ठिकाना नाय ॥
ब्याह की चूड़ी ना मैली हुई ना मैंहदी के छूटे दाग ॥
नई बात यहां पैदा हो गई जिसका कभी मिटे ना दाग ॥
सुख की नींदों मछला सोवे मौजें करे गजन्दे नार ॥
बिपता पड़ रही है फुलवा पर जिसका कोई ना मेटनहार ॥
जन्म की रंडिया हमें बनावे बालम लिया कैद में डाल ॥
हुक्म सुना दिया जल्लादों को उसकी लाओ आंख निकाल
मेरे लेखे तुम्हीं राम हो और हो दीनबन्धु भगवान ॥
तुम्हीं कन्हैया हो मथुरा के जैसे रामचन्द्र बलवान ॥
तुम्हीं जेठ और तुम्हीं बालम हो राजा सिरसे के सरदार ॥
पड़ी है नइया मेरी अधवर में तुम बिन कौन लगावे पार ॥

बिजली मारे अब आल्हा को उस घर पड़े गजब की मार ॥
रांड हो जाऊं सारी उमर को जो मर जाय बलम भर्तार ॥
जैसे रांड वह हमें बनावे वैसी बने मछलदे नार ॥
नाव डूब रही है अधबर में खेवा आन लगाओ पार ॥
लाख कोस कोई ना सिरसाहै जो तुम्हें खबर हुई है नाथ ॥
देखके चिट्ठी बैठे रहोगे क्षत्री धरम रहेगा नाय ॥
चिट्ठी बन्द करी फुलवा ने और तोते को लिया निकाल ॥
बड़े दुखों से तुझको पाला तूने खाई चने की दाल ॥
बखत पड़ा है अब बालम पर मेरी नाव लगादो पार ॥
लेजा चिट्ठी गढ़ सिरसे को राजा मलखे में दरबार ॥
चिट्ठी बांध दई गरदन में और तोते को दिया उड़ाय ॥
जहां कचहरी थी मलखे की तोता वहां पर पहुँचा जाय ॥
नजर घूम गई जब मलखे की और तोते को देखा जाय ॥
देखी चिट्ठी जब गरदन में मलखे गया सनाका खाय ॥
चिट्ठी खोली फिर जल्दी से और तोते को दिया उड़ाय ॥
दस्तखत देखे जब फुलवा के शोला फुका बदन में जाय ॥
जुलम देखकर नर आल्हा के उङ्गली चाब चाब रह जाय ॥
गुस्सा भर गया सारे तन में ज्यं बारूद में आग लग जाय

मछला का गिजनी बनकर सिरसे जाना

यहां तो मलखे चिट्ठी पढ़ रहा अब मछला का सुनो बयान
महलमें पहुँची रानी मछला और ऊदल का कर रही ध्यान
दिलमें जान लिया मछलाने अब ना बचे उदयचन्द राय ॥
बोली मछला फिर बांदी से क्या कहीं ले गई मौत उठाय ॥

लाओ पिटारी मेरी विद्या की अब क्यों रक्खो देर लगाय ॥
इतनी बात सुनी बांदी ने डिब्बा धरा सामने लाय ॥
खोल पिटारी अब मछलाने और सरसों को लिया उठाय ॥
पढ़ पढ़ सरसों को जब मारा जादू ऊपर दिवा चलाय ॥
लोटपीट कर अब महलों में गिजनी बनी मछलदे नार ॥
पन्ख पसार दिये मछला ने और सिरसे को हुई तइयार ॥
सुरत लगाई गढ़ सिरसे की ओर अम्बर में पहुँची जाय ॥
काले बादल की लाली में जैसे बिजली कौंदा खाय ॥
घड़ी ना गुजरी ना पल बीता वह सिरसे में पहुँची जाय ॥
जहां पर महल बना गजना का वहां पर मछला उतरी जाय
लोटपीट कर अब गिजनी से वहां पर बनी मछलदे नार ॥
देखके सूरत गजमोतिन की फिर मछला ने कहा पुकार ॥
जल्द बुलाओ मेरे देवर को अब तुम देर लगाओ नाय ॥
इतनी सुनकर गजमोतिन ने बांदी को दिया हुक्म सुनाय ॥
अभी चलीजा तू बङ्गले को मेरे बालम को लाओ बुलाय ॥
चल पड़ी बांदी अब महलों से आमखास में पहुँची जाय ॥
देखके सूरत अब बांदी की नर मलखे ने कहा सुनाय ॥
कैसे आई आमखास में हमको हाल देओ बतलाय ॥
इतनी सुनकर बांदी बोली राजा सुनलो कान लगाय ॥
तुमको याद किया महलों में रानी तुमको रही बुलाय ॥
चल दिया मलखे अब बङ्गले से और महलों में पहुँचा जाय
करी सलामी है मछला को रानी ले गई शीश चढ़ाय ॥
कैसे आना हुआ तुम्हारा हमको हाल देओ बतलाय ॥
कौलो भर कर मछला बोली मलखे सुनलो कान लगाय ॥

तुम तो बैठे सुख चैनों में अपनी करो कचहरी जाय ॥
जुल्म गुजर गये गढ़ मोहबेमें अब कुछ रहा ठिकाना नाय ॥

मलखान और मछला की बातचीत

दोनों भाइयों में बिगड़ी है बालम और उदयचन्द राय ॥
मैंने समझाया बालम को मेरी एक मानता नाय ॥
जो तुम चाहो उसे छुड़ाना बबरी बन में पहुँचो जाय ॥
तुमने यहां पर देर लगाई फिर ना मिले उदयचन्द राय ॥
हुक्म सुनाया है बालम ने जल्लादों को कर दिया साथ ॥
आंख निकाल के तुम ले आओ जल्लादों से कहा सुनाय ॥
बन में जाकर इसको मारो आंखे दोनों लाओ निकाल ॥
बिन आई देवर को मारे क्या कहीं आ गया उसका काल ॥
जल्दी पहुँचों बबरी बन में यहां पर देर लगाओ नाय ॥
छीन के लाओ जल्लादों से ऊदल की लो जान बचाय ॥
इतनी बात सुनी मछला से फिर मलखे ने कहा सुनाय ॥
अभी तो खत फुलवा का आया तुम भी यहांपे पहुँची आय
बेशक बात यह सारी सच है इसमें झूंठ जरा है नाय ॥
ऐसा जालिम आल्हा हो गया जो ऊदल को दे मरवाय ॥
गुस्सा खाकर नर मलखे ने पांचों बांध लिए हथियार ॥
काट पिछाड़ी गाजी मनसुख की उसके ऊपर हुआ सवार ॥
मारा चाबुक जब घोड़े के अम्बर पंख दिये फैलाय ॥
काले बादल की लाली में जैसे बाज रहा मण्डलाय ॥
सरसर सरसर होती आवे जैसे मघा नक्षत्र घहराय ॥
कोई घड़ी के अब अरसे में बबरी बन में पहुँचा जाय ॥

हल्ला देखा वहां ज्वानों का बीचमें खड़ा उदयचन्द राय ॥
बन्धा देखकर नर ऊदल को मलखे भरा रोस में जाय ॥
कूदा कन्हैया कालीदहमें जिस दिन नथा नाग को जाय ॥
सम्भलके मलखेअब वहांपे कूदा और सीनेमें फुकरही आग
झपटके मलखे अब वहां पहुँचा असवारों पर पड़ा अड़राय
तेगा पकड़ा नर मलखे ने गुरु अमरा का ध्यान लगाय ॥
एक को मारे दो गिर जावें तीसरा भागे जान बचाय ॥
मलखे वाली अब झपटों में सारे ज्वान गए घबराय ॥
हाथ जोड़कर जल्लादों ने नर मलखे से कहा सुनाय ॥
हम तो चाकर तुम राजों के नौकरी करी तुम्हारी आय ॥
हमको हुक्म दिया आल्हा ने हमसे हुक्म न टाला जाय ॥
आंख काढ़कर लाओ ऊदल की मेरी नजर गुजारो लाय ॥
इस पर जवाब दिया मलखे ने जल्लादों से कहा पुकार ॥
धोके न रहियो तुम आल्हा के सबको देऊं जानसे मार ॥
आंख काढ़कर तुम मृगाकी और आल्हा को दीजो जाय ॥
यह जाय कहियो तुम आल्हा से मारा गया उदयचन्द राय
जिन्दा बताया जो ऊदल को कोल्हू बीच देऊं पिलवाय ॥
हाथ जोड़कर जल्लादों ने नर मलखे से कहा सुनाय ॥
हम जाकर कह दें आल्हा से ऊदल हमने डाला मार ॥
आंख काढ़ कर हम मृगा की आल्हा की दें नजर गुजार ॥
उतर बछेरे से नीचे हुआ बेटा बच्छराज का लाल ॥
भरली कौली नर ऊदल की जिसका कहा जाय ना हाल ॥
हाथ हथकड़ी पांव में बेड़ी गले का तौक दिया कटवाय ॥
नौं नौं फांसों को कटवाया कांनों चौंप दई कटवाय ॥

बोला मलखे फिर ऊदल से मैं भइया का लेऊं बलाय ॥
कौनसी बातों पर बिगड़ी हैं हमको हाल देओ बतलाय ॥

ऊदल का मलखान से सब हाल कहना

इतनी बात सुनी मलखे की रो रो कहे उदयचन्द राय ॥
न्हाने गया था मैं गंगाजी सङ्ग में गया इन्दलसी राय ॥
ना जाने डूबा गङ्गा में या धरती में गया समाय ॥
जाल डाल दिये गंगाजी में जब नहीं मिला इन्दलीराय ॥
सबके डेरों में वहां देखा कहीं नहीं मिला इन्दलसी राय ॥
सब राजों के डोले देखे सङ्ग में लिया धन्देला राय ॥
ना जाने दुशमन ने मारा या धरती में गया समाय ॥
सारी गंगा में ढूंडा है सारे जंगल लिए ढुंडवाय ॥
आकर चुगली खाई माहिल ने तेरे बेटे को डाला मार ॥
काट के गरदन वहां इन्दल की उसे जान से डाला मार ॥
चुगली खाकर मेरी आल्हा से महिला चला वहांसे जाय ॥
इकले माहिल के कहने से यह गत मेरी दी करवाय ॥
रहम न आया है भइया को जल्लादों को दिया पकड़ाय ॥
हाथ हथकड़ी पांव में बेड़ी गले में तौक दई डलवाय ॥
नौं नौं फांस ठुकी हाथों में कानों चौप दई ठुकवाय ॥
इतना पिटवाया बांसों से बदन की धज्जी दई उड़ाय ॥
धरती लरजे अम्बर लरजे उसको लरज आई कुछ नाय ॥
जैसी करी हमारे संग में कोई दुशमन को करता नाय ॥
मैं ना मुंह देखूं आल्हा का अपना उसे दिखाऊं नाय ॥
मेरे लेखे आल्हा मर गया उसके जाने उदयचन्द राय ॥

जीता ना जाऊं मोहबे को जब तक मेरी पार बसाय ॥
राज उतरगया मेरी किस्मत से करलूं कहीं फकीरी जाय ॥
मिलले मिलले सिरसे वाले जाने फेर मिलें या नाय ॥
नहीं भरोसा अब ऊदल का जिन्दा रहवे या मर जाय ॥
इतनी सुनकर अब ऊदल से फिर मलखे ने कहा सुनाय ॥
हमने तो जाना सूरबीर हो कायर हुए बनाफल राय ॥
ऐसी बातों को मत बोलो तुमको जेबा देता नाय ॥
वह सारे मोहबे का मालिक है उसका करे सामना नाय ॥
नहीं परेखा हमें कुछ उसका चाहे जान से दे मरवाय ॥
बेशक रंज हुआ आल्हा को खोया गया इन्दलसी राय ॥
क्यों घबरावे दिवला वाले भइया मेरे उदयचन्द राय ॥
मोहबे की जगह यहां सिरसा है तुझे गद्दी पर देऊं बिठाय
मछला की जगह गजमोतिन तेरी खातिर करे बनाय ॥
बैठे राज करो सिरसे में तुमको कौन पड़ी परवाय ॥
क्या कहीं मरगया सिरसे वाला या मरगई मछलदे नार ॥
क्या कहीं मरगया ताला सइयद या कहीं रूठगया करतार ॥
क्यों घबरावे अपने दिल में ऊदल सुनले कान लगाय ॥
चार विलायत में ढूंढूंगा जहां कहीं मिले इन्दलसी राय ॥
जौन से दुशमन के पावेगा उसका डालूं खोज मिटाय ॥
जान से मारूं उस राजा को और इन्दल को लाऊं लिवाय
इतनी सुनकर ऊदल बोला भइया सुनले कान लगाय ॥
जो मैं जाऊं गढ़ सिरसे को मेरी बिगड़ आनसी जाय ॥
नील का टीका लगे हमारे जीते जन्म मिटेगा नाय ॥
उस दिन जाऊंगा मोहबे को जिस दिन मिले इन्दलसीराय

जिन्दा रहूंगा आन मिलूंगा भइया मेरे वीर मलखान ॥
अब मैं जाऊं गुरू अमरा पर जिसका पर्वत पर स्थान ॥
इतनी सुनकर मलखे रोया आंसू पड़े जमीं पर जाय ॥
अब तू जा है परदेशों को मेरी एक मानता नाय ॥
मौहबा छोड़ा नर ऊदल ने संग में लिया नवल चौहान ॥
पुरी अयोध्या रघुवर छोड़े लंका छोड़ गये बलवान ॥
रोई कौशल्या अयोध्या में जिस दिन राम गये बनवास ॥
ऐसे ही रोया सिरसे वाला और ऊदल की छोड़ी आस ॥
बहुतसा समझाया मलखे ने ऊदल एक मानता नाय ॥
चलते वक्त कहा मलखे ने भइया सुनो उदयचन्द राय ॥
जो कहीं घिर जाय परदेशों में हम पर दीजो खबर कराय
रात दिना का धावा करके मलखे वहां पर पहुँचे जाय ॥
मलखे चला गया सिरसे को अपनी करी कचहरी जाय ॥
ऊदल चलदिया गुरु अमरा पर और नौले को सङ्ग लिवाय

जल्लादों का हिरनों की आंखें निकाल कर आल्हा को देना

करी सलाह अब जल्लादों ने और आपसमें कहा सुनाय ॥
क्या मुंह लेकर मौहबे जावें क्या आल्हा को दें पकड़ाय ॥
अब तुम मारो दो हिरनोंको उनकी आंखे लेओ निकाल ॥
मृगा घेर लेओ बेले में जिनकी आंखे होवें लाल ॥
जाकर नजर करो आल्हा की जो बच जाय तुम्हारी जान
मरा बतादो तुम दोनों को ऊदल और नवल चौहान ॥

हिरन पकड़ लिए जल्लादों ने और दोनों को डाला मार ॥
आंख काढ़ली हैं दोनों की और चलने को हुए तइयार ॥
चल दिये कंजर अब बेले से और मोहबे में पहुँचे जाय ॥
जहां दरबार लगा आल्हा का दाखिल हुये वहां पर जाय ॥
पांच कदम से करी सलामी आगे शीश नवाया जाय ॥
आंख काढ़ कर जल्लादों ने आगे धरीं बनाफल राय ॥
बोले कंजर अब बङ्गले में और आल्हा से कहा सुनाय ॥
जोकुछ हुक्म मिला था हमको उसको हमने दिया बजाय ॥
हमने मारा उन्हें जान से दोनों का दिया खोज मिटाय ॥
कर सलाम आल्हा को चल दिये अपने घरकी सुरत लगाय
आंख देखलीं जब दोनों की आल्हा गिरा धरन पर जाय ॥
फटजा फटजा बैरन धरती अब मैं तुझमें जाऊं समाय ॥
कैकई पछताई अयोध्या में जिस दिन राम गये बनवास ॥
ऐसे ही ऊदल को मरवाकर आल्हा हो गया बहुत उदास ॥
पड़ा शोक सारे बंगले में आल्हा बहुत रहा पछताय ॥
बेटा खप गया हरिद्वार में ऊदल मैंने दिया मरवाय ॥
ऊदल भइया को मरवाकर आल्हा बहुत रहा घबराय ॥
चल पड़ा आल्हा अब बंगले से औंधा पड़ा महलमें जाय ॥
गड़बड़ मच गई झिझावट में अब कोई नहीं रहा सरदार ॥
बन्द कचहरी हुई आल्हा की सूना पड़ा वहां दरबार ॥
जिन बंगलों में फरश बिछे थे उन पर गरद लपेटा खाय ॥
जिन बुरजों पर तोप चढ़ी थीं उन पर काग रहे मन्डलाय ॥
खाली बंगला पड़ा आल्हा का कोई सरदार दीखता नाय ॥
रइयत कोस रही आल्हा को आल्हा तेरा बुरा हो जाय ॥

लोहे की टट्टी नर ऊदल था उसे जान से दिया मरवाय ॥
इकले ऊदल के मरने से अब कोई बात पूछता नाय ॥
रइयत सो रही हैं मौहवे की ले ले नाम उदयचन्द राय ॥
छोड़ झिझ्झावट रइयत चलदी और वो बसी विदेशों जाय ॥

महिला भूप का झिझ्झावट में पहुंचना

जब यह खबर हुई माहिल को आल्हा पड़ा महल में जाय
सूनी गद्दी है आल्हा की ऐसा दाव मिलेगा नाय ॥
चल पड़ा माहिल अब उरियल से झिझ्झावट में पहुँचा जाय
खाली गद्दी को जब देखा लड्डू फूट पेट में जाय ॥
बोला माहिल हलकारे से अब तुम सुनलो कान लगाय ॥
अब तुम चले जाओ काशीको मोती पंडित को लाओबुलाय
यह मन मानी हलकारे के और हिरदे में गई समाय ॥
कूद सांडनी पर चढ़ बैठा और काशी की पकड़ी राय ॥
बबल बबल कर चली सांडनी तलवे धूल लगे है नाय ॥
एक रात दिन की मन्जिल में चढ़ काशी में पहुँचा जाय ॥
फिरे पूछता है काशी में मोती पन्डित देओ बताय ॥
देखी सूरत जब पन्डित की हलकारे ने कहा सुनाय ॥
तुम्हें बुलाया है माहिल ने अब तुम चलो हमारे साथ ॥
फूल के पन्डित गदगज होगया हलकारे की सुनकर बात ॥
बहुत दिनों में रोजी जागी हमको माहिल रहा बुलाय ॥
झपट के कपड़ों को पहना है आसन पूजा लई उठाय ॥
पुस्तक बांध लई पन्डित ने ऊपर पत्रा धरा जमाय ॥
लोटा डोरी ले जल्दी से और धोती को लिया उठाय ॥

लई सुमरनी रुद्राक्ष की जिसमें जपे राम का नाम ॥
कूद सांडनी पर चढ़ बैठा जिसका नाम है मोतीराम ॥
रात दिना की दौड़ धूप में झिम्झोटी में पहुँचा जाय ॥
उतर सांडनी से नीचे हुआ और महलों में पहुँचा जाय ॥
पांलागन जब करी माहिलने पंडित लेगया शीश चढ़ाय ॥
चौकी डाल दई माहिलने और कालीन दिया बिछवाय ॥
हाथ जोड़कर माहिल बोला पण्डितजी का लेऊं बलाय ॥
खोल पत्तरा छांट महूरत अच्छी घड़ियां दो बतलाय ॥
जिस दिन बैठूं मैं गद्दी पर मेरा राज यहां हो जाय ॥
खटका भारी था ऊदल का सो दाता ने दिया मिटाय ॥
यह मन मानी जब पन्डित के पत्रा हाथमें लिया उठाय ॥
पहले पन्ने को छोड़ा है तीसरा चौथा देखा जाय ॥
अश्वनी भरनी कृतिका रोहिनी मूल नक्षत्र पहुँचा आय ॥
सोच समझकर पंडित बोला अब तुम सुनो महलिया राय
छः सात महीने तुम पर भारी यह मैं तुमसे कहूं सुनाय ॥
जो तुम बैठो तख्त के ऊपर फिर तेरी जान बचेगी नाय ॥
मेरी ज्योतिष में यह दीखे ऊदल अभी मरा है नाय ॥
कोई दिना के अब अरसे में ऊदल यहां पर पहुँचे आय ॥
तुमको रहना भारी होजाय जो आ गया उदयचन्द राय ॥
यह गद्दी तो सजे आल्हा को और किसी के बसकी नाय
इतनी सुनकर माहिल जलगया गुस्सा भरा बदन में जाय
ऐसी बानी को मत बोले क्यों तू हमको रहा बहकाय ॥
उठकर माहिल चला आगे को और पंडित पर पहुँचा आय
चौकी खेंच लई माहिल ने पन्डित गिरा जमीं पर जाय ॥

एक नहीं मानी माहिल ने पन्डित बहुत रहा समझाय ॥
माहिल चल दिया है बंगले को आसपास में पहुँचा जाय

माहिल का आल्हा के तख्त पर बैठ कर हुक्म चलाना

माहिल बैठ गया गद्दी पर अपना अमल दिया बिठलाय ॥
डाल जरीबें भिंभोटी में सब पैमायश ली करवाय ॥
देख निकासी भिंभावट की माहिल आप उघावे माल ॥
सख्त डन्ड माहिलने बांधे जिसका कहा जाय ना हाल ॥
दोहरा कर बांधा रइयत पर दोहरा दिया महसूल लगाय
आधी धोती सर पर बांधे और डन्ड भरे महलिया राय ॥
जो कोई पानी भरे कुएपर उस पर डन्ड दिया लगवाय ॥
इकले ऊदल के मरने से यह गत करी महलिया राय ॥
हाथी पतसावत आल्हा का ढोवे खाद बाग में जाय ॥
रसबैंदुल घोड़ा ऊदल का उस पर ईंट रहा लदवाय ॥
त्राह त्राह नगरी में होरही अब कोई धीर बंधइया नाय ॥

ऊदल का गुरू अमरा के पास जाना

यहां की बातों को यहां छोड़ा अब ऊदल का सुनो बयान
दोनों चल दिए बातें करते गुरु अमरा का करके ध्यान ॥
दिन को चलते रात को ठहरें ऊदल और नवल चौहान ॥
कई रोज के अब अरसे में बबरी बन में पहुँचे आन ॥
पहले बन को पीछे छोड़ा दूसरे बन में पहुँचे जाय ॥
तीसरे बन में जब वह पहुँचे दाखिल हुए गुरु पर जाय ॥

बारह टुकड़ी के परवत पर बैठा तपे अमर गुरुग्याल ॥
जहां पर धूनी थी अमरा की ऊदल पहुँच गया तत्काल ॥
हाथ जोड़कर दी परिक्रमा और चरनों में शीश निवाय ॥
एक टांग से खड़ा उदयचन्द गुरुवा पलक खोलता नाय ॥
एक दिन बीता दो दिन बीते तीसरादिन जब पहुँचाजाय ॥
पलक खोल के अमरा देखे सामने खड़ा उदयचन्द राय ॥
बोला अमरा जब ऊदल से बेटा मेरे उदयचन्द राय ॥
कौन इरादे पर आए हो हमको हाल देओ बतलाय ॥
रोकर ऊदल जब बोला हैं मैं गुरुवा का लेऊं बलाय ॥
वक्त बनाफल पर गालिब है सौ सौ कोस पुकरवा नाय ॥
न्हाने गया था मैं गंगा जो सङ्ग में गया इन्दलसी राय ॥
ना जाने डूबा गंगा में या दुशमन ने मारा जाय ॥
जाल डाल दिया सारी गंगामें सब राजों के देखा जाय ॥
अब तक इन्दल नहीं मिलाहै हमको पतालगा कहींनाय ॥
तुम पता लगा दो मेरे बेटे का जिंदा गुन भूलूं गा नाय ॥
इतनी सुनकर नर ऊदल से अमरा गया सनाका खाय ॥
नीचे का दम नीचे रह गया ऊपर ले गया राम उठाय ॥
नौकर नहीं हूं मैं मोहबे का ना जागीर दई बतलाय ॥
बारह महीने पूरे हो जांय कभी तेरी राड़ मिटे है नाय ॥
यहां पर लौंडा नहीं धरा है जो मैं तुमको दूं पकड़ाय ॥
इतनी बात सुनी ऊदल ने गुरु अमरा से कहा सुनाय ॥
ऐसी बानी को मत बोलो तुमको जेबा देती नाय ॥
सौ सौ बार ऊदल समझाये अमरा एक मानता नाय ॥
लई कटारी हैं ऊदल गरदन ऊपर धरी जमाय ॥

बोला ऊदल जब अमरा से गुरुवा सुनले कान लगाय ॥
ना तू राम राम का भइया दूजे करम हमारा नाय ॥
जोकुछ लिखदिया नारायणने उसको मेट सके कोई नाय ॥
हत्या दूंगा मैं धूनी पर तेरा जोग भंग हो जाय ॥
मरता देखा जब ऊदल को अमरा झुका बराबर आय ॥
हाथ पकड़ लिया है ऊदल का उसे छातीसे लिया लगाय ॥
बैठो बैठो अब धूनी पर मत अपने दिल में घबराय ॥
जहां पर बेटा तेरा होगा उसकी दूंगा खबर कराय ॥
बीन मुन्दरिया को धर फूंका सारी विद्या लई बुलाय ॥
चार वीर अमरा ने छांटे एक से बढ़ कर एक सिवाय ॥
वीर मोहम्मदा को ललकारा और यह उससे कहा सुनाय ॥
बेटा खोय गया आल्हा का जिसका नाम इन्दलसी राय ॥
करो तलाश तुम बावनगढ़में और इन्दल को देखो जाय ॥
जौन से गढ़ में इन्दल होवे हमको आकर दो बतलाय ॥

वीरों का इन्दल की तलाश में जाना

यह मन मान गई वीरों के और हिरदे में गई समाय ॥
चल पड़े चारों बबरी वन से घूमे देश देश में जाय ॥
नाकहीं जिकर सुना इन्दलका उसका पतालगा कहींनाय ॥
करा मशवरा जब वीरों ने और आपस में कहा सुनाय ॥
जुलमु बीच गये परलो होगई इन्दल हमेंमिला कहींनाय ॥
क्या मुंह लेकर अब हम जाये क्या गुरुवा से कहें सुनाय ॥
वीर मुहम्मदा जब ललकारा सब वीरों से कहा सुनाय ॥
बलख बुखारा बाकी रह गया उसको भी हम देखें जाय ॥

करके मशवरा सब वीरों ने वहांकी दी अब सुरत लगाय ॥
कोई घड़ी के अब अरसे में पहुँचे बलख बुखारे जाय ॥

वीरों का बलखबुखारे में पहुंचना

नगरी सारी में देखा है और दरबार में पहुँचे जाय ॥
आमखास राजा का देखा इन्दल कहीं दीखता नाय ॥
फिर वह पहुँच गये महलों में जहां पर रहे पैमदे नार ॥
चौपड़ खिल रही है महलोंमें गोटकी होरही झड़ाझड़मार ॥
एक तरफ बैठी हरनन्दन की दूसरी तरफ इन्दलसी राय ॥
पिंजरा लटक रहा खूंटी पर कुछ तारीफ करी ना जाय ॥
चार तरफ से चारों पहुँचे और वह लगे बराबर जाय ॥
पहला वीर वहां पर बोला और आपस में कहा सुनाय ॥
यह दीखे बेटा किसी कंगले का यह आल्हाका दीखे नाय ॥
दूसरा वीर कहे औरों से क्या तेरी अकल गई बौराय ॥
क्या तू आंखों से अन्धा है क्या तुझे आज दीखता नाय ॥
बेटा है ये नर आल्हा का जिसका नाम इन्दलसी राय ॥
तीसरा वीर वहां उठ बोला अब क्यों रक्खी देर लगाय ॥
जल्दी खबर करो अमरा पर ना कहीं मरे उदयचन्द राय ॥
वीर मौहम्मदा जब ललकारा और वीरों से कहा पुकार ॥
यह जोगी झिलमिला की चेलीहै जिसपर विद्या बेशुम्मार ॥
बारह कोस तक यहां जादू है क्या मानस की पार बसाय ॥
काम बनायेगा यहां अमरा और किसी के बसका नाय ॥
गलियां देखो तुम नगरी की अपने हाव लगाओ जाय ॥
गली गली में फिरे घूमते नाके बन्दी देखी जाय ॥

भेद भाव नगरी का लेकर और वो उड़े पवन में जाय ॥
कोई घड़ी के अब अरसे में गुरु अमरा पर पहुँचे जाय ॥

वीरों का इन्दल की खबर लाकर गुरू अमरा को देना

बोला अमरा है वीरों से मोहम्मदा बीर से कहा सुनाय ॥
कौनसे गढ़में पता लगाया और कहां मिला इन्दलसीराय ॥
जब उठ बोला वीर मोहम्मदा गुरु अमरा से कहा सुनाय ॥
सब देशों में हमने देखा हमको पता लगा कहीं नाय ॥
ढ कना बेटी है राजा की जिस पर विद्या बेशुम्मार ॥
घेर के पिंजरे में रक्खा है इन्दल तोता लिया बनाय ॥
जब जी चाहे मरद बनाले और फिर तोता दे है बनाय ॥
सात कोठरी में रक्खे हैं बाहर कदम धरन दे जाय ॥
जब यह हाल सुना ऊदल ने नंगी ली तलवार उठाय ॥
रौंदे मसके भुजडन्डों के और खुश हुआ उदयचन्द राय ॥
मैं देखूंगा हरनन्दन को कैसे बसे भंमेला राय ॥
जिन रोगों को मैं ढूंढ़ू था सो दाता ने दिया बनाय ॥
खाद के बङ्गला हरनन्दन का पक्का ताल देऊं बनवाय ॥
यह गत कर दूंगा कढ़िया की जैसे बसी भूम पर नाय ॥
भरली कौली जब अमरा ने और छाती से लिया लगाय ॥
गरभ की बातों को मत बाले सदा बनी रहगी नाय ॥
गरभ किया था लंकापत ने लंका मिली गरदमें जाय ॥

एक दिन गरभ किया सागर ने जल खारीकोई पीतानाय॥
मूंड मारकर तुम घर जाओ यूं नहीं यिले इन्दलसीराय ॥
चार दिना तो जोगी बनजा ऊदल डालो मुंड मुंडाय ॥
जोगी रूप बना कर यहां से बलख बुखारे पहुँचो जाय ॥
इस पर जवाब दिया ऊदल ने गुरू अमरा से कहा सुनाय॥
क्या तेरे यह दिल में सूझी हमसे भीक रहा मंगवाय ॥
दे दे आज्ञा तु ऊदल को राजा का दूं खोज मिटाय ॥
बोला आल्हा जब ललकारा और ऊदल से कहा सुनाय ॥
खबरें होजा जो हरनन्द को यहां पर ऊदल पहुँचा आय॥
इन्दल मर जागा महलों में बाहर मरे उदयचन्द राय ॥
जिस कारन को तुम यहां आये ऐसे काम बनेगा नाय ॥
काम की खातिर लंकापत ने बाप गधे को लिया बनाय ॥
उंगली दबरही पत्थर नीचे अपनी उंगली लेओ निकाल ॥
पहले देखो बलख बुखारा फिर इन्दल को लाओ निकाल ॥
नगरी देखो तुम राजा की सब गलियों को देखा जाय ॥
शीश महल रानी का देखो जहां पर इन्दलसी राय ॥
अब दल हो रहा चारों जुग में छलकर हरी रामकीनार ॥
छल कर पहुँचे पम्पापुर में जोधा दिया बाली सा मार ॥
ऐसे ही छल अब करो तुमबैठा जोगी बनो उदयचन्द राय ॥
इन्दल कारन मूंड मुंडालो इसमें कुछ बिगड़ेगा नाय ॥

अमरा का ऊदल और नौले को

जोगी बनाकर बलखबुखारे भेजना

चुटिया मूंड और पट्टे मूंडे दाढ़ी मूंछ दई मुन्डवाय ॥
कान फाड़ के मुन्दरे डाले जोगी बना उदयचन्द राय ॥
बांध लंगोटा लिया मूंज का घुन्डी लगी बराबर जाय ॥
एक तो बेटा था राजा का दूसरे रूप दिया करतार ॥
मली भबूत जब भुजडन्डों से गोरे अंग में गई समाय ॥
ज्ञान गुदड़िया को ओढ़ा है जिसमें ली तलवार छिपाय ॥
तीन मुन्दिरिया लई हाथमें जिसमें गावें राग मल्हार ॥
ले लिया तुम्बा गुरू अमरा से जिसमें विद्या बेशुम्मार ॥
सौटा मांग लिया ऊदल ने गुरू अमरा ने दिया उठाय ॥
लई सुमरनी रुद्राक्ष की जो गरदन में गई समाय ॥
सज कर ऊदल जोगी हो गया जब नौले ने कहा सुनाय ॥
लाख दुहाई नारायण की कसमें महादेव की खाय ॥
जिनके टुकड़े गुरुवा खावे उनको खूब अब दिया सजाय ॥
चाहे ऊदल मरो यहां पर ऊदल बलख दुखारे जाय ॥
मैं नहीं कदम धरूं आगे को चाहे लाख धरो औतार ॥
इतनी सुनकर गुरू अमरा ने फिर नौले से कहा पुकार ॥
क्यों घबराये अपने दिल में तुमको कौन पड़ी परवाय ॥
पकड़ हाथ नौले मुन्शी का उसे धूनी पर लिया बिठाय ॥
पहले मूंडा उसके सिर को खरबूजा सा दिया बनाय ॥
भगवां कुरते को रंगवा कर वह मुन्शी को दिया पहनाय ॥
झोली डाल दई कन्धे पर सौटा दिया हाथ में जाय ॥
एक हाथ में चिमटा दे दिया एक में छिलम दई पकड़ाय ॥

गुरू बनाया है ऊदल को मुन्शी चेला दिया बनाय ॥
बोला अमरा जब ऊदल से मैं बेटे का लेऊं बलाय ॥
हंकनी तिरिया बलख बुखारे की मतकोईतुमकोले बहकाय ॥
जो कहीं घिर गये परदेसों में फिर कुछ रहे ठिकानानाय ॥
मूंड मारकर तुम मर जाओ इन्दल तुम्हें मिलेगा नाय ॥
फिर यह जाना गुरू अमराने दिलमें सोच सोच रह जाय ॥
यह नहीं जावें बलखबुखारे चाहे चलें दिन और रात ॥
बोला अमरा जब ऊदल से बेटा सुनो हमारी बात ॥
उड़न खड़ाऊं पर तुम चढ़ कर बलख बुखारे पहुँचो जाय ॥
चढ़ गये दोनों अब जल्दी से नौले और उदयचन्द राय ॥
आंखें बन्द करी दोनों ने पहुँचे बलख बुखारे जाय ॥
आंख खोल कर जब वहां देखा नौले औरउदयचन्दराय ॥

ऊदल नौलें का बलख बुखारे पहुंचना

एक जोगी तपरहा सिवाने पर और बगियाके बीच मंझार॥
वह जोगी झिलमिलाका चेला था जिसपर जादू बेशुम्मार॥
मुन्शी बैठ गया धूनी पर धोरे खड़ा उदयचन्द राय॥
बोला ऊदल कब मुंशी से अब तुम सुनलो कान लगाय ॥
तलब लगी हैं अब सुल्फेकी हमको चिलम देओ पिलवाय॥
इतनी बात सुनी मुन्शी ने चिलम हाथ मे लई उठाय ॥
चिमटा लेकर एक हाथ में वह धूनी पर पहुँचा जाय ॥
ना जोगी से बोला ना कुछ उससे कहा सुनाय ॥
दे दिया चिमटा है धूनी में अंगारी को लिया उठाय ॥
तोड़ अंगारी को मुंशी ने चिलम के ऊपर धरी जमाय ॥

हुई आवाज जब वहां चिमटेकी जोगीकी आंखें खुलजाय ॥
चुटकी लेकर धूनी में से और तोंखे पर दई झुकाय ॥
रूप बदल दिया है मुन्शी का उसको सांप दिया बनाय ॥
यह बात देखी जब ऊदल ने दिल में गया सनाका खाय ॥
इन्दल बेटा मेरे महलों में यहां पर मरे नवल चौहान ॥
अब के चुटकी तुझ पर मारे यहां दोनों के गये पिरान ॥
किसको भेजूं अब सिरसे को मलखे पर दे खबर कराय ॥
मुझको मना करा मलखे ने मतना परदेशों को जाय ॥
एकना मानी हाय मलखे की किस्मत यहां पर फूटी आय ॥
जीते ना लौटूं मोहबे को मरे की खबर कोई ले जाय ॥
गुरुवा गुरुवा कह कर रोवे क्या धूनी में गया समाय ॥
कौल करार किये धूनो पर क्या कहीं ले गई मौत उठाय ॥
विपत तुम्हारी में मैं कूदूंगा अब असने में करो सहाय ॥
मिलना हो तो मिल चेले से फिर क्या खाक बटोरे आय ॥
खबरें हो गई हैं अमरा पर और वीरों ने दी पहुँचाय ॥
बैठा हो गया वह धूनी से और विद्या को लिया बुलाय ॥
जब ललकारा है अमरा ने विद्या झुकी बराबर आय ॥
वीर मोहम्मदा जब आ पहुँचा और अमरासे कहा सुनाय ॥
कैसे याद किया वीरों को हमको हाल देओ बतलाय ॥
बोला अमरा जब वीरों से अब तुम सुनलो कान लगाय ॥
ऊदल घिर गया बलख बुखारे राजा हरनन्दन के जाय ॥
जल्दी जाओ बलख बुखारे विद्या संग में जाओ लिवाय ॥
जो कुछ काम पड़े ऊदल का सब घड़ियों में देओ बनाय ॥
इनकी बात सुनी गुरुवा की वीर के दिल में गई समाय ॥

उठी भवानी-काले बुरज की चौंसठ जोगनी लई बुलाय ॥
बावन भैरों छप्पन कलवा सारे बढ़े अगाड़ी जाय ॥
चली मसायन चौराहे की आगे जिन्न लपेटा खाय ॥
दो-चार डंकनी आडे होगई जिनकी दहशत बहुत सिवाय॥
गली गली में चलीं चुड़ैलें और भूतों की नहीं शुम्मार ॥
चली डंकनी अब आगे को जिनके दांत निकल रहे बार ॥
चोदह सो बीर शुरू अमरा के सब सोटों को रहे घुमाय ॥
वीर मोहम्मदा की गरजों में बिरला शूर डटे है नाय ॥
ऐसा ही कोपा वीर मोहम्मदा सब विद्या को संग लिवाय ॥
कोई घड़ी के अब अरसे में वह ऊदल पर पहुँचा जाय ॥
फिर ललकारा वीर मोहम्मदा और ऊदल से कहा सुनाय ॥
क्यों तू भूल गया अमराको क्यों ना कालका लई मनाय ॥
क्योंना याद किया आल्हाको जिसके नाम फतह होजाय ॥
इतनी बात सुनी ऊदल ने बीन सुन्दरिया लई उठाय ॥
बोली विद्या जब ललकारी और ऊदल से कहा सुनाय ॥
जा जो काम पड़े ऊदल का हम घड़ियों में देंय बनाय ॥
सोटा फेर दिया मुन्शी पर जिस पर था विद्या की खान ॥
रूप बदल गया है मुन्शी का बैठा हुआ नवल चौहान ॥
जैसे भेड़िया पड़े रेवड़ में चीरै फाड़े और खा जाय ।
ऐसे ही ऊदल अ. झपटा है और जोगी पर पहुँचा जाय ॥
काढ़ कुन्डली अब ऊदल ने जोगी कैद लिया करवाय ॥
सोटा फेर दिया जोगी पर सारी धूनी दई उड़ाय ॥
जो अब सत हैं गुरू अमरा में उसको गधा देखा बनाय ॥
गधा बनाकर गधाओं [illegible] बढ़े नगर में जाय ॥

वलख बुखारे की गलियों में जोगी हूक लगाई जाय ॥
बीन मुन्दरिया को फूंका है जिसमें विद्या राग बताय ॥
जो जो तिरिया हूक सुने है कामन भूल कामको जाय ॥
चढ़ गईं तिरिया अठखम्बों पर और छज्जों पर बैठी आय ॥
कोई कोई, खड़ी है दहलीजोंमें और चौखटसे हाथ लगाय ॥
गुम्मट बन्ध गया है तिरियों का बीचमें खड़ा बनाफलराय ॥
कोई कोई तिरिया ऊनको देखे कामन हाथ मींढ रहजाय॥
कर रही बातें सारी मिलकर और आपस में रहीं बताय ॥
कैसे माता इनकी जीये हमें देखकर होवे ख्याल ॥
कैसे बाप इन्हों का जिसने गोद खिलाया लाल ॥
कैसे कामन घर में जीबे जो संग लाथे ब्याह कराय ॥
जिसदिन बालम जोगी होगए क्या ना मरी कटारी खाय ॥
कोई कोई बात करें आपस में और हंस हंसके रही बताय ॥
ऐसे पती हमारे होते उनका सङ्ग छोड़ती नाय ॥
कौनसी धरती में जन्मे हैं जाने कहां लिया औतार ॥
मानस जाये ये ना दीखेंकिसी देवता के औतार ॥
व्याही व्याही बेटी मांगें क्वारी बालम रही मनाय ॥
एक दो बुढ़िया अस्सी बरस की दांतें भींच भींच रहजाय ॥
तुम्हें बावला कर दिया नारायण ने सबकी अक्ल बौराय ॥
क्या तुम आंखों से अन्धी हो दिन में तुम्हें दीखता नाय ॥
श्याम बरन और मुख निरियाला आंखें मृगाकीसी लाल ॥
गज भर छाती इन जोगियोंकी यह नहीं हैं जोगीके लाल॥
दीखें बेटे किसी क्षत्री के इन पर झोली खप्पर नाय ॥
इतनी सुनकर ऊदल बोला बुढ़िया तेरा बुरा होजाय ॥

जन्म की पापन तू दीखे है पाप की बातें रही सुनाय ॥
विपता पड़ी हमारे ऊपर जो हम यहां पर पहुँचे आय ॥
सूखा पड़गया देश हमारे और पनियाबत पड़ गया काल ॥
बाप हमारे हमें छोड़कर बाली उमर में कर गया काल ॥
जब से माता मेरी रांड हुई हमें जोगीको दिया पकड़ाय ॥
कान फाड़ कर मुन्दरे डाले मूंड अपनेको लिया मुंडाय ॥
जोगी झिलमिलाके हम चेले और मंगलगिर ना मकड़ाय॥
आज रहेंगे इस नगरी में कलको यहां ठहरेंगे नाय ॥
बढ़ गये जोगी अब आगे को बाजारों में पहुँचे जाय ॥
अच्छी जगह देख मन्डी में वहां पर धूनी दई लगाय ॥
बीन मुन्दरियाको फुंका है मोहनी मन्तर दिया झुकाय ॥
जितने बेटे साहूकारों के सब पर मोहनी दई बिठाय ॥
बोले बेटे साहूकारोंके और जोगियों से कहा सुनाय ॥
जो तुम भूखे हो मालों के छकड़े संग लेओ भरवाय ॥
जो तुम हो भूके ब्याहों के तुमको डोले दें मंगवाय ॥
जो तुम हो भूके धूनी के यहां पर धूनी दें लगवाय ॥
खीर खांड के भोजन जीमो ये ही हमारी है अरदास ॥
चार महीने अब चौमासे जोगी रहो हमारे पास ॥
किसी बात के हम ना भूके बीन मुन्दिरिया देओ सुनाय ॥
ना वो किसी से बोले चाले गुरु अमरा को रहे मनाय ॥
वहां से जोगी बढे अगाड़ी चन्दन चौक में पहुँचे जाय ॥
कुवेंके धोरे जब वह पहुँचे जहां पर सखियां पड़ी दिखाय ॥
धूनी लगा कर कुवें के धोरे अगनी चेतन दी करवाय ॥
ठण्डी जगह बैठने वाले जिन पर अगन न झेली जाय ॥

बीन मुन्दरिया को धर फूंका राग छत्तीसों दिए उड़ाय ॥
जंगली जानवरोंको मोहा है महलों मोही पदमनी जाय ॥
तिरियां मोह लईं पनघट की बीन मुन्दरिया दई बजाय ॥
कोई कोई फांस रहो कुवेमें कोई अधबर में रही लटकाय ॥
कोई कोई बैठी मनखडे पर घर की खबर रही कुछ नाय ॥
छल्ला अंगूठी कान मुन्दरिया किसी नेदिये दुशाले जाय ॥
हाल देखकर उन जोगियोंका बांदी लौट महल को जाय ॥
बांदी पहुंच गई महलों में और रानी से कहा सुनाय ॥

बांदी और राजा हरनन्दन की रानी की गुफ्तगू

हाथ जोड़ कर बांदी बोली मेरी तकसीर माफ हो जाय ॥
जैसे जोगी आये कुवें पर ऐसे तीन खूंट में नाय ॥
क्या तो शिवजी यहांपर आगये जिनके संग नादिया नाय ॥
या कहीं आ गये अयोध्या वासी राजा रामचन्द्र रघुराय ॥
ऐसे दीखे है धूनी पर जिनकी जोत न झेली जाय ॥
दर्शन करले जो जोगियोंके उसका जन्मसुफल हो जाय ॥
घर पर आए नाग न पूजे बाहर बाम्बी पूजनेजाय ॥
इतनी बात सुनी रानी ने फिर बांदी से कहा सुनाय ॥
अबतुम चलीजाओ धूनीपर और जोगियोंकोलाओ बुलाय ॥
कौन अखाड़े के जोगी हैं हम भी उनको देखें जाय ॥
चल पड़ी बांदी शीशमहलसे औरधूनी पर पहुँची जाय ॥
तुम्हें बुलाया है महलों में रानी तुमको रही बुलाय ॥

झपट के उट्ठे अब धूनी से माथे लिया सिन्दूर चढ़ाय ॥
बातें करते चले आपस में और महलों में पहुँचे जाय ॥
बोली बांदी जब महलों में और रानी से कहा सुनाय ॥
जोगी आ गये दरवाजे पर धूनी बाहर दई लगाय ॥
बोली रानी हरनन्दन की और बांदी से कहा सुनाय ॥
हम तुम चेली एक गुरू की विद्या हमको दई बताय ॥
यह दीखें सपेरे बंगाले के भेष फकीरी लिया बनाय ॥
बेटे दीखे भानमती के जोगी बनकर पहुँचे आय ॥
जो ये जोगी आये कुए से इनको कैद लेओ करवाय ॥
डन्ड खींच कर इन दोनों के मेरी नजर गुजारो जाय ॥
इतनी सुनकर बादी बोली और रानी से कहा सुनाय ॥
क्या तू मारे उन्हें जान से उनका खटका देऊं मिटाय ॥
मैं मुश्क बांध कर दोनों की तेरी नजर गुजारूं जाय ॥
सोच समझ कर फिर रानी ने और बांदी से कहा सुनाय॥

सब सखियों को बुलाना

जितनी सहेली है रानीकी सब सखियोंको लाओ बुलाय ॥
जब सब तिरियां हुई इकट्ठी फिर सैयां ने कहा सुनाय ॥
दरशन कर आओ जोगी के जब तुम चलो हमारे साथ ॥
कोई कोई बारह कोई अठारह किसीका बीस बरसका गात ॥
किसीके गौनेके दिन आगये किसीका ब्याह हुआ है नाय ॥
दो चार बुढ़िया अस्सी बरस का जिनपर उठा न बैठा जाय ॥
केश खोल दिये धोमन ने और सरसों को लिया उठाय ॥
कोई घड़ीके अब अरसे में वो जोगिये पर पहुँची जाय ॥

कोई तो हाथोंको जोड़े हैं कोई कोई परकम्मा रहीं लगाय ॥
कोई कोई राख मलेधूनींकी अरु तुम चन्दन लेयो लगाय ॥
बोलीघोमन जब जोगियोंसे अब तुम सुनलो कान लगाय ॥
कहां से आये कहां जाओगे यहां पर कैसे पहुँचे आय ॥
कौन इरादे पर आये हो हमको हाल देओ बतलाय ॥
ना वह जोगी बोले चाले ना कुछ किसी से कहा सुनाय ॥
चुप और चाप धूनी पर बैठे अपनी माला रहे घुमाय ॥
जल कर घोमन रापट हो गई गुस्सा भरा बदन में जाय ॥
बांदी फोड़ो इनके तुम्बे झोलाके टुकड़े देओ उड़ाय ॥
खबरें कर दो बंगले में और गनपत को लाओ बुलाय ॥
दण्ड खींच कर इन जोगयों के इनकी कैद लेओ करवाय ॥
सुन सुन बातें अब घोमन की ऊदल भरा रोस में जाय ॥
कड़वा पानी है मोहबे का जिन पर बात न झेली जाय ॥
वैठा हो गया वह धूनी से और सोठे को लिया उठाय ॥
रइयत रहने को ना आया कुछ जागीर मांगता नाय ॥
क्यों बकवाद करे धूनी पर पापन हमें सताया आय ॥
जोगी भुलाये मतना रहियो नागी कोई मिला है नाय ॥
जैसी तिरियां तुम दासो हो जल ना पीऊं तुम्हारा लाय ॥
इतनी सनके घोमन जलगई ज्यों बारूदमें आग लगजाय ॥
पद पद सरसों को मारा है और ऊदल पर दई चलाय ॥
मुश्कें बन्धगई जब ऊदल की माला गिरी धरन पर जाय ॥
जीभ निकल गई है बाहर को मुंह से खूनको रहा बहाय ॥
देख के हालत नर ऊदल की मुन्शी गया सनाका खाय ॥
इन्दल खप गया अब महलोंमें और धूनींपर उदयचन्दराय ॥

अब जो सरसों तेरे मारे तीनों में एक बचेगा नाय ॥
अंग्रेजी में बोला मुन्शी और पश्तो में रहा बताय ॥
क्या तू भूला गुरू अमराको और देवीको दिया बिसराय ॥
क्यों ना याद करे आल्हा को जिससे नाम फतह होजाय ॥
कान भनक ऊदलके पड़ गई और दुरगेको लिया मनाय ॥
सुमरन करके जगदम्बा का दहने बैठ कालका माय ॥
मनिया देवको जब सुमरा है गुरू अमराका ध्यान लगाय ॥
भइया आल्हा को सुमरा है जिसके नाम फतह हो जाय ॥
टूटी विद्या जब अमरा की और वह झुकी बटाबर आय ॥
सम्भलो सम्भलो दिवला वाले तुमको कौन पड़ी परवाय ॥
जो कुछ काम हमारे लायक वह हम करें तुम्हारा जाय ॥
मुश्कें खुल गई हैं ऊदल की मुंह का खून बन्द होजाय ॥
बैठा हो गया वह धूनी से बीन मुन्दरिया लई उठाय ॥
बीन मुन्दरियाको धर फूंका मोहनी मन्तर दिया झुकाय ॥
सोटा फेर दिया धूनी पर गुरू अमरा की आन लगाय ॥
धरदी चौकी अब चण्डी की ऊपर रुन्ड दिया बिठलाय ॥
जोड़ा छोड़ दिया भूतों का उसके बदन में गया समाय ॥
छोड़ी मसायन चौराह की और वह बैठ जीभ पर जाय ॥
ये गत हो गई अब सोमन की नंगी हो गई पदमनी नार ॥
कपड़े फेंक दिए सोमन ने सिर की चुनरी धरी उतार ॥
भर भर मुट्ठी अब रेते की सर के ऊपर रही उड़ाय ॥
कूदी कूदी फिरै चौक में जैसे लिपट ततइया जाय ॥
सखियां पकड़ें चौतरफा से वह काबू में आती नाय ॥
सींच के सखियों ने सोमन को और पैरोंमें दिया गिराय ॥

इसने ना जाना हो कैलाशी शंकर आप ही पहुँचे आय ॥
जोगी जाये तुम ना कहियो पूरे सिद्ध तुम पहुँचे आय ॥
अबतो बख्श दो तुम धोमनको इसकी खता माफ होजाय ॥
विद्या खींच लई ऊदल ने धोमन गई होश में आय ॥
ऊपर के कपड़ों को पहना है और जोगी से कहा सुनाय ॥
बंगला छुवा दूंगा पानों का और फूलों के बन्द लगाय ॥
चौकी डालूं मलियागिर की माला जपो दिना और रात ॥
भोजन खावो खीर खांड के तुमसे कहुँ धरम की बात ॥
तावेदारी में हाजिर हैं सेवा करूं तुम्हारी आन ॥
और बात की मैं ना भूकी बीन सुन्दरिया देओ सुनाय ॥
इतनी सुनकर ऊदल बोला और धोमन से कही ये बात ॥
जात कमीनों के नहीं लड़के जो हम चलें तुम्हारे सात ॥
पूरे गुरु के हम चेले हैं नीच से बात करें हमारे साथ ॥
घर घर माता घर घर बहना दरशन करें हमारा आय ॥
जो हम ठहरें इस नगरी में जोग हमारा भंग हो जाय ॥
साधू स्वादों के नहीं भूके हमसे डाला मूंड मुड़ाय ॥
ब्याह सगाई के नहीं भूके तिरियां हमें भावती नाय ॥
मोहर अशरफी के नहीं भूके घर कहीं बना हमारा नाय ॥
सेर चून के हम भूके हैंजो दे पेट की आग बुझाय ॥
बहता पानी रमता जोगी जो यह रुकें गाद हो जाय ॥
आज रहेंगे हम नगरी में कल को यहां ठहरेंगे नाय ॥
ऐसे गुरु के हम ना चेले हम रइयत से मांगें जाय ॥
महल बतादे हमें राजा का वहां पर अलख जगावें जाय ॥
कुछ कुटिया वर्तन के बोली और जोगी से कहा सुनाय ॥

बावला करदिया नारायणने क्यों तेरी अक्लगई बौराय ॥
जितना खरचा हो धूनी का अपने घर से दूंगा मङ्गवाय ॥
मतना जइयों रनवासों को यह मैं तुमको दूं बतलाय ॥
डंकनी बेटी हरनन्दन की जिस पर जादू बहुत सिवाय ॥
एक दिन गईवो हरिद्वार को और गंगा पर पहुँची जाय ॥
किसी राजाके वह लड़के को डाल पिंजरेमें लाई लिवाय ॥
सात कोठरी में रक्खे है बाहर कदम धरन दे नाय ॥
जब जी चाहे मरद बनाले और फिर तोता दे है बनाय ॥
वो दीखे बेटा किसी रांडका यावो किसी कंगालेका लाल ॥
छः महीने से पड़ा कैद में उसका मुझको बहुत मलाल ॥
इतनी बात सुनी ऊदल ने फूला अंग में नहीं समाय ॥
बोले मुन्शी को ललकारा अब तुम सुनलो कान लगाय ॥
जिस कारन को मूंड मुडाया वो दाता ने दिया बनाय ॥
करो तइयारी अब महलों की जहांपर घिरा इन्दलसी राय ॥
चल पड़े दोनों अब आगे को तिरियां लौट घरोंको जाय ॥
बलख बुखारे की गलियों में जोगी हूक लगाई जाय ॥

ऊदल का जोगियों के रूप में रानी पैमा के महल में जाना

जहां पर महल बना पैमा का वहां पर ऊदल पहुँचा जाय ॥
महल देख के अब रानी का ऊदल गया सनाका खाय ॥
क्या तारीफ करूं महलों की कुछ तारीफ करी ना जाय ॥
चौसठ लगा रही है सोने की चांदी की जोली नदाय ॥

जड़े नगीने हैं चौखट में चन्दा सूरज की उनिहार ॥
मोर पन्लंक छज्जे लग रहे खिड़की लग रही जालीदार ॥
ऊदल बोला जब नौले से और पशतो में रहा बताय ॥
ये ही महल दीखे पैमा का ऐसा कोई दूसरा नाय ॥
महल के धोरे जब वहा पहुँचे ऊदल ने दी हूक लगाय ॥
बीन मुन्दरिया को धर फूंका छत्तीसों दिये सुनाय ॥
रिनझिन रिनझिन झींगरबोले और जङ्गल में बोलेमोर ॥
छोटे पुरुष की तिरियां बोले अन्धेरी में बोले चोर ॥
सुन सुन बीनों के बाजे को रानी चौंक चौंक रह जाय ॥
बोली बेटी हरनन्दन की और बांदी से कहा सुनाय ॥
जल्दी देकर भीक इन्हों को मेरी डयोढ़ी पर पहुँची जाय ॥
भिक्षा देकर बांदी चल दी पड़ी दरवाजे पर पहुँची जाय ॥
बोली बांदी है जोगियों से जोगी सुनलो कान लगाय ॥
लेकर भीक जाओ डयोढ़ीसे यहां र शोर मचाओ नाय ॥
ये ही हुक्म है यहां राजा का गैर मरद कोई आवे नाय ॥
इस पर जवाब दिया ऊदल ने बांदी सुनले कान लगाय ॥
कुछ बांदी जाये हमना कहिये ना बांदीको गोद खिलाय ॥
हम नहीं भूके है मालों के हमको जेवर चहिये नाय ॥
सेर चून के हम भूके हैं जिससे पेट अगन मिट जाय ॥
इच्छा हो रही है भोजनकी हमने यहांदी अलख लगाय ॥
तेरे हाथ से हम ना लेवें चाहे लाख धरो औतार ॥
भीक तुम्हारी हम ना लेंगे लावे आप पदमनी नार ॥
इतनी बात सुनी बांदी ने गुस्सा भरा बदन में जाय ॥
तेरीखाल काढ़के भुस भरवादूं कोल्हू बीच देऊ पिलवाय ॥

बड़े गुरुओं को बड़ी बड़ी बातें जोगी अकल गई बौराय ॥
जो नहीं भूके हो भिक्षा के यहां पर कैसे पहुँचे आय ॥
तुम दीखो बेटे किसी राजाके तुम पर पड़ी इश्ककी मार ॥
तुम नहीं भूके हो भिक्षा के तकते फिरो पराई नार ॥
इतनी सुनकर नर ऊदल ने और बांदी से कहा सुनाय ॥
हम जोगी झिलमिला के चेले हैं उसनेचेला लियाबनाय॥
बीन मुन्दरिया को जब फूंका मोहनी मन्तर दिया उड़ाय॥
चारों तरफ को बांदी देखे उसके होश ठिकाने नाय ॥
हाथ जोड़कर बांदी बोली मेरी तकसीर माफ होजाय ॥
खड़े रहो तुम दरवाजे से और महलों में पहुंची जाय ॥
चल पड़ी बांदी दरवाजे से और महलों में पहुँची जाय ॥
हाथ जोड़कर बांदी बोली ठुकरानी का लेऊं बलाय ॥
जैसे जोगी दरवाजे पर ऐसे हमने देखे नाय ॥
वह तो जोगी बड़े तपस्वी जिनका भेद मिला हैनाय ॥
क्या तो आ गये मथुरा वाले कृष्ण कन्हैया के औतार ॥
या वह आ गये अयोध्या वाले राजा रामचन्द्र औतार ॥
ऐसे जोगी नहीं मिलेंगे चाहे लाख धरो औतार ॥
पूरणमासी का चन्द्रमा है सूरज की उनिहार ॥
ऐसे दमक रहे ड्योढी पर जिनकी जोत झिल है नाय ॥
दर्शन करलो उन जोगियोंके जिससे जन्म सफल होजाय ॥
घर आये नाथ न पूजे बारह बमी पूजने जाय ॥
इतनी बात सुनी रानी ने उसकी गई समझ में आय ॥
एक तो बेटी थी राजा की दूसरे रूप दिया करतार ॥
तीसरे रानी उठती जवानी चौथे सोलह किये सिंगार ॥

रानी पौमा का दरवाजे पर जाना और जोगियों से बातचीत करना

थाल सुनहरे को मंगवा कर सब सामान लिया धरवाय ॥
मोहर अशरफी हीरे मोती थाल के अन्दर धरे सजाय ॥
लेकर थाल चली महलों से दरवाजे पर पहुँची जाय ॥
फिर ललकारा है बांदी को अब तू सुनले कान लगाय ॥
परदा करके दरवाजे पर जो मैं भीक देऊं पकड़ाय ॥
बोला ऊदल जब ड्योढ़ी पर और रानी से कहा सुनाय ॥
क्या रानी आंखों से अन्धी क्या काया में कोढ़ होजाय ॥
ऐसी भिक्षा हम नहीं लेंगे चाहे भूंख मार मर जाय ॥
इस पर जवाब दिया रानी ने और जोगीसे कहा सुनाय ॥
इन बातों की मत हट पकड़े इसमें मिले भलाई नाय ॥
मेरे घूंघट में वमी बनी है जिसमें बसे पदनिया नाग ॥
जो मैं खोलूंगी घूंघट को तुम दोनों के लगजाय आग ॥
लौटके जवाब दिया ऊदल ने रानी सुनले कान लगाय ॥
बारह बरस रहे बंगाले विद्या पढ़ी गुरू से जाय ॥
हम नाग को पकड़े तेरी वमीसे जो तू आगेको आजाय ॥
इतनी सुनली जब रानी ने गुस्सा भरा बदन में जाय ॥
परदा छोड़ दिया पीछे को रानी बढ़ आगे को जाय ॥
ऐसे दमक रही ड्योढ़ी पर जैसे बिजली कौंदा खाय ॥
पहले मोंढे पर मुन्शी था रानी उसको पड़ी दिखाय ॥
सूरत देखी जब रानी की नौले गिरा चरन पर जाय ॥

अब गश खाकर मुन्शी गिरगयाउसको खबररही कुछनाय ॥
मिची बत्तीसी है मुन्शी की तूम्बा दो टुकड़े हो जाय ॥
यह गत देखी जब ऊदल ने दिल में गया सनाका खाय ॥
बीन मुन्दरिया को जब फूंका राग छत्तीसों दिये उड़ाय ॥
मोहनी मन्तर को जब फूंकाओर रानी पर दिया झुकाय ॥
मारी ठोकर जब मुन्शी के ओर ऊदल ने कहा सुनाय ॥
देखके तिरिया को गिरने हो तुमको शरम रही कुछनाय ॥
पूरे गुरू के हम चेले हैं दहशत करें किसी की नाय ॥
काढ़ कुन्डली अब ऊदल ने ओर रानी के कहा सुनाय ॥
जब तक वचन नहीं भरने की तेरी भिक्षा लेंगे नाय ॥
इतनी सुनकर रानी जल गई शोला उठा बदन में जाय ॥
बांदी बांदी को ललकारा क्या तुम्हे ले गई मौत उठाय ॥
खबरें करदो तुम बंगले में मेरे भइया को लाओ बुलाय ॥
मुश्क बांध कर इन जोगियों की जल्दी लेवे कैद कराय ॥
जन्म के जोगी ये ना दीखें इन पर पड़ी इश्क की मार ॥
भूके ना हैं ये भिक्षा के तकते फिरें पराई नार ॥
रूप देख के दोनों जोगी मुझसे बचन रहे भरवाय ॥
बोला ऊदल जब ललकारा मैं बेटी का लेऊं बलाय ॥
पाप की बातों को मत बोले ऐसा तुम्हें मुनासिब नाय ॥
लौट के जबाब दिया रानी ने मैं जोगी का लेऊं बलाय ॥
कैसे पुत्री हमें बनाया तुमने बेटी लई बनाय ॥
तू ना जागी मेरे पीहर का इसका हाल देओ बतलाय ॥
बोला बेटा जस्सराज का ओर ऊदल ने कहा सुनाय ॥
अटने के धौरे एक पटनाहैं जहां पर सोहना लिया बसाय ॥

वहां का राजा चन्देला है जहां पर रहें बनाफल राय ॥
आल्हा ऊदल दो भइया हैं जिनका पूत इन्दलसी राय ॥
उन्हीं का भइया नरमलखे है अपना सिरसा लिया बसाय ॥
दई मंढ़इया हमें आल्हा ने और बनखंड में दई बनाय ॥
करीं जो सेवा मेरी मछला ने पैदा हुआ इन्दलसी राय ॥
फिर करी जो सेवा गजमोतिन ने पैदा हुआ जहोरंनराय ॥
तुझे यह लिख दिया बीमार ने रानी सुनले कान लगाय ॥
ब्याही जोगी तू मोहबे मैं तुझे वर मिले इन्दलसी राय॥
इतनी सुनली जब रानी ने और बांदी से कहा सुनाय ॥
देकर धक्का इन जोगियों को मेरी ड्योढ़ी से देओ हटाय ॥
ठोक मुसले फौलादों के ड्योढ़ी बन्द देओ करवाय ॥
मैं तो वचन नहीं देने की चाहे कैसी बात सुनाय ॥
सौ सौ बारी ऊदल झगड़े रानी एक मानती नाय ॥
लई कटारी जब ऊदल ने और गरदन पर धरी जमाय ॥
हत्या दूंगा मैं द्वारे पर तेरी कुली नरक में जाय ॥
ऐसा सराप्ूंगा महलों से जल कर सभी भस्म हो जाय ॥
हाथ जोड़ कर बांदी बोली और रानी से कहा सुनाय ॥
जोगी ब्राह्मण को जो सतावे हत्या सात जन्म ना जाय ॥
अब तुम वचन देओ जोगीको रानी सुनलो कान लगाय ॥
इतनी बात सुनी बांदी की और रानी के गई समाय ॥
एक वचन दे दोहरा वचनदिया तीसरे वचनपर कहासुनाय ॥
जो कोई लौटे वचन अपने को सीधा पड़े नरकमें जाय॥
बोला ऊदल जब रानी से रानी सुनले कान लगाय ॥
हम नहीं भूके हैं मालों के मोहर अशरफी चहिये नाय ॥

जा तोता लाई हरिद्वार से उस तोते को लेश्रो मंगाय ॥
सुनकर बातें अब जोगी की रानी भरी रोस में जाय ॥
आंखें लाल हुईं रानी गुस्सा भरा बदन में जाय ॥
जो तू भूका है तोते का तोते बहुत देऊ मंगवाय ॥
पर उस तोते को नहीं देने की चाहे मूंड मार मर जाय ॥
बोला मुन्शी अब ललकारा और ऊदल से कहा सुनाय ॥
काम नहीं है यह जोगी का जो पक्षी से प्रीत लगाय ॥
पाप चढे है सात जन्म तक कुत्ता बिल्ली जो खाय जाय ॥
मोह छोड़कर सब दुनिया का तुमने डाला मूंड मुंडाय ॥
करो तपस्या शिव पर्वत पर जिससे जन्म सुफल होजाय ॥
बोला मुन्शी फिर रानी से सुन राजा की राजकंवार ॥
जब से आये तेरी नगरी में पेट में अगन रही ललकार ॥
तीन पहर होने को आये हमने कुछ खाया है नाय ॥
खुद्या लग रही अबभोजन की रानी फटा कलेजा जाय ॥
करो रसोई तुम महलों में हमको भोजन देश्रो जिमाय ॥
यह मन मान गई रानी के और हिरदे में गई समाय ॥

पैंमा का जोगियों को अपने महल में ले जाना उनके लिए रसोई बनाना

इसमें जोगी झूठ नहीं है यह जो तुमने कहा सुनाय ॥
करूं रसोई में महलों में तुमको भोजन देऊं जिमाय ॥
आगे आगे हरनन्दन की पीछे चले बनाफल राय ॥
पहली ड्योढ़ी पीछे छोड़ी दूसरी तीसरी लई दबाय ॥

सातवीं ड्योढ़ी पर जब पहुँचे मुँह का थूक बन्द होजाय ॥
सुर्खी उड़ गई है चेहरे की मुंह पर गई उदासी छाय ॥
महल बना है यहां पैरों का रस्ता कहीं दीखता ॥
मांस पलड़ियों में बट जागा ढूंडा खोज मिलेगा नाय ॥
चल भर धरती ना मिलने की मोहका लाखकोसरह जाय ॥
रंडिया दुखियाके लड़के हो माताबिलक बिलक रह जाय ॥
ओछी गली महलों की यहां तलवार चलेगी नाय ॥
काले के मौडे पर आ पहुँचे जाने जान बचे या जाय ॥
नजर घूम गईजब रानीकी और जोगियों पर गई निघाय ॥
अब तुम चले जाओ आगे को कैसे रुके पिछाड़ी जाय ॥
बढ़ गये जोगी अब आगे को शीश महलमें पहुँचेजाय ।।
बिछ गये आसन अब दोनो को ऊदल बैठ बराबर जाय ॥
लगी कनात रङ्ग महल में बीच में परदा दिया कराय ॥
चौकी डाली मलियागिरकी कलस पानी का दिया मंगाय ॥
रानी बैठ गई चौकी पर रामचन्द्र का ध्यान लगाय ॥
भर भर लोटा गंगा जल का रानी मल सबुन से न्याह॥
न्याह धोय कर जब फारिग हुई जिसका पैसा कहाय ॥
धोती पहनी पीताम्बर की गोरे अङ्ग में गई समाय॥
सवा पहर की पूजा करके नारायण का ध्यान लगाय ॥
लोटा भरके गंगा जल का फिर सूरजको दिया चढ़ाय ॥
सीढ़ी सीढ़ी रानी चढ़ गई, छत के ऊपर पहुँची जाय ॥
बालाखाने के कमरे में रानी तपी रसोई जाय ॥
माल छत्तीसों को बनवाया और सब भोजन किया तैयार ॥
इतने थर्वे ऊदल देखे चारों तरफ को रहा निहार ॥

ना यहां पिंजरे को देखा है ना कहीं तोता पड़ा दिखाय ॥
हमें बहकाया गुरू अमरा ने मुल्कों मुल्कों दिया फिराय ॥

ऊदल और इन्दल की बातचीत

बीन बजाई जब ऊदल ने राग छत्तीसों दिए सुनाय ॥
इन्दल सोचे था महलों में उसके कान भनक पड़ जाय ॥
झपट के इन्दल बैठ हो गया गुरू अमराका ध्यान लगाय ॥
या तो बीन है गुरू अमराकी ऐसी किसी और पर नाय ॥
आ गया कौन यहां पर ऐसा जिसने बीन बजाई आय ॥
निकला इन्दल जब अन्दर से उसको ऊदल पड़ा दिखाय ॥
दौड़ के इन्दल अब आगे को और ऊदल पर पहुँचा जाय ॥
कौली भरली है ऊदल ने और छाती से लिया लगाय ॥
बोला इन्दल अब ऊदल से मैं चाचा का लेऊ बलाय ॥
राजी खुशी कहो मोहबे की कैसे रहे बनाफल राय ॥
बोला ऊदल आहिस्ता से बेटा सुनो इन्दलसी राय ॥
चैन गुजर रहे गढ़ मोहबे में खटका किसी बात का नाय ॥
कैसे आ गया तू फन्दे में अपना हाल देओ बतलाय ॥
इतनी सुनकर इन्दल रोया और चाचा से कहा सुनाय ॥
ढूंढने निकला तुझे गंगा पर तेरा पता लगा कहीं नाय ॥
तृष्णा लगी जब जल पीने को मैं पटरी पर पहुँचा जाय ॥
धोका देकर इस डायन ने नार के अन्दर लिया बुलाय ॥
पढ़ पढ़ सरसों मेरे मारी मुझको तोता दिया बनाय ॥
मुझको डाल दिया पिंजरे में खिड़की बन्द दई करवाय ॥
मानस हो तो पार बसावे इन जादू से नहीं बसाय ॥

लेकर भागी हरिद्वार से बलख बुखारे पहुँची आय ॥
सात कोटरी में बन्द रक्खे बाहर कदम धरन दे नाय ॥
ना कोई मिला मुझे मोहबे का जो मैं देता खबर कराय ॥
बातें हो रही थीं दोनों की जब रानी ने देखा जाय ॥
जलकर रानी रापट होगई लगे गई आग बदनमें जाय ॥
घोरे खड़ा देख जोगियों के और आपे में नहीं समाय ॥
आटा फेंक दिया धरती में चूल्हे पानी दिया झुकाय ॥
गरज्जती आवे उतरती आवे डायन झुकी चौक में आय ॥
बांदी बांदी को ललकारा बांदी सुनले कान लगाय ॥
ठोक मूसले फौलदों के फाटक बन्द देओ करवाय ॥
जाने न पावें अब महलों सेइनको जिन्दा छोडूं नाय ॥
दीखें छलिया किसी देशके अब छल किया महलमें आय ॥
धोरे बुलाकर मेरे बालम को और यह उसको रहे बहकाय॥
लई भगौती जब इन्दल ने नङ्गी ली तलवार उठाय ॥
ऐसी बातों को मत बोले तुझको जेबा देती नाय ॥
लज्जा खोदी दोनों कुलकी तुझको शरम रही कुछ नाय ॥
घोके न रहियो तू जोगी के चाचा मेरा उदयचन्द राय ॥
नाता लगे है तेरा ससुरे का क्या तेरी अक्ल गई बौराय ॥

पँमा और ऊदल की बातचीत

आंचल डालो तुम चेहरे पर इससे परदा करो बनाय ॥
घूंघट खैंच लिया रानी ने और परदे में दुबकी जाय ॥
हाथ जोड़कर रानी बोली मेरी तकसीर माफ हो जाय ॥
आठ माह नौ कार्तिक नहाई और चौबीसौं ग्यासे मनाय ॥

मैंने जौ बोये गंगा में और बालु की भीत चिनाय ॥
दुरगे होम किये दुखियाने जब वर मिला बनाफल राय ॥
अब तुम लेचलो मुझे यहां से मोहबे लीजो ब्याह कराय ॥
इस पर जवाब दिया ऊदल ने बेटी सुनले कान लगाय ॥
तुझेतो खुशी लगी ब्याह की मुझे वर मिले इन्दलीराय ॥
मोहबे का तख्त पड़ा है उल्टा जब से इन्दल लाई चुराय ॥
ना डर है तुझको ठट्ठे का और फजियतसे डरती नाय ॥
चार विलायत हमको जाने नामी जात बनाफल राय ॥
जोहम लेजां तुझ क्वारीको कुल अपने को दाग लगजाय॥
भर भर बोली दुशमन मारें यह क्वारी को लाये भगाय ॥
तुझे ना जाने कोई राजा की रइयत नीच बतावे आय ॥
बैठी भजन करो महलों में रामचन्द्र का ध्यान लगाय ॥
अब मैं लेजाकर इन्दल को मां बापों से देऊं मिलाय ॥
फिर मेरे ब्याह की करें तइयारी बलखबुखारे पहुँचे आय ॥
बावन राजा छप्पन सूबे और चौर चौरासी चढें नवाब ॥
यह दल टूटे तेरे ब्याह में जिसका ना हो सके हिसाब ॥
कलश डूब जायें खूनों में चरबी लिपट खम्ब से जाय ॥
उस दिन ब्याह रचे इन्दल का डोला चढ़ मोहबे को जाय ॥
आसन डिग गया मैंकासुरका चाहे कैलाश छोड़ शिवजाय॥
हम नहीं छोड़ें तेरे डोले को धरती लोट पोट हो जाय ॥
हाथ जोड़कर रानी बोली और ऊदल से कहा सुनाय ॥
कहने में तो शरम लगे है और बिन कहे रहा ना जाय ॥
मुझे ब्याह कर ना ले जाओ छत्री धरम रहेगा नाय ॥
ऐसा सराप् गी मोहबे को जलकर तुरत भस्म हो जाय ॥

इस पर जवाब दिया ऊदल ने मैं बेटी का लेऊं बलाय ॥
क्यों घबरावे अपने दिल में तुमको कौन पड़ी परवाय ॥
धरती लौटे अम्बर फट जाय गंगा लौट बहे हरिद्वार ॥
जब नहीं छोड़ें हम डोले को चाहे रोज चले तलवार ॥
इतनी सुनकर रानी बोली और ऊदल से कहा सुनाय ॥
चढ़ी रसोई मेरे महलों में भोजन करो बनाफल राय ॥
मैं तावेदारी में हाजिर हूं अच्छी खातिर करूं बनाय ॥
बोला ऊदल जब रानी से क्यों तेरी अक्ल गई बौराय ॥
हम नहीं भूखे हैं भोजन के क्या तू लोभ रही दिखलाय ॥
क्वारी के हाथ का भोजन खावें छत्री धरम रहे फिरनाय ॥

ऊदल नौले मुन्शा और इन्दल का सिरसे को जाना

रोई कौशल्या अयोध्यागढ़ में बन को गये राम रघुराय ॥
ऐसे ही रोवे हरनन्दन की इन्दल गढ़ मोहबे को जाय ॥
चल पड़े तीनों अब महलोंसे गुरु अमराका ध्यान लगाय ॥
कोई घड़ी के अब अरसे में वह जंगल में पहुँचे जाय ॥
सुरत लगाई गढ़ सिरसे का ठहरे कहीं रस्ते में नाय ॥
मन्जिल मन्जिल के चलने में गढ़ सिरसे में पहुँचे आय ॥
थोड़ी दूर जब सिरसा रह गया कहने लगा उदयचन्दराय ॥
बोला इन्दल जब इन्दल से मैं बेटे का लेऊं बलाय ॥
अब तुम जाओ गढ़ मोहबेको मां बापों से मिलियो जाय ॥
मैं नहीं कदम धरूं मोहबे में तुमसे हाल कहूं समझाय ॥

नेकी नाय करी आल्हा ने नील का टीका दिया लगाय ॥
झूठ सच माहिला ने आकर तेरे बापसे कहा सुनाय ॥
मार के इन्दल को ऊदल ने गंगाजी में दिया बहाय ॥
बिपत हमारी कुछ मत पूछे मेरा फटा कलेजा जाय ॥
इकले माहिला के कहने से यह गत करी हमारी आय ॥
हाथ पांव में बेड़ी डाली गले में तौक दिया डलवाय ॥
फांस ठोक दीं नाखूनों में कानों चौंप दई ठुकवाय ॥
ऐसा दुख दिया आल्हा ने बेटा मेरे इन्दलसी राय ॥
धरती लरजे अम्बर लरजे उसके लरज आई कुछ नाय ॥
जोकुछ हक था समझानेका सबने उसको लिया समझाय ॥
बहुतसा बरजा तेरी माता ने उसने सुनी किसीकी नाय ॥
ले जाओ इनको कजरी बन में जल्लादों से कहा सुनाय ॥
आंख निकाल इनकी दोनों और जान से डालो मार ॥
त्राह त्राह मोहबे में होरही और सब रोवें नर और नार ॥
रइयत रोबे हैं घर घर में ले ले नाम उदयचन्द राय ॥
ज्वान पांचसौ के हल्ले में दोनों को लियाकैद कराय ॥
चिट्ठी लिखकर तेरी चाचीने मलखे पर दी खबर कराय ॥
माता तेरी गिजनी बनकर वह सिरसे में पहुँची आय ॥
जो कुछ बीता गढ़ मोहबे में सब मछलाने दिया सुनाय ॥
हाल सुना जब नर मलखे ने कजरी बन में पहुँचा जाय ॥
भला हूजियो नर मलखे का जिसने हमको लिया बचाय ॥
नील का टीका लगा हमारे नारायण ने दिया मिटाय ॥
मैं नहीं जाऊंगी मोहबे में बेटा सुनो इन्दलसी राय ॥
ना मुंह देखूं मैं आल्हा का अपना उसे दिखाऊं नाय ॥

मेरे जाने आल्हा मर गया उसके जाने उदयचन्द राय ॥
इतनी सुनकर अब ऊदल से इन्दल गया सनाका खाय ॥
नीचे का दम नीचे रह गया धक्का लगा कलेजे जाय ॥
काढ़ भगौती अब इन्दल ने और गरदन पर धरी जमाय ॥
लानत लानत मेरे जीनेको अपना मुंह दिखलाऊं नाय ॥
नहीं कुछ काम मेरा दादा से ना मुझे मात की परवाय ॥
जो उसको प्यारा इन्दल होता संगमें लेता मुंड मुंडाय ॥
मैं तो नौकर हूं चाचा का तेरी खिदमत करूं बनाय ॥
चोटी मुंड के चेला करलो अङ्ग में भस्मी देओ रमाय ॥
मैं इकला जाऊं जो मौहबेको मुझको कौन पड़ी परवाय ॥
बैठे रहियो तुम धूनी पर मैं तेरी सेवा करूं बनाय ॥
जहां तुम चलोगे वहां चलुंगा तेरा सङ्ग छोड़ूंगा नाय ॥
या तो साथ चलो मौहबेको और नहीं दूंगा प्राण गमाय॥
यह गत देखी जब इन्दलकी घबरा गया उदयचन्दराय ॥
बाली उमर का वह लड़का है ना कहीं मरे कटारी खाय ॥
भुजा पकड़ली अब इन्दलकी और छातीसे लिया लगाय॥
क्यों घबरावे अपने दिल में बेटा मेरे इन्दलसी राय ॥
सङ्ग चलूं मैं गढ़ सिरसे तक आगे कदम धरूंगा नाय ॥

तीनों का सिरसे के बाग में पहुंचना

खेंच खांचकर अब ऊदल को इन्दल सिरसे गया लिवाय ॥
बाग बना था जहां मलखे का वहांपर तीनों पहुँचे जाय ॥
मार पलौथी दोनों बैठे अग्नि चेतन दई कराय ॥

मालिन घूम रही रोसों में और फूलों को रही उठाय ॥
नजर घूम गई है मालिन की उसको जोगी पड़े दिखाय ॥
बढ़गई मालिन अब आगेको और जोगियों पर पहुँचीजाय ॥
हाथ जोड़कर दी परकम्मा चरनों में दिया शीश नवाय ॥
बोली मालिन है जोगियों से और उनसे यह कहा सुनाय ॥
कौन देश से तुम यहां आये आगे कौन देश को जाय ॥
नाम बतादो गुरू अपने का कैसे डाला मूंड मुंडाय ॥
ना मालिन से जोगी बोले ईश्वर ने रहा ध्यान लगाय ॥
चुप और चाप धुनी पर बैठे अपनी माला रहे घुमाय ॥
नीचे ऊपर मालिन देखे मन में सोच सोच रह जाय ॥
बहुत से जोगी तपैं जलमें जब जाड़ोंका समय आजाय ॥
बहुत से जोगी तपें जेठ में गरम हवा जब झोंके खाय ॥
बहुतसे जोगी खड़े तपें हैं और यह सोवें जमी पर नाय ॥
बहुतसे जोगी बने मोहनी बोले नहीं किसी से जाय ॥
बहुत से जोगी ऐसे तपें हैं नाखूनों को लेंय बढ़ाय ॥
यह तो जोगी दीखें मोहनी किसी से बोलें चालें नाय ॥
श्याम बरन और मुख निरियाला नयना मृगाकी उनहार ॥
गज भर छाती इन जोगियोंकी दहने नगन धरी तलवार ॥
यह तो बेटे हैं क्षत्री के रूप जोगी का लिया बनाय ॥
मुझको अगवां यह सूझे है इनकी जात बनाफल राय ॥
जौननसा जोगी बैठा सामने दीखे मुझे उदयचन्द राय ॥
संग में इनके जो लड़का है इन्दल मुझको पड़े दिखाय ॥
जाकर अब मैं रनवासों में गजमोतिन से कहूं सुनाय ॥
वही पहचानेगी दोनौं को अपनी नजर से देखे आय ॥

डलिया लेली है फूलों की सर के ऊपर धरी जमाय ॥
चल पड़ी मालिन अब बागोंसे रनवासों की सुरत लगाय ॥
कहीं २ कदम धरे धरती में और कहीं कदम धरे हैं नाय ॥
कोई घड़ी के अब अरसेमें रनवासों में पहुँची जाय ॥
गजना तिलका जहां बैठी थीं मालिन डटी सामने जाय ॥
डलिया लेकर जब फूलों की उनके धरी अगाड़ी लाय ॥
नजर उठाकर गजमोतिन ने जब मालिन से कहा सुनाय ॥
क्या कुछ पाया रस्ता चलते हमको जल्दी देओ बताय ॥
बड़ी खुशी चेहरे पर हो रही क्यों तू नयन रही मटकाय ॥
हाथ जोड़कर मालिन बोली मेरी तकसीर माफ होजाय ॥
जैसे जोगी ठहरे बाग में ऐसे तीन खूंट में नाय ॥
मुझको अगवा यह सूझे है कहीं न होय उदयचन्द राय ॥
इतनी सुनकर गजमोतिन ने फिर सासू से कहा सुनाय ॥
पुनवा धींवर को बुलवालो वह डोले को लाये सजाय ॥
यह मन मान गई रानी के पुनवा धींवर लिया बुलाय ॥
हुक्म सुनाया जब तिलका ने और धींवर से कहा सुनाय ॥
जल्द सजाला तू डोले को अब क्यों रक्खी देर लगाय ॥
सैर करेंगे हम बागों की हमें बाग में दे पहुँचाय ॥

रानी तिलका और गजमोतिन का जोगियों के पास बाग में जाना

इतनी सुनकर पुनवा धींवर डोले लाया तुरत सजाय ॥
सब्ज सुर्ख मलमल के परदे चारों तरफ दिये लगवाय ॥

सच्चे मोती की झालर है हीरा कनी दमकती जाय ॥
ताश बादलों के परदे हैं झिलमिल ऊपर दई लगाय ॥
आयत पांयत डाल गोंदवे बीच में गिलम दई बिछवाय ॥
सुरख गलीचे को लिखवाया जिसमें जावें पांव समाय ॥
मोहर अशरफी को धरवाया और सबै धरीं मिठाई लाय ॥
थाल सुनहरे को सजवा कर वह डोलों में बैठी जाय ॥
चल पड़े डोले रंग महल से शामिल हुए बाग में जाय ॥
देखें रानी जब डोलेये श्रोर जौर जोगी पर गई निघाय ॥
बोला ऊदल जब नौले से मैं मुन्शी का लेऊं बलाय ॥
चौकस हो जाओ अब धूनी पर ये मैं तुमसे कहूं सुनाय ॥
अव्वल मौंडे पर चाची है मेरी माता को उनिहार ॥
पीछे भाबी गजमोतिन है गजराजा की राजकंवार ॥
संभल के बैठो अब धूनी पर मत कहीं गिरे पांव में आय ॥
पांव पकड़ लिए जो चाचो ने छत्री धरम रहेगा नाय ॥
मैंढ टूट जोगी मोहबे की फिर मरजाद बंधेगी नाय ॥
इतने तिलका हाथ जोड़कर नर ऊदल पर पहुँची जाय ॥
बैठा हो गया वह धूनी पै और सौंटा को लिया उठाय ॥
बोला ऊदल जब रानी से माता सुनले कान लगाय ॥
दूर से बात करो जोगी से तन पर हाथ लगाओ नाय ॥
नए गुरू के हम चेले हैं मन्तर हमें बताया नाय ॥
सुनकर बातें ये जोगियों की रानी हट पीछे को जाय ॥
तुमने जोगी ठीक कहा है इसमें झूठ जरा है नाय ॥
गजना बोली जब पीछे से मैं सासू का लेऊं बलाय ॥
बावली कर दी नारायणने क्या तेरी अकल गई बौराय ॥

ये बापन रूपी हैं मोहबे के नट और कंजर बनें संसार ॥
नट कन्जर और जोगी बनकर परदेशों में करें तलवार ॥
एक दिन चढ़गये मेरे बावल के गढ़ कांसों में पहुँचे जाय ॥
मचीं लड़ाई जब महलों में खून की नदी दई बहाय ॥
सहटी लगीं थीं वहां लोहे की और भुमवल में बैठींजाय ॥
जाहू भबूती दहने हाथ की देखो आप निशानीजाय ॥
ये वही मैदला का चढ़वइया रन का दूलह उदयचन्दराय ॥
इतनी सुनकर गजमोतिन से जब हंस पड़ा उदयचन्दराय ॥
खूब पहचाना गजराजा की गजमोतिन से कहा सुनाय ॥
हाथ जोड़कर दी परकम्मा और चाची को शीश निवाय ॥
भरली कौली जब तिलकाने और छाती से लिया लगाय ॥
फिर पुचकारा है इन्दल को और गोदी में लिया उठाय ॥
धन धन बेटा रानी मछला के बेटा मेरे इन्दलसी राय ॥
बोली तिलका फिर ऊदल से मैं बेटे का लेऊं बलाय ॥
हाल सुना दो हमें जल्दी से कहांसे मिला इन्दलसी राय ॥
भारी फिकर था हमें इन्दलका जानेकौन ले गया चुराय ॥
इतनी सुनकर ऊदल बोला चाची सुनलो कान लगाय ॥
डंकनी बेटी हरनन्दन की जिस पर जादू बहुत सिवाय ॥
बना के तोता अब इन्दलको बलख बुखारे पहुँची जाय ॥
पता लगाया गुरुअमरा ने हमको हाल दिया बतलाय ॥
बलख बुखारे में इन्दल है पैमा उसको गई लिवाय ॥
इन्दल कारन जोगी बन गए अपना डाला मूंड मुंडाय ॥
जब हम पहुँचे बलख बुखारे महलों में दी अलख जगाय ॥
बड़े जतन से इसको लाया तुमसे हाल कहूं समझाय ।

बचन दे आया मैं रानी को और और कर आया करार ॥
बिना ब्याहे जो तुझे छोड़ूं रन में डूब जाय तलवार ॥
इतनी सुनकर गजना बोली मैं देवर का लेऊं बलाय ॥
करो तइयारी तुम बंगले की अब क्यों रक्खी देर लगाय ॥
उठ कर चल दिये अब बगिया से जोगी बढ़ें अगाड़ीजाय ॥
डोले पहुँचे हैं सिरसे में दाखिल हुए महल में जाय ॥
जोगी पहुँच गये बङ्गले में आर मलखे के धोरे जाय ॥
पांच कदम से करी बन्दगी धोरे जाकर शीश निवाय ॥
बैठा हो गया वह गद्दी से और ऊदल पर पहुँचाय ॥
भरली कौली अब ऊदल की और छाती से लिया लगाय॥
हाथ पकड़ कर फिर ऊदलका उसे गद्दी पर लिया बिठाय ॥
नौले बैठ गया कुरसी पर उसके पास इन्दलसी राय ॥
सूरत देखी जब इन्दल की मलखे बहुत खुशी हो जाय ॥
लंका जीत कर रामचन्द्र जी अब अयोध्या में पहुँचे आय ॥
चरत भरत राम लछमनको जैसे भगवानने दिया मिलाय ॥
ऐसे हीं मिल गयेऊदल मलखे कुछ तारीफ करी ना जाय ॥
हुक्म सुनाया है मलखे ने अब मैं दान देऊं करवाय ॥

सिरसे में तोपों का चलना

बाहर दान दिया मलखे ने महलों दिया गजन्दे नार ॥
बड़ी खुशी सिरसे में हो रही निरिया गावें मंगलाचार ॥
बोला मलखे गोलन्द जों से मैं ज्वानों का लेऊं बलाय ॥
पड़े पलीता मेरी तोपों में खाली बाढ़ देओ दगवाय ॥

सौ सौ तोपों की बाढ़ों में वत्ती एक सङ्ग पड़जाय ॥
दगी सलामी जब तोपों की धुन्दू काल दिया मचवाय ॥
बड़ी बड़ी तोपें अष्टधातकी बाहर कोस तकजाय धदकार॥
सुन सुन तोपों की गरजों को मछला मनमें करै विचार ॥
फिर ललकारा है मछला ने और आल्हासे कहा पुकार ॥
क्या तो कुछ पाया मलखे ने था घर पूत लिये औतार ॥
कोई खुशी सिरसे में हुई है जो मलखे रहा तोप चलाय॥
मैंने मना किया बालम से मत देवर को मरवाय ॥
एक ना मानी बात हमारी दोनों आंखें लीं कढ़वाय ॥
तैने मरवा कर देवर को दिलका लिया अरमान मिटाय ॥
जिस दिन ऊदल था मोहबेमें मलखे आवे था औरजाय॥
इकले देवर के मरने से कोई तेरी बात पूछता नाय ॥
अब तुम पड़े रहो महलों में कोई खातिर में लाता नाय ॥
जब यह बात सुनी मछला की रोने लगा बनाफल राय ॥
जो कुछ होनी रहे है होकर और बिन हुए टले है नाय ॥
यहां की बातों को यहां छोड़ा अब सिरसेका देऊं सुनाय॥

मलखान का आल्हा पर चिट्ठी भेजना

कल्लू मुन्शी को ललकारा और मलखे ने कहाय ॥
लिख दो चिट्ठी गढ़ मोहबे को और आल्हापर दोपहुँचाय॥
अपने बेटे को ले जाओ हमको देओ उदयचन्द राय ॥
जैसा जोधा मेरा भइया था ऐसा बावनगढ़ में नाय ॥
राम और लछमनकैसी जोड़ी तुम दुशमनने दई मिटाय ॥
जो धन रक्खे रजपूती का अपना खेत बुहारो आय ॥

जो तेरी मन्शा ना लड़ने की पैदा करो उदयचन्द राय ॥
नहीं इकले ऊदल के बदले में तेरा डालूं खोज मिटाय ॥
फटे पपौढ़ी जब दिन निकले मलखे यहां पर पहुँचे आय ॥
चिट्ठी बन्द करी मलखे ने अपने दस्तखत दिये बनाय ॥
देदी चिट्ठी हलकारे को तुम आल्हा पर दो पहुँचाय ॥
लेकर चिट्ठी हलकारे ने अपनी जेब में रक्खी जाय ॥
करी तइयारी हलकारे ने पांचों लिये हथियार लगाय ॥
कूद सांडनी पर चढ़ बैठा रामचन्द्र का ध्यान लगाय ॥
बबल बबल कर चली सांडनी तलवे धूल लगे है नाय ॥
कोई घड़ी के अब अरसे में झिम्भावट में पहुँचा जाय ॥
नजर घूम गई है मछला की हलकारे पर पढ़ी निघाय ॥
कौन इरादे पर आये हो हमको हाल देओ बतलाय ॥
बोला बेटा चोबदार का चुगलखोर से कहा सुनाय ॥
भगना हो तो भगजा यहां से अपनी लेजा जान बचाय ॥
नहीं कोई घड़ीके अब अरसेमें मलखे यहांपर पहुँचे आय ॥
यहां पर मलखे जो आ जावे तेरी जान बचेगी नाय ॥
सजती फौजोंको छोड़ा है और सब लशकर खड़ा तइयार ॥
इतनी देर है आ जाने में वह घोड़े पर होय सवार ॥
जब यह बात सुनो माहिल ने डौला बैठ पेट में जाय ॥
खुला छोड़ कर सब दफ्तरको वहां से भागा जान बचाय ॥
दहशत मलखेकी गालिब हुई ना आ जाय बनाफल राय ॥
हाथों हाथों चिट्ठी पहुँची दाखिल हुई बनाफल राय ॥
खत को देखा जब आल्हा ने नीचे गिरा पलंग से जाय ॥
अरे बेदुला के चढवइया रन का दूलहा उदयचन्द राय ॥

हलकी पीठ देख आल्हा की मलखे दहशत रहा दिखाय ॥
आल्हा पछतावे महलों में लेकर नाम उदयचन्द राय ॥
आज के दिन को ऊदल होता सबकी देख लेता तलवार ॥
कब से मलखे मनबढ़ हो गया कब से हो गया दावेदार ॥
हाथ जोड़कर मछला बोली मैं बालम का लेऊं बलाय ॥
धोके न रहियो तुम ऊदल के जल्लादों ने दिया मरवाय ॥
कड़वा बेटा बच्छराज का तेरी शरम करेगा नाय ॥
जो चढ़ आया झिझावट पर सबको दे बिस्मार कराय ॥
अब तुम चलेजाओ सिरसेको उसकी करो खुशामद जाय ॥
ना सङ्ग हाथी ना सङ्ग घोड़ा ना ज्वानों को सङ्ग लिवाय ॥
पैदल चले जाओ सिरसे को झिझावट को लेओ बचाय ॥
इसी तरह से चला बनाफल गुरु अमरा का ध्यान लगाय ॥

आल्हा का नंगे पांव सिरसे में मलखान के पास जाना

चलता जावे रोता जावे ले ले नाम उदयचन्द राय ॥
बहुत सा रंज किया आल्हा ने मैंने ऊदल दिया मरवाय ॥
ऊदल बंध गया था मांडों में इन्दल सात समन्दर पार ॥
मलखे बंध गया गढ़ कांसों में राजा गजराजा के द्वार ॥
देश देश में फिर आया कहीं मेरा मान घटा था नाय ॥
इकले ऊदल के बरने से मेरा मान भंग हो जाय ॥
कोई घड़ी के अब अरसे सिरसे की ली सींव दबाय ॥
जिनका पहरा था बुरजों पर उन ज्वानों से कहा सुनाय ॥

आल्हा आवे है सिरसे में ओ महाराज बनाफल राय ॥
इतनी बात सुनी मलखे ने जब हिरदे में गई समाय ॥
सामने बिठलाया इन्दल को ऊदल मुन्शी दिये दुबकाय ॥
सारे ज्वानों से यह कह दिया इसका भेद बताइयो नाय ॥
जितने क्षत्री यहां पर बैठे नर मलखे ने कहा पुकार ॥
जब यहां आवे मोहबे वाला रहना खबदार हुशियार ॥
लई भगौती नर मलखे ने नंगी ली तलवार उठाय ॥
धोरे बैठ गया इन्दल के सुरखी रही बदन में छाय ॥
आ गया आल्हा दरवाजे पर और बङ्गले में पहुँचा जाय ॥
बीस कदम से जब आल्हा ने और इन्दल से कहा सुनाय ॥
भारी दुहत्तड़ है छाती में औंधा पड़ा धरन पर जाय ॥
भइया भइया कह कर रोवे हाय कहां गया उदयचन्द राय ॥
गरजा मलखे जब ललकारा जैसे शेर तड़ेड़ा खाय ॥
अब तुम बातें करो दूर से आगे कदम बढ़ाओ नाय ॥
धोके न रहियो तुम ऊदल के तुझे जमघाट देऊं पहुँचाय ॥
पहले मारूं तुझे जान से फिर इन्दल को दूं मरवाय ॥
इकले ऊदल के बदले में सबका डालूं खोज मिटाय ॥
तप करने से राज मिले है बिछड़ा हुआ कुटुम मिलजाय ॥
तीन लोक चारों परदो में मुझे नहीं मिले उदयचन्द राय ॥
अपने बेटे को ले जाओ हमें ऊदल से देओ मिलाय ॥
ऊदल वाले अब बदले में तुझे चण्डी पर देऊं चढ़ाय ॥
कर कर कर कर आल्हा रोवे जैसे कुंज रही डकराय ॥
पत्थर पड़गए रानी मछलापर जिसदिन जना इन्दलसीराय ॥
जात कुजात हुआ कमजाती पैदा हुआ हमारे आय ॥

होते ही मर जाता महलों में रहता एक परेखा नाय ॥
क्या दृष्टि पड़ी ओछे की या रानी सोई और के जाय ॥
आकर पैदा हुआ आल्हाके कुनबेका दिया खोज मिटाय ॥
काढ़ सगौती अब आल्हा ने गरदन ऊपर धरी जमाय ॥
भइया भइया को रोवे है हाय कहां गया उदयचन्द राय ॥
दौड़ा मलखे जब जल्दी से और आल्हा पर पहुँचा जाय ॥
हाथ पकड़ लियाहै आल्हाका और मलखेने कहासुनाय ॥
कुवा और खत्तातुमको मिटगई क्योंना मरे डूबकर जाय ॥
आंख देखली जब ऊदलकी अपने दागको लिया मिटाय ॥
जिसकी आवे वही मरे है बिन आई मरे कोई नाय ॥
मरे हुए फिर कहीं जीवे है बङ्गलेमें रहा मकर बनाय ॥
अपने बेटे को लेजाओ कोट झिंझावट पहुँचो जाय ॥
जाकरमरियो नगरझिंझावट जहां ऊदलको दियामरवाय ॥
बोला आल्हा जब मलखेसे रोकर कहे बनाफल राय ॥
क्या मुंह लेकर अब मैं जाऊं क्या रइयतसे कहूं सुनाय ॥
मर मर पल्ला मुझे कोसे हैं फुलवा और पोपदे नार ॥
तुमचल कर यहांसे उन्हें समझादो भइयामेरे बनाफलराय ॥
नहीं हत्या दूंगी तेरे बङ्गले पर अपने दूंगा प्राण गंवाय ॥
इतनी बात सुनी मलखे ने उनके दिल में गई समाय ॥
हाथी सजवा कर जल्दी से उस पर चारों बैठे जाय ॥
आल्हा मलखे बोले मुन्शी और चढ़गया इन्दलसी राय ॥

आल्हा मलखान और इन्दल का

झिझावट को जाना

कोई घड़ी से अब अरसे में कोट झिंजावट पहुँचे जाय ॥
निकली रइयत झिंजावट की दरवाजे पर पहुँची आय ॥
हाथी पहुँचा महल के नीचे जहां पर खड़ी पौपदे नार ॥
नजर घूम गई जब इन्दल की वह चाची को रहा पुकार ॥
रोती देखी जब चाची को और मलखे से कहा सुनाय ॥
पहले मिल आऊं चाची से पीछे मिलूं कुदम से जाय ॥
इन्दल उतर पड़ा हाथी से और फाटक पर पहुँचा जाय ॥
जहां पर तीनों चाची बैठी दाखिल हुआ वहां परजाय ॥
पांच कदम से करी कोरनिश धोरे जाकर शीश निवाय ॥
करी सलामी जब इन्दल ने रानी ले गई शीश चढ़ाय ॥
बोली फुलवा जब ललकारी और इन्दल से कहा सुनाय ॥
अब तुम बातें करो दूर से आगे कदम बढ़ाओ नाय ॥
मानस खाने बालम हमारे और हम बसें डकनी नार ॥
धोरे हमारे को मत आओ ये हम तुमसे कहें पुकार ॥
एक दिन संग गये बालम के गंगा करने को अस्नान ॥
चुगली खाई यहां माहिल ने तेरे बाप ने करा बयान ॥
मेरे सामने नर उदल ने तेरे बेटे को डाला मार ॥
सच्ची बात समझ माहिल की बालम दिया जान से मार ॥
सबने बरजा तेरे ताऊ को मत भइया को करे हलाल ॥
बहुत सा बरजा तेरी माताने उसने ना कुछ किया ख्याल ॥

यों तरसा कर पति हमारा तेरे ताऊ ने दिया मरवाय ॥
आंख देखली तेरे चाचा की जब खुश हुआ बनाफल राय ॥
इतनी सुनली जब इन्दल ने फिर चाची से कहा सुनाय ॥
क्यों घबराये अपने दिल में तुमको कौन पड़ी परवाय ॥
पहनो पहनो हरी हरी चुड़ियां अपने लो सिंगार बनाय ॥
वही गैंदुला का चढ़वइया मेरी लाया बन्द छुड़ाय ॥
तुम जानो या मैं जानूं हूं और को खबर कीजियो नाय ॥
तीन महीने चौदह दिन में तुझे चाचा से देऊं मिलाय ॥
धोके न रहियो जल्लादों के वह चाचा को आये मार ॥
जब तेरी चिट्ठी गई सिरसे में चाचा मलखे के दरबार ॥
इधर से चिट्ठी गई तुम्हारी उधर से माया पहुँची जाय ॥
देखी चिट्ठी तेरे हाथ की और माता ने दिया समझात ॥
कूद बछेरे पर चढ़ बैठा और बेले की सुरत लगाय ॥
जाकर पहुँचा उस बेले में जहां पर खड़ा उदयचन्दराय ॥
खाज उड़ादी जल्लादों की वह पैरों में लोटे जाय ॥
हाथ जोड़कर नर मलखे से जल्लादों ने कहा सुनाय ॥
हुकम आल्हाका जो गालिब है हमसे हुकम न टालाजाय ॥
इस पर जवाब दिया मलखे ने जल्लादों से कहा सुनाय ॥
जिस आल्हापर तुम गरजो हो उसकी अकल गई बौराय ॥
आंख निकालो तुम मृगा की और आल्हापर दो पहुँचाय ॥
जाकर कह देना आल्हा से हम ऊदल को आये मार ॥
ज्वान पानसों गये जो संगमें उन्हें बेलसे दिला ललकार ॥
भला हूजियो नर मलखे का जिसने कैद से दिया छुड़ाय ॥
चाचा ऊदल तो जिन्दा है अब तुम फिकर करो कुछ नाय ॥

फिर वह पहुँचा बलख बुखारे जोगी बना वहां पर जाय ॥
इतनी बात सुनी इन्दल की रानी बहुत खुशी होजाय ॥
कोली भरली है इन्दल की और जाती से लिया लगाय ॥
धन धन बेटा मन्डलीक के जो खुशखबरी दई सुनाय ॥
जिस दिन जन्मा तू मछला के पैदा हुआ दूसरा नाय ॥
वहां से इन्दल चला अगाड़ी और महलों में पहुँचाजाय ॥
बीस कदम से मछला देखे और इन्दल से कहा सुनाय ॥
शेर शीतला तुझको मर गई क्या कहींमरगये भूतबलाय ॥
होते ही मर जाता मछला के रहता मुझे परेखा नाय ॥
इस सम्पत से बांझ भली थीं तेरा मुंह देखूंगी नाय ॥
नाम का बालम तेरा दाऊ है धरमका लगे उदयचन्दराय ॥
अब किस पर खबरें मैं भेजूंगी जो भावीकाहुकम सुनाय॥
देवर ऊदल को मरवा कर सबको रंडिया दिया बनाय॥
फिर ललकारा है मछला ने और बांदी को लिया बुलाय ॥
लावो कटारी मेरी दक्खन की अपनी दूंगी जान गंवाय ॥
जब यह बात कहीं मछलाने मलखे वहां पर पहुँचा आय ॥
अब क्यों रुदन करे महलों में भावी सुनले कान लगाय ॥
क्यों ना मना कियाबालमको जो ऊदलको दियामरवाय ॥
मरे हुवे कहीं फिर जीवे हैं जो तू रहीअब मकर बनाय ॥
अब तुम जिकर सुनो मलखेका जो आल्हासे कहासुनाय ॥
उसको ले गई बलख बुखारे हरनन्दन की राजकंवार ॥
तोता बनाकर रक्खा उसने जिसका नाम पैमदे नार॥
वो जब ले गई बलख बुखारे मुझको खबर हुई जब आय॥
मैंने भेजा बोना चोर को बलख बुखारे पहुँचा आय ॥

जैसे लाया वह इन्दलको उसका हाल बताया नाय ॥
और एक बात कही बौनाने अब तुम सुनलो कानलगाय॥
वह इक़रार कर आया रानीसे उससे वचनलिये भरवाय ॥
काढ़ के कुन्डली रानी पैमा ने गंगाजली लई धरवाय ॥
रानी बोली जब बौना से बौनासुनले कान लगाय ॥
जो बिन विवाहे मुझे छोड़ोगे सीधे पड़ो नरक में जाय ॥
जो तू लौटेगा बचनों से बौना सुनले कान लगाय ॥
अब तू ले जाकर इन्दल को और मोहबे में पहुँचाय ॥
सारी हालत बौना चोर की मैंने तुमको दई सुनाय ॥
ब्याह करो अब तुम इन्दलका बलख बुखारे पहुँचो जाय ॥
अब छल रक्खा मलखेने और आल्हाको दिया बहकाय ॥
नहीं बताया नर ऊदल को ले लिया नाम बौनिया राय ॥
हुई सगाई तेरे बेटे की राजा हरनन्दन के जाय ॥
करो तइयारी तुम ब्याहनेकी अब क्योंरक्खी देर लगाय ॥
तू जाने तेरा बेटा जाने तुझे आगे से देऊं बताय ॥
जिसका काल शीश पर गरजे अब वह संग तुम्हारे जाय ॥
जो गत तुमने करी ऊदलकी वही गतउनकी दो करवाय ॥
कोई नहीं जागा संग तुम्हारे किसी के रहो भरोसे नाय॥
इतनी बात सुनी आल्हा ने मुंह का थूक बन्द होजाय ॥
हिड़की बंध गईअब आल्हाकी जिससे बातकही ना जाय ॥
मेरे बूते की नहीं सगाई मुझसे वहां जाया ना जाय ॥
बिना ऊजल के बलख बुखारे कोनइन्दलको ब्याहनेजाय ॥
आजके दिनको ऊदल होता मुझको कोई फिकरथा नाय ॥
मैं नहीं भूलुंगा उसदिनको जो ऊदलको दिया मरवाय ॥

भेद तुम्हारा दस पुरवे में मैंने किसी से खोला नाय ॥
बोला ऊदल जब मलखे से अब तुम सुनो बनाफल राय ॥
वचन दे आया मैं रानीको इन्दल सङ्ग लूं ब्याह कराय ॥
जो मैं लौटूंगा वचनों से क्षत्री धरम मेरा घट जाय ॥
बाट हमारी देखती होगी हरनन्दन की राज कंवार ॥
किस दिन आवे मोहबे वाले मुझसे करगये कौल करार ॥
तुम जाकर समझादो आल्हाको वह हिम्मतको हारेनाय ॥
अब मैं जाऊं गढ़ कनवजको और लाखनसे कहूं येबात ॥
ब्याह उठा है नर इन्दल का बलख बुखारे जाय बरात ॥
फौज सजवा कर लाखन की वहां से देंगे कूंच कराय ॥
जब हम पहुँचे बलखबुखारे और वहां छिपे खोयमें जाय ॥
इस पर जवाब दिया मलखे ने ऊदल सुनले कान लगाय ॥
यह मत जाने अपने दिलमें इकला ऊदल वहांको जाय ॥
बावन राजा छप्पन सूबे और सब लूं नवाब बुलाय ॥
कई रोज में सबको लेकर बलख बुखारे पहुँचूं जाय ॥
बेखटके तुमजाओ कनवजको दिलमें सोचकरो कुछनाय ॥
इतनी सुनकर नर मलखे से ऊदल बहुत खुशी हो जाय ॥

ऊदल और नौले मुन्शी का कनवज में पहुंचकर लाखन के दरबार में जाना और लाखन से बातचीत करना

जब से मर गया बदल उदयचन्द मेरी टूट कमरसी जाय ॥
बाजू टूट गये आल्हा के हाथ वे पन्खा उड़ा ना जाय ॥
मुझको करजा था रानी ने मत भइया को दे मरवाय ॥
एक ना मानी मुझ दुशमन ने होनी बैठ मुंह पर जाय ॥
होनी जग में सबसे भारी जो ऋषियों से टली है नाय ॥
इकले ऊदल के मरने से मेरा कोई सनीपी नाय ॥
बोला मलखे जब आल्हा से पन्जा लई ढाल तलवार ॥
अब मैं जाता हूं सिरसे को गुजरे घड़ी घड़ी का वार ॥
तुमचिट्ठी भेजो शहर बनारस और तालाको लेओबुलाय ॥
जो कुछ कहवे ताला सइयद वैसा करो बनाफल राय ॥
मामा जागन को बुलवालो और ब्रह्माको लाओ बुलाय ॥
देवा भइया को बुलवालो सारे मिल कर करो सहाय ॥
सारे यहां पर जब आ जावें मुझपर दीजो खबर कराय ॥
कोई घड़ी के फिर अरसे में मलखे भी पहुँचेगा आय ॥
उठकर मलखे चला वहांसे और हाथी पर बैठा जाय ॥
घड़ी ना गुजरी ना पल बीता वो सिरसे में पहुँचा जाय ॥
उतरा मलखे जब हाथी से ऊदल ने दिया शीश निवाय ॥
बोला ऊदल जब मलखे से भइया सुनो बनाफल राय ॥
क्यागत बीती कोट झिजावट हमको हाल देओ बतलाय ॥
इतनी बात सुनी ऊदल की फिर मलखे ने कहा सुनाय ॥
हाल न पूछो इस पुरने का हमसे हाल कहा नाजाय ॥
रइयत रोवे झिजावट की ले ले नाम उदयचन्द राय ॥
सारा कुनवा तेरा रोवे माता बिलख बिलख मर जाय ॥
खबर है सबको तेरे मरने की जिन्दे की किसी को नाय ॥

नौले मुन्शी को सङ्ग लेकर वहां से कूंच दिया करवाय ॥
मंजिल मंजिल के चलने में गढ़ कनवज में पहुँचे जाय ॥
लगी कचहरी जहां जयचन्द की लाखन घोरे बैठा जाय ॥
पांच कदम से करी कोरनिश घोरे जाकर हाथ मिलाय ॥
भरली कौली है लाखन ने और गद्दीपर लिया बिठाय ॥
कुरसी डाल मुन्शी को उस पर नौले बैठा जाय ॥
दिया इशारा खब्वासी को पान के बीड़े लाओ लगाय ॥
बोला लाखन अब बंगले में और ऊदल से कहा सुनाय ॥
मैले कपड़े कैसे हो रहे जरदी रही बदन पर छाय ॥
कैसे उदासी है चेहरे पर मिन्तर हाल देओ बतलाय ॥
कहां पर छोड़े घोड़े हाथी इकले यहां पर कैसे आय ॥
कैसे पैदल तुम आये हो पैदल कभी चले थे नाय ॥
जो तुम्हें घेरा कंगाली ने क्यों ना चिट्ठी दी भिजवाय ॥
मोहर अशरफी इतनी देता चाहे किले लेते बनवाय ॥
इतनी बात सुनी लाखन की तब ऊदल ने कहा सुनाय ॥
जो कुछ बीती सङ्ग हमारे तुमसे हाल कहूं समझाय ॥
जो कुछ गुजरा था ऊदल सब लाखन को दिया सुनाय ॥
बनी बनी के सब कोई साथी और बिगड़ी का कोई नाय ॥
वक्त बनाफल पर गालिब है अपना कोई समीपी नाय ॥
जब ये बात सुनी लाखन ने सुरखी गई बदन पर छाय ॥
क्या कहीं कागज का टोटा था हलकारा मिलाकोई नाय ॥
लाख कोस तो ना कनवज था क्योंना खबरदई भिजवाय॥
जो कुछ काम हो मेरे लायक उसको जाके करूं बनाय ॥
बोला ऊदल जब लाखन ने मैं मिन्तर का लेऊं बलाय ॥

पगिया पलटे की असनाई लाखन और उदयचन्द राय ॥
मेरी तेरी यारी गङ्गा की बीच में दई शारदा माय ॥
जिस दिनके लिए करीथी यारीवह दिनलगा बराबर आय ॥
व्याह उट्ठा हैं अब इन्दल का व्याहने बलख बुखारे जाय ॥
नाता देने को आया हूं अब तुम चलो हमारे ॥
इतनी सुनकर अब लाखनने और ऊदल से कही ये बात ॥
जिन रोगों को मैं ढूंढूं था वह दाता ने दिये बनाय ॥
बन्धे बछेरे बूढे हो गये बैठे ज्वान गये फुंदलाय ॥
लाख ही हाथी लाख ही घोड़े लाखहीं संगमें चलेंसवार ॥
कमती जो जानो लशकर को फौजें और करूं तइयार ॥
दबे बछेरा जहां ऊदल का अरनी हथनी देऊं बढ़ाय ॥
गिरे पसीना जहां मिन्तर का लाखन झुके सामने जाय ॥
क्यों घबरावे अपने दिल में तुमको कौन पड़ी परवाय ॥
करो तइयारी अब चलनेकी ब्याह इन्दलका लाऊं कराय ॥
घनवां तेली लला तम्बोली इन दोनों को लिया बुलाय ॥
बोला लाखन जब दोनोंसे अब तुम सुनलो कान लगाय ॥
बड़ा भरोसा मुझे तुम्हारा सब लशकर को लो सजवाय ॥
ऐसी करियो बलख बुखारे नाम तुम्हारा जो हो जाय ॥
ये मन मान गई दोनों के और हिरदे में गई समाय ॥
नमक तुम्हारा हमने खाया जो काया में गया समाय ॥
नमक हरामी नहीं करेंगे चाहे जान बचे या जाय ॥
चाहे उड़ादो तुम तोपों से चाहे फांसी दो लगवाय ॥
उजर नहीं है हम ज्वानों को महाराज कनौजी राय ॥
जहां मोरचा भारी देखो पहले हमको देओ अड़ाय ॥

इतनी बात सुनी लाखन ने जब खुश हुआ लखन्सी राय ॥
बोला लाखन अब धनुआ से अबतुम सुनलो कानलगाय ॥
जितनी तोपें है सरकारी सबको जल्दी लेओ सजाय ॥
जितने सिपाही हैं तोपों में सबको दो तुम हुक्म सुनाय ॥
हुक्म सुना जब यह लाखन का सारी फौजें हुई तइयार ॥
तीन लाख अब पैदल सज गये चार लाख सजगये सवार ॥
बोला लाखन जब ऊदल से मैं मितर का लेऊं बलाय ॥
आज्ञा ले आवें माता से और महलों में पहुँचे जाय ॥
यह मन मान गई ऊदल के और हिरदे में गई समाय ॥
हाथ पकड़ अब दोनों चलदिये शीश महलमें पहुँचे जाय ॥
रानी सुनमा जहां पर बैठी दोनों लगे वहां पर जाय ॥
करी सलामी अब दोनों ने रानी ले गई शीश चढ़ाय ॥
जबतक जल गंगा जमनामें तब तक जीओ बनाफल राय ॥
क्या पाया कुछ रस्ता चलते याकोई मुल्क फतहकर आय ॥
कैसी खुशी चेहरे पर हो रही इसका भेद देओ बतलाय ॥
इस पर जवाब दिया ऊदल ने मैं माता का लेऊं बलाय ॥
ब्याह उठा अब नर इन्दल का बलख बुखारे जाय बरात ॥
हुकम सुनादो तुम लाखन को यह भी चले हमारे साथ ॥
इस पर जवाब दिया माता ने और ऊदल से कहा सुनाय ॥
जैसा मुझको लाखन प्यारा वैसा हो मुझे उदयचन्द राय ॥
जो कुछ हुक्म चले मरदों का मेरी बात चलेगी नाय ॥
अब तुम चले जाओ बंगले को आमखास में पहुँची जाय ॥
लेलो इजाजत तुम राजा से बेटा मेरे उदयचन्द राय ॥
दोनों चल दिये शीश महल से आमखास में पहुँचे जाय ॥

करी सलामी है दोनों ने राजा ले गया शीश चढ़ाय ॥
हाथ पकड़कर अब दोनोंका फिर गद्दी पर लिया बिठाय ॥
बोला लाखन जब बंगले में और राजा से कहा सुनाय ॥
ब्याह उठा है नर इन्दल का बलख बुखारे ब्याहने जाय ॥
हमको लेने को आया है मेरा यार उदयचन्द राय ॥
मिसल पुरानी अब ऊदल की वह राजा को दई सुनाय ॥
दई इजाजत अब राजा ने और राजा से कहा सुनाय ॥
सारी फौजों को सजवा कर बलख बुखारे पहुँचो जाय ॥
चलदिया लाखन अब बङ्गलेसे और महलोंमें पहुँचाजाय ॥
जहां पर रानी सोरन बैठी वहां पर गया लखन्सी राय ॥
आता देखा जब बालम को कुरसी छत पर दई बिछाय ॥
उठ कर रानी चली वहां से पानदान को लाई उठाय ॥
पांच पान का बीड़ा लेकर उसकी नजर गुजारो जाय ॥
हाथ जोड़कर रानी बोली मैं बालम की लेऊं बलाय ॥
कैसे नयनों में सुरखी है दिल का हाल देओ बतलाय ॥
इस पर जवाब दिया लाखनने और रानीसे कहा सुनाय ॥
बनी बनी का सब कोई साथी और बिगड़ीका कोई नाय ॥
आजबिगड़ गईमेरे मितरकी जिसका नाम उदयचन्द राय ॥
ब्याह उठा हैं नर इन्दल का बलख बुखारे जाय बरात ॥
ऊदल आया है लेने को उसकी जाकर करूं बरात ॥
जब यह बात सुनी रानी ने हौला बैठ पेट में जाय ॥
बोली रानी जब लाखन से बालम सुनलो कान लगाय ॥
क्योंतुम चढ़कर गये बूंदीपरमुझको ब्याहकर लायेलिवाय ॥
इकला बालम तीनों घरों में कोई दीया सा धरे बुझाय ॥

लौटके जवाब दिया लाखनने और रानीसे कहा सुनाय ॥
अण्डे मुरगी दस जनमे हैं जिसको तोड़ बिलाई खाय ॥
शेर शेरनी के एक जन्मे जिसका भय माने संसार ॥
सात कोठरी में ना छोड़े जब दे हुक्म श्री करतार ॥
बहुत देर झगड़े को हो गई लाखन वापस आया नाय ॥
बोला ऊदले दरवाजे पर मितर सुनो लखन्सी राय ॥
दिल में हमने अब यह जाना तुम्हें इशकने लिया दबाय ॥
जोतुझे प्यारी घर तिरियां है डोला लेचलो संगलिवाय ॥
झटक दुशाले को रानीसे और लाखन ने लिया छुड़ाय ॥
बैठा हो गया वह कुरसी से रामचन्द्र का ध्यान लगाय ॥
उतर के लाखन नीचे आया और इन्दलसे कहा सुनाय ॥
करो तइयारी तुम चलने की मैं मितर का लेऊं बलाय ॥

लाखन और ऊदल का फौज लेकर बलखा बुखारे जाना

सुबना सुबना को ललकारा और लाखनसे कहा सुनाय ॥
जल्द सजादे मेरी हथनीको अब क्यों रक्खो देर लगाय ॥
पड़ गई पाखर जब भूरी र ले बजरङ्ग बलो का नाम ॥
झूल डालदी नील बरन की जिसपर तरह तरहका काम ॥
झालर डाली पशमीने की हीरा कनी दमकती जाय ॥
मुण्डा हौदा चांदी वाला उसके ऊपर धरा जमाय ॥

नोट—बावन लड़ाई का आल्हा खंड हमारे यहां छप गया है । जिसे मंगाना हो मंगालें ।

जिधर मार हैं बन्दूकों की उन्पे तवे दिये जड़वाय ॥
जिधर मार हैं तलवारों की उन्पे ढाल दई लगवाय ॥
धरे जमूरे चारों खूंट में गोला पाव शेर का खाय ॥
भर भर कौली हथियारों की हौदे बीच दिये गिरवाय ॥
पांचों कपड़े लाखन पहने पांचों बांध लिये हथियार ॥
जिरह और बख्तरको पहनाहै जिसमेंनहीं गढे हथियार ॥
बजा नकारा जब लशकर में धौंसा पड़ा गोल में जाय ॥
अली गोलमें जब धौंसा बजा सबके मारही मार सुहाय ॥
धनुआ तेली लाला तम्बोली दोनों जोधा हुए तइयार ॥
हाथी चढ़इया चढे हाथी पर और घोड़ों पर हुए सवार ॥
पैदल पलटन और रिसाले आगे चले छड़ी बरदार ॥
परा बांध दिया है तोपों का धरती मांगे बरन दुआर ॥
एक-२ तोप और दो-२ शहजादे गोलन्दाज दिए बैठाय ॥
लगी नशीनी चांदी वाली जब चढ़ गया लखन्सी राय ॥
ऊदल मुन्शी दोनों चढ़ गये और हौदे में बैठे जाय ॥
बजा कुहाड़ा जब भूरी पर हथनी भरी रोस में जाय ॥
कूच बोलदिया सब लशकरका और चलपड़ा कनौजीराय ॥
कई दिना की मन्जिल करके बलख बुखारे पहुँचे जाय ॥

लाखन और ऊदल का मय फौज के बलख बुखारे में पहुंचना

बोला ऊदल जब लाखन से मैं मितर का लेऊं बलाय ॥
अब तुम रोको यहां फौजोंको आगे जगह मिलेगी नाय ॥

यह मन मानी जब आल्हा के और हिरदे में गई समाय ॥
कागज लिया कालपी वाला कलमदान को लिया उठाय ॥
श्री सिद्ध नारायण लिख दिया और गङ्गाजी रहे सहाय ॥
सदा भवानी तू दहने रह कृपा करो शारदा माय ॥
लिखी बन्दगी सबभइयोंको और तालाको लिखी सलाम ॥
सारा हाल लिखा शादी का आकर जल्द करो इन्तजाम ॥
पगड़ी उलझी है झाड़ीमें तुम बिनखरगिज सुलझै नाय ॥
हुई खिजालत झिझोटी में कोई मेरी बात पूछता नाय ॥
जो तुम खाना खाओ बनारस पानी पियो यहां परआय ॥
देखके चिट्ठी देर न करना मैंने तुमको लिखा बनाय ॥
जो ना आओगे तुम यहां पर सारा काम भंग हो जाय ॥
चिट्ठी बन्द करी आल्हा ने अपनी मोहर दई करवाय ॥
फिर ललकारा चोबदार को हलकारे को लिया बुलाय ॥
ले जाओ चिट्ठी तुम ताला परशहर बनारस पहुँचो जाय॥
इतनी सुनकर हलकारे ने पांचों लिए हथियार लगाय ॥
लेकर चिट्ठी हलकारे अपनी बगल में लई दबाय ॥
कूद सांडनी पर चढ़ बैठा निरंकार का ध्यान लगाय ॥
बबल बबल कर चली सांडनी तलवे धूल लगे है नाय ॥
रात दिना की मन्जिल करके शहर बनारस पहुँचा जाय ॥
जहां दरबार लागा तालाका वहां हलकारा झोका खाय ॥
सात कदम से करी कोरनिश आगे शीश नवाया जाय ॥
खोल के चिट्ठी अब आल्हाकी आगे धरी तख्त पर जाय ॥
काट सरौते से बन्द काटे चिट्ठी तुरत दई फैलाय ॥
जब मजमून पढ़ा चिट्ठी का ताला सोच सोच रह जाय ॥

खान मौलवी को ललकारा मैं बेटे का लेऊं बलाय ॥
अब मैं जाता हूं झिन्झोटी हमको आल्हा रहा बुलाय ॥
चौकस रहियो तुम बंगले में तख्त के ऊपर बैठो जाय ॥
यह खत आया है मोहबे से हमको आल्हा रहा बुलाय ॥
बिन जाये वहां नहीं बीचेगी यह मैं तुमसे कहूं सुनाय ॥
करी तइयारी अब चलनेकी अपना घोड़ा लिया मगवाय ॥

ताला सइयद का आल्हा के पास जाना और बातचीत करना

पांचों कपड़ों को पहना और पन्जे लाई ढाल तलवार ॥
कूद बछेरे पर चढ़ बैठा रघुनन्दन पर हुआ सवार ॥
मारा चाबुक जब घोड़े के वह अम्बर में पहुँचा जाय ॥
काले बादल की लाली में जैसे बाज रहा मण्डलाय ॥
रात दिना की दौड़ धुप में कोट झिन्झावट पहुँचा जाय ॥
जहां कचहरी थी आल्हाकी जब वहां गया तलन्सी राय ॥
सूना तख्त पड़ा बंगले में वहां कोई ज्वान दीखाता नाय ॥
जब ललकारा हलकारे को चोबदार को लिया बुलाय ॥
जल्द बुलाओ तुम आल्हा को अब आ गया तलन्सीराय ॥
इतनी सुनकर कासिद चलपड़ा और महलोंमें पहुँचाजाय ॥
आकर बोला है आल्हा से तुमको सइयद रहे बुलाय ॥
इतनी बात सुनी कासिद की आल्हा उठा पलंग से जाय ॥
कपड़े पहन लिये जल्दीसे और सजलिए हथियार लगाय ॥
आगे आगे पलकारा है पीछे चला बनाफल राय ॥

कोई घड़ी के अब अरसेमें दाखिल हुआ कचहरी आय ॥
करी बन्दगी अब आल्हा ने ताला ले गया शीश चढ़ाय ॥
बोला सइयद जब आल्हा से बेटा सुनो बनाफल राय ॥
मैंने तो जाना सूरवीर हो कायर बने बनाफल राय ॥
बैठना छोड़ दिया बंगले का औंधा पड़ा महल में जाय ॥
यह गत करदी है बंगले की गरदा बुरजों पर छा जाय ॥
इकले ऊदल के मरने से सब कामों को दिया मिटाय ॥
कहां हैं हाथी कहां हैं घोड़े कहां ज्वानोंको दिया गंवाय ॥
एक न होने से ऊदल के यह गत अपनी लई बनाय ॥
इस पर जवाब दिया आल्हा ने मैं चाचा का लेऊं बलाय ॥
जब से मर गया बाप हमारा गोद तुम्हारी गया बिठाय ॥
हमको बड़े अब तुम्हीं दीखो मेरी असने में करो सहाय ॥
भइया लौट भतीजा लौटा सारा लौट गया परिवार ॥
नौकर चाकर सारे भग गये पैदल पलटन और सवार ॥
इकले भइया के मरने से कोई बात पूछता नाय ॥
जब से देश गये तुम अपने यहां पर कोई आवे है नाय ॥
बात न पूछी कुछ जागन ने और ब्रह्मा ने करी सहाय ॥
भला हूजियो नर मलखे का मुझे बेटे से दिया मिलाय ॥
मेरा बुलाता कोई ना आवे तेरा हुक्म टाले कोई नाय ॥
तुम्हीं बुलाओ सब ज्वानों को और मैं हाल देऊं बतलाय
मलखे कह गया है महलों में दादा सुनलो कान लगाय ॥
हुई सगाई तेरे इन्दल की राजा हरनन्दन के जाय ॥
वहांसे लाया जो इन्दल को वह कर आया कौल करार ॥
बचन दे आया है पेमा को हरनन्दन की राजकंवार ॥

जो ना ब्याह होय इन्दल का मेरे जीने को धिक्कार ॥
जिस वादे से इन्दल आया मुझसे मलखे गया पुकार ॥
वहां पर कह आया पेमा से गढ़ मोहबे से चढे बरात ॥
ब्याहने आवें जात बनाफल बलख बुखारे जाय बरात ॥
तू जाने तेरा भइया जाने अब तू लीजो ब्याह कराय ॥
मेरे भरोसे मतना रहियो अब मैं कदम धरूंगा नाय ॥
चलते बक्त मलखे यह कहगया जोमैंने तुमको दिया सुनाय॥
मामा जागन को बुलवालो और ब्रह्मा को लाऊं बुलाय ॥
जब तक मामा ना आवेगा मेरा काम चलेगा नाय ॥
इतनी सुनली जब ताला ने सुरखी गई बदन में छाय ॥
लानत लानत तेरे करने को मेरे सुनने को धिक्कार ॥
अपने मुंहको काला कर लिया ऊदल दिया जान से मार ॥
आगा पीछा तुझे न सूझा अब वह घड़ी हाथ न आय ॥
तूने पूछा था बंगले में मैं चाचा का लेऊं बलाय ॥
जिसने मारा मेरे बेटे को उनका नाम देओ बतलाय ॥
ना मुझको पता लगा बङ्गलेमें यह सर पड़े उदयचन्दराय ॥
मैंने कह दिया था धोके में बेशक फांसी दो लगवाय ॥
हुक्म सुनाकर जल्लादों को और ऊदल को दिया मरवाय ॥
आंख निकालो इन दोनों की जल्लादों से कहा सुनाय ॥
तुझे समझा सबने मिलकर मत ऊदल को दे मरवाय ॥
एक ना मानी बात किसी की मन की चाहा लिया कराय ॥
जब मुझे याद आवे ऊदलकी शोला फुका बदन में जाय ॥
काम किया अब तूने ऐसा तेरा मुंह कोई देखे नाय ॥

इतनी सुनकर अब आल्हाने गरदन नीचे लई झुकाय ॥
पांव पकड़ लिये हैं सइयद के और चरनों में लोटा जाय ॥
बोला आल्हा हैं सइयद से और रो रो कर कहा सुनाय ॥
जब से मर गए पिता हमारे गोद तुम्हारी गये बिठाय ॥
मैंने ही ऊदल को मरवाया इसमें झूठ जरा है नाय ॥
जोकुछ होनाथा सो होलिया अब मेरी खता माफ होजाय॥
तेरे बुलाये सब आवेंगे मेरे कहे आवे कोई नाय ॥
जो कुछ मरजी हो सइयद की मुझको कोई उजर है नाय ॥
जब यहबात सुनी आल्हाकी सइयद कर रहा सोच बिचार ॥
सोच समझ कर ताला बोला हलकारे को लिया पुकार ॥

ताला सइयद का हलकारा भेजकर झिझोटी में सबको बुलाना

अभी चला जा तू सिरसे को मलखे यह कहियो जाय ॥
तुम्हें बुलाया अब सइयद ने झिझोटी में रहा बुलाय ॥
लौट के जाना गढ़ मोहबे में जहां दरबार चन्देला राय ॥
वहां जा कहियो ब्रह्माजीत से झिझोटी पहुँचे आय ॥
फिर तू जाइयो जगनेरी में जहां दरबार जगन्सी राय ॥
जाकर उससे यह कह दीजो तुमको सइयद रहा बुलाय ॥
लौट के आय जगनेरी से किले कालंजर पहुँचो जाय ॥
जाकर कह दीजो देवा से उसको जाइयो संग लिवाय ॥
यह मन माना हलकारे के और हिरदे में गई समाय ॥
कूद सांडनी पर चढ़ बैठा और यहां से दिया कूच कराय ॥

कोई घड़ी के अब अरसे में गढ़ सिरसे में पहुँचा जाय ॥
जाकर पहुँचाजब बगले में मलखे को दिया शीश झुकाय ॥
जो कुछ कहदिया था सइयदने सब मलखेको दियासुनाय ॥
इतनी सुनकर मलखे चल दिया झिंझोटी में पहुँचा जाय ॥
ब्रह्मा आ गया ढेबा आ गया और आ गया जगन्सीराय ॥
जहां पर ताला सइयद बैठा चारों झुके सामने जाय ॥
करी सलामी जब चारों ने ताला ले गया शीश चढ़ाय ॥
कुरसी डाली जब नौकर ने चारों बैठ बराबर जाय ॥
बोला जागन जब ताला से मैं सइयद का लेऊं बलाय ॥
सबको यहां पर क्यों बुलवाया हमको हाल देओ बतलाय ॥
इस पर जवाब दिया सइयद ने अब तुम सुनो जगन्सीराय॥
यहां पर ब्याह उठा इन्दलका अपनी लाओ फौज सजाय ॥
जब यह बात सुनी जागन ने नङ्गी ली तलवार उठाय ॥
तुम ऐसी बातों को मत बोलो मेरे जामे में नहीं समाय ॥
ना कोई बेटा है ब्रह्मा के क्वारा कोई हमारे नाय ॥
हमसे ना कहो ऐसी बातें यह आल्हा से कहो सुनाय ॥
अब क्या गरज पड़ी मामा को लावे अपनी फौज सजाय ॥
नाता मिट गया आल्हा से जब से मरा उदयचन्द राय ॥
जिसने ऊदेल को मरवाया वही इन्दल को ब्याहने जाय ॥
हमको गरज नहीं अब ऐसी अपना मूंड कटावें जाय ॥
मन्दिर सूना है दीपक बिन मालिक बिन सूनी चौपार ॥
लशकर सूना है हाथी बिन ऊदल बिन सूना दरबार ॥
बोला ढेवा जब ललकारा और आल्हा से कहा सुनाय ॥
जो ऊदल भइया जिंदाहोता हमको कोई फिकर था नाय ॥

किसने मरवामा ऊदल को वह्वा लावेगा ब्याह कराय ॥
लोकीहे टट्टी नर ऊदलथा कहीं तुझे आंच आनेदी नाय ॥
तुझे खुशी लगी अब व्याहकी मेरे इन्दलको व्याहने जाय॥
क्या परवाय पड़ी कुनवेको जो तेरा इन्दल व्याहने जाय ॥
सुनकर बातें सब भइयों की रोने लगा बनाफल राय ॥
टप टप आंसू गिरे आल्हा के मुंहसे बात कही ना जाय ॥
बोला मलखे जब ललकारा और ब्रह्मा से कहा सुनाय ॥
क्यों मुंह लागो होतुम आल्हाके ब्रह्मासुनलो कान लगाय ॥
कुम्भकरण रावण का भइया मेघनाथ सा बली हो जाय ॥
जरासिंध दुरयोधन हो गये सौ भइयों की छांव कहांय ॥
मानस जाये की क्या गिनती जिन पर करें पखेरू छाय ॥
ऐसे बली हुए धरती पर वह भी लिए काल ने खाय ॥
उमरका पट्टा नाकोई लाया और कोई सदा जियाहै नाय ॥
मरद बनाए हैं मरने को जग में अमर रहा कोई नाय ॥
जिनकी आवे वो ही मरे है और बिनआई मरे कोई नाय ॥
जिस विधि लिखदी नारायणने उसविध,मरा उदयचंद राय ॥
मरे हुए अब कहीं जीवे हैं ब्रह्मा सुनले कान लगाय ॥
मत तुम जिकर करो ऊदल का अब ना मिले उदयचंदराय ॥
जिनकी प्यारी रहें पीहर में उनको कैसे नींद सुहाय ॥
व्याह के छोड़ें हैं दुनिया में क्वारी मांग छोड़ते नाय ॥
करो तइयारी अब चलने की अब क्यों रक्खी देर लगाय ॥
इतनी सुनकर जागन बोला और ताला से कहा सुनाय ॥
अब जो बात कही मलखे ने सबके गई समझ में आय ॥
जो कुछ फौज थी नर आल्हा की सबने नाम लियाकटवाय॥

जो जो अफसर थे मोहबे में उनमें कोई दीखता नाय ॥
रहे सिपाही मरे गिरे से क्या उनकी वहां पार बसाय ॥
ना यहां हाथी ना या घोड़े ना कहीं दीखें शुतर सवार ॥
बिना फौज के ये ना जीतें चाहे लाख धरो औतार ॥
इतनी सुनकर मलखे बोला और जागन से कहा सुनाय ॥
इसमें मामा झूंठ नहीं है तुमने ठीक दिया बतलाय ॥
करो मनादी दस पुरवे में सब पर दो अब खबर कराय ॥
जो जो नौकर थे आल्हा के वो सब करो नौकरी आय ॥

आल्हा का तख्त पर बैठना

पिटा ढिंढोरा दस पुरवे में चरचा सारे में हो जाय ॥
आल्हा बैठ गया गद्दी पर सब अमले को रहा बुलाय ॥
हो गई बातें सब पहली सी कावा देते फिरें सवार ॥
मीना बाजार लगा चौपड़ का जिसमें लाखों का व्योपार ॥
जितने नौकर थे आल्हा के छोटे और बड़े सरदार ॥
वो सारे आकर हुए इकट्ठे जहां आल्हा का लगा दरबार ॥
बोला मलखे जब बङ्गले में सरदारों से कहा पुकार ॥
नौकर चाकर तुम्हें न जानें तुम तो लागो भाई हमार ॥
अपने दिल में यह मत जानो हमारा छूट गया रुजगार ॥
दूनी तलब तुम्हारी करदो सब ज्वानों से कहा पुकार ॥
इतनी सुनकर चत्री बोले और मलखे से कहा सुनाय ॥
जब तक नौकरी मिले तुम्हारी हम रोजगार करें कहींनाय॥
बोला ढेवा जब ताला से ओ महाराज तलन्सी राय ॥
जितने सूबे हैं मोहबे के सब पर खबर देओ पहुँचाय ॥

अपनी अपनी फौजें लेकर सब मोहवे में पहुँचे आय ॥
इतनी सुनकर अब सइयद ने और मलखे से कहा सुनाय ॥
लिखदो चिठ्ठी सब राजों को अब क्यों रक्खी देर लगाय ॥
लौट के जवाब दिया मलखे ने यों चाचा कालेऊं बलाय ॥

सब राजों को मोहवे में बुलाना

अब लिखो चिठ्ठी अपने हाथसे मेरे दस्तखत लो करवाय ॥
लिख लिख चिठ्ठी ताला रक्खे मलखे दस्तखत दे है बनाय ॥
नौता भेजा सब राजों के और सइयद ने लिखी यह बात ॥
व्याह उठा है नर इन्दल का बलख बुखारे जाय बरात ॥
चिठ्ठी पढ़ कर जो ना आवे अपनी खैर जानियो नाय ॥
चिठ्ठी बन्द करी मलखे ने डाक के अन्दर दी गिरवाय ॥
देश देश के जो राजा थे सब पर चिठ्ठी पहुँची जाय ॥
काट सरोते से बन्द काटे सबने चिठ्ठी ली पढ़वाय ॥
दस्तखत देखे जब मलखे के राजा गये सनाका खाय ॥
दहशत गालिब है मलखे की किसीने कान हिलाया नाय ॥
करी तइयारी सब राजों ने अपनी फौजें ली सजवाय ॥
सज सज राजा देश देश के गढ़ मोहवे में पहुँचे आय ॥
बावन राजा छप्पन सूबे और चौरासी आये नवाय ॥
यह दल टूटा गढ़ मोहवे में जिसका नहीं हो सके हिसाब ॥
कालनेम दक्खन का राजा वो बंगले में पहुँचा आय ॥
राम राम आल्हाको करके और सइयद को शाश निवाय ॥
बोला राजा दक्खन वाला और ताला से कहा सुनाय ॥
जो कुछ काम हमारे लायक हमको हुकम देओ फरमाय ॥

इतनी सुनकर ताला बोला और राजा से कहा सुनाय ॥
बड़ा भरोसा हमें तुम्हारा तुम असने में करो सहाय ॥
भारी राजा हरनन्दन है जिसकी दहशत बहुत सिवाय ॥
ब्याह के लाओ तुम इन्दलको नाम तुम्हारा जो रहजाय ॥
बोला संइयद जब जागन से और ब्रह्मा से कहा सुनाय ॥
करो तइयारी तुम चलने की अपनी फौजें लो सजवाय ॥
जब यह बात सुनी ताला की सबके दिलमें गई समाय ॥
उठ कर राजा सारे चल दिये और कम्पू में पहुँचे जाय ॥

मोहबे वालों की तइयारी

बोला मलखे फिर ढेवा से मैं भइया का लेऊं बलाय ॥
शगुन विचारो तुम ज्योतिष में कब यहां से दें कूच कराय ॥
खोल पत्रा पोथी खोली देवा करने लगा शुम्मार ॥
गिने पोरवे जब अंगुली के सुर मथनों का लिया विचार ॥
यजुर्वेद ऋग्वेद को देखा शामवेद को देखा जाय ॥
वेद अथर्वन को जब देखा दिल में बहुत खुशी हो जाय ॥
बोला ढेवा जब ललकारा भइया सुनो बनाफल राय ॥
चढ़ा शनीचर बलख बुखारे ऊपर रही जोगनी छाय ॥
राहु केतु के डेरे हो गये बारहवीं पड़ी वृहस्पति आय ॥
सात गृह हैं हरनन्दन पर चौथी दइया पहुँची आय ॥
पड़ी ग्यारहवीं हरनन्दन पर उसकी रास को रही दबाय ॥
सातवां चन्द्रा तुमको आया तीसरी पड़ी वृहस्पति आय ॥
पड़ी जोगनी अब पीछे की सन्मुख पड़ा चन्द्रमा आय ॥
पड़ी जोगनी अब पीछे को सन्मुख पड़ा चन्द्रमा आय ॥
काल चक्र बांये को हट गया पूर्व नक्षत्र पहुँचा आय ॥

फौज सजाल्हो तुम जल्दी से अब कुछ काम देर का नाय ॥
करो तइयारी अब जल्दी से जाते ही काम फतह होजाय ॥
इतनी बात सुनी देवा की सबके दिल में गई समाय ॥
बोला मलखे जब आल्हा से मैं भइया का लेऊं बलाय ॥
हुक्म सुनादो सरकारों को पैदल पलटन और सवार ॥
लश्कर जितना है मोहबे का सबको जल्द करो तइयार ॥
तोप दरोगा को बुलवाकर कलंगी पहना दिया बनवाय ॥
जितनी तोपें हैं सरकारी सब चरखों पर देओ चढ़ाय ॥
सजे रहकले अब घोड़ों के और सब रफल करो तइयार ॥
सजे धमक्का और तमन्चा ऊपर कराबीन की मार ॥
धरो किस्कोले अब ऊंटों पर गोला पांच सेर का खाय ॥
भर भर थैली मेगजीन की सब छकड़ों में दो भरवाय ॥
गोला गिराफी और आसमानी जिनकी मार दूरतक जाय ॥
गोले जंजीरों को भरवाल्लो चारों तरफ लपेटा खाय ॥
हाथी दरोगा को बुलवाकर माला दई गले में डाल ॥
जितने हाथी लई खेत में सबको बाहर लेओ निकाल ॥
झूलें डालो नील बरनकी और गजबेल देओ भरवाय ॥
झालर डालो पशमीने की हीरा कनी दमकती जाय ॥
मुण्ड हौद धरो बहुत से थोड़े धरो अम्बारी दार ॥
जब वहां जंग मचे खेतों में चारों तरफ चले तलवार ॥
जिधर मार है बन्दूकों की उनके तबे देओ जड़वाय ॥
आठ आठ भाले नौ नौ तरकश दो दो बबल देओ बिठलाय॥
भर भर झोला हथियारों की सब हौदे में दो भरवाय ॥
घोड़े दरोगा को बुलवाकर कंचन कड़े दिये पहनाय ॥

जितना घोड़ा है मोहल्ले में सब पर जीन देश्रो कसवाय ॥
उमची दुमची मोहन माला गले में हैकल दी डलवाय ॥
डाल रकाबें चांदी वाली सावर के दो तंग लगाय ॥
उलटी बम्ब सब सोधी करदो डन्का पड़े बम्ब पर जाय ॥
रन का बाजा जब बजने लगा सब रनशूर हुए तइयार ॥
जिनके बालम घर में सोवें उनकी खड़ी जगावें नार ॥
क्या तुम सोश्रो सुख नींदों में कन्या सुनो हमारी बात ॥
ब्याह उठा है अब इन्दल का बलख बुखारे जाय बरात ॥
इतनी बात सुनी ज्वानों ने सबके दिल में गई समाय ॥
गुम्मट बन्ध गया रजपूतों का जैसे घटा टोप हो जाय ॥
छुटी रसोई रजपूतों की और मुगलों ने खाया नाय ॥
रन के दूल्हे रन को सज गये कफफन बन्धे मूंड से जाय ॥
खोल कोठरी बख्तर वाली चौक में ढेर दिया लगवाय ॥
पहना पहो मेरे शाहजादो जैसा बाना जिसे सुहाय ॥
किसीने पहना जिरह और बख्तर ऊपर कवालई कसवाय ॥
जामा पहना मछली बरन का जिनके बन्द लिए लगवाय ॥
टोपा ओढ़ा जांचनेर का ऊपर घुन्डी ली जड़वाय ॥
बख्तर पहना अष्टधात का सेला मुड़ दौलड़ हो जाय ॥
पेटी बांधी नागदमन की जिस पर तेग लौट ले जाय ॥
सबके ऊपर ओढ़ा जालपा गोली लगे चीप हो जाय ॥
भर भर कौली हथियारों की चौक में ढेर दिया करवाय ॥
बांधो बांधो मेरे बहादुरो जैसा कब्जा जिसे सुहाय ॥
इतनी बात सुनी ज्वानों ने उनके दिल में गई समाय ॥
बड़ी खुशी से अपने तन पर दूहरे लिए हथियार लगाय ॥

ढाल बांध ली है गैंडे की और कन्धे पर लई अड़ाय ॥
सांग उठाली नितियागढ़ की जिनकी मार सही ना जाय ॥
लिया गोलिया पानीपत का जो बख्तर को दे है उड़ाय ॥
भाला ले लिया नागदमन का जो पसली में जाय समाय ॥
सौ सौ तीरों के तरकश लिये और मुल्तानी लई कमान ॥
लई मगरबी आइन गरबी करके निरंकारका ध्यान ॥
लई सरोही मानाशाही कोटा बून्दी की तलवार ॥
कत्ता लिया विलायत वाला घोड़ा काटे मय असवार ॥
तेगा लेलिया बरदवान का और कोयल की मूठ कटार ॥
कुरमपुर की लां पिस्तोलें गोली लगे निकल जाय पार ॥
छुरी कटारी को बांधा है जो जहरों में धरी बुझाय ॥
करावीन कन्धों पर धरली जिनकी डाटे लईं अड़ाय ॥
सजे रिसाले काशमीर के और कन्धारी सजे ज्वान ॥
रूमशाम की पैदल पलटन और काबुल के मुगल पठान ॥
सिक्ख लाहौरी और पंजाबी जोधा एक से एक सिवाय ॥
सजा पुरबिया पत्थर गढ़ का जो लोहे पर दांत चबाय ॥
छैले बांके टेढे तिरछे सबने लिए हथियार लगाय ॥
अल्हड़ ज्वानी के मतवाले कुछ खातिर में लाते नाय ॥
हाथी सजगये घोड़े सजगये औरसब सजगए शुतर सवार ॥
फौजें सजगईं सब ज्वानोंकी औरसब लशकरहुआ तइयार ॥
तोपें सजगई सब मोहवे की और वह चढ़ी सड़कपर जाय ॥
सजे छत्री सब मोहवे के जिनकी जात बनाफल राय ॥
अस्सी पलटन सजी आल्हा की जिनमें बड़े बड़े सरदार ॥
बावन पलटन ब्रह्माजीत की जो दिन रात करे तलवार ॥

तीन लाख से ताला सइयद बाइस बेटों का परिवार ॥
नूर मोहम्मद शेख नूरदीन जो सब फौजों का सरदार ॥
बारह पलटन नर मलखे की गढ़ मोहबे में पहुँची जाय ॥
बने सिपाही हैं सिरसे के जो मरने से डरते नाय ॥
ज्वान पांचसौ से बौना आया डाकू कुरियल का सरदार ॥
बारह सौ घोड़े सियानन्द के और जागन होगया तइयार ॥
कालनेम दक्खन का राजा भूरे हाथी पर असवार ॥
यहभी सजगया गढ़ मोहबेमें जिसके बलका नहीं शुम्मार ॥
पांचों कपड़े सबने पहने सबने बांध लिये हथियार ॥
छोड़ भरोसा जिन्दगानी का सब घोड़ों पर हुए सवार ॥
पकड़ बकसुआ हिरनागिरका उसपर आल्हा हुआ सवार ॥
रघुनन्दन पर ताला चढ़गया शहर बनारस का सरदार ॥
गजगाहन पर ब्रह्माजीत है बेटा चन्द्रवन्श का लाल ॥
गाजी मनसुख पर मलखे चढ़गया बेटा बच्छराजका लाल ॥
घोड़ी चतरङ्गी के ऊपर मामा चढ़ा जगन्सी राय ॥
अपने अपने अब घोड़ों पर सब चढ़ गये बनाफल राय ॥
नीली घोड़ी पर बौना है डाकू कुरियल का सरदार ॥
एक दन्ता हाथी के ऊपर ढेवा इकला हुआ सवार ॥
अफसर अफसर चढ़े हाथी पर और घोड़ों पर चढ़े सवार ॥
पैदल पलटन और रिसाले आगे चले छड़ी बरदार ॥
बन्धे तुलाये रजपूतों के कावा देते फिरे सरदार ॥
हाथी घोड़े तोप रहकले सारे चल पड़े शुतर सवार ॥
गुम्मट बन्ध गए रजपूतों जैसे घटा टोप हो जाय ॥
बोला मलखे जब ललकारा और ढेवा से कहा सुनाय ॥

देखो मूरत घुड़चढ़ी का अब जल्दी से दो बतलाय ॥
इतनी सुनकर ढेवा सोचे पोथे गिन गिन कर रह जाय ॥
सुगन विचारा ढेवा ने अपने दिल में किया विचार ॥
बोला ढेवा जब कम्भू में और मलखे से कहा पुकार ॥
अबतुम लौटचलो महलोंको और इन्दलको लाओलिवाय ॥
करो घुड़चढ़ी अबतुम चलकर और सबका दो नेग चुकाय ॥
इतनी सुनकर दोनों चल दिये और महलोंमें पहुँचे जाय ॥
करी सलामी जा मछला को भाबी ले गई शीश चढ़ाय ॥

इन्दल का नौशा बनाकर घुड़चढ़ी कराना

बोला मलखे जब मछला से मैं भाबी का लेऊं बलाय ॥
करो तइयारी घुड़ी की अब कुछ देर लगाओ नाय ॥
यह मन मान गई मछला के और हिरदे में गई समाय ॥
बांदी बांदी को ललकारा और बांदी से कहा सुनाय ॥
देओ बुलावा सब नगरी में मेरी सखियोंको लाओबुलाय ॥
इतनी सुनकर बांदी चल पड़ी और नगरीमें पहुँची जाय ॥
गली गली में फिरे घूमती सब सखिया से कहा सुनाय ॥
तुम्हें बुलाया है महलों में रानी मछला रही बुलाय ॥
जब ये बात सुनी सखियों ने सबके दिल में गई समाय ॥
सज सज डाले सब तिरियों के रङ्ग महल में पहुँचे आय ॥
डोला आगया रानी मलना का सङ्गमें आई सुजरदेनार ॥
रानी आ गई ऊदल की संतोखा फुलवा पौंपदे नार ॥
बोली रानी जब आल्हा की खूबी नाई से कहा सुनाय ॥
बिछाकरचौकी मलियागिरकी तुम इंदलको देओनिल्हाय ॥

बोला मलखे जब खूबी से मैं नाई का लेऊं बलाय ॥
जल्दी निल्हादे तू इन्दल को अब कुछ काम देर का नाय ॥
चौकी लाकर मिलयागिर की खूबी नाई ने दई बिछाय ॥
इन्दल बैठ गया चौकी पर कामन झुकी बराबर आय ॥
चार सुहागन मलें उबटना बाकी खुशियां रही मनाय ॥
कलसा भरके गंगाजल का खूबी नाई ने लिया उठाय ॥
भर भर लोटा खूबी नाई वो इन्दल को रहा निल्हाय ॥
न्हाय धोयकर जब फारिग हुआ गुरूअमराका ध्यानलगाय॥
हाथ जोड़कर नाई और मलखे से कहा सुनाय ॥
नेग हमारा हमको मिल जाय पांचों कपड़े दो मंगवाय ॥
इतनी सुनकर मलखे बोला खूबी नाईसे कहा सुनाय ॥
गांव जागीरें तुमको देदी बैठा सात पुश्त तक खाय ॥
अब क्यों झगड़ रहा नेगों को तुझको शरम आवतीनाय ॥
हाथ जोड़कर खूबी बोला औ रनजीत बनाफल राय ॥
येही वक्त है मेरे कहने का और बिन कहे रहा नाजाय ॥
बोला ढेवा जब मलखे से भइया सुनलो कान लगाय ॥
पांच अशरफी देओ नाई को इसका नेग पूरा होजाय॥
बुलाके ढेवा ने खूबी को पांच अशरफी दी पकड़ाय ॥
मिस्त्री अशरफी जब खूबीको फूला अङ्ग में नहीं समाय ॥
झपट के खूब चला वहां से और सामान को लियाउठाय॥
खेंच जांगिया दिया इन्दल के लंगर बांधा घुन्डी दार ॥
वस्तर पहना काशमीर का जिसमें नहीं गढ़े तलवार ॥
ताश बादली का चीरा है बीच में हीरा दिया लगाय ॥
गान में कुन्डल जड़े विराजे गले में माला दी पहनाय ॥

बाले पहन लिए कानों में जिनकी चमक दूर तक जाय ॥
गुलाबी रेशम का पाजामा जो टांगों में गया समाय ॥
केसरिया जामा पहनाया पेटी कसी कमर में जाय ॥
रोली चावलकोअब लेकर तिलक इन्दलके दिया लगाय ॥
ढाल को देदी है बांवे में दहने दी तलवार उठाय ॥
डाल दुशाला दिया कन्धे पर और इन्दलको दियासजाय॥
लेकर बीड़ा सात पान का फिर इन्दल को दिया चबाय ॥
सज कर इन्दल खड़ा चौकमें कुछ तारीफकरी ना जाय ॥
चावल फेंके जब सुरजा ने उसे मलखे ने देखाजाय ॥
बोला मलखे जब ढेवा से भइया सुनले कान लगाय ॥
नेग जोग जो हो सुरजा का हमको भी दो तुमनिमटाय ॥
इतनी सुनकर ढेवा बोला और मलखे से कहा सुनाय ॥
इन्द्रजीत फाटक पर रोके तुम्हें आगे से देऊं बताय ॥
दोनों नेग हम दरवाजे पर एक ही संग देंगे निबटाय ॥
भरके कौली अब इन्दल को खूबी नाई ने लिया उठाय ॥
रानी मछला जहां हर बैठी वहां इन्दल को गया लिवाय॥
नेग कराया है दूधी. का रानी मछला ने दिया कराय ॥
घोड़ी चतरंगी सजवा कर नर मलखे ने ली मंगवाय ॥
इन्दल बैठ गया घोड़ी पर और आगेको दिया बढ़ाय ॥
घोड़ी पहुँची दरवाजे पर इन्द्रजीत वहां पहुँचा आय ॥
पकड़ बाग को अब घोड़ी की इन्द्रजीतने कहा सुनाय ॥
नेग हमारा हमको दे दो जब तुम बढ़ो अगाड़ी जाय ॥
जब ये बात सुनी मलखे ने फिर ढेवा से कहा सुनाय ॥
नेग कमीनों का होता उसको में देता निमटाय ॥

यह गत करके तेरे बालम ने जल्लादों को दिया पकड़ाय ॥
चाहे वहां पर आल्हा मर जाय चाहे मरो इन्दलसी राय ॥
मैं नहीं बचन मरूं अब तुमसे मुझको कौन पड़ी परवाय ॥
जब यह बात सुनी मलखे की मछला रोय रोय मर जाय ॥
अबयाद आगई फिर ऊदल की जिसने करा सामना नाय ॥
हिड़की बंध गई है मछला की मुंहसे बात कही ना जाय ॥
गोद तुम्हारी में सौंपू है जब मछला ने कही ये बात ॥
जैसी गंगा तुमको भावे वैसी करो हमारे साथ ॥
राम राम मछला को करके और मलना को शीश निवाय ॥
चल पड़ा मलखे अब महलों से और कम्पुमें पहुँचा जाय ॥

मोहबे वालों का बारात लेकर जाना बलखो बुखारे को रवाना होना

हुकम सुनाया जब सय्यद ने सब राजों से कहा सुनाय ॥
करी तइयारी अब चलने की लशकर का जो कूंच कराय ॥
जब यह बात सुनी राजों ने उनके दिल में गई समाय ॥
अपने अपने अब घोड़ों पर सब चढ़ गये बनाफल राय ॥
अलहड़ ज्वानी के मतवाले कुछ खातिर में लाते नाय ॥
जैसे बरात श्री रामचन्द्र की सज कर जनकपुरी को जाय ॥
तीन खूंट के चले देवता जिनका हाल कहा ना जाय ॥
ब्रह्मा विष्णु और शंकर जी संग में चला नादिया जाय ॥
ऐसे ही सज कर चले बनाफल हाथमें ली तलवार उठाय ॥
अनी दमक रही है भालों की सूरज किरन देख शरमाय ॥

गुम्मट बन्ध गया रजपूतों का जैसे घटा टोप होजाय ॥
चले बनाफल गढ मोहबे से सबका कूंच दिया करवाय ॥
दहने रिसाले काशमीर के बांबे कन्धारी असवार ॥
आगे आगे गांझे वाले पीछे भंगड़ रहे ललकार ॥
अली गोल में चले अफीमी जिनकी पलक खुलें हैं नाय ॥
परा बांध दिया है फौजों का और आगे को दिया बढ़ाय ॥
मारू बाजा बजता जावे घूमते जावें लाल निशाय ॥
दावता जावे है लशकर को जिसका नाम बीर मलखान ॥
डबल कूच बोला लशकर का आगेका लिया ध्यानलगाय ॥
मंजिल मंजिल के चलने में बलखबुखारे पहुँचे जाय ॥
हुकम सुनाया जब ताला ने बेटा सुनो बनाफल राय ॥
आगे जगह नहीं मिलने की यहां परलशकर दिया उतार ॥
आठ कोस का रहा फासला वहां पर लशकर दिया उतार ॥
कमरे खोलीं सब ज्वानों ने सबने खोल धरे हथियार ॥
जंगी डेरों को गढ़वाया और कानात दईं लगवाय ॥
झण्डे गाढ़ दिये खेतों में जिनकी ध्वजा रहीं फर्राय ॥
लगे बाजार वहां चौंपड़ के जिनमें लाखों का ब्यौपार ॥
पहरेदार खड़े पहरों पर कावा देते फिरें सवार ॥
बोला मलखे जब ज्वानों से नंगी सूंत लेओ तलवार ॥
जिनका पहरा लगा जहां पर रहियो खबरदार हुशियार ॥
इतनी बात सुनी मलखे की सबके दिलमें गई समाय ॥
जो जो ज्वान खड़े पहरों पर सबने लई संगीन चढ़ाय ॥
किला बांध दिया है तोपों का और चौवन्दी लो करवाय ॥
बन्दोवस्त लशकर का करके फारिग हुआ बनाफल राय ॥

बत्ती दहक रही तोपों की गोलन्दाज खड़े तइयार ॥
हुकम बनाफल का जब पावें हम तोपों की करें भरमार ॥
करी कचहरी जब आल्हा ने सरदारों को लिया बुलाय ॥
जितने अफसर थे मोहबे के सारे हुए इकट्ठे आय ॥

आल्हा का लाखन की फौज को देख कर घबराना

नजर घूम गई जब आल्हा की बवरी वनमें पहुँची जाय ॥
देखा झंडा लाखन का जिसकी लाल धजा फर्राय ॥
बोला आल्हा जब मलखे से दहशतकी गई बदनमें छाय ॥
कौनसा राजा चढ़ा यहां पर जिसका झंडा रहा फर्राय ॥
इतनी सुनकर मलखे बोला और आल्हा से कहा सुनाय ॥
जुलम बीत गये परजो होगई अब कुछ रहा ठिकानानाय ॥
नौ लाख घोड़ों के दंगल में पिरथी लाया फौज सजाय ॥
जिसको ब्याहने तुम आयेहो उसो लो आया पिथौंराराय ॥
जब यह बात सुनी आल्हा ने धक्का लगा कलेजे जाय ॥
सुरखी उड़ गई है चेहरे की जरदी गई बदन पर छाय ॥
छुटा पसीना जब कम्पू में और मलखे से कहा सुनाय ॥
बोला आल्हा जब कम्पू में और मलखे से कहा सुनाय ॥
अब तुम भाग चलो मोहबेको अब तक कुछ बिगड़ाहै नाय ॥
भारी राजा है दिल्ली का जिसका नाम पिथौरा राय ॥
तीर शब्द वेदी के उस पर सहटी लगे बोल पर जाय ॥
जिसके सपटी लगे जाकर उसकी जान बचे है नाय ॥

कौन कलेजा है बज्जर का जो पिरथी का झेले वार ॥
मुझे ना दीखे कोई लशकर में ओटे पिरथी की तलवार ॥
आज बैदुल का चढ़इया जो यहां होता उदयचन्द राय॥
रोक के आगा पिरथीराज का उसके देता मान उठाय ॥
चढ़े शनीचर उन घवलों पर ऊपर लड़े कालका माय ॥
बज्जर काया चौहानों की जिसमें भाल गड़े है नाय ॥
सुन सुन बातें अब आल्हाकी मलमें दिलमें रहा मुस्काय॥
किया इशारा जब ब्रह्माको तुम आल्हा को दो समझाय ॥
इतनी सुनकर ब्रह्माजीत ने नंगी सूंत लई तलवार ॥
फिर ललकारा हैं आल्हा को दादा मन्डलीक औतार ॥
क्यों घबरावे अपने दिलमें तुमको कौन पड़ी परवाय ॥
क्या है मसाला पिरथीराज पर जो वहकरे सामना आय ॥
क्या खेतों में ब्रह्मा मरगया क्या मर गयाअमर गुरुदयाल॥
इकले ऊदल के मरने से जो तेरा हो गया हाल बेहाल ॥
ऊदल बरनी का ब्रह्मा है पण्डा अर्जुन का औतार ॥
जिस पिरथी का तू डर माने उसकी देख लेऊं तलवार ॥
जब यह बात सुनी आल्हा ने उसके दिलमें गई समाय ॥
जो कुछ मरजी सब भइयोंकी उसमें उजर मुझे कुछनाय ॥
करा मशवरा सबने मिलकर और आपसमें कहा सुनाय ॥
कैसे खबर करें हरनन्दन को हमको हाल देओ बतलाय ॥
इतनी सुनकर मलखे बोला और ताला से कहा सुनाय ॥
चिंता पण्डित को बुलवालो सारा काम सिद्ध हो जाय ॥
बोला सइयद हलकारे से बादामी का लेऊं बलाय ॥
अब तुम चले जाओ जल्दीसे चिंतामन को लाओ बुलाय॥

इतनी सुनकर हलकारा चलदिया और पंडितसेकहीये बात॥
तुम्हें बुलाया है आल्हा ने पण्डित चलो हमारे साथ॥
जब यह बात सुनी पण्डित ने उसके दिलमें गई समाय॥
जहां दरबार लगा आल्हाका दाखिल हुआ वहांपर जाय॥
पन्डित पहुँचा जब बंगले में उसे चौकी पर दिया बैठाय॥
बोला मलखे जब पन्डित से चितामन का लेऊं बुलाय॥
करो तइयारी अब रंगों की सारा लो सामान मंगाय॥
सुहाग पुड़े को जल्द सजा कर बलखबुखारे दो पहुँचाय॥
जबये बात सुनी पन्डित ने दिलमें बहुत खुशी हो जाय॥
कोरे कागज को मंगवाया और हल्दी को लिया मंगाय॥
दूब के नालों को मंगवाकर रोली चावल लिये मंगाय॥
डोरी कलावे की मंगवा कर थाल के अन्दर धरी जमाय॥

खूबी नाई का बारी लेकर राजा हरनन्दन के दरबार में जाना

जो जो चीजें सुहाग पुड़े की सब पन्डितने ली मंगवाय॥
सात सुपारी रख कागजमें सुहाग पुड़े को दिया बनाय॥
छींटे देकर फिर रोली के बीच में सतिया दिया बनाय॥
डोरी लेकर कालावे की सुहाग पुड़े पर दी लिपटाय॥
फिर हलकारा खूबीनाई को और मलखे ने कहा सुनाय॥
तेरे ऊपर बीड़ा डाला खूबी सुनलो कान लगाय॥
अपनी बारी को ले जाओ और राजा पर दो पहुँचाय॥
खबर करा दो बलखबुखारे अब क्यों इतनी देर लगाय॥

यह कह दीजो हरनन्दन से ब्याहने आये बनाफल राय ॥
क्वारी बेटी तेरी पैमा है उसके क्वारा इन्दलसी राय ॥
इतनी बात सुनी खूबी ने धक्का लगा कलेजे जाय ॥
होश बिगड़ गए है खूबी के मुंह से बात कही ना जाय ॥
नीचे का दम नीचे रह गया ऊपर ले गया राम उठाय ॥
सुरखी उड़ गई है चेहरे की जरदी गई बदन पर छाय ॥
पिंडली कांप गई खूबी की मुंह का थूक बन्द हो जाय ॥
मन में सोचे खूबी नाई करता भली भलाई आय ॥
जीता ना लौटूं मैं वहांसे मेरी जान बचेगी नाय ॥
हाथ जोड़कर खूबी बोला ओ महाराज बनाफल राय ॥
बड़ी मार है बलख बुखारे हमसे मार सही ना जाय ॥
भिड़ों के छत्ते में मत भेजो वहां मेरी जान बचेगी नाय ॥
कठिन मवासे हरनन्दन के मुझसे नहीं चलें तलवार ॥
बड़े बड़े जोधा है राजा के जिनके बल का नहीं शुम्मार ॥
धोके न रहियो तुम मांडोंके बापका दाव लिया वहांजाय ॥
रहो न धोके नयनागढ़ के जहांपर आल्हाको लाये ब्याह ॥
बड़ा शूरमा यह राजा है जिसकी जग जाहिर तलवार ॥
मैं नहीं जाऊं बारी लेकर चाहे लाख धरो औतार ॥
मुझको जिन्दा ना छोड़ेगा जिसका नाम हरनन्दन राय ॥
मेरे भरोसे मतना रहियो मैं ना मुंड कटाऊं जाय ॥
इस पर जवाब दिया मलखे ने खूबी सुनले कान लगाय ॥
जब तक जीवे बच्छराज का तुमको कौन पड़ी परवाय ॥
अब लेजा बारी बलख बुखारे दहशत करो कालकी नाय ॥
दगा गुजर जाय बलख बुखारे मांका करे हरनन्दन राय ॥

बदला ले लुंगा खूबी का अपने दिल में मत घबराय ॥
नमक जो खाया है मौहवे का तेरी कायामें गया समाय ॥
नमक हरामी करेगा जो तू सीधा पड़े नरक में जाय ॥
इन्दल व्याहने को ना रहवे यह दिन कहने को नाय ॥
तुमको नेगी हमना जानें भाई लगो खुबिया राय ॥
करो तइयारी तुम जल्दी से इतशत किसी बात की नाय ॥
यह मन मानी जब खूबी के नर मलखे से कहा सुनाय ॥
घोड़ा मंगादो अपना मुझको जिस पर चढे खुबिया राय ॥
पाग बैंजनी तुम मंगवादो और इन्दल की ढाल तलवार ॥
इतनी चीजें तुम मंगवादो गुजरे घड़ी घड़ी का वार ॥
बोला- मलखे जब ताला से चाचा सुनलो कान लगाय ॥
जो जो चीजें हैं इन्दल की तुम खूबी को दो मंगवाय ॥
करी तइयारी अब खूबी ने सारा लिया सामान मंगाय ॥
पांचों कपड़ों को पहना है पांचों बांध लिये हथियार ॥
पकड़ बकसुआ गाजी मनसुखका उसके ऊपरहुआ सवार ॥
चल पड़ा खूबी अब लशकरसे राजा हरनन्दनके दरबार ॥
कोई घड़ी के अब अरसेमें वह फाटक पर पहुँचा जाय ॥
जिनका पहरा लगा फाटकपर उन ज्वानोंसे कहा सुनाय ॥
कहां से आये कहां जाओगे यहां पर कैसे पहुँचे आय ॥
कौन इरादे पर आये हो अपना नाम देओ बतलाय ॥
इतनी सुन पहरे वालों से कहने लगा खुबिया राय ॥
अटने के धोरे एक पटना है जहांपर मौहबा दिया बसाय ॥
हम नेगी हैं गढ़ मौहबे के चोबदार से कहा सुनाय ॥
ब्याह उठा हैं नर इन्दल का व्याहने आये बनाफल राय ॥

बड़े लड़इया हैं मोहबे के जिनकी जात बनाफल राय ॥
आई बरात अब गढ़ मोहबे से बलख बुखारे पहुँची आय ॥
बारी लेकर मैं आया हूं मेरा नाम खूबिया राय ॥
खबर भेज कर तुम राजा को मेरा नेग देओ करवाय ॥
इतनी सुनकर ड्योढ़ीवान ने फिर खूबी से कहा सुनाय ॥
जो कुछ नेग तुम्हारा चहिये हमको जल्दी दो बतलाय ॥
इस पर जवाब दिया खूबी ने भइया सुनलो कान लगाय ॥
चार पहर तक चले सरोही खून दुबारे पर बह जाय ॥
यही नेग दुवारे का चहिये तुम राजा से कहो सुनाय ॥
बोला बेटा ड्योढ़ीवान का हलकारे को लिया बुलाय ॥
जल्दी जाओ तुम बङ्गले में आमखासमें पहुँचो जाय ॥
यह कह दीजो तुम राजा से, ओ महाराज भंगेले राय ॥
नेगी आया गढ़ मोहबे से वह फाटक पर पहुँचा आय ॥
नेग दुवारे का मांगे है जिसका नाम खूबिया राय ॥
चल पड़ी जोड़ी हलकारे की राजा हरनन्दन के दरबार ॥
देश देश के क्षत्री बैठे जिनमें बड़े बड़े सरदार ॥
जाकर देखा बीच कचहरी भरमा भूत लगा दरबार ॥
केहर भैरों दोनों बैठे जो हरनन्दन के राज कुंवार ॥
एक कुरसी पर दुरजनसिंह है एक पर शोहा सिंह सरदार ॥
एक गद्दी पर गनपत बैठा एक पर सूरजसिंह सरदार ॥
जोगी झिलमिला दहने बैठा भस्मी अंग में रहा रमाय ॥
दीना मुन्शी है बांवे पर बस्ता धरा अगाड़ी जाय ॥
राजा बैठा सिंहासन पर आगे धरी नगन तलवार ॥
कुरसी कुरसी पर शहजादे मूढे मूढे पर सरदार ॥

इट के हठीले छत्री बैठे जो मरने से डरते नाय ॥
किसीके गौनेके दिन आगये किसीका व्याह हुआ हैनाय ॥
अल्हड़ ज्वानी के मतवाले कुछ खातिर में लाते नाय ॥
नाच पातरों का वहां हो रहा दारु रहे कलाल पिलाय ॥
फुन्द खिल रहे रजपूतों के कलंगी लिपट लिपट रह जाय ॥
नौलख छत्री है राजा का जिनका हाल कहा ना जाय ॥
वीर कचहरी हरनन्दन की हलकारा वहां पहुँचा जाय ॥
सात कदम से करी कोरनिश सर चरनों में दिया झुकाय ॥
हाथ जोड़ कर अरज गुजारी हलकारे ने कहा सुनाय ॥
आई बरात है गढ़ मोहवे से झन्डा गढ़ा सिवाने जाय ॥
बारी लेकर नाई आया जो फाटक पर पहुँचा आय ॥
नेग दुवारे का मांगे हैं इसका नेग देओ निमटाय ॥
जब ये बात सुनी राजा ने शोला फुका बदन में जाय ॥
हाथ उठा दिया जब राजा ने बङ्गला सुनसान हो जाय ॥
नाच बन्द रन्डी का हो गया छत्री गये सनाका खाय ॥
नीचेका दम नीचे रहगया और सब सहज दम्म पड़ जाय ॥
रन्डी बैठ गई फरशों पर अपनी धरी पिशवाज उतार ॥
साजको रखदिया साजिन्दों ने और तलबे को दियाउतार ॥
बोला राजा भैरोंसिंह से मैं बेटे का लेऊं बलाय ॥
किसने मोहवे टीका भेजा किसने करी सगाई आय ॥
बोला बेटा हरनन्दन का और से कहा सुनाय ॥
ना हमने कहीं टीका भेजा ना कहीं करी सगाई जाय ॥
कैसे चढ़ आये मोहबे वाले जिनकी जात बनाफल राय ॥
दही के धोके चूना खाये जिससे फटे गलफटा जाय ॥

चने के धोके मिर्च चाबले जिससे हलक तलख हो जाय ॥
जब से जीत लिया पिरथी को कुछ खातिर में लाते नाय ॥
जल गया राजा अब बंगले से गुस्सा भरा बदन में जाय ॥
हण्ड बांधकर तुम नाई के मेरी नजर गुजारो लाय ॥
इतन बात सुनी भैरों ने और गनपत से कहा सुनाय ॥
किसके पहरे अब तुम देखो अपने लो हथियार लगाय ॥
जाकर देखो दरवाजे पर कौनसा नाई पहुँचा आय ॥
इतनी सुनकर गनपत उट्ठा पन्जे लई तलवार उठाय ॥
हुक्म सुना करके गनपत ने और ज्वानोंको लिया सजाय ॥
कोई घड़ी के अब अरसे में दरवाजे पर पहुँचा जाय ॥
खोल मुसला दरवाजे का बाहर फाटक से हो जाय ॥
करी सलामी जब खूबी ने और गनपतको शीश नवाय ॥
बोला गनपत जब ललकारा और खूबी से कहा सुनाय ॥
कहां से आया और क्यालाया यहां पर कैसे पहुँचा आय ॥
कौन इरादे पर आया है हमको हाल देओ बतलाय ॥
हाथ जोड़कर खूबी बोला और गनपत से कहा सुनाय ॥
आई बरात अब गढ़ मोहबे से झण्डा गढ़ा सिवाने आय ॥
क्वारा बेटा है आल्हा का जिसका नाम इन्दलसी राय ॥
तुम्हारे क्वारी जो पेमा हैं ब्याहने आये बनाफल राय ॥
बारी लेकर मैं आया हूं इसे महलों में दो पहुँचाय ॥
नेग द्वारे का जो होवे मेरा नेग देओ मंगवाय ॥
अपने पण्डितको बुलवाकर तुम ज्योतिषमें लो दिखलाय ॥
जिन घड़ियों के फेरे निकलें हम आल्हा को दें बतलाय ॥
इतनी सुनकर गनपत बोला और नाई से कहा सुनाय ॥

नेग तुम्हारा हम नहीं जाने अब तुम हमकोदो बतलाय ॥
लौट के जवाब दिया नाईने अब तुम सुनलो कान लगाय॥
कहीं मिले हैं शाल दुशाले और कोई दे है कड़े पहनाय ॥
देश देश की जुदा चाल है अब मैं तुमसे कहूं सुनाय ॥
जैसी रीत है गढ़ मोहबे में ऐसी किसी देश में नाय ॥
अब मैं हाल कहूं रीतों का क्षत्री सुनलो कान लगाय ॥
सवा पहर तक चले सरोही और यहां बहे खून की धार ॥
वही नेग है गढ़ मोहबे का दरवाजे पर चले तलवार ॥
जब यह बात सुनी खूबी की गनपत भरा रोस में जाय ॥
दिया इशारा जब ज्वानों को अब क्यों रक्खी देर लगाय॥
बाप लगे है क्या बहनोई इसने किया सामना आय ॥
लेलो लेलो अब दुश्मन मत कहीं निकल हाथसे जाय ॥
हुक्म सुनाया जब गनपत ने सब रनशूर पड़ें अरराय ॥
चारों तरफ से घेरा उसको और चौबन्दी ली करवाय ॥
जैसे बादल में जल गरजे ऊपर घटा जोर कर जाय ॥
ऐसे ही छुपगया खूबी नाई ज्यों बादल में चांद छिपजाय ॥
जैसे अहरन पर घन पटके ऊपर दह दह करे लुहार ॥
यही गत हो रही है खूबी की नंगी पटक रही तलवार ॥
बोला घोड़ा जब ललकारा और खूबी से कहा पुकार ॥
मैंने मना किया मलखे को मत नाई को करे सवार ॥
गीदड़ मौत मरे फाटक पर गढ़ मोहबे को दाग लगाय ॥
बाघ छोड़ दे मेरी जल्दी से दुशमन तेरा बुरा हो जाय ॥
नहीं अभी पटक दूंगा काठी से नीचे गिरे जमीं पर जाय ॥
इतनी सुनली जब खूबी ने बोली गई कलेजा खाय ॥

सुमरन करके जगदम्बा का दहने बैठ कालका माय ॥
मनियादेव को जब सुमरा है गुरु अमराकी आन लगाय ॥
सुमर भवानी हिंगलाज की मेरे असने में करो सहाय ॥
जिन्दा बच गया जो फाटक पर दुहेरी दूंगा ध्वजा चढ़ाय ॥
बाघ छोड़कर अब घोड़े की दोनों हाथ करी तलवार ॥
छोड़ आसरा जिन्दगानीका खूबी कर रहा मार ही मार ॥
जब रग दाबी गाजी मनसुखकी घोड़ा भरा रोस में जाय ॥
कभी तो घोड़ा बढ़े दहनेको और कभी बांबे को होजाय ॥
ऐसे झपटे हैं ज्वानों को जैसे बिल्ली चूहे को खाय ॥
किसी को मारे हैंटापों से किसी को मुंह से जाय चबाय ॥
ऊपर मारे खूबी नाई सब दल तिड़ी बिड़ी हो जाय ॥
जैसे भेड़िया पड़े रेवड़ में चीरे फाड़े और खा जाय ॥
यह गत करदी खूबी नाई ने दल पूला सा दिया बिछाय ॥
कभीतो घोड़ा पड़े गोल में और कभी लगे स्वर्गमें जाय ॥
खट खट खट खट करताआवे जैसे बाज लपेटा खाय ॥
बहुत से ज्वान मरे फाटक पर बहुतसे घायल दिए बनाय ॥
बहुत से जख्मी होकर भागे जिनका खून टपकता जाय ॥
बारह घाव लगे खूबी के जामा सराबोर हो जाय ॥
जो कोई ज्वान बचा फाटक पर अपनी भागा जान बचाय॥
जलकर गनपत रापट हो गया और खूबी पर पहुँचाजाय ॥
चौकस हो जा तू घोड़े पर सर पर मौत पुकारी आय ॥
हाथ जोड़कर खूबी बोला और गनपत से कहा सुनाय ॥
हम तो नौकर लगें तुम्हारे राजा सुनो हमारी बात ॥
तुम्हें मुनासिब यह ना चहिए जो नाई पर डालो हाथ ॥

तेरी जोट का सिरसे वाला जिसका नाम वीर मलखान ॥
जब खेतों में होय लड़ाई दिल का मेट लीजो अरमान ॥
इतनी कह खूबी नाई ने अपना घोड़ा दिया उड़ाय ॥
बाट देख रहाथा वहां मलखे खूबी कब यहां पहुँचे आय ॥
नजर बदलगई जब मलखेकी सामने घोड़ा पड़ा दिखाय ॥
बहुत देर खूबी को हो गई मारा गया खूबिया राय ॥
बैठा हो गया है कुरसी से खूबी जब वहां पहुँचा आय ॥
करी सलामी जब खूबीने और सबको दिया शीश नवाय ॥
कौली भरली है मलखे ने और छाती से लिया लगाय ॥
छींटक छींटा घोड़ा हो रहा खून रहा खून में नहाय ॥
खोल दुशाला नर मलखे ने खूबी के दिये दाग छुड़ाय ॥
मुंह पौंछ कर अब नाई का फिर खूबी से कहा सुनाय ॥
क्या गत बीती बलख बुखारे हमको हाल देओ बतलाय ॥
इतनी सुनकर खूबी बोला ओ रनजीत बनाफल राय ॥
ज्वान पांचसौ संगमें लेकर गनपत वहां पर पहुँचा आय ॥
हुक्म सुनाया गनपतसिंह ने मारो इसे जान से जाय ॥
चली सरोही सवा पहर तक सारे में दिया खून बहाय ॥
बहुत से ज्वान मरे जान से गनपत बढ़ा अगाड़ी जाय ॥
धोका देकर मैं गनपत को अपनी लाया जान बचाय ॥
कमर ठोक कर नर मलखे ने कपड़े कड़े दिए पहनाय ॥
अब तुम चले जाओ डेरे में मरहम पट्टी करो बनया ॥
हम देखेंगे उस गनपत को कैसे लड़े खेत में आय ॥
बोला मलखे जब ललकारा अपना लिया सईस बुलाय ॥
जीन उतारके तुम घोड़ेकी और मनसुखको दओ निलहाय॥

जीन उतर गया अब घोड़ेका पानी गरम लिया करवाय ॥
पहले निलझाया है घोड़े को फिर कपड़े से पौंछा जाय ॥
हाथ फेर कर जब घोड़े पर नर मलखे ने कहा सुनाय ॥
बड़ा भरोसा मुझे घोड़े का मेरो खेतों में करे सहाय ॥
यहां की बातों को यहां छोड़ा हरनन्दन का सुनो बयान ॥
चल पड़ा गनपत दरवाजे से और बंगले में पहुँचाआन ॥
हाथ जोड़कर गनपत बोला और राजा से कहा सुनाय ॥
जुल्म बीतगये परलो होगई अब कुछ रहा ठिकानानाय ॥
जिनके नेगी यह गत करगए मालिक होंगे कौनबलाय ॥
लड़ गया इकला वह फाटकपर अपनी लेगया जानबचाय ॥
भूमि कटीली है मोहबे की सातों जात करें तलवार ॥
बहुत से छत्री घायल कर गया बहुतसे दिये जानसे मार ॥
जब मैं झपटा उसके ऊपर राजा सुनलो कान लगाय ॥
धोका देकर मेरे आगे से अपना घोड़ा दिया उड़ाय ॥
जब यह बात सुनी रोढ़ा ने फिर गनपतसे कहा सुनाय ॥
मैंने तो जाना शूरवीर हो कायर बने वहां पर जाय ॥
क्या कहीं मर गये दरवाजेपर क्या वहां डूब गई तलवार ॥
जिन्दा छोड़ दिया दुशमनको क्योंना लाया शीश उतार ॥
इस पर जवाब दिया गनपतने मैं रोढ़ा का लेऊं बलाय ॥
देखो बनेती दिन निकले पर जब हम खेत बुहारें जाय ॥
मैं देखूंगा उन ज्वानों को कैसे लड़ें बनाफल राय ॥
बैठे रहियो तुम बंगले में तुमको कौन पड़ी परवाय ॥
खेद खेद मोहबे तक मारूं सबका डालूं खोज मिटाय ॥
इतनी सुनकर राजा बोला मैं ज्वानों का लेऊं बलाय ॥

चौकस हो जाओ दरवाजे पर पहरे डबल देओ लगवाय ॥
तोप चढ़ादो सब बुरजों पर नाकेबन्दी दो करवाय ॥
नहीं भरोसा है दुशमन का नहीं घुसें रात में आय ॥
बड़े लड़इया हैं मोहबे के उनकी मार सही ना जाय ॥
मैंने देखा हिंगलाज में जब पिरथी से हुआ तकरार ॥
तोड़ के छत्तर पिरथीराज का पहले पूजा करी संवार ॥
सारे राजा रहे पिछाड़ी पहले गये बनाफल राय ॥
नकटे दाने के मौंडे पर सारे राजा गये घबराय ॥
दाने से युद्ध किया आल्हाने उसको दिया जान से मार ॥
जबसे जानूं उन ज्वानों को उनकी जुलम कठिन तलवार ॥
इतनी बात सुनी भैरों ने सुरखी गई बदन में छाय ॥
बैठे रहियो तुम बंगले में तुमको कौन पड़ी परवाय ॥
क्या वही क्षत्री के जन्मे हैं क्या हम हैं गीदड़ के लाल ॥
बांध बांध के मैं भेजूंगा तुम भौरे में देना डाल ॥
कहोतो सिर काटूं मलखेका कहो आल्हा को मारूं जाय ॥
यह ढंग कर दूंगा खेतों में ढूंढा खोज मिलेगा नाय ॥
चकियाचाल पड़ी नगरी में चर्चा हुई महल में जाय ॥
खबर सुनी जब यह पेमा ने फूली अंग में नहीं समाय ॥
मुझको वचन दिया महलोमें जिसका नाम उदयचन्दराय ॥
वह निकले सच्चे क़ौल अपने के तेरा लेंगे व्याह कराय ॥
फटी पपीड़ी जब दिन निकला सब भगवानको रहे मनाय॥
मरद सवारे सिर की पगड़ी तिरिया चीर संवारे जाय ॥
गऊ संवारे है बच्चे को बनिया बाट संवारे जाय ॥
जोड़ कचहरी हरनन्दन ने अफसर ज्वान संवारे जाय ॥

तोपें सज गई गनपतसिंह की और सब रफल हुए तइयार ॥
हाथी सजगये घोड़े सजगये और सब सजगये शुतर सवार ॥
पहले नक्कारे के बजने में सारे हुए इकट्ठे आय ॥
दूजे नक्कारे के बजने में सबका डबल कूच हो जाय ॥
रन का बाजा जब बजने लगा डन्का पड़ा बम्बपर जाय ॥
हाथी बढ़ाया गनपतसिंह ने लशकर चला बराबर जाय ॥
तीन घड़ी और सवा पहर में झण्डा गढ़ा खेत में जाय ॥
सुन सुन धौंसे के बाजे को आल्हा चौंक चौंक रह जाय ॥
बोला गनपत जब मुन्शी से मैं मुन्शी का जेक बलाय ॥
लिखदो चिट्ठी अब जल्दीसे और आल्हा को लिखो बनाय ॥
यह मजमून लिखो चिट्ठी में अब तुम सुनलोकान लगाय॥
पहली लड़ाई गनपतसिंह की जो मरने से डरता नाय ॥
जो तुम्हारी मन्शा हो लड़नेकी अपना खेत बुहारो आयग॥
नहीं उल्टे लौट जाओ मोहबेको यहांसे कूच देओ करवाय॥
चिट्ठी बन्द करी गनपत ने अपनी मोहर दई लगवाय ॥
जल्द बुलाकर हलकारे को गनपतसिंह ने कहा सुनाय ॥
ले जाओ चिट्ठी तुम जल्दी से जहां दरबार बनाफल राय ॥
देना चिट्ठी तुम आल्हा को और किसी को देना नाय ॥
चिट्ठी लेकर चला हलकारा और लशकर में पहुँचा जाय ॥
जहां कचहरी थी आल्हा की चिट्ठी धरी फरश पर जाय ॥
जब मजमून पढ़ा चिट्ठी का आल्हा सहस दम्म पड़ जाय ॥
मलखे मलखे को ललकारा भइया सुनो बनाफल राय ॥
पहली लड़ाई गनपतसिंह की उसने खेत बुहारा आय ॥
बड़ा लड़इया गनपतसिंह है जिसकी मार सही ना जाय॥

इस पर जवाब दिया सइयद ने बेटा मन्डलीक अवतार ॥
क्या है मसाला गनपतसिंह पर ओटे मलखे की तलवार ॥
इन बातों को मतना बोलो तुमको जेबा देता नाय ॥
जब मुंह देखेगा मलखे का दुशमन खेत छोड़ भग जाय ॥
बीड़ा डालो तुम जल्दी से अब क्यों रक्खी देर लगाय ॥
यह मन मान गई आल्हा के और हिरदे में गई समाय ॥
सारे कुनबे को बुलवाया सारे अफसर लिये बुलाय ॥
जितने राजा और सूबे थे सारे हुए इकट्ठे आय ॥
भरी कचहरी अब आल्हाकी अजगर जहां लगा दरबार ॥
कुरसी कुरसी पर शहजादे मूंढे मूंढे पर सरदार ॥
बीड़ा डाल दिया आल्हा ने सोने का दिया वर्क लगाय ॥
बोला आल्हा जब ललकारा चत्री सुनलो कान लगाय ॥
पहली लड़ाई गनपतसिंह की जिसने खेत बुहारा आन ॥
कौन सूरमा गढ़ मोहबे का जो मरने से डरता नाय ॥
गनपतसिंह के अब मौंडे पर अपना खेत बुहारे जाय ॥
इतनी बात सुनी आल्हा की सारे गये सनाका खाय ॥
पड़े पड़े बीड़ा दो पहर हो गए किसी ने बीड़ा खाया नाय
कोई कुरेदे है धरती को किसी ने गरदन लई झुकाय ॥
बोला मलखे जब ललकारा सब ज्वानों से कहा सुनाय ॥
गनपतसिंह के अब मौंडे पर सबकी डूब गई तलवार ॥
बावन राजा छप्पन सूबे जोधा एक से एक सिवाय ॥
इतने चत्री यहां पर बैठे क्या कोई रहा शूरमा नाय ॥
बोला ब्रह्मा जब ललकारा और मलखे से कहा सुनाय ॥
पहला नेग होय ब्यानों का जहां चाहे वहां देओ हटाय ॥

या तो भेजो इन्द्रजीत को या वहां जाय सियानन्द राय ॥
इतनी सुनकर ढेवा बोला मैं ब्रह्मा का लेऊं बलाय ॥
भारी जोधा वह गनपत है जिसके बल का नहीं शुमार ॥
नहीं भरोसा इन दोनों का ओटे गनपत की तवार ॥
ऊंच नीच खेतों में हो जाय दो में एक वहां मर जाय ॥
नील का टीका लगे हमारे सारे जन्म मिटेगा नाय ॥
भर भर बोली सुरजा मारे हमसे बोल सहा ना जाय ॥
अपने बेटे को ब्याह लाये मेरे बालक को आये गंवाय ॥
इतनी सुनकर इन्द्रजीत ने अपनी ली तलवार उठाय ॥
ऐसी बातों को मत बोलो मेरे जामे में नहीं समाय ॥
कब से ढेवा मनवद्ध हो गया कब से बांध लई तलवार ॥
जब तुम ब्याहने गये ब्रह्मा को राजा पिरथी के दरबार ॥
पहला नेग पड़ा ब्यानों का अगौनी पर दिया कराय ॥
बादशाह दिल्ली का नामी जिसका नाम पिथौरा राय ॥
मचो लड़ाई अगौनी पर सबके डाले मान घटाय ॥
बैठे रहियो तुम डेरों में तुमको कौन पड़ी परवाय ॥
हम देखेंगे गनपतसिंह को अपना खेत बुहारें जाय ॥
बोला सियानन्द इन्द्रजीत से राजा भौंरीगढ़ के राय ॥
अब तुम बैठ जाओ कुरसी पर और मैं खेत बुहारूं जाय ॥
सुनकर बातें सियानन्द की इन्द्रजीत खुशी हो जाय ॥
हाथ पकड़कर सियानन्द का उसे कुर्सी पर दिया बिठाय ॥
तुम मत फिकर करो कुछ दिलमें शंका करो किसीकी नाय
कोई घड़ी के अब अरसे में दिन की दूंगा रात कराय ॥
झपट के उट्ठा वह कुरसी से कब्जा ली यलवार उठाय ॥

किला बांध दिया है तोपों का मोरचे बन्दी दी करवाय ॥
बन्दोबस्त लशकर का करके इन्द्रजीत रहा मुस्काय ॥
उन्धे लशकर गनपतसिंह का इन्धे इन्द्रजीत सरदार ॥
दोनों पल्ले मिले बराबर जिसको देय श्री करतार ॥
देखी सूरत जब कनपत ने इन्द्रजीत से कहा सुनाय ॥
ज्वान गरीबों के मारे से इनका सेर चून घट जाय ॥
मेरी तेरी बरनी रनखेतों में सारा हाल अभी खुल जाय ॥
इन्द्रजीत बोला गनपत से चत्री सुनलो कान लगाय ॥
नींव जमादी चन्देले ने रहा घरा बनाफल राय ॥
आन जो दे दी है आल्हा ने हमसे आन मिटेगी नाय ॥
हा हा खाते का ना मारें ना भगते पर करें हम वार ॥
गिरा सेल हम नहीं उठावें पहले नहीं करें हैं वार ॥
पहले वार तुम अपना करलो दिलका लो अरमान मिटाय
सांग उठाई जब गनपत ने जिसकी अनी दहाड़े काल ॥
मारी घुमाकर दोनों हाथ से इन्द्रजीत पर दई झुकाय ॥
पीलवान उसका जालिम था वह दाहिनेको गया घुमाय ॥
हाथी घूमा जब दहने को वार सांग का दिया बचाय ॥
खाली चोट पड़ी गनपत की गनपत गया सनाका खाय ॥
इसी सांग से हाथ मारे और घोड़ों को छोड़ा नाय ॥
यहीं सांग अब धोका दे गई बेशक काल पुकारा आय ॥
क्या तेरी माता ने शिव सुमरा या तेरा बाप रहा इतवार
मेरी चोट से जो तुम बचगये तुमने नया लिया औतार ॥
बोला बेटा मौरीसिंह का और गनपत से कहा पुकार ॥
क्या तेरा सेला कच्चे लोहे का या ना कुरमी घड़ा लुहार

सांग बने है देश हमारे जो काया में जाय समाय ॥
इतनीं सुनकर गनपत जलगया ज्ं बारूदमें आग लगजाय
उठा कमान को अब गनपत ने और पंजे में लई दबाय ॥
दोनों हाथों से धर ताना गोशे से गोशा मिल जाय ॥
खेंच कमान को नरघा कर लिया रौंदा पड़ा कान पर जाय
पांव अड़ाकर अब हौदे में इन्द्रजीत पर दिया चलाय ॥
ओट पकड़गया वह कलशेकी और मुंह परली ढाल अड़ाय
खाली तीर पड़ा दुशमन का गनपत सोच सोच रह जाय ॥
इन्द्रजीत गरजा हौदे में पीलवान से कहा सुनाय ॥
जल्द उठादे मेरे हाथी को अब क्यों रक्खी देर लगाय ॥
मारा अंकुश पीलवान ने और मस्तक पर दिया झुकाय ॥
लगते ही अंकुश यह गत होगई हाथी भरा रोस में जाय
झपटा हाथी इन्द्रजीत का और हाथी रर पड़ा अड़ड़ाय ॥
सूंड लपेटा दोनों हो गये मस्तक से मस्तक मिल जाय ॥
छज्जे अड़ गये अम्बारी के कलशे मिले बराबर जाय ॥
दोनों क्षत्री मिले बराबर जोधा एक से एक सिवाय ॥
एक पांव हौदे पर टेका एक कलशे पर धरा जमाय ॥
मची लड़ाई दोनों तरफ से अपनी रहे तलवार उठाय ॥
खदबद खदबद तेगा चल रहा चलरही छपक छपक तलवार
झोका चल रहा हैं सांगों का जैसे हवा चले पुरवाय ॥
चल रहा भाला नागदमन का जो पसली में जाय समाय ॥
गोलिया चलरहा पानीपत का जो बख्तर को देय उड़ाय ॥
दोनों सूर बराबर लड़ रहे अपने अपने दाव चलाय ॥
होश बिगड़ गये इन्द्रजीन के दिल में बहुत गया घबराय ॥

झुरसी उड़ गई है चेहरे की जरदी गई बदन पर छाय ॥
छुटा पसीना इन्द्रजीत का जामा सराबोर हो जाय ॥
बोला देवा वहां कम्धू में सियानन्द से कहा सुनाय ॥
खबर नहीं कुछ इन्द्रजीत को क्या गत हुई खेत में जाय ॥
आधे नेगों के तुम मालिक अब क्यों रक्खी देर लगाय ॥
करो तइयारी तुम जल्दी से और खेतों में पहुँचो जाय ॥
इतनी सुनकर सियानन्द ने पांचों बांध लिए हथियार ॥
सजा बछेड़ा जहां खड़ा था उसके ऊपर बैठा जाय ॥
मारा चाबुक जब घोड़े के और आगे को दिया बढ़ाय ॥
कोई घड़ी के अब अरसे में दाखिल हुआ खेत में जाय ॥
चीर के फौजें इन्द्रजीत की गनपतसिंह पर पहुँचा जाय ॥
बोला सियानन्द इन्द्रजीत से अपना हाथी देओ घुमाय ॥
अब तुम हट जाओ पीछे को मैं गनपत को देखूं जाय ॥
अपना ओसरा तुमने भरलिया मेरा ओसरा पहुँचा आय ॥
गनपतसिंह के अब मौंडे पर देखो हाथ सियानन्द राय ॥
इतनी सुनकर इन्द्रजीत ने अपना हाथी दिया घुमाय ॥
लई सरोही सियानन्द ने पंजे ली तलवार उठाय ॥
जब रग दाबी है घोड़े की वह हाथी पर पहुँचा जाय ॥
पिछली टाप रही धरती में दो मस्तक पर धरीं जमाय ॥
मारी सरोही सियानन्द ने और गनपत पर दई झुकाय ॥
गद्दी कट गई गनपतसिंह को ढाल के टुकड़े दिये उड़ाय ॥
कड़िया झड़ गई सब बख्तर की और पंजे पर टहकी जाय
हिली बतीसी जब गनपत की धक्का लगा कलेजे जाय ॥
देखने में तो लौंडा दीसे पर यह निकला बुरी बलाय ॥

संभला गनपत अब दौंदे में भाला में लिया उठाय ॥
मारा घुमाकर सियानन्द के वह धरती में बैठा जाय ॥
हट गया घोड़ा सियानन्द का और गनपतपर पहुँचाजाय ॥
वार किया फिर सियानन्द ने और घोड़े को दिया बढ़ाय ॥
ले किया भाला नागदमन का जो जहरों में धरा बुझाय ॥
मारा घुमाकर गनपतसिंह के गुरू अमरा का ध्यान लगाय ॥
सात पेच चीरे के कटगये जो भर माथे में गढ़ जाय ॥
इन्द्रजीत पहुँचा लशकर में जब ताला ने कहा सुनाय ॥
क्या गत बीती रन खेतों में हमको हाल देओ बतलाय ॥
इन्द्रजीत बोला ताला से ओ महाराज तलन्सी राय ॥
बड़ा लड़इया वह गनपत है दुशमन सहज मरेगा नाय ॥
लड़ते लड़ते दो पहर हो गये पहर तीसरा पहुँचा आय ॥
चोट न खाई एक दुशमन ने सारे दिये हैं वार बचाय ॥
छोड़ा लशकर को खेतों में लड़ता छोड़ा सियानन्द राय ॥
मुझको अगवां यह सूझै है वहां पर खैर रहेगी नाय ॥
बड़ा बहादुर वह गनपत है उसका वार न खाली जाय ॥
नहीं भरोसा सियानन्द का जो गनपत का झेले वार ॥
ना कहीं दुशमन रन खेतोंमें सियानन्द के डाले मार ॥
इतनी सुनके फिर सइयद ने नर मलखे से कहा सुनाय ॥
क्या कहीं मर गए मोहबे वालेया रजपूत रहा कोई नाय ॥
अंश निकल गयेसब ज्वानोंके क्यादम रहा भुजोंमें नाय ॥
पूत बिराने को मरवाओ तुमको शरम आवती नाय ॥
लाना लगजा रजपूती को मुंह पर नाक रहेगी नाय ॥
क्या बैठे हो सुख नीदों में सर पर पड़ी तुम्हारे आय ॥

जब यह बात सुनी आल्हा ने औंधा गिरा फरश पर जाय
अरे बैदुला के चढ़वइया भइया मेरे उदयचन्द राय ॥
आज के दिनको जो तू होता हमको कौन पड़ी परवाय ॥
देखके हालत अब आल्हा की ब्रह्मा उठा फरेरा खाय ॥
बैठा हो गया वह कुरसी से पांचों बांध लिए हथियार ॥
क्यों घबराया अपने दिल में दादा मन्डलीक अवतार ॥
ऊदल बरनी का ब्रह्मा है पन्डा अर्जुन का अवतार ॥
उमर का पट्टा ना कोई लाया ना कोई जीवे बरसहज़ार ॥

ब्रह्माजीत का गनपत सिंह के मुकाबले को जाना

हुक्म सुनाया ब्रह्माजीत ने सरदारों से कहा सुनाय ॥
जितना लशकर है ब्रह्मा का एकदम कमरबन्द हो जाय ॥
सजगया लशकर ब्रह्माजीतका सबने बांध लिए हथियार ॥
घोड़े मनौआ को सजवाकर उस पर ब्रह्मा हुआ सवार ॥
हुक्म सुनाकर ब्रह्माजीत ने सब लशकर को दिया बढ़ाय ॥
कोई घड़ी के अब अरसे में रनखेतों में पहुँचा जाय ॥
ना वो किसीसे बोला चाला ना कुछ किसीसे कहा सुनाय
एकदम टूट पड़ा दुशमन पर दक्खन खूंट दबाई जाय ॥
फौज कटीली गढ़ मोहबे की जो मरने से डरती नाय ॥
मारती जावें बढ़ती जावें जिनकी मार सही ना जाय ॥
अली अली करके बढे रुहेले सइयद बढ़गये मुगल पठान ॥
हर हर करके छत्री बढ़ गए जोधा सूरवीर बलवान ॥

जहां मोरचा था तोपों का गनपतसिंह ने दिया मिलाय ॥
कोई घड़ी के अब अरसे ब्रह्मा डटा सामने जाय॥
गोलन्दाज मारे तोपों के और सब तोपे लीं छिनयाय॥
छीन छीन तोपें ब्रह्माजीत ने अपने कम्पू दीं पहुँचाय ॥
नदी नरबदा का जल गरजे और गंगा की गरजे धार ॥
ब्रह्मा वाली अब गरजों में चत्री छोड़ भगे तलवार ॥
एक को मारे दो मर जावें तीसरा गिरे फरेरा खाय ॥
ये गत करदी है ब्रह्मा ने दल पूला सा दिया बिछाय ॥
आगे मौंडे पर चत्री हैं पीछे घोड़ों के असवार ॥
खदबद खदबद तेगा चलरहा चलरहीछनकछनक तलवार ॥
चला गोलिया पानीपत का बख्तर को दे है उड़ाय ॥
सागें चल रहीं नितियागढ़की जो पसली में जाय समाय ॥
ब्रह्मा पहुँचा गनपतसिंह पर जहांपर लड़े सियानन्द राय ॥
देख लड़ाई उन दोनों की ब्रह्मा ने लिया गुरज उठाय ॥
मारा घुमाके दोनों हाथसे और गनपत पर दिया झुकाय॥
अड़ड़ अड़ड़ होती आवे जूं ऊपर से पहाड़ गिर जाय ॥
तोड़ छत्तरी डन्डे तोड़े चारों कलसे दिये गिराय ॥
सरद टूट गई है हौदे की गनपत गिरा रेत में जाय ॥
खेत छोड़ कर गनपत भागा पीछा फिरके देखा नाय ॥
फौज उखड़ गई जब गनपत की आगे बढ़े बनाफल राय॥
हाथ उठाया जब ब्रह्मा ने चत्री म्यान करो तलवार ॥
भगते दुशमन को मत मारो खूनमें डूब जाय तलवार ॥
बजा नकारा जब जीतों का जंगी चाव दई ढलवाय ॥
दगी सलामी है तोपों की खाली झाड़ दई दगवाय ॥

ब्रह्मा लौटा है पीछे को और कम्पू में पहुँचा जाय ॥
भगवा कपड़े हैं ब्रह्मा के जूं गेरू में दिये रंगवाय ॥
झुम्म भीग रहे हैं घोड़े के ऊपर तंग रहा चुवराय ॥
उतर बछेरे से नीचे हुआ सइयद को दिया शीश निवाय ॥
कमर ठोक कर जब ताला ने और सीने से लिया लगाय ॥
जिस दिन जन्म लिया ब्रह्मा ने पैदा हुआ दूसरा नाय ॥
पहली लड़ाई हुई गनपत से जीते जङ्ग बनाफल राय ॥
यहां की बातों को यहां छोड़ा अब राजा का देऊं सुनाय॥
पहुँचा गनपत जब बंगले में मुंह पर रही उदासी ॥
सुरत देखी गनपतसिंह की जब राजा ने कहा सुनाय ॥
मुझे भरोसा तेरा भारी था और तू आया पीठ दिखाय ॥
दाग लगाया रजपूती को फिर मरजाद बन्धेगी नाय ॥
मुझको अगवां यह सुझे है तुम मिल गये उन्हीं से जाय ॥
रिश्वत लेकर कुछ दुशमन से बहुतसे ज्वान दिये मरवाय ॥
इतनी सुनकर गनपत बोला ओ महाराज भंगेले राय ॥
ऐसी बातों को मत बोलो तुमको जेबा देता नाय ॥
बड़े लड़इया मोहबे वाले जिनसे हार गई तलवार ॥
अब तुम भेजो और जोधा को जो ओट उन्हों का वार ॥
जैसी रिश्वत मैंने ली है वह भी लेय खेत में जाय ॥
दो दो शूरमागढ़ मोहबे के रनखेतों में दिये भगाय ॥
वह भारी बेटा चन्देले का ब्रह्माजीत है बुरी बलाय ॥
ऐसा टूटा है खेतों में एक ही संग पड़ा घबड़ाय ॥
देख लड़ाई ब्रह्माजीत की सारे ज्वान गये घबराय ॥
मुझको अगवा यह सूझे है वह डोले को छोड़ें नाय ॥

जब ये बात सुनी गनपत की भैरी उठा तमाड़ा खाय ॥
बोला भैरों जब राजा से मैं ताऊ का लेऊं बलाय ॥
कौन जतन से उनको जीते हमको हाल देश्रो बतलाय ॥
बोला राजा फिर जोगी से मैं गुरुश्रा का लेऊं बलाय ॥
तुम जब से आये बलख बुखारे मेरा काम पड़ा कोई नाय ॥
मुझे पर चढ़ आये मोहबे वाले जिनकी जात बनाफलराय ॥
डोला मांगे है बेटी का अब कुछ रहा ठिकाना नाय ॥
इज्जत रखले अब राजा की जिन्दा गुन भूलूंगा नाय ॥
इतनी सुनकर जोगी बोला और राजा से कहा सुनाय ॥
अपने जी में यह जाने सहज में मरें बनाफल राय ॥
वह चेले हैं गुरू अमराके जिस पर विद्या बहुत सिवाय ॥
जितनी विद्या है अमरा पर इतनी किसी और पर नाय॥
अब की लड़ाई जितना दूंगा और आगे की जानूं नाय ॥
मेरे भरोसे मतना रहियो राजा सुनलो कान लगाय ॥
बोला जोगी फिर गनपत से अपने दिल में मत घबराय ॥
जब तक जीवे जोगी झिलमिला तुमको कौन पड़ीपरवाय॥
करो तइयारी फिर लड़ने की अपने लो हथियार लगाय ॥
मैं देखूंगा उन ज्वानों को जिनकी जात बनाफल राय ॥
दिया सहारा जब जोगी ने गनपत फूला नहीं समाय ॥
फिर ललकारा है ज्वानों को लशकर कमरबन्द होजाय ॥
बचे बचाये जो छत्री थे पैदल पलटन और सवार ॥
दोबारा फौज सजी गनपत की सबसे बांध लिये हथियार ॥



गनपतसिंह और जोगी झिलमिला का मैदान जंगल में जाना और गुरु झिलमिला का अपने जादू से मोहबे वालों को पत्थर बना देना

करी तइयारी फिर गनपतने रन का बाना लिया सजाय ॥
सम्भल के बैठा है हौदे पर और जोगी को लियाबिठाय ॥
बटुआ ले लिया है विद्या का सरसों हाथ में लई उठाय ॥
जूड़ा बांध लिया जोगी ने माथे लिया सिंदूर लगाय ॥
ले लिया चिमटा दहने हाथ में भस्मी अङ्ग लई रमाय ॥
बजा नकारा जब चलने का डंका पड़ा बम्ब पर जाय ॥
परा बांधकर सब लशकर का गनपतने दिया कूंच कराय ॥
कोई घड़ी के अरसे में दाखिल हुआ खेत में जाय ॥
गरजा गनपत जब खेतों में और हौदे में रहा पुकार ॥
कौन क्षत्री है मोहबे का ओटे गनपत की तलवार ॥
खबर हुई जब यह ताला को गनपत खेत बुहारो आय ॥
बोला सइयद जब ढेवा से अब तुम लड़ो खेत में जाय ॥
इतनी सुनकर ढेवा चल दिया अपनी फौजें सङ्ग लिवाय ॥
जाते ही वार किया जोगी पर उसने पत्थर दिया बनाय ॥
ऐसे ढेवा खड़ा खेत में जैसे काल बुद रह जाय ॥
लशकर भाग गया ढेवा का और कम्पू में पहुँचा जाय ॥
जाय दुहाई दई डेरों में बैठे जहां बनाफल राय ॥
जुलम गुजार दिये जोगी ने खेत में जादू छोड़ा जाय ॥

मानस हो तो लड़े सामने पर जादूसे नहीं बसाय ॥
पत्थर कर दिया है देवा को हाथी पत्थर दिया बनाय ॥
इतनी सुनकर अब ज्वानों से जागन उठा तमाड़ा खाय ॥
रनके कपड़ों को पहना और पांचों लिए हथियार लगाय ॥

जागन का गनपत के मुकाबले जाना जोगी का जागन को पत्थर बना देना

मैं देखूंगा उस जोगी को उसका खटका देऊं मिटाय ॥
पकड़ बकसुआ चतरङ्गी का और चढ़ गया जगन्सी राय ॥
बैठे रहियो तुम डेरों में तुमको कौन पड़ी परवाय ॥
मारा चाबुक जब घोड़ी के वह अम्बर में पहुँची जाय ॥
काले बादल की लाली में जैसे बाज रहा मण्डलाय ॥
कूदा कन्हैया काली दह में जिस दिन नथा नागको जाय ॥
ऐसे ही जागन अब कूदा है और हाथी पर पहुँचा जाय ॥
पहले ही सोच लिया जागन ने उसके दिलमें गई समाय ॥
जाते ही मारो तुम जोगी को उसका खटका देओ मिटाय ॥
लई सरोही मानाशाही और पन्जे में लई दबाय ॥
आया बराबर जब हौदे के वोह जोगी पर दई झुकाय ॥
कब्जा टूट गया पन्जेमें और वोह पड़ा धरन पर जाय ॥
खाली वार पड़ा जागन का वह घोड़े पर रपटी जाय ॥
पढ़ कर सरसों फिर जोगी ने जागन पर दी मूठ चलाय ॥
नीचे घोड़ा ऊपर जागन दोनों पत्थर दिये बनाय ॥
जोड़ी छूटी हलकारे की जहां पर पड़े बनाफल राय ॥

हाथ जोड़ हलकारा बोला और ताला से कहा सुनाय ॥
क्या बैठे हो सुख नींदों में पत्थर बना जगन्सी राय ॥
जब यह बात सुनी आल्हा ने रोने लगा बनाफल राय ॥
मलखे मलखे को ललकारा मैं भइया का लेऊं बलाय ॥
अब तुम भाग चलो जल्दी से लशकर कादो कूंच कराय ॥
मैं मरवाया अब डोले से मुझको वह भावती नाय ॥
ऐसी बहू मुझेना चहिये दूहरे लूंगा ब्याह कराय ॥
ब्याह नहीं ये काल निशानी यहां पर जान बचेगी नाय ॥
इतनी बात सुनी ब्रह्मा ने जब आल्हा से कहा सुनाय ॥
बैठे रहियो तुम डेरों में तुमको कौन पड़ी परवाय ॥
मैं देखूंगा उस जोगी को जिस र हैं जादू की मार ॥
कोई घड़ी के अब अरसे में उसका लाऊं शीश उतार ॥

ब्रह्माजीत का मुकाबले को जाना जोगी झिलमिला का ब्रह्मा व तमाम फौजों को पत्थर बना देना

पहना जांघिया अब ब्रह्मा ने ऊपर से लंगर लिया चढ़ाय ॥
बख्तर पहना काशमीर का लोहा असर करे है नाय ॥
कूद बछेरे पर चढ़ बैठा और आगे को दिया बढ़ाय ॥
कोई घड़ी के अब अरसे वह जोगी पर पहुँचा जाय ॥
ब्रह्मा देखे चारों तरफ को ऊन्चे ऊन्चे कर रहा ख्याल ॥
हाथ देख रहा तलवारों का बेटा चन्द्रवन्श का लाल ॥

कूद बछेरे से नीचे हुआ और हाथी पर पहुँचा जाय ॥
फिर ललकारा है गनपत को तुमको शरम आवती नाय ॥
अब तू भूल गया ब्रह्मा को जोगी लाया सङ्ग लिवाय ॥
कल तो भागा मेरे आगे से पीछा फिरके देखा नाय ॥
कुवां और खत्ती तुमको नारही क्योंना मरा डूबकरजाय ॥
तुझसा बेहया नहीं दूसरा जो फिर डटा सामने धाय ॥
अबके जिन्दा ना छोड़ूंगा चाहे मूंड मार मर जाय ॥
जैसे तोता आम को कतरे छोटे मोटे को खा जाय ॥
ऐसे ब्रह्मा अब झपटा है और हाथी पर पहुँचा जाय ॥
सूंड पकड़ कर अब हाथी की और पंजे में लई दबाय ॥
ऐसा घुमाया है हाथी को जैसे मुगदर रहा घुमाय ॥
मारा घुमा कर ब्रह्मा ने हाथी पड़ा खेत में जाय ॥
एक तरफको जोगी गिरगया एक तरफ गनपतलुढ़काजाय ॥
होश बिगड़ गये हैं दोनों के मुंह का थूक बन्द हो जाय ॥
देखने में तो लौंडे दीखे दाने बनें खेत में आय ॥
लोट पोट कर फिर जोगी ने अपना बटुवा लिया उठाय ॥
पढ़ पढ़ सरसों को मारा है और ब्रह्मा को दिया झुकाय ॥
पत्थर सरोही जब गनपत ने नंगी ली तलवार उठाय ॥
लई सरोही जब गनपत ने नंगी ली तलवार उठाय ॥
अब सर काटूं मैं दुशमन का इसका खटका देऊं मिटाय ॥
बोला जोगी जब ललकारा दुशमन खबरदार हो जाय ॥
ये मत जाने अपने दिल में अब मरे गये बनाफल राय ॥
बड़े जलइयों के चेले हैं जिसको लिया है गुरू बनाय ॥
वह लाख कोस परना रहताहैं जो उसे खबर मिलगीनाय ॥

जिस दिन खबर मिले अमरा को वह बिन आये रहे न जाय ॥
वन्श न छोड़े हरनन्दन का उस पर जादू बहुत सिवाय ॥
मार बंगाला नरघा कर दिया जहां पर है जादू की खान ॥
मार के जादू को अमरा ने सबका वहां कर दिया मैदान ॥
व्याह रचाया वहां ऊदल का फेरे सङ्ग लिये फिरवाय ॥
बंधी छै अन्नी सूरजमल पर तौमा गढ़ मोहबे को जाय ॥
जान से मत मारो ब्रह्मा को ये मैं तुमसे कहूं सुनाय ॥
इतनी बात सुनी जोगी की वह गनपत के गई समाय ॥
झपट के चढ़ गया वह हाथीपर और होदे में बैठा जाय ॥
बोला जोगी जब गनपतसे अब तुम सुनलो कान लगाय ॥
यों नहीं जीतो इन ज्वानों से एक एकलको खेतमें जाय ॥
हाथी हूल देओ आगे को सबका डालो खोज मिटाय ॥
हाथी बढ़ाया जब गनपत ने जहां दल पड़ा बनाफल राय ॥
दाबता आवे है लशकर को और कम्पू में हो जाय ॥
चकिया चाल पड़ी लशकर में चरचा कम्पू में हो जाय ॥
कोई क्षत्री आवे जावे और कोई न्हाने धोने जाय ॥
किसीकी रोटी कच्ची धरी हैं और कोई हांडी रहा चढ़ाय ॥
किसी का बन्टा है चूल्हे पर नीचे आग को रहा जलाय ॥
किसी का टुकड़ा रहा हाथ में और कोई टुकड़ा रहा उठाय ॥
कोई कोई ज्वान डन्ड पेले है कोई मुगदरको रहा घुमाय ॥
उत्तर खूंटों से दल दाबा जोगी पड़ा गोल में जाय ॥
पदपद सरसों चारों तरफसे जोगी फिलमिला रहा चलाय ॥
पत्थर घोड़े पत्थर हाथी पत्थर दिये सवार बनाय ॥
छोड़ रसोई क्षत्री भागे मुल्ला छोड़ हाडी को जाय ॥

जिसका मुंह जिन्धेको फिरगया अपनी भागा जान बचाय
पहरेदार पहरों पर रह गये सोते बिस्तर पर रह जाय ॥
बैठे ज्वान रहे कुरसी पर जैसे मुरत दई बनाय ॥
आल्हा इन्दल दोनों भागे पीछे पीछे मलखे जाय ॥
अपने बिराने की सुध ना है चारों तरफ़ को भागे जाय ॥
अपनी अपनी सबको पड़गई किसीकी खबर किसीको नाय
ताला सइयद रहा डेरों में पत्थर बना तलन्सी राय ॥
जो कोई निकल गया बेले से अपनी ले गया जान बचाय
मानस जाया वहां ना दीखे सब पत्थर के पड़ें दिखाय ॥
जैसे अरहर को पाला मारे पत्ते गिरें धरन पर जाय ॥
यह गत करदी है जोगी ने सबको पत्थर दिया बनाय ॥
तीस कोस तक आल्हा भागा और पर्वतमें दुबका जाय ॥
यहां मरजावें पत्थर बनकर कोई यहां लाथ उठावे नाय ॥
जो मर जाते रनखेतों में रहता कोई परेखा नाय ॥
कहां तो जन्मे कहां पैदा हुए और कहां लाई मौतउठाय ॥
जिन्दे ना लौटें मोहबे को मरे की खबर कोई ले जाय ॥
याद कर कर आल्हा रोवे ज्यों बच्चे को रोवे गाय ॥
मैंने बरजा था मलखे को मतना बलख बुखारे जाय ॥
एक ना मानी बात हमारी सब कुनबे को दिया खपाय ॥
इकले ऊदल के मरने से यह गत हुई हमारी आय ॥
आज के दिन जो ऊदल होता दुशमनका देता मान घटाय
रसबेदुल के आओ चढ़इया इन्दल का दो ब्याह कराय ॥
फटजा फटजा बैरन धरती जो मैं तुझमें जाऊं समाय ॥
अब भी भाग चलो मोहबेको मैं मलखे का लेऊं बलाय ॥

लौट के जबाव दिया मलखेने दादा सुनलो कान लगाय ॥
ना डर लगे तुझे ठट्टे का और फजियत से डरता नाय ॥
चार विलायत में जाने हैं नामी जात बनाफल राय ॥
जो क्वारी मांग छुटे मोहबे की मुंह पर नाक रहेगी नाय
देश देश में हो बदनामी तुमको शरम आवती नाय ॥
बोली यारे दिल्ली वाला जिसका नाम पिथौरा राय ॥
क्यों ना व्याह करा इन्दल का राजा हरनन्द के दरवार ॥
तुझे मिलादूं जो ऊदल से फिर तो तू मरने का नाय ॥
इतनी बात सुनी आल्हा ने जब मलखे से कहा सुनाय ॥
राज सौंप दूं इस पुरवे का तुझे गद्दी पर देऊं बिठाय ॥

आल्हा और ऊदल का मिलाप

जब ये बात सुनी आल्हा की मलखे बहुत खुशी होजाय ॥
आगे आगे मलखे हो लिया पीछे चला बनाफल राय ॥
सबके पीछे चला इन्दलसी फूला अङ्ग में नहीं समाय ॥
कोई घड़ी के अब अरसे में दाखिल हुआ लकोडल जाय
जहां पर फौज छिपी लाखनकी जब ये वहां पर पहुँचेजाय
दूर से देख लिया लाखन ने आल्हा मलखे पहुँचे आय ॥
देखकर आल्हा को लाखन ने जब ऊदल से कहा सुनाय
आल्हा आवे है डेरे में जिसकी जात बनाफल राय ॥
साथ में उनके नर मलखे है उनके पीछे इन्दलसी राय ॥
अब तुम उठ करके जल्दी से उसकी करो खुशामद जाय ॥
ना कोई हाथी ना कोई घोड़ा ना कोई सङ्गमें शुतरसवार
तुमको अगवां वह ख्सके है कहीं दुशमन से मानी हार ॥

दूर से देखा जब आल्हा को वहांसे भगा उदयचन्द राय ॥
पल्ला पकड़ लिया लाखन ने और ऊदल से कहा सुनाय
तुम्हें मुनासिब ना अब ऐसा जोतुम भाभो मुंह दुबकाय ॥
इस पर जबाब दिया ऊदल ने मितर सुनो कनौजी राय ॥
जो कुछ हालत करी हमारी अब तुम सुनलो कान लगाय
मिसल पुरानी नर ऊदलने अब लाखन को दई सुनाय ॥
करी ना नेकी है आल्हा ने मितर कोई हमारे साथ ॥
जो कुछ बीती सङ्ग हमारे तुमसे कहूं धरम की बात ॥
सारा हाल कहने से मितर मेरा फटा कलेजा जाय ॥
जैसा किया हमारे सङ्ग में ऐसा हुआ जगत में नाय ॥
ना मुंह देखूंगा आल्हा का अपना उसे दिखाऊं नाय ॥
इस पर जबाब दिया लाखन ने मितर सुनलो कान लगाय
कब से ऊदल मनबढ़ हो गया कब से बांध लई तलवार ॥
एक दिन बन्ध गये गढ़ मांडों में राजा माईपाल के द्वार ॥
हाथ हथकड़ी पांव में बेड़ी गले में तौक दिया डलवाय ॥
अजगर शिला धरी छाती पर जिससे उठा न बैठा जाय ॥
उस दिन ऊदल कहां गये थे तुमको शरम आवती नाय ॥
भला हुजियो रे आल्हा का तुझे वहां से लाये छुड़ाय ॥
विपत हमारी में कूदा था और असने में करी सहाय ॥
जहां भी काम पड़ा आल्हा से उसने उजर किया कुछनाय
तेरे कारन नटवा बन गया आल्हा मण्डलीक बलवान ॥
ताला सहयद ताल बजावे और मरचंग लवल चौहान ॥
बजे खंजरी थी देवा की और खड़ताल कनौजी राय ॥
बीन बजाई नर इन्दल ने राग छतीसों दिये उड़ाय ॥

बजी हथेली वहां आल्हा की हाथ ताल की रहा बजाय ॥
दे दे भूमर सियानन्द नाचा जैसे मोर कला खा जाय ॥
लम्बे बांस को गाड़ चौकमें मलखे करी कला वहां जाय ॥
इन्धे झौंक पड़ी भौंरे तक जिसमें पड़ा उदयचन्द राय ॥
उन्धे झौंक पड़ी महलों में शीश महल तक देखा जाय ॥
इकले ऊदल के जिवड़े पर कुनबा जात कुजात हो जाय ॥
दिन दिनमें तो किया तमाशा घर घर दई सोहनी डाल ॥
आधी रातका जब अरसा हुआ तुझे भौंरे से लाये निकाल
फटी पपीहो जब दिन निकला बांदोंमें दिया धुन्द मचाय ॥
मार के बांदों नरघा करदी तेरा लाये ब्याह कराय ॥
विपत तुम्हारी में वह कूदा तुझे कैद से लिया छुड़ाय ॥
आज विपत आल्हा पर पड़ रही और तू जाये पीठदिखाय
उसकी नेकियों को तू भूला निगुंन हुआ बनाफल राय ॥
हिम्मत बांधी अब आल्हाकी उसकी करी खुशामद जाय ॥
जब यह बात सुनी ऊदल ने उसके दिल में गई समाय ॥
इकमें मितर झूंठ नहीं है तुमने ठीक कहा समझाय ॥
ऊदल लौटा अब पीछे को और आल्हा पर पहुँचा जाय ॥
सात कदम से करी कोरनिश आगे जाकर शीश नवाय ॥
पांव पकड़ लिए हैं आल्हाके और चरनों में लोटा जाय ॥
भरली कौली जब आल्हा ने और छाती से लिया लगाय

लक्ष्मण के शक्ति लगने का बयान

शक्ति बाण लगा लक्ष्मणके जिसकी लोथ पड़ी बिलखाय
हाय हाय करके रघुवर रोवे जैसे कुंज रही डकराय ॥

मैंने मना किया अयोध्यामें और लक्ष्मणको दिया समझाय
एक ना मानी बात हमारी किस्मत कहां पर फूटी आय ॥
क्या मुंह लेकर जाऊं अयोध्या में क्या माता से कहूं सुनाय
माता सुमित्रा जब पूछेगी कहां लक्षमण को आये गंवाय ॥
तिरिया कारन भइया जूझा लक्षमण पड़ा जमीं पर जाय ॥
कोई मनीषी ना लशकर में जो लक्षमण को देय जिलाय ॥
रात ही रात सरजीवन लावे तो लक्षमण के बचें पिरान ॥
फटे पपीड़ी जब दिन निकले फिर नहीं उसके बचें पिरान ॥
इतनी सुनकर अब रघुवर से हनुमत उठा फरेरा खाय ॥
आज्ञा लेकर रामचन्द्र की हनुमत सरजीवन को जाय ॥
पहली गरजों के घावे में और वह मिला पवन में जाय ॥
जब आता देखा रथ सूरज का हनुमत झुका बराबर जाय
उसको दहशत थी रावण की सूरज चला बराबर जाय ॥
हनुमान बोले सूरज से अब तुम रथ को लो ठहराय ॥
कहलावत भेजी रामचन्द्र ने अब तुम सुनलो कान लगाय ॥
रथ को थाम लिया सूरज ने हनुमान से कहा सुनाय ॥
जो कुछ कहना कहो जल्दी से हमको देर लगाओ नाय ॥
कर आधीनी जब हनुमत ने और सूरज से कहा सुनाय ॥
विपता पड़रही है रघुवर पर अब तुम उनकी करो सहाय ॥
सुनकर बातें हनुमान की सूरज भरा रोस में जाय ॥
शीश झुका दिया हनुमान ने सूरज चला तेजी से जाय ॥
जब यह देखा हनुमान ने गुस्सा भरा बदन में जाय ॥
पकड़ के गरदन अब सूरज की और कल्ले में लिया दबाय
बैठे रहो तुम मुंह के अन्दर अब मैं तुमसे कहूं सुनाय ॥

उस दिन छोड़ूंगा मैं तुझको जब लछमणको लेऊं जिलाय
चल पड़ा हनुमत अब आगेको ओर जो मिला पवनमें जाय
पता बता दिया हनुमान को वैद्य ने उसको दिया जताय ॥
जलता देखो जिस बूटी को उसको जल्दी लाओ उठाय ॥
द्रोणा पर्वत पर जब पहुँचा जहां तप करे अंजनी माय ॥
माया रचदी वहां रावण ने सबको रोशन दिया कराय ॥
अब यहां फिकरहुआ हनुमतको दिलमें कर रहा सोचविचार
ना मैं वैद्य वैद्य का भइया ना बूटी की जानूं सार ॥
बार बार यहां कौन आवेगा सारी बूटी चलूं लिवाय ॥
फटे पपीड़ी जब दिन निकले लछमण जती बचेगा नाय ॥
जब धर झपटा हनुमान ने जड़ से पर्वत दिया हिलाय ॥
बोली अंजनी पर्वत में से दुशमन तेरा बुरा हो जाय ॥
कौन बली अब तू पैदा हुआ आधी रात सताया आय ॥
ऐसा श्रापूंगी पर्वत में तेरी जान बचेगी नाय ॥
हाथ जोड़कर हनुमत बोला अबतुम सुनलो कान लगाय ॥
सीता ले गया रामचन्द्र की रावण लंका का सरदार ॥
जिसके कारण राम और लछमण गढ़ लंका में पहुँचे आय
पहली लड़ाई हुई लछमण से जिसका हाल कहा ना जाय
शक्ति बाण लगा लछमणके इस पर्वत का दिया निशान ॥
मुझको भेजा सञ्जीवन को मेरा नाम वीर हनुमान ॥
इतनी सुनकर अंजनी बोली और हनुमतसे कहा ललकार
लानत लानत रामचन्द्र को तेरे जीने को धिक्कार ॥
नाहक इतना लशकर जोड़ा और क्यों चढ़े लंकपर जाय ॥
क्यों ना इतना बल तुझमें था जो ना लाया लंक उठाय ॥

इतनी सुनकर हनुमत बोला और चरनों में लोटा जाय ॥
जिस दिन जन्मा तेरी कोख से तूने दूध पिलाया नाय ॥
इस पर जबाव दिया अंजनी ने बेटा मेरे वीर हनुमान ॥
अब मुंह खोलो तुम जल्दी से मुंह पर दूध पड़ेगा आन ॥
यह मन मानी जब हनुमतके अपने मुंह को दिया पसार ॥
दूधी मसकी जब अंजनी ने सीधी चली दूध की धार ॥
फोड़ के पत्थर अब पर्वत से मुंह के अन्दर गई समाय ॥
जब से दूध पिया अंजनी का इसका बल दूना हो जाय ॥
नौ योजन ऊपर को उछला छत्तीस कोस स्वर्ग तक जाय ॥
उलट के लौटा फिर पर्वत पर रामचन्द्र का ध्यान लगाय ॥
एक हाथ में पर्वत लेलिया एक में गदा को लिया उठाय ॥
सुमरन करके रामचन्द्र का वहां से कूच दिया करवाय ॥
छोटी छोटी बूंटी जलती जावें बड़े बड़े पेड़ रहे लहराय ॥
रात अन्धेरी आसमान में उनका चांदना होता जाय ॥
आधी रातका जब अरसा हुआ वह अयोध्या में पहुँचाजाय
जहां पर भरत तपस्या कर रहे दाखिलहुए वहां पर जाय ॥
भरत की नजर पड़ी ऊपर को जब अम्बर में देखा जाय ॥
यह कोई दाना है लंका का जो पर्वत को रहा उठाय ॥
जो यह डाले राम के दल पर जिन्दा एक बचेगा नाय ॥
धनुष बांण जब लिया भरत ने दोनों हाथ में लिया उठाय
खैंच के मारा भरत न्याऊ ने हनुमत गिरा धरन हर जाय ॥
राम राम जब मुंहसे निकला भरतजी गये सनाका खाय ॥
ये तो सनीपी कोई अपना है राम से ध्यान को रहा लगाय
चले भरत जी सब जल्दी से और हनुमत पर पहुँचे जाय ॥

किसका बालक कहां से आया अपना नाम देओ बतलाय ॥
किसके कामको यहां पर आया किसका काम संवारे जाय ॥
इतनी सुनकर हनुमत बोला अब तुम सुनो भरत सरदार ॥
बेटा हूं मैं शिव शंकर का और अंजनी का राजकुमार ॥
पायक हूं मैं रामचन्द्र का हनुमत मेरा नाम कहाय ॥
जो कुछ गुजरा हनुमान पर सारा भरत को दिया सुनाय ॥
फटे पपीहा जब दिन निकले लछमण जती बचेगा नाय ॥
तुमने मुझको लंगड़ा करदिया अब वहांतक पहुँचा ना जाय
धनुष बाण जब लिया भरत ने और हनुमत से कहा सुनाय
अब तुम बैठो मेरे बाण पर अभी लंका में दूं पहुँचाय ॥
इतनी सुनकर हनुमत जलगया अपने तन को लिया बढ़ाय
झपट के बैठा धनुष बाण पर सुरखी रही बदन पर छाय ॥
झटका दे रहा धनुष बाणको जो झटके से लचकता नाय ॥
इस पर जवाब दिया भरत ने हनुमत खबरदार हो जाय ॥
हल्का दीखे धनुष बाण पर मत कहीं पड़े दूर में जाय ॥
मान घटाया भरत ऋषि ने हनुमत का दिया मान घटाय ॥
शीश नवाकर भरत ऋषि को कहने लगा वीर हनुमान ॥
जिकर सुना था रामचन्द्र से जोधा भरत बड़ा बलवान ॥
जैसे सुना था उससे ज्यादा मैंने तुमको पाया आय ॥
आज्ञा दे दो अब हनुमत को आप ही लंका पहुँचूं जाय ॥
दे दी आया भरत ऋषि ने हनुमत मिला पवन में जाय ॥
कोई घड़ी के अब अरसे में अपने लशकर पहुँचा जाय ॥
सामने पर्वत रख बूटी का रघुवर को दिया शीश झुकाय ॥
लेकर बूटी रामचन्द्र ने और लछमण को दई पिलाय ॥

बैठे चैन करो डेरों में तुमको कौन यहाँ परवाय ॥
सिया भरोसे रामचन्द्र के राम भरोसे अंजनी कुवार ॥
मेरे भरोसे चन्देले ने अपने खोल धरे हथियार ॥
बोला मलखे जब ललकारा मैं ऊदल का लेऊं बलाय ॥
गरभ की बातों को मत बोलो गरभ किसीका रहता नाय ॥
मानस हो तो लड़े सामने पर जादू से नहीं बसाय ॥
जोगी मिरा मिला लड़े सामने जिसपर जादू बहुत सिवाय ॥
बिना गुरु के तुम नहीं जीतो चाहे मूंड मार मर जाय ॥
चार दिनों तक तुम दुबके रहो अपना भेद बताओ नाय ॥
अब मैं जाता हूं बनखन्डको गुरु अमराको लाऊं बुलाय ॥
यह मन मानी जब ऊदल के और हिरदेमें गई समाय ॥
बोला ऊदल जब मलखे से मैं भइया का लेऊं बलाय ॥
अभी चलेजाओ तुम बनखन्डको इसमें देर लगाओ नाय ॥

मलखान का गुरुअमरा के पास व उसको अपने साथ लाना

इतनी सुनकर नर मलखेने अपना घोड़ा लिया मंगाय ॥
पकड़ बजसुआ गाजी मनसुखका उसपर मलखे बैठा जाय ॥
मारा चाबुक जब घोड़े के वह अम्बर में पहुँचा जाय ॥
काले बादल की लाली में जैसे बाज रहा मण्डलाय ॥
पहले बन को पीछे छोड़ा दूसरे बन को लिया दबाय ॥
तीसरे बनमें जब जा पहुँचा दाखिल हुआ गुरु पर आय ॥

बारह टुकड़ी के परवत पर बैठा तपे अमर गुरुग्वाल ॥
उतर के घोड़े से वहां पहुँचा बेटा बच्छराज का लाल ॥
हाथ जोड़कर दी परकम्मा और चरनों में लोटा जाय ॥
एक टांग से खड़ा अगाड़ी गुरू अमरा का ध्यान लगाय ॥
एकदिन होगया दोदिन होगये जबदिन बीतगये दो चार ॥
पलक खोल के गुरू अमरा ने नर मलखे से कहा सुनाय ॥
क्या गत बीती गढ़ सिरसे में मोहबे का दो हाल बताय ॥
कैसे आये मेरी धूनी पर ओ रनजीत बनाफल राय ॥
हाथ जोड़ कर मलखे बोला मैं गुरुवा का लेऊं बलाय ॥
वक्त बनाफल पर गालिब है अब तुम उसकी करो सहाय ॥
ब्याह उठा है नर इन्दल का बलख बुखारे गई बरात ॥
गनपत जोधा हरनन्दन का उससे लड़े दिना और रात ॥
जुलम गुजार दिये जोगीने जिस पर विद्या बहुत सिवाय ॥
पत्थर घोड़ा पत्थर हाथी पत्थर सबको दिया बनाय ॥
तेग लड़ाई से नहीं हारे चाहे रोज चले तलवार ॥
पर जादू नहीं हमारे बसका जिसने डाले जुलम गुजार ॥
जो कोई लड़ने गया खेत में उस पर जादू दिया चलाय ॥
सारे घिर गये बलख बुखारे अबतुम चलकर करो सहाय ॥
इतनी सुनकर गुरू अमरा ने नर मलखे से कहा सुनाय ॥
नौकर ना हूं मैं मोहबे का ना जागीरे दी बतलाय ॥
बारह महीने सदा तुम्हारा झगड़ा राड़ मिटे है नाय ॥
होनी आ गई गढ़ मोहबे की अब ना बचे बनाफल राय ॥
मेरे भरोसे मतना रहियो अपनी कर मरियो तलवार ॥
मैं ना जाऊं बलख बुखारे चाहे लाख धरो औतार ॥

हाथ जोड़ कर मलखे बोला मैं गुरुवा का लेऊं बचाय ॥
ऐसी बानी को मत बोलो तुमको जेवा देता नाय ॥
पड़ी मुसीबत रामचन्द्र पर बन में किया बसेरा जाय ॥
वक्त पड़ा जब हरिश्चन्द्र पर पानी भरा नीच के जाय ॥
विपता पड़गई राजा नल पर जिसका कहाजाय नाहाल ॥
बुरे वक्त पर दुरयोधन ने सब पन्डों को दिया निकाल ॥
ऐसी मुसीबत पड़े हैं सब पर संकट सदा रहेगा नाय ॥
समय चला जा वक्त बदा रह बातही कहनेको रहजाय ॥
बोला अमरा जब ललकारा मलखे सुनल्यो कान लगाय ॥
मैं भर पाया तुम चेलों से सोतो राड़ जगाओ जाय ॥
इकले कुनबे के घिरने से भागा फिरै बनाफल राय ॥
नहीं सनीपी कोई अमरा का पीछे कुटी संवारे आय ॥
बहुत सा समझाया मलखे ने गुरुवा एक मानता नाय ॥
एक ना मानी जब अमरा ने मलखे काल बरन होजाय ॥
काढ़ भगोती नर मलखे ने गुरू अमरापर दई जमाय ॥
पीछे जाऊं बलख बुखारे तेरा खटका देऊं मिटाय ॥
ना तू राम राम का भइया दूसरा काम हमारा नाय ॥
तूने जाना अपने दिल में मुझ बिन काम चलगा नाय ॥
जो कुछ मरजी है मालिक की उसमें घट बढ़ कुछ नाय ॥
पहले मुक्ति कर गुरुवा की पाछे मरै बनाफल राय ॥
इतनी सुनकर नर मलखे से अमरा सहस दम्म पड़ जाय ॥
कोली भरली है मलखे की और छाती से लिया लगाय ॥
क्यों घबरावे सिरसे वाले बेटा बच्छराज के लाल ॥
जो जा काम पड़े चेलों का सब घड़ियों में देऊं संभाल ॥

करी इतयारी गुरु अमरा ने सारी विद्या हुई तइयार ॥
ज्ञान गुदड़िया को ओढ़ा है जिसमें छिपी ढाल तलवार ॥
बीन मुन्दरिया ली अमरा ने माला हाथ में लई उठाय ॥
बटुआ ले लिया है जादू का सोटा हाथ में लिया दबाय ॥
उड़न खड़ाऊं पर चढ़ बैठा निरंकार का ध्यान लगाय ॥
सारी विद्या को सङ्ग लेकर वहां से कूंच दिया करवाय ॥
बारह टुकड़ी के परवत से जब चलने का किया सामान ॥
खड़ी खड़ावें गुरु अमरा की घोड़ा उड़ा बीर मस्तान ॥
रात दिना की अब झपटों में बलख बुखारे पहुँचे जाय ॥
जहां परफौज पड़ी लाखन की दोनों झुके बराबर जाय ॥
गद्दी छोड़कर नर आल्हने और अमरा को लियाबिठाय ॥
हाथ जोड़ कर गुरु अमरा को आगे खड़ा बनाफल राय ॥
करी खुशामद जब आल्हा ने और चरनों में लोठाझाय ॥
अबके बचाले हमें दुशमन से तेरा गुन भूलेंगे नाय ॥
इस पर जवाब दिया अमरा ने बेटा सुनो बनाफल राय ॥
सूरज छिपजा जब दिन मुंदजा सारा काम सिद्धहोजाय ॥
छिप गया सूरज हुआअन्धेरा वक्त रात का पहुँचाआय ॥
बोला अमरा फिर ललकारा और आल्हासे कहा सुनाय॥
अब करो तइयारी तुम चलनेकी अपनेलोहथियार लगाय॥
ले चल मुझको रन खेतों में जहां पर पत्थर दिये बनाय ॥

गुरु अमरा का खेतों में जाना और जोगी झिलमिला का जादू कैद में

कर के सबको अच्छा कर देना

चला पढ़ा अमरा है कम्पू से मलखे ऊदल संग लिवाय ॥
उसी जगह पर तीनों पहुँचे जहां पर पड़े बनाफल राय ॥
देखी विपता जब ज्वानों पर चारों तरफ को देखा जाय ॥
ना कोईकिसीसे बोले चाले ना कोई किसीसे कहे सुनाय॥
काल बूंद से खड़े खेत में किसीका खबर किसीको नाय ॥
बीन मुन्दरिया को धर फूंका विद्या भुर्की सामने आय ॥
हुकम सुनाओ हमें जल्दी से जब विद्या ने कहा सुनाय ॥
इस पर जवाबदिया अमराने मोहम्मदा बीरसे कहासुनाय॥
जितनी विद्याजोगी झिलमिलाकी सबको कैंदलेयोकरवान॥
विद्या फैली गुरू अमरा की आगे बीर मोहम्मदा जाय ॥
सौटा घुमाकर गुरू अमरा ने और भूतों को दिया उड़ाय ॥
ध्यान लगाया निरंकारसे रटना लगी राममें दिया बचाय ॥
जिसने टटीरी के अन्डों को महाभारत में दिया बचाय ॥
लज्जा रक्खी है द्रोपदी की उसके चीर को दिया बढ़ाय ॥
भुजबल थक गये दुशासन के और खड़ी हंसेद्रोपदीनार ॥
खम्ब फाड़ हिरनाकुश मारा जब नरसिंह का धराऔतार॥
जैसे सेना राम लक्ष्मण की और सब कुशने दई भगाय॥
बोली सीता बाल्मीक से अब तुम सबको देओ जिलाय ॥
इतनी सुनकर ने करता से लिया ध्यान लगाय ॥
मारा छींटा गंगा जल का सब दल उठा फरेरा खाय ॥
ऐसे ही ध्यान अब गुरुअमराने रामचन्द्र से लिया लगाय ॥
रटना लग रही है भगवन से श्रीकृष्ण का ध्यान लगाय ॥

सुन सुन तोपों को गरजोंको हरनन्द चौक चौक रह जाय॥
जब ललकारा है गनपत को दुशमन तेरा बुरा हो जाय ॥
तू तो कहे था रन खेतों में मारे गये बनाफल राय ॥
ये किसकी तोप चली मोडे पर धुआं गया स्वर्ग में छाय ॥
इतनी सुनकर गनपत बोला और राजा से कहा सुनाय ॥
जात बनाफल कोई ना छोड़ा सबका डाला खोज मिटाय ॥
ये कोई दुशमनऔर चढ़आया उनकी मददको पहुँचाजाय ॥
तुम बैठे चैन करो गद्दी पर तुमको कौन पड़ी परवाय ॥
खेद खेद मोहबे तक मारू सबका डालु खोज मिटाय ॥
फिर ललकारा हैं गनपत ने और जोगी से कहा सुनाय ॥
किसके पहरे अब तुम देखो ये सर पड़ी तुम्हारे आय ॥
इतनी सुनकर जोगी बोला और गनपत से कहा सुनाय ॥
मैंने पहले ही मना किया था मैं खेतों में जाता नाय ॥
वह भारी जोगी के चेले हैं अमरा कहिये बुरी बलाय ॥
एक ना मानी मेरी बातों को मुझको लेगया लङ्कलिवाय ॥
जो कुछ काम मेरे बसका था वह सब मैंने दिया कराय ॥
मेरी विद्या को अब सारी अमरा ने ली कैद कराय ॥
बीर मोहम्मदा उस पर जालिम जिससे ना कुछपार बसाय॥
मेरे भरोसे मतना रहियो मेरे रही बूते की नाय ॥
जब ये बात सुनी गनपत ने हौला बैठ पेट में जाय ॥
सुरखी उड़ गई है चेहरे की जरदी गई बदन परछाय ॥
गरजा भैरों जब ललकारा और गनपत से कहा सुनाय ॥
क्यों घबरावे अपने दिल में मुंह पर रहा उदासीछाय ॥
मैं देखूंगा उन ज्वानों को जिनकी दहशत बहुत सिवाय ॥

क्या हष राज करें जोगी पर क्या यह संग करे तलवर ॥
यह तेग लड़ाई को क्या जाने इस पर हैं जादू की मार ॥
ब्राह्मण होकर जो चोरी करै विधवा होकर पान चबाय ॥
क्षत्री होकर रन से भागे सीधा पड़े नरक में जाय ॥
मरद बनाये हैं लड़ने को खटिया पड़ कर मरे बलाय ॥
खटिया पड़ कर जो मर जावे उसका मांस चील ना खाय ॥
जो मर जावे रन पर चढ़ कर सीधा स्वर्ग लोक को जाय ॥
मैंने तो जाना शूरवीर हो कायर हुए यहां पर आय ॥
जात क्षत्री दूजा बकरा दोनों कटें तेग की धार ॥
जो बेटे हैं रजपूतों के दिन और रात करें तलवार ॥
रन में जाकर डरे शूरमा वहां पर किसको ढूंढे सथा ॥
उसके साथी वहां तीन हैं हिम्मत छिया कटारी हाथ ॥
एक हाथ से दाने चाबे दूजे हाथ करे तलवार ॥
तीस बरस तक क्षत्री जीवे ज्यादा जीने को धिक्कार ॥
छोड़ भरोसा अब जोगी का अपने लो हथियार लगाय ॥
तोपें चल रही हैं दुशमन की अपना खेत बुहारो जाय ॥
सुनकर बातें भैरोंसिंह की गनपत भरा रोस में जाय ॥
उल्टी बम्ब सब सीधी करदी डन्का पड़ा बम्ब पर जाय ॥

गनपत का मुकाबले के जाना

हुकम सुनाया गनपतसिंह ने सरदारों से कहा सुनाय ॥
जितना लश्कर गनपतसिंह का सबदल कमरबन्द होजाय ॥
इतनी बात सुनी ज्वानों ने उनके दिल में गई समाय ॥
पैदल पल्टन और रिसाले सबने लिए हथियार लगाय ॥

हाथी चढ़इया चढ़े हाथी पर और घोड़ों पर चढ़ी बरदार ॥
गुम्मट बन्ध गया रजपूतों का आगे बढ़े चढ़ी बरदार ॥
करी तइयारी अब गनपत ने रन का बाना लिया सजाय ॥
हाथी सजवा कर गनपत ने उसके ऊपर बैठा जाय ॥
मारू बाजे को बजवाकर गनपत ने दिया कूच कराय ॥
कोई पड़ीके अब अरसे में दाखिल हुआ खेत में जाय ॥
हाथी बढ़ाया है गनपत ने और मौंडे पर रहा ललकार ॥
कौन चत्री है मौहवे का ओटे गनपत की तलवार ॥
नजर घूम गई जब लइयर की और झण्ड को देखा जाय ॥
जोड़ कचहरी अब ताला ने सब ज्वानोंको लिया बुलाय ॥
सात पानका बीड़ा डाला और सोनेका दिया वर्क लगाय ॥
कौन शूरमा है लशकर में अपना खेत बुहारें जाय ॥
पड़े पड़े बीड़ा बहुत देर हो गई उसके पान गये कुमलाय ॥
पड़ी न हिम्मत किसी जोधाकी जो गनपत पर पान चबाय ॥
बड़ा लड़इया यह गनपत है जिसकी दहशत बहुत सिवाय ॥
जो जो नाम सुने गनपत का चत्री जाय सनाका खाय ॥
कोई कुरेदे है धरती को कोई अम्बर को देखे जाय ॥
जिसकी तरफ को आल्हा देखे चत्री गरदन लेय झुकाय ॥
जितने चत्री वहां पर बैठे सब आपस में रहे बतलाय ॥
ये तो मर रहे राज के कारण इन्दल कालें व्याह कराय ॥
हम क्यों मरें बिरानी खातिर अपना मूंड कटावें जाय ॥
चोटी पकड़ी है बानी ने सर पर मौत पुकारी आय ॥
काल के मौंडे पर आ पहुँचे यहां पर जान बचेगी नाय ॥
मानस हो तो लड़ें सामने पर जादू से नहीं बसाय ॥

यह गत करदी है ज्वानों की सबको पत्थर दिया बनाय ॥
अबभी दहशत यह गालिब है ना कहीं जादू देय चलाय ॥
जिनके नौकर यह गत करदें राजा कहिये कौन बलाय ॥
हमको दहशत गनपतसिंह की फिर ना पत्थर देय बनाय ॥
भारी राजा हरनन्दन है नहीं कोई है डूम और भांड ॥
नहीं ब्याह यह होवे सहज में लाखों होंय सुहागन रांड ॥
बोला आल्हा जब ताला से मैं चाबा का लेऊं बलाय ॥
अंश निकल गये सब ज्वानोंके कोई रजपूत रहा है नाय॥
इकले गनपत की दहशत से बीड़ा किसी ने चाबा नाय ॥
कूच बोलदो तुम लशकरका अब तक कुछ बिगड़ा है नाय॥
बोला मलखे जब ललकारा और ज्वानों से कहा सुनाय ॥
मैंने तो जाना शूरवीर हो कायर हुए यहां पर आय ॥
इकले गनपत के मौंडे पर सब ज्वानों ने मानी हार ॥
पड़े पड़े बीड़ा दो पहर हो गये सबकी डूब गई तलवार ॥
इतनी सुनकर कालनेम के बोली गई कलेजा खाय ॥
झपट के उट्ठा वह कुरसी से और बीड़े को गया चबाय ॥
बैठे रहियो तुम डेरों में तुमको कौन पड़ी परवाय ॥
मैं देखूंगा उस गनपतको जिसकी दहशत बहुत सिवाय ॥

कालनेम दक्खन के राजा का गनपतसिंह के मुकाबले को जाना

पांचों कपड़ों को पहना है पांचों लिये हथियार लगाय ॥
हुकम सुनाया कालनेम ने अपना लशकर लिया सजाय ॥

हाथी चढ़इया चढ़े हाथी पर और घोड़ों पर चढ़े सवार ॥
पैदल पलटन और रिसाले सारे सजगये शुतर सवार ॥
लगी नशीनी जब हाथी पर कालनेम हो गया सवार ॥
पैदल से तो पैदल मिल गये ऊपर बाघ थाम असवार ॥
चल दिया राजा दक्खन वाला और खेतोंमें पहुंचा जाय ॥
जहां पर मौंड़ा था गनपत का राजा डटा सामने जाय ॥
कालनेम बोला गनपत से क्षत्री सुनलो कान लगाय ॥
धाके न रहियो उन ज्वानों के तुझे से देऊं बताय ॥
जो तुम लड़ाई लड़ो लोहे की मेरे डटो सामने आय ॥
जो तुम्हें भरोसा है जादू का अपना जादू लेओ चलाय ॥
तुम्हें इजाजत दी दोनों की दिल का लो अरमान मिटाय ॥
इतनी सुन कर गनपत बोला कालनेम से कहा सुनाय ॥
धुरा ना दावा तेरी दक्खन का तुमसे कोई लड़ाई नाय ॥
जात बनाफल के कहने से जो मरने को पहुँचे आय ॥
इतनी सुनकर कालनेम ने जब गनपत से कहा सुनाय ॥
ऐसी बातों को मत बोलो तुमको जेबा देता नाय ॥
लगें थे भाई कैरों पण्डा जिनको जाने था संसार ॥
हुई लड़ाई कुरुक्षेत्र में दिन और रात चली तलवार ॥
प्यार मौहब्बत को माना सब आपस में मरे ज्वान ॥
बहुत से राजा मरे ऊपरी जो जो वहां पर पहुँचे आय ॥
यह गत हो रही वहां खेतों में जो कैरों पर बीती जाय ॥
नमक बनाफल का जो खाया वह काया में गया समाय ॥
नमक हरामी करे जो कोई उसकी कुली नरक में जाय ॥
अब हम संगमें उनके आये जिनकी जात बनाफल राय ॥

हमें मुनासिब नहीं ऐसा है जो हम जाये पीठ दिखाय ॥
तुम तो नौकरहो हरनन्दन के उनकी बातको रहे बनाय ॥
हम तो उनकी फतह को चाहें जिनके संग में पहुँचे आय ॥
यह तो बाना रजपूती का हम मरने से डरते नाय ॥
बात बात में झगड़ा हो गया और बातों में हुई तकरार ॥
बात बात में अब दोनों की चलने लगी वहां तलवार ॥
उठा कमान को लिया गनपत ने दोनों हाथ में लई दबाय॥
जब धर दाबा है गोशे को गोशा से गोशा मिल जाय ॥
खेंच कमानको नरघा कर लिया रौंदा पड़ा कानपर जाय ॥
तीर दुक्खयी को धर दाबा कालनेम पर दिया चलाय ॥
निगाह चूक गई कालमेम की गाफिल दुशमन से होजाय ॥
बांबी पसली में बैठा है गोली गई बदन को खाय ॥
झपट के पट्टी को बांधा है और इगलिशको लिया चढ़ाय ॥
सम्भल के बैठा है हौदे में सांग को अपनी लिया उठाय ॥
सांग घुमाई कालमेम ने जिसका वार न खाली जाय ॥
मारी घुमाकर दोनों हाथ से और गनपत पर दई झुकाय ॥
पहले मारा पीलवान को पीछे मारा कुलफ बरदार ॥
इतने गनपत अब सम्भले था इतने ही सूंत लई तलवार ॥
मारी घुमाकर दोनों हाथ से और गनपत पर दई चलाय ॥
आधी ढाल कटी गनपत की आधी पन्जे में रह जाय ॥
सात पेच चीरे के कट गये जो मर माथे में घुस जाय ॥
देख लड़ाई कालनेम की गनपत बहुत गया घबराय ॥
किया इशारा सरदारों को अब तुम लशकर देओ बढ़ाय ॥
पहला हल्ला गनपतसिंह का एक ही सङ्ग पड़ा अहराय ॥

फौज उखड़ गई कालनेम की साठ कदम पीछे हट जाय ॥
मार मार कर अब गनपत ने सब फौजों को दिया हटाय ॥
एकतरफ फौजलड़े गनपतकी एकतरफ गनपतरहाललकार ॥
भागता देखा जब लशकर को बोला कालनेम सरदार ॥
मैंने तो जाना शूरवीर हो कायर हुए यहां पर आव ॥
आगे से हाथी पीछे फेरा और लशकर में पहुँचा जाय ॥
नदी नरबदा का जल गरजे और गंगा की गरजे धार ॥
कालनेम की अब गरजों में चत्री छोड़ भगे तलवार ॥
दाबी फौजें अब गनपत की एक मील तक दई हटाय ॥
बोला गनपत जब ललकारा और ज्वानों से कहा सुनाय ॥
छोड़ आसरा जिन्दगानी का अब लड़ मरो खेत में जाय ॥
दे दे पानी गनपतसिंह ने फिर ज्वानों को दिया बढ़ाय ॥
छोड़ आसरा जिन्दगानी का सारे ज्वान पड़े अड़राय ॥
धुन्दूकाल मचा खेतों में गरदा आसमान को जाय ॥
यह गत होगई रनखेतों में दिन का रात पड़े दिखलाय ॥
अपने पराये की सुध ना हैं सबको मार ही मार सुहाय ॥
खून में कपड़े ऐसे होगए जैसे गेरुआ दिए रंगवाय ॥
सुम्म भीग गये हैं घोड़ों के नीचे पड़ी लोथ बिलकाय ॥
खून की नदी वहां वहने लगी बहने लगी खून की धार ॥
बहुत से चत्री मरे जान से बहुत से घायल हुए सवार ॥
बहुत से भाग गये खेतों से अपनी ले गये जान बचाय ॥
बोला अफसर अब खेतों में कालनेम से कहा सुनाय ॥
भुजबल थकगये अब ज्वानी के हमसे नहीं चले तलवार ॥
अब तुम लौट चलो पीछे को यहां पर होरही मारहीमार ॥

दिया घुमाय ॥
इतनी सुनकर कालनेम ने अपना हाथी देखा जाय ॥
हाथी हटता कालनेम का जब गनपत ने

कालनेम दक्खन के राजा का गनपतसिंह के मुकाबले से भागना

आपेमें नहीं समाय ॥
फूलके गनपत गद्गद होगया और लड़े सामने आय ॥
ऐसे ही मारो उन ज्वानों को जोकोई कड़े देऊ पहनाय ॥
जो कोई फतह करे दुशमन की कंचन पुश्त तक खाय ॥
गांव जगीरें इतनी दूंगा बैठा सात को संग लिवाय ॥
कालनेम पहुँचा कम्पू में सब लशकर हाथीको देखा जाय ॥
नजर घूमगई जब ताला की ओर रहा खून में नहाय ॥
घायल देखा कालनेम को तत्री कालनेम से कहा सुनाय ॥
बोला ताला जब ललकारा देओ बतलाय ॥
क्या घत बीती रनखेतों में हमको हाल ने कहा सुनाय ॥
इतनी सुन ताला सय्यद से कालनेम मान घटा कहीं नाय ॥
सब देशों में मैं फिर आया मेरा मरने से डरता नाय ॥
कठिन लड़ाई गनपतसिंह की जो मलखे से कहा सुनाय ॥
इतनी सुन ताला सय्यद ने फिर बराती मरें खेत में जाय ॥
दूलहा दुलहन तो ब्याह रचावें बलख बुखारे करी तलवार ॥
जाकर शेखी मोहबे मारो खोल धरे हथियार ॥
देख भरोसा अब गैरों का अपने खेत बहारो जाय ॥
किसके पहरे अब तुम देखो अपना पड़ता नगाड़ा जाय ॥
दहनी भुजा पर लाहन बैठा और

गरजा लाखन जब ललकारा और मलखे से कहा पुकार ॥
क्यों घबरावे अपने दिल में क्षत्री सिरसे के सरदार ॥
जब तक जीवे कनवज वाला तुमको कौन पड़ी परवाय ॥
मैं देखूंगा उस गनपत को जिसकी दहशत बहुत सिवाय ॥
इस पर जवाब दिया ऊदल ने लाखन सुनो हमारे यार ॥
बारह रानियों में इकलौते सोलह रानियों के सिंगार ॥
इकला बेटा रतीभान के और कोई पूत दूसरा नाय ॥
वहां ऊंच नीच हो जाय खेतों में मारा जाय कनौजीराय ॥
नील का टीका लगे तुम्हारे जीते जन्म मिटेगा नाय ॥
पड़े हंसाई सब मुल्कों में उन्घे हंसे पिथौरा राय ॥
अपने बेटे को ब्याह लाये और लाखन को आये गमाय ॥
जब तक जीवे मलखे ऊदल तुमको कौन पड़ी परवाय ॥
सुनलो मेरा जब हम दोनों को पीछे लड़ो खेत में जाय ॥
पीछे औरों को भेजेंगे पहले लड़ें बनाफल राय ॥
कालनम दक्खन का राजा जिनके बल का नहीं शुमार ॥
वह भी भागा खेत छोड़कर देखके गनपत की तलवार ॥
उम्वे जोधा हरनन्दन का इन्वे जाय उदयचन्द राय ॥
दोनों पल्ले मिले बराबर जिसको देय शारदा माय ॥

ऊदल का गनपतसिंह के मुकाबले को जाना और गनपत को मारना

करी तइयारी अब ऊदल ने दल का बाना लिया सजाय ॥
फौज लाखिया अम्बरगढ़ का ऊपर, जिनमें लिया चढ़ाय ॥

बख्तर पहना काशमीर का जो काया में गया समाय ॥
जो कुछ बाना रजपूती का अपने तन पर लिया सजाय ॥
बड़ा खिलाड़ी पटेबाज़ था जस्सराज का राजकुमार ॥
पकड़ बकछुआ रसबेंदुल का उसके ऊपर हुआ सवार ॥
फ़ौज कटीली थी ऊदल की जो मरने से हस्ती नाय ॥
अस्सी पलटनको सजवाकर अब चल पड़ा उदयचन्द राय ॥
घड़ी ना गुजरी ना पल बीता दाखिल हुआ खेत में जाय ॥
बोला ऊदल नव ललकारा और ज्वानों से कहा सुनाय ॥
चौकस रहियो तुम मौंडे पर मैं गनपत पर पहुँचूं जाय ॥
डेढ़ कोस पीछे ऊदल ने अपनी फ़ौज को दिया लगाय ॥
घोड़ा बढ़ाया नर ऊदल ने और गनपत पर पहुँचा जाय ॥
बोला ऊदल जब मौंडे पर गनपतसिंह से कहा सुनाय ॥
क्यों मरवावे है लशकर को क्यों परजा को करे हलाल ॥
क्यों कम्बख़्ती ने घर घेरा सर पर आन बिराजा काल ॥
कौए मारे हैं बगियों में बगले हने ताल पर जाय ॥
रण्डिया दुखिया को लूटा है पाला पड़ा मरद से नाय ॥
धोके न रहियो उन दोनों के जिनको तैने दिया गमाय ॥
सम्भल के बैठो अब हौदे में मेरा नाम उदयचन्द राय ॥
इतनी सुनकर गनपत बोला और ऊदल से कहा सुनाय ॥
तुम घाती राजा हो मोहबे के ओछी जात बनाफ़र राय ॥
जब सब ज्वान भगे मौंडे से दूसरा खेत तुम्हारो आय ॥
मैंने जिकर सुना मुद्दत से ऊदल सुनलो कान लगाय ॥
तुमने फतह किया मांडों को बाप का दाव लिया वहां जाय
बादशाह दिल्ली का नामी जिसका नाम पिथौरा राय ॥

ब्याह रचाया वहां ब्रह्मा का उसका डाला मान घटाय ॥
उनके धोके में मत रहियो तुझे आगे से देऊं बताय ॥
खेद खेद मौहबे तक मारूं सबका डालूं मान घटाय ॥
कड़वा पानी है मौहबे का जिन पर बात न झेली जाय ॥
लौट के जबाव दिया ऊदल ने और गनपत से कहा सुनाय
गरभ की बातोंको मत बोलो गरभ किसी का रहता नाय ॥
पूरब मारा पच्छिम मारा हमने धुर मारी गुजरात ॥
बहुत से राजों को देखा हे गनपत सुनो हमारी बात ॥
छत्रपति और मुकुटबन्द थे सबका डाला मान घटाय ॥
पटहत भइया कोई ना छोड़ा सब हलजोता दिए बनाय ॥
बन्धी छः अन्नी बावनगढ़ में पैसा सब मौहबे को जाय ॥
जान कंगला हरनन्दन को बलख बुखारा दिया बनाय ॥
हाथ बभी में तुमने डाला सोते नाग को दिया जगाय ॥
पहल की चोटें अब तुम करलो दिलका लो अरमान मिटाय
बात बात में झगड़ा हो गया और बातों में हुई तकरार ॥
बात बात में अब दोनों की वहां पर चलने लगी तलवार ॥
सांग घुमाई अब गनपत ने और ऊदल पर दई चलाय ॥
कभी घोड़े पर कभी धरती पर और कभी पेट तले हो जाय
चोट उकादी जब गनपत की ऊदल डटा सामने जाय ॥
भारी फिकर हुआ गनपत को पंजा चाब चाब रह जाय ॥
इन्हीं सांगों से गज काटे और घोड़ों को डाला मार ॥
यही सांग अब धोका देगई सिर पर आन बिराजा काल ॥
क्या तेरी माता ने शिव सुमरा क्या तेरा बाप रहा इतवार
मेरी चोट से जो तू बच गया जानो नया लिया औतार ॥

गरजा ऊदल जब ललकारा और गनपत से कहा पुकार ॥
क्या तेरा सेला कच्चे लोहेका या ना कुरमी घड़ा लुहार ॥
सांग बने है मेरे मोहबे में जिसका जाय ना खाली वार ॥
चोट दूसरी और तुम करलो दिल का मेट लेओ अरमान ॥
चौकस होजा अब मौंडे पर सर पर मौत पुकारी आय ॥
लेखा चुक गया धरमराय के कागज रहे राम के नाय ॥
धोके न रहियो उन ज्वानोंके जिनको तुमने दिया गंवाय ॥
कोई घड़ी के अब अरसे में सारा खटका देऊं मिटाय ॥
इतनी सुनकर गनपत जलगया जूं बारूद में आग लगजाय
सम्भल के बैठा अब हौदे में और भाले को लिया उठाय ॥
ले लिया भाला नागदमन का जो पसली में जाय समाय ॥
दांत बतीसों को दर दाबा और ऊदल पर दिया चलाय ॥
बड़ा खिलाड़ी पटेबाज था जिसका नाम उदयचन्द राय ॥
आप बचा घोड़े को बचाया भाला पड़ा रेत में जाय ॥
होश बिगड़ गये अब गनपतके दिल में सोच सोच रहजाय
मेरी चोट से ऊदल बच गया अब कुछ रहा ठिकाना नाय ॥
घोड़ा बढ़ाया अब ऊदल ने और हाथी से दिया मिलाय ॥
पिछली टाप रहीं धरती में दो मस्तक पर धरीं जमाय ॥
कत्ता ले लिया नर ऊदल ने जिसका वार न खाली जाय ॥
मारा घुमाकर दहने हाथ से और गनपत पर दिया झुकाय
काट छत्तरी डन्डे काटे चारों कलशे दिये गिराय ॥
रस्से कट गये जब हौदे के गनपत गिरा धरन पर जाय ॥
गिरता देखा जब गनपत को खुश हो गया उदयचन्द राय
इतने गनपत अब सम्भले था वह गनपत पर पहुँचा जाय ॥

झपट के गनपत बैठा हो गया और भुजबल पर ठोकी ताल
ऊदल ऊदल को ललकारा बेटा जस्सराज के लाल ॥
यह मत जाने अपने दिल में मैंने गनपत को डाला मार ॥
मेरी तेरी कुश्ती रनखेतों में दिलका ले अरमान निकाल ॥
तुम जितने आये हो पौहवे से सबका डालूं मान घटाय ॥
पकड़ पकड़ कर मैं एक एककी सबकी लूंगा कैद कराय ॥

ऊदल और गनपत को कुश्ती

इतनी बात सुनी ऊदल ने सुरखी गई बदन में छाय ॥
झपट के ऊदल बढ़ा अगाड़ी उधर से गनपत पहुँचा आय ॥
कुश्ती होने लगी दोनों की जिसका कहा जाय ना हाल ॥
दाव घात से दोनों लड़ रहे अपनी अपनी चोट सम्भाल ॥
एक तरफ जोधा हरनन्दनका एक तरफ धवल उदयचन्दराय
दोनों पल्ले मिले बराबर सूरमा एक से एक सिवाय ॥
गनपत दावे जब ऊदल को कई कदम पीछे ले जाय ॥
ऊदल दावे जब गनपत को बहुत दूर तक देय हटाय ॥
कभी तो ऊदल ऊपर होजा गनपत गिरे धरन पर जाय ॥
और कभी गनपत ऊपर होजा ऊदल बैठ जमीं में जाय ॥
दाव पेच से दोनों लड़ रहे अपनी अपनी घात लगाय ॥
गटपट हो रही हैं दोनों में जैसे कला कबूतर खाय ॥
लड़ते लड़ते दो पहर हो गए पहर तीसरा पहुँचा आय ॥
दोनों जोर बराबर कर रहे मानी हार किसी ने नाय ॥
बोला होड़ा जब ललकारा और ऊदल से कहा सुनाय ॥
सौ सौ हाथीका बल तुझमें अब क्यों रक्खी देर लगाय ॥

क्या तू भूल गया आल्हा को जिसके नाम फतह हो जाय
क्या तू भूला गुरू अमरा को जो असने में करे सहाय ॥
इतनी बात सुनी ऊदल ने उसके दिल में गई समाय ॥
दिलमें ध्यान किया अमरा का मनियादेवको लिया मनाय
भइया आल्हा को सुमरा है जिसके नाम फतह हो जाय ॥
सम्भला ऊदल फिर दङ्गल में बजरङ्गी का ध्यान लगाय ॥
शीश हथेली पर रख लीना रटना लगी राम से जाय ॥
छोड़ आसरा जिन्दगानी का फिर गनपत को लिपटा जाय
सुमरन करके नारायण का दहने बैठ कालका माय ॥
लंगर पकड़ लिया गनपत का और ऊपर को लिया उठाय
ऐसा घुमाया है दङ्गल में जैसे मुगदड़ रहा घुमाय ॥
दिया दबोका जब छाती का गनपत गिरा धरनमें जाय ॥
ऊदल बैठ गया छाती पर और गरदन को लिया दबाय ॥
बीचसे चीर दिया गनपत को एक धड़ के दो दिये बनाय ॥

गनपत का मारा जाना

जैसी लड़ाई जराःसिंध की उसे भीम ने डाला मार ॥
ऐसी लड़ाई हुई ऊदल की गनपत दिया जान से मार ॥
खटका भारी था गनपत का सो ऊदल ने दिया मिटाय ॥
मार के गनपत को नर ऊदल अपने कम्पू पहुँचा जाय ॥
गोल फूटगया हल्ला पड़गया सब दल तिड़ीबिड़ी होजाय
जो कुछ ज्वान बचे गनपत के अपनी ले गये जान बचाय
जहां कचहरी हरनन्दन की वहां पर दई दुहाई जाय ॥
जुलम बीत गये परलो हो गई श्रो महाराज भगेले राय ॥

बड़े लड़इया मोहबे वाले जिनकी जुल्म कठिन तलवार ॥
गनपत जूझ गया खेतों में उसे ऊदल ने डाला मार ॥
इतनी बात सुनी राजा ने धक्का लगा कलेजे जाय ॥
मारी दुहत्तड़ जब छाती में औंधा पड़ा तख्त पर जाय ॥
जुल्म बीत गये परलो हो गई कहने लगा भंगेला राय ॥
होनी आगई बलख बुखारे अब कुछ रहा ठिकाना नाय ॥
जैसा सांवत मेरा गनपत था ऐसा बावनगढ़ में नाय ॥
जो वह ले जावें डोले को मुंह पर नाक रहेगी नाय ॥
भारी सोच हुआ राजा को मुंह पर गई उदासी छाय ॥
सब सरदारों को बुलवाया सारे अफसर लिये बुलाय ॥
करा मशवरा हरनन्दन ने सरदारों से कहा सुनाय ॥
कौन जतनसे इनको जीतें अब तुम हाल देओ बतलाय ॥

भैरोंसिंह का मैदान जंग में जाना

जब यह बात सुनी भैरों से नङ्गी सूंत लई तलवार ॥
राजा राजा को ललकारा और भैरों ने कहा सुनाय ॥
ऐसी बातों को मत बोलो मेरे जामे में नहीं समाय ॥
नौकर हैं वह चन्देले के ओछी जात बनाफल राय ॥
हम नहीं देने के डोले को चाहे मूंढ मार मर जाय ॥
बैठे रहियो तुम गद्दी पर तुमको कौन पड़ी परवाय ॥
क्यों घबरावे अपने दिल में मन में सोच करो कुछ नाय ॥
इकले भैरों की झपटों में उनका खोज मिलेगा नाय ॥
क्या है मसाला उनज्वानों पर जो मेरे डटे सामने आय ॥
मुश्क बांधकर सब ज्वानों की तेरी नजर गुजारूं लाय ॥

उल्टी बम्ब सब सीधी करदीं मारू बाजा दिया बजवाय ॥
हुक्म सुनाया सरदारों को लश्कर जल्दी लेश्रो सजाय ॥
बजा नक्कारा जब लश्कर में डका पड़ा बम्ब पर जाय ॥
पैदल पलटन श्रौर रिसाले सब दल कमरबन्द हो जाय ॥
हाथी चढ़इया चढ़े हाथी पर श्रौर घोड़ों पर बढ़े सवार ॥
बड़ी बड़ी तोपों को सजवाकर सबको जल्द किया तइयार ॥
करी तइयारी अब भैरों ने रन का बाना लिया सजाय ॥
बख्तर पहना श्रष्टधातका श्रौर सब लिए हथियार लगाय ॥
हाथी सजवाकर जल्दी से मुन्हा हौदा लिया धरवाय ॥
लगी नशीनी जब हाथी पर उस पर भैरों बैठा जाय ॥
लश्कर सजगया जब भैरों का सबको श्रागे दिया बढ़ाय ॥
कूच कोल कर अब कम्पू से दाखिल हुश्रा खेत में जाय ॥
परा बांधकर सब फौजों का श्रौर चौबन्दी ली करवाय ॥
ऊंची जगह देख खेतों में तोप के मोरचे दिये लगाय ॥
गरजा भैरों जब ललकारा श्रौर मौडे पर रहा सुनाय ॥
कौन शूरमा है मोहबे का मुझसे लड़े खेत में श्राय ॥
खबर हुई जब श्राल्हा को दुशमन खेत बुहारा श्राय ॥
सब सरदारों को बुलवाया सारे अफसर लिये बुलाय ॥
बोला श्राल्हा सब ज्वानों से क्षत्री सुनलो कान लगाय ॥
कौन से जोधा की बरनी है जो भैरों पर पान चवाय ॥
बोला ऊदल जब मलखे से भइया सिरसे के सरदार ॥
बड़ा लड़इया वह भैरो है बारह पहर करे तलवार ॥
श्रौर भरोसे मतना रहियो तुम्हें श्रागे से देऊं जताय ॥
चढ़े शनीचर उस भैरों पर ऊपर लड़े कालका माय ॥

इतनी सुनके आल्हा बोला और मलखे से कहा सुनाय ॥
क्यों मरवावे है लश्कर को वहां पर जान बचेगी नाय ॥
अब भी भाग चलो मोहवेको अब तक कुछ बिगड़ा है नाय ॥
इतनी सुनके मलखे बोला और आल्हा से कहा सुनाय ॥
इकले भैरों की दहशत से अब तुम भागे पीठ दिखाय ॥
क्या वह जन्मा है दुनियांमें और कोई रहा शूरमा नाय ॥
रावण ना भागा लंका से जिस पर कोप चढ़े भगवान ॥
कैरों ना भागे पांडोंसे जिनके सङ्ग लड़े श्रीकृष्ण भगवान ॥
क्या है मसाला उस भैरों पर जो वह करे सामने आय ॥
क्या है मसाला उस भैरों पर जो वह करे सामने आय ॥॥
ना वो बानासुर राजा है ना वो परशुराम औतार ॥
ना वो बेटा है अन्जनी का ना बाली का राज कुंवार ॥
इन चारों में वो ना कोई जो हमको डालेगा मार ॥
जिस करता ने उसको जन्मा वोही हमारा करतार ॥
मालुम हो जायगा खेतों में जिसको देय शारदा माय ॥
चाहे चढ़ जाओ बावन राजा चाहे चढ़ो पिथौरा राय ॥
चाहे चढ़ आओ देश बंगाला चाहे काबुल और कन्धार ॥
जब नहीं छोड़ेंगे डोले को चाहे रोज चले तलवार ॥
दहशत नहीं मुझे मरने की मेरा नाम वीर मलखान ॥
सवा पहर तक लड़ूं कालसे जिसदिन याद करे भगवान ॥
फिर ललकारा है मलखे ने चाचा सुनो तलन्मा राय ॥
कौन शूरमा की बरनी हैं दुशमन न हटा सामने आय ॥

मकरन्द का मुकाबले के वास्ते जाना

कहा सुनाय ॥
बोला मकरन्द जब ललकारा और मलखे से परवाय ॥
बैठे रहियो तुम कम्पू में तुमको कौन पड़ी जाय ॥
जब ये बात सुनी तालाने दिलमें बहुत खुशी हो करे सहाय ॥
धरम यही हैं रजपूतों का जो असने में लगाय ॥
करो तइयारी अब जल्दी से मकरन्द सुनलो कान बलाय ॥
चौकस रहियो तुम दुशमन से भैरों कहिये बुरी समाय ॥
यह मन मान गई मकरन्द के और हिरदे में गई लगाय ॥
पांचों कपड़ों को पहना है पांचों लिये हथियार धरवाय ॥
हाथी सजगया जब मकरन्दका सुन्डा होदा लिया बुलवाय ॥
हुकम सुनाया जब मकरन्दने अफसर ज्वान लिए होजाय ॥
जितना लशकरहै मकरन्द का सब दल कमरबन्द पर जाय ॥
बजा नक्कारा जब लशकर में डंका पड़ा बम्ब दुहार ॥
गरज घोर कर मकरन्द कोपा धरती मांगे धरन सुमार॥
दल बादल सबलशकर हो गया जिसकी नहींहोसके निशान ॥
आगे आगे भण्डे वाले जिनके घूमते जांय बयान ॥
परा बांध दिया है लशकर का जिसका नहीं होसके दियाबढ़ाय ॥
कूंच बोलदिया अब मकरन्दने सब लशकरको में जाय ॥
कोई घड़ी के अब अरसे में दाखिल हुआ खेत फराय ॥
भण्डे गाड़ दिये खेतों में जिनको बजा रही लगाय ॥
भैरों वाले अब मोडे पर अपना मोरचा दिया जाय ॥
हाथी बढ़ाया अब मकरन्द ने और भैरों पर पहुँचा बलाय ॥
बोला मकरन्द जब भैरों से मैं नन्नी का लेऊं नाय ॥
राह बढ़ाने में कुछ ना है तुमको नफा मिलेगा जाय ॥
डोला दे दो तुम पैमा का सारी राह अभी मिट

इतनी सुनके भैरों बोला और मकरन्द से कहा पुकार ॥
गनपत भुलाये मतना रहियो इकला करके डाला मार ॥
एक से एक लड़ो भैरों से दिलका लो अरमान मिटाय ॥
इकले गनपत के बदले में सबको लूंगा कैद कराय ॥
बोला भैरों फिर ललकारा और क्षत्री से कहा सुनाय ॥
कौन देश का तू राजा है हमको हाल देओ बतलाय ॥
लौट के जवाब दिया मकरन्दने और भैरों से कहा सुनाय॥
बेटा हूं मैं नरपतसिंह का मकरन्द मेरा नाम कहाय ॥
किला हमारा मोहरसगढ़ है अबतुम सुनलो कान लगाय ॥
इतनी सुनके भैरोंसिंह ने फिर मकरन्द से कहा सुनाय ॥
तुम नामी राजा के लड़के तुमको शरम आवती नाय ॥
ना तुम नौकर हो मौहबे के ना जागीरें दी बतलाय ॥
किस कारन को तुम यहां आये नाहक खेत बुहारा आय ॥
दही भुलाये चूना खाजा जिससे फटे कलेजा जाय ॥
चने भुलाये मिरच चाबले सारा हलक कड़वा हो जाय ॥
धोके न रहियो तुम गनपतके तुम्हें आगे से देऊं पहुँचाय ॥
मैं डर मानूं हूं करता का नहीं जमघाट देऊं पहुँचाय ॥
भेजें लड़ने परदेशी को घर का कोई रहा क्या नाय ॥
क्यों न आप आये लड़ने को उनकी डूब गई तलवार ॥
वह मरवावे परदेशी को अपने खोल धरे हथियार ॥
लौट के जवाब दिया मकरन्द ने मैं भैरों का लेऊं बलाय ॥
अपने दिलमें यह मत जानो मेरी कोई बराबर नाय ॥
एक से एक रचा धरती पर रक्खा मान किसी का नाम ॥
जान ऊपरी हम राजों को किसी को असल समझता नाय ॥

सूंता तेगा बरदवान का जिस पर दो उज्जल की धार ॥
गुस्सा खाकरके मकरन्द ने और भैरों पर करदिया वार ॥
गद्दी काट दई मखमल की ढाल के टुकड़े दिये उड़ाय ॥
कड़ियां टूट गईं बख्तर की और पंजे में टहकी जाय ॥
देख लड़ाई मकरन्दी की भैरों गया सनाका खाय ॥
अपने जी में उसने जाना अब यहां जान बचेगी नाय ॥
बोला भैरों पीलवान से दुशमन तेरा बुरा हो जाय ॥
ऐसे हाथी को क्यों लाया जो रोके से रुकता नाय ॥
जब बोली सुनी पीलवान ने बोली गई कलेजा खाय ॥
मारा कुल्हाड़ा जब हाथी के और आगे को दिया बढ़ाय ॥
मकरन्द वाले अब हाथी पर एक ही सङ्ग पड़ा अहड़ाय ॥
हाथी उखड़ गया मकरन्द का चारों तरफ को रहा चिंघाड़
बोला मकरन्द पीलवान से दिल में बहुत गया घबराय ॥
अब तुम रोको मेरे हाथी को चारों तरफ को रहा बबराय
जब यह देखा हलकारे ने वह कम्पू में पहुँचा जाय ॥
पांच कदम से करी कोरनिश धोरे जाकर शीश नवाय ॥
हाथ जोड़ हलकारा बोला ओ महाराज बनाफल राय ॥
जुलम बीत गये रनखेतों में अब कुछ रहा ठिकाना नाय ॥
बड़ा लड़इया वह भैरों है जिससे हार गई तलवार ॥
तुम तो बैठे सुख नींदों में वहां मकरन्द ने मानी हार ॥
मानस हो तो लड़े सामने मस्त हाथी से नहीं बसाय ॥
मकरन्द वाले अब हाथी पर हाथी मस्त पड़ा अहड़ाय ॥
हाथी उखड़ गया मकरन्द का जो रोके से रुकता नाय ॥
इतनी बात सुनी ऊदल ने सुरखी गई बदन में छाय ॥

गरजा ऊदल जब ललकारा जैसे शेर तड़ेड़ा खाय ॥
चाचा चाचा को ललकारा मैं चाचा का लेऊं बलाय ॥
मैं देखुंगा उस हाथी को किसने डाले जुलम गुजार ॥
पहले मारूं उस हाथी को फिर भैरों को डालुं मार ॥
बांवी भुजा पर ब्रह्मा बैठा और वह उठा तमाड़ा खाय ॥
हाथी पकड़कर अब ऊदलका उसे कुरसीपर दिया बिठाय ॥
तुमने मारा गनपतसिंह को मेरा वार अब पहुँचा आय ॥
अब है ओसरा ब्रह्माजीत का ऊदल सुनलो कान लगाय ॥
जब यह बात सुनी ऊदल ने उसके दिल में गई समाय ॥
करी तइयारी फिर ब्रह्मा ने रन का बाना लिया सजाय ॥

ब्रह्मा का भैरोंसिंह के मुकाबले को जाना

खैंच जांघिया नरवर गढ़ का ऊपर लंगर लिया चढ़ाय ॥
बख्तर पहना काशमीर का गोली लगे चीप हो जाय ॥
रन का बाजा जब बजने लगा सब रनशूर हुये तइयार ॥
कमरबन्द सब लशकर हो गया पैदल पलटन और सवार ॥
छुटी रसोई रजपूतों की सइयद रह गये मुगल पठान ॥
किसी ने खाया कोई बाकी रहा भूके रहे बहुत से पठान ॥
घोड़ा सज गया जब ब्रह्माका हिरनागिर जब हुआ तइयार ॥
ध्यान लगाया गुरू अमरा का ब्रह्मा उस पर हुआ सवार ॥
परा बांध कर सब फौजों का और चौबन्दी ली करवाय ॥
गुम्मट बन्ध गया रजपूतों का जैसे घटा टोप हो जाय ॥

कूंच बोल दिया है ब्रह्मा ने सब लशकर को दिया बढ़ाय ॥
कोई घड़ी के अब अरसे में दाखिल हुआ खेतमें जाय ॥
मारा चाबुक जब घोड़े के वह अम्बर में पहुँचा जाय ॥
काले बादल की लाली में जैसे बाज लपेटा खाय ॥
जहां पर हाथी था मकरन्द का ब्रह्मा डटा बराबर जाय ॥
बोला ब्रह्मा जब मकरन्द से मैं क्षत्री का लेऊं बलाय ॥
बड़ा भरोसा मुझे भारी था तुमने कैसे मानी हार ॥
इतनी सुनकर मकरन्द बोला और ब्रह्मा से कहा पुकार ॥
तेग लड़ाई से ना हारूं मस्त हाथी से नहीं बसाय ॥
इतनी सुनकर ब्रह्मा जल गया गुस्सा भरा बदन में जाय ॥
कूद बछेरे से नीचे हुआ पण्डा अरजुन का औतार ॥
जब ललकारा है भैरों को हरनन्दन का राजकुमार ॥
धोके न रहियो तुम मकरन्दके अब यहां ब्रह्मा पहुँचाआय ॥
सुनके बातें अब ब्रह्मा की भैरों भरा रोस में जाय ॥
दिया इशारा जब हाथी को ब्रह्मा पर पड़ा अड़दाय ॥
सूंड घुमाई जब हाथी ने ब्रह्मा निकल बगल से जाय ॥
खाली सूंड पड़ी हाथी की और ब्रह्मा की बच गई जान ॥
जैसे बिल्ली चूहे को झपटे और तम्बोली कतरे पान ॥
जैसे झपटा बन्देले का और हाथी पर पहुँचा जाय ॥
सूंड पकड़ली है हाथी की और पन्जे में लई दबाय ॥
ऐसे घुमाया है हाथी को जैसे मुगदड़ रहा घुमाय ॥
दांत बत्तीसों को धर दाबा और धरती में दिया गिराय ॥
सूंता तेगा ब्रह्माजीत ने जिस पर दो अंगुल की धार ॥
काट मसूड़ा दिया हाथी का टुकड़े करे तीन के चार ॥

भुजबल थक गये हैं दोनों के ताक़त रही बदन में नाय ॥
लड़ते लड़ते दो पहर हो गये पहर तीसरा पहुँचा आय ॥
बोला ताला जब कम्पू में और मलखे से कहा सुनाय ॥
ना कुछ खबर मिली ब्रह्मा की मकरन्द अब लौटा नाय ॥
मुझको अगता ये सूझे है दोनों दिये जान से मार ॥
इतनी सुनली जब मलखे ने कब्जा ठाय लई तलवार ॥
चौकस रहियो तुम डेरों में मैं दुशमन को देखूं जाय ॥
पकड़ बकसुवा गाजी मनसुखका मलखे उसपर बैठा जाय॥
उड़ गया घोड़ा आसमान को जैसे बाज रहा मण्डलाय ॥
उतरा घोड़ा जब खेतों में जैसे कला कबूतर खाय॥
देख लड़ाई ब्रह्माजीत की मलखे बहुत खुशी हो जाय ॥
मकरन्द लड़ रहा है खेतों में दोनों हाथ को रहा चलाय ॥
जहां पर ब्रह्मा भैरों लड़ रहे मलखे झुका बराबर जाय ॥
बोला मलखे जब ललकारा और ब्रह्मा से कहा सुनाय ॥
तुम नहीं कमती हो भैरों से पण्डा अर्जुन के औतार ॥
अब तुम छोड़ देओ दुशमनको देखो मलखे की तलवार ॥
इतनी बात सुनी ब्रह्मा ने सुरखी गई बदन पर छाय ॥
दिया दबोका जब छाती का और वो निकल पेचसे जाय ॥
गरदन पकड़ कर अब भैरों की बगल के नीचे लई दबाय ॥
दहना हाथ दिया टांगों में और धरती में दिया गिराय ॥
घोंटा रखकर अब छाती पर उसके ऊपर बैठा जाय ॥
बोला ब्रह्मा जब भैरों से दुशमन तेरा बुरा होजाय ॥
जिन बचलों परतू गरजेथा उनको अब यहांलेओ बुलाय ॥
चुप चाप भैरोंसिंह हो गया उसने कान हिलाय नाय ॥

जो कुछ मरजी हो चाचा की वह हम लावें हुक्म बजाय ॥
इतनी सुनकर राजा बोला और मलखे से कहा सुनाय ॥
नजर बन्द अब इसको करदो पहरा डबल देओ लगवाय ॥
उस दिना छोड़ो तुम भैरोंको इन्दल का दें ब्याह कराय ॥
जहां पर डेरा है ढेवा का वहां भैरों को दो पहुँचाय ॥
किसके पहरे अब तुम देखो यह सर पड़ी तुम्हारे आय ॥
चौकस रहियो तुम भैरोंसे मत कहीं निकल हाथसे जाय ॥
खबर पहुँच गई हरनन्दन पर भैरों पड़ा कैद में जाय ॥
भारी सोच हुआ बेटे का मुंह पर गई उदासी छाय ॥
जुल्म बीत गये परलो होगई अब कुछरहा ठिकाना नाय ॥
बड़ा बहादुर भैरोंसिंह था कैसे पड़ा कैद में जाय ॥
जब ललकारा सुर्जनसिंहको अब तुम सुनलो कानलगाय॥
इतनी सुनकर सुर्जन बोला और राजा से कहा सुनाय ॥
नमक तुम्हारा हमने खाया जो काया में गया समाय ॥
चाहे उड़ादो तुम तोपों से चाहे फांसी दो लगवाय ॥
जहां मोरचा भारी देखो वहां सुर्जन को देओ अड़ाय ॥
मैं देखूंगा उन ज्वानों को जिनकी दहशत बहुत सिवाय ॥
कैसे लड़इया वह क्षत्री है जिनकी जात बनाफल राय ॥
रन के कपड़े सुर्जन पहने पांचों बांध लिए हथियार ॥
मुण्डे हौदे को धरवाया चारों तरफ चले तलवार ॥
सब सरदारों को बुलवाकर सुर्जन दिया हुकम सुनाय ॥
जितनी लशकर सुर्जनसिंहका सब दल कमरबन्द होजाय ॥
इतनी सुनकर क्षत्री सजगए जिनको सजत न लागी वार ॥
पैदल पलटन और रिसाले सबने बांध लिये हथियार ॥

गुम्मट बन्ध गया रजपूतों का सारे ज्वान गये घबराय ॥
लगी नशीनी जब हाथी पर सुर्जन उस पर हुआ सवार ॥
गरज घोर कर सुर्जन कोपा धरती मांगे धरम दुआर ॥
आगे आगे पैदल पलटन पीछे घोड़ों के असवार ॥
लशकर सजगया जब सुर्जनका सबको आगे दिया बढ़ाय ॥
कूच बोलकर चला वहां से दाखिल हुआ खेत में जाय ॥
परा बांधकर सब फौजों का और चौबन्दी ली करवाय ॥
ऊंची जगह देख खेतों में तोप के मोरचे दिए लगाय ॥
गरजा सुर्जन जब ललकारा और मौंडे पर रहा सुनाय ॥
कौन शूरमा है मोहबे का मुझसे लड़े खेत में आय ॥
सुनकर बातें दुर्जुनसिंह की कहने लगा तलन्सी राय ॥
जब ललकारा है आल्हा को और सहयद से कहा सुनाय ॥
कौन शूरमा की बरनी है दुशमन डटे खेत में आय ॥
जब यह बात सुनी ज्वानों ने उसके दिल में गई समाय ॥
झपट के उट्ठा खान मौलवी जो ताला का राजकुमार ॥
मैं देखूंगा सुर्जनसिंह को उसकी देख लेऊं तलवार ॥
करी तइयारी रनखेतों की खान मौलवी हुआ तइयार ॥
पांचों कपड़ों को पहना है पांचोंबांध लिए हथियार ॥
जब ललकारा खान मौलवी सरदारों से कहा सुनाय ॥
सात हजार के अब हल्ले में सब दल कमरबन्द होजाय ॥
सजे चत्री सहयद सजगये और सब सजगये मुगल पठान ॥
रन के दूल्हा रन को सजगये जिनमें बड़े बड़े बलवान ॥
पैदल पलटन और रिसाले आगे चले छुड़ा बरदार ॥
घोड़ी मुश्की को सजवाकर खान मौलवी हुआ सवार ॥

दाबता जावे है लशकर को बेटा लगे तलन्सी राय ॥
कोई घड़ी के अब अरसे में पहुँचा रनखेतों में जाय ॥
देखी सूरत सुर्जनसिंह की जब सइयद ने कहा पुकार ॥
धोके न रहियो तुम औरोंके अब तुम बहुत रहो हुशियार॥
बोला सुर्जुन फिर ललकारा सइयद सुनलो कान लगाय ॥
क्या कहीं राजा मरा चन्देला क्या मरगये बनाफल राय ॥
हत्या देने को तू आया मेरे डटा सामने आय ॥
लौटके जवाब दिया सइयद ने क्षत्री खबरदार हो जाय ॥
गरभ की बातोंको मत बोलो गरभ किसीका रहता नाय ॥
बावन राजा छप्पन सूबे सारे नवाब यहां पहुँचे आय ॥
क्या परवाय है उन ज्वानों को आकर लड़ें बनाफलराय ॥
बड़े बहादुर वह क्षत्री हैं जो मरने से डरते नाय ॥
भारी जोधा तेरा गनपत था उसका डाला खोज मिटाय ॥
मारा उसको नर ऊदल ने तुमको शरम आवती न ॥
बीड़ा उठाया भैरोंसिंह ने और आपे में नहीं समाय ॥
उसको बांध लिया ब्रह्मा ने उल्टे हन्ड लिये कसवाय ॥
जात बनाफल की नामी है उनकी मार सही ना जाय ॥
कोई घड़ी में यह सुन लीजो गढ़िया बसी भूमि पर नाय ॥
बातों बातों में गाली हो गई और बातों में हुई तकरार ॥
बात बात में अब दोनों ने नङ्गी सूंत लई तलवार ॥
ले लिया भाला सुर्जुनसिंहने जिसकी मार सही ना जाय ॥
मारा घुमाकर दोनों हाथसे और सइयद पर दिया झुकाय ॥
बड़ा खिलाड़ी पटेबाज था खान मोहम्मद गया बचाय ॥
बाग फेर कर अब घोड़ी की भाले का दिया वार बचाय ॥

लई सरोही जब सइयद ने और पन्जे में लई दबाय ॥
दाव देख रहा तलवारोंके अपनी घात को रहा लगाय ॥
कभी तो घोड़ा दहने होजाय और कभी दहनेको हटजाय ॥
एड़ लगाकर अब घोड़ी के वह हाथीपर पहुँचा जाय ॥
मारी घुमाकर दोनों हाथसे और सुर्जन पर दई झुकाय ॥
खाली वार पड़ा सइयदका उसने ढाल को दिया अड़ाय ॥
जैसे सुर्जन अब सम्भले था वार दूसरा दिया चलाय ॥
आधी ढाल रही पन्जेमें आधी पड़ी धरनपर जाय ॥
खान बहादुर की चोटों में सुर्जनसिंह गया घबराय ॥
जब ललकारा सुर्जनसिंह ने सरदारोंसे कहा सुनाय ॥
अबकी चोटों में ना छोड़ें दुशमन निकला बुरी बलाय ॥
किसके पहरे तुम देखो हो अपने लो हथियार लगाय ॥
पहले फौज बढ़ी सुर्जन की एकही संग पड़ी अरराय ॥
उन्धे लशकर अब सइयदने अपना आगे दिया बढ़ाय ॥
पैदलसे तो पैदल मिल गये ऊपर बाग थाम असवार ॥
सूंड लपेटा हाथी होगये जिनपर पर अंकुश की मार ॥
चली मगरबी आहन गरबी रूमशाम की चली कटार ॥
कत्ता चला विलायत वाला घोड़ा काटे मय असवार ॥
खटबद खटबद तेगा चलरहा चलरही छनकछनक तलवार ॥
मारते जावें बढ़ते जावें बलखबुखारे के सरदार ॥
डेढ कोस तक रनखेतोंमें अब दुशमनको दिया हटाय ॥
जब ढंग देखा यह लशकरका खानमोहम्मद गया घबराय ॥
फिर ललकारा सरदारों को और ज्वानोंसे कहा सुनाय ॥
मैंने तो जाना शूरवीर हो कायर हुए खेत में आय ॥

जात क्षत्री कुछ सइयद हैं जिनमें सारे मुगल पठान ॥
जुलम बीत गये परलो होगई तुमने पीठ दिखाई आन ॥
लाना लगजाय रजपूतींको फिर मरजाद बन्धेगी नाय ॥
कायर होकर तुम भागो हो तुमको शरम आवती नाय ॥
पड़े हंसाई सब मुल्कों में जगमें थूकेगा संसार ॥
मुगल पठान अब रनखेतों से अपनी छोड़ भगे तलवार ॥
हिन्दूमें तो जात क्षत्री तुममें सइयद मुगल पठान ॥
बड़े लड़इया यह तीनों हैं जोधा शूरवीर बलवान ॥
यह नही डरते हैं मरने से शंका करें काल की नाय ॥
आप मरें अगले को मारें पीछे कदम हटावें नाय ॥
खान मौलवी बढ़ा अगाड़ी और मौंडे पर पहुँचा जाय ॥
अब दल टूटा फिर आगेको सब रनशूर पड़े अरड़ाय ॥
शीश हथेली पर रख लीना रटना लगी रामसे जाय ॥
छोड़ आसरा जिन्दगानी का फिर वह डटे सामने जाय ॥
अली अली करके बढे रुहेले सइयद बढ़गये मुगल पठान ॥
हरहर करके क्षत्री बढ़ गये जिनका लगा राम से ध्यान ॥
खान मौलवी बढ़ा अगाड़ी अन्नी गोलमें पहुँचा जाय ॥
दे दे पानी सब ज्वानोंको को अब आगे को दिया बढ़ाय ॥
अपने पराये की सुध ना है सबको मारहीमार सुहाय ॥
मारते मारते सुर्जनसिंह को किले के अन्दर दिया धंसाय ॥
लोथ पर लोथ पड़ी खेतों में ऊपर चील रही मण्डलाय ॥
सात लाख लशकर सुर्जन का जिसमें ढाई लाख रहजाय ॥
छूटी जोड़ी हलकारे की और बङ्गले में पहुँची जाय ॥
दई दुहाई जाय बङ्गले में और राजा से कहा सुनाय ॥

क्या तुम बैठे सुख नींदोंमें अब कुछ रहा ठिकाना नाय ॥
बहुतसी फौज कटी खेतों में घायल हुय बहुत से ज्वान ॥
छीन मोरचा लिया दुशमनने सुर्जन हटा खाई तक जाय ॥
बढ़ता जावे खान मोलवी जिसकी मार सही ना जाय ॥
हमको अगवां यह सूझे है ना कहीं बढे किले में आय ॥
जल्दी भेजो किसी और को अब कुछ काम देर का नाय ॥
देवे सहारा जो सुर्जन को और दुशमन को रोके जाय ॥
जब यह हाल सुना राजा ने धक्का लगा कलेजे जाय ॥
इतना हाल सुना केहर ने जो हरनन्दन का राजकुमार ॥
झपट के उठ्ठ वहा कुरसी से नंगी सूंत लई तलवार ॥
मैं देखूंगा उस पाजी को जिसने डाला जुलम गुजार ॥
यातो कैद करूं दुशमनको और नहीं देऊं जानसे मार ॥
जब तक जीवे दुर्जन जोधा तुमको कौन पड़ी परवाय ॥
नमक तुम्हारा हमने खाया जो काया में गया समाय ॥
नमक हरामी नहीं करेंगे चाहे जान बचे या जाय ॥
जहां कहीं काम पड़े लड़ने का पहले खेत बुहारूं जाय ॥

दुर्जनसिंह का सुरजनसिंह की मदद को जाना

करी तइयारी दुर्जनसिंह ने रन का बाना लिया सजाय ॥
बख्तर पहना काशमीरका ऊपर कवा लई कसवाय ॥
हुकम सुनाया सरदारों को सभी सुनलो कान लगाय ॥
जितना लशकर दुर्जनसिंह का सबदल कमरबन्द होजाय ॥

यह मन मानी सरदारों के और हिरदे में गई समाय ॥
अपने अपने अब लशकरको सबने जल्दी लिया सजाय ॥
पैदल पलटन और रिसाले सबने बांध लिए हथियार ॥
हाथी चढ़इया चढ़े हाथी पर और घोड़ोंपरचढ़े सवार ॥
उल्टी बम्ब सब सीधी कर दीं डंका पड़ा बम्ब पर जाय ॥
गुम्मट बन्ध गया रजपूतों का जैसे घटा टोप हो जाय ॥
हुक्म सुनाया दुर्जनसिंह ने मेरा हाथी करो तइयार ॥
मुण्डे हौदे को धरवाया चारों तरफ चले तलवार ॥
बन्धे बुलाये रजपूतों के आगे चले छड़ी बरदार ॥
लगी नशीनी जब हाथी पर उस पर दुर्जन हुआ सवार ॥
परा बांधकर सब लशकर का दुर्जन ने दिया कूच कराय ॥
कोई घड़ी के अब अरसे में रनखेतों में पहुँचा जाय ॥
नजर घुमाई दुर्जजनसिंह ने और सुर्जनपर पहुँचा जाय ॥
देखके हालत सुर्जनसिंह की दुर्जन भरा रोस में जाय ॥
दाब किनारा अब पच्छिम से एक ही संग पड़ा अरड़ाय ॥
यह गत करदी है खेतों में दिन की रात पड़े दिखलाय ॥
उड़कर गरदा लगा सुरग में सूरज गया धुन्द में छाय ॥
खान मौलवी के लशकरसे अपना लशकर दिया मिलाय ॥
पैदल से तो पैदल मिल गये ऊपर बाग थाम असवार ॥
सूंड लपेटा हाथी हो गये ऊपर है अंकुश की मार ॥
उत्तर दक्खिन पूरब पच्छिम चारों तरफ चले तलवार ॥
एकतरफ लशकर दुर्जनसिंहका एकतरफ सुर्जनसिंह सरदार॥
बीच में घिरगया खान मौलवी चलरही अन्धाधुन्दतलवार ॥
अपने पराये की सुध ना रही क्षत्री कर रहे मार ही मार॥

होश बिगड़ गये जब मुगलों के पीछे हटने लगे पठान ॥
सात घाव आगये सइयद के जिसके बिगड़ गये औसान ॥
देख लड़ाई दुर्जनसिंह की खान मौलवी गया घबराय ॥
मारते मारते अब दुर्जन ने तीन कोस तक दिया हटाय ॥
चल पड़ी जोड़ी हलकारे की जहां दरबार बनाफल राय ॥
हाथ जोड़कर अर्ज गुजारी और ताला से कहा सुनाय ॥
दूसरे शूरमा हरनन्दन के रनखेतों में पहुँचे आय ॥
बड़े लड़इया वह दोनों हैं जिनगी मार सही ना जाय ॥
बहुत से मुगल मरे खेतों में बहुत से घायल हुए पठान ॥
लड़ते लड़ते भुजबल थकगये सबके बिगड़ गये औसान ॥
खान मौलवी घायल होगया लोहा गया बदन को खाय ॥
दो दो जोधों के मोंडे पर क्या इकले की पार बसाय ॥
इतनी बात सुनी ताला ने दिल में बहुत गया घबराय ॥
बोला ताला जब ललकारा और मलखे से कहा सुनाय ॥
जुलम बीत गये रनखेतों में सबकी डूब गई तलवार ॥
दो दो ज्वानों के मोंडे पर खान मौलवी करे तलवार ॥
इतनी बात सुनी लाखन ने और वह उठा फरेरा खाय ॥
सुवना सुवना को ललकारा पीलवान का लेऊं बलाय ॥
जल्द सजादे मेरी हथनीको अब क्यों रक्खी देर लगाय ॥
यह मन मानी पीवान के और हिरदे में गई समाय ॥
भूरी हथनी को सजवाकर उस पर हौदा दिया धरवाय ॥
लगे जमूरे चारों खूंट पर गोला पाव सेर का खाय ॥
भर भर कौली हथियारों की हौदे बीच दई धरवाय ॥
करी तइयारी अब लाखनने रन का बाना लिया सजाय ॥

बोला ऊदल जब लाखन से मैं मितर का लऊं बलाय ॥
क्यों बावला करदिया नारायण ने तेरी अक्ल गई बौराय
तेरे बूते के नहीं दुशमन हैं तुमसे वार न झेला जाय ॥
पहले जूझें ऊदल मलखे पीछे मरो कनौजी राय ॥
सुनकर बातें नर ऊदल की लाखन भरा रोस में जाय ॥
क्या रजपूती सिखी घरदी क्या तलवार को धरा उठाय ॥
क्या मेरी हथनी बूढ़ी जानी या मेरे भुजबल में बल नाय
ऐसी बातों को मत बोलो मेरे जामे में नहीं समाय ॥
गोला बनाकर अब फूलों का सबने बांध लिए हथियार ॥
माती हथनी कनवज वाली भूरी गई नशे में छाय ॥
जितना लशकर था लाखन का सबने बांध लिये हथियार
लगी नशीनी जब भूरी पर लाखन उस पर हुआ सवार ॥
बजा कुहाड़ा जब भूरी पर हथनी काल बरन हो जाय ॥
फौज कटीली है लाखन की जो मरने से डरती नाय ॥
बोला लाखन जब ललकारा और ज्वानोंसे कहा सुनाय ॥
जहां पर लड़ रहा खान मोलवी वहां पर जल्दी पहुँचोजाय
आधी फौज चली लाखन की रनखेतों में पहुँची जाय ॥
आधा लशकर संग लाखन के आधा बढ़ा अगाड़ी जाय ॥
आता देखा जब लशकर को खान मौलवी गया घबराय ॥
दो दो सांवनतो यहां लड़रह तीसरा कौन यह पहुँचा आय
अब यह जिन्दा नहीं छोड़ेगा यहां पर जान बचेगी नाय
किसको भेजें अब मैं यहां से कम्पू में दे खबर कराय ॥
हाब किनारा अब दुश्मन से लाखन हथनी दई बढ़ाय ॥
अंकुश मारा जब भूरी के हथनी भरी रोस में जाय ॥

यह गत करदी है हथनी ने दल पूला सा दिया बिछाय ॥
बिचली हथनी जब लाखन की जिसका भिड रूप हो जाय
आधा ज्वान पांव से दाबे आधा सूंड में ले है दबाय ॥
पकड़ ज्वान को ऐसे चीरे जैसे बढ़ी पेड़ को जाय ॥
पकड़ ज्वान को ज्वान से मारे खोपड़ी नौ टुकड़े होजाय ॥
दे है लपेटा जब सूंड का और घोड़े को देय गिराय ॥
धर के रौंदे है पैरों से हड्डी चूर चूर हो जाय ॥
बहुत से ज्वान मारे हथनी ने भूरी रही नशे में छाय ॥
नीचे मारे भूरी हथनी ऊपर लाखन करे हलाल ॥
चीरता जावे है फौजों को बेटा रतीभान का लाल ॥
फौज कटीली है लाखन की सबको मार ही मार सुहाय ॥
देखा लाखन जब सइयद ने दिल में बहुत खुशी होजाय ॥
जब ललकारा लाखन जोधा और सुर्जन से कहा सुनाय ॥
जाने न पावे तू खेतों से सर पर मौत पुकारी आय ॥
हिम्मत बढ़गई अब ज्वानों की आगे बढ़ गये मुगल पठान ॥
दुर्जनसिंह के अब मौंडे पर लाखन डटा सामने आय ॥
जब ललकारा है दुर्जन को चत्री सुनले कान लगाय ॥
बेटे होकर तुम राजा के काम नीच का किया यहां आय ॥
ज्वान गरीबों के मारे से तुमको मिले भलाई नाय ॥
मेरी तेरी बरनी है खेतों में जिसको देय शारदा माय ॥
अफसर से तो अफसर जूझै उन्घे पैदल और सवार ॥
अब तुम मेरे लड़ो सामने अपनी फेंक लेओ तलवार ॥
धोके न रहियो तुम सइयद के दोहरे शूर पड़े अड़ड़ाय ॥
जिन धवलों पर तू गरजे है उन धवलों को लेओ बुलाय ॥

इतनी सुनकर दुर्जन गरजा और लाखन से कहा सुनाय ॥
सांग शनीचर मेरी जालिम है तेरा देगी खोज मिटाय ॥
क्या कहीं घवलों का टोटा है या कोई रहा शूरमा नाय ॥
हत्या देने को आया है यहां तेरी लाई मौत उठाय ॥
बोला लाखन जब ललकारा और दुर्जन से कहा सुनाय ॥
मोट बेटे साहूकारों के अपना करें सौकारा जाय ॥
हम पतली फांस हैं रजपूतों की जो खेतों में पहुँचे आय ॥
हम नहीं डरते हैं मरने से चाहे जान बचे या जाय ॥
मैं बैन चकव्वे का पोता हूं बेटा रतीभान का लाल ॥
लगूं भतीजा कीरतमल का जयचन्द गोद खिलाया आय ॥
सम्भल के बैठो तुम हौदे में सारा खटका देऊं मिटाय ॥
लौट के जवाब दिया दुर्जन ने मैं लाखन का लेऊं बलाय ॥
ना कहीं चढ़ा है जयचन्द राजा ना कहीं चढ़ा चन्देला राय
संग गुलामों के यहां आये तुमको शरम आवती नाय ॥
पांच रुपये के वह नौकर हैं टुकड़ा सर बेचे का खाय ॥
नौकर हैं वह चन्देले के ओछी जात बनाफल रांय ॥
बैन चकव्वा जो पैदा हुआ जिनकी कमला पतीसी नार ॥
कच्चे सूत से जल भर लाई कमल के पत्ते पर असवार ॥
उनके बेटे हुए चन्दन से जिनगो जग जाने संसार ॥
उन्हीं के नाती तुम पैदा हुए तुमने डाली शरम उतार ॥
तुम्हें मुनासिब यह ना चहिए मेरा करो सामना आय ॥
मिलजा मिलजा मेरी भुजबल से तुझे राजा से देऊं मिलाय
अफसर करदं सब लशकर का आधी गद्दी का सरदार ॥
इतनी सुनकर लाखन बोला और दुशमन से कहा पुकार

धरम नहीं है रजपूती का रन पर चढ़कर रिश्वत खाय ॥
मिलना मिलना कैसा मिलना घर में मिलो बहक से जांय
मेरा तेरा मिलना तलवारों का सारा भेद अभी खुलजाय
सम्भल के बैठो अब हौदे में दिल का लो अरमान मिटाय
जाने न पाओ तुम खेतो से चाहे लाख धरो औतार ॥
बातों बातों में दोनों में चलने लगी वहां तलवार ॥
बात बात में अब दोनों ने नंगीं लूंत लई तलवार ॥
दोनों जोधा मिले बराबर जिनके बल का नहीं शुम्मार ॥
सांग घुमाई जब दुर्जन ने जिसका वार न खाली जाय ॥
मारी घुमाकर दोनौ हाथ से और लाखन पर दई झुकाय
ओट पकड़गया वो कलशेकी और मुंह परली ढाल अड़ाय
चोट उकादी है लाखन ने अपनी ले गया जान बचाय ॥
दांत बतीसों को धर दाबा पंजा चाब चाब रह जाय ॥
इन्हीं तेगों से गज काटे घोड़ों की दी टांग उड़ाय ॥
यही सांग अब धोका दे गई बेशक काल पुकारा आय ॥
फिर ललकारा है हौदे में और लाखन से कहा सुनाय ॥
मेरी सांग से जो तुम बचगये तुमने नया लिया औतार ॥
बोला लाखन जब ललकारा और दुर्जन से कहा पुकार ॥
क्या तेरा सेला कच्चे लोहे का या ना कुश्मी घड़ा लुहार
सांग बने है मेरे कनवज में जो बख्तर के निकले पार ॥
दूसरी चोट और तुम करलो दिल का लो अरमान मिटाय
नहीं कोई घड़ी के अब अरसेमें तेरी जान बचेगी नाय ॥
लाल कमान लई दुशमन ने और पंजे में लई दबाय ॥
दोनों हाथी से धर ताना गोशे से गोशा मिल जाय ॥

खैंच कमान को नरघा करलिया रौंदा पहुंचा कान पर जाय
दांत बतीसोंको धर दाबा और लाखन पर दिया झुकाय ॥
सहटी काट दई लाखन ने और फल गिरा रेत में जाय ॥
बोला दुर्जन पीलवान से अब तू सुनले कान लगाय ॥
बजे कुहाड़ा मेरे हाथी पर और आगे को दिया बढ़ाय ॥
बढ़ गया हाथी अब दुर्जन का हौदा मिला बराबर जाय ॥
एक पांव कलशे पर टेका एक हौदे पर धरा जमाय ॥
मची लड़ाई जब दोनों में दोनों रहे तलवार चलाय ॥
खटबट खटबट तेगा चलरहा चलरही छपक छपक तलवार
दोनों सूर बराबर लड़ रहे अपना अपना कर रहे वार ॥
खान मौलवी के मोंडे पर उन्चे सुर्जनसिंह सरदार ॥
इन्चे जोधा हरनन्दन के उन्चे मोहवे के सरदार ॥
एक तरफ लश्कर लड़े दोनों का सबको मारहीमार सुहाय
लड़ते लड़ते पहरों हो गये मानी हार किसी ने नाय ॥
पीलवान लाखनका गरजा और हथनी से कहा सुनाय ॥
दिया इशारा हैं अंकुश का क्या तुझे लेगई मौत उठाय ॥
क्या मुंह लेकर जाऊं कनवजमें क्या जयचन्दसे कहूंसुनाय
ऊंच नीच खेतों में हो जाय मारा जाय कनौजी राय ॥
नील का टीका लगे हमारे जीते जन्म मिटेगा नाय ॥
दुर्जन वाले अब हाथी से जो तू हटी पिछाड़ी जाय ॥
बोली लग गई जब भूरी के हथनी भरी रोस में जाय ॥
बीस कदम पीछे को हट गई जब सुखना ने कहा सुनाय ॥
चौकस बैठे रहो गरदन पर अपना अंकुश लेओ उठाय ॥
बीस कदम से हथनी टूटी और हाथी पर पड़ी अहड़ाय ॥

टक्कर मारी जब हथनी ने हाथी बैठ खेत में जाय ॥
बैठा हाथी जब दुर्जन का लाखन झुका बराबर जाय ॥
लेलिया भाला है लाखन ने जिसका वार न खालीजाय ॥
निगाह बचाकर अब दुशमनकी दोनों हाथ से दिया झुकाय
हाथ जनेवा का जब मारा वह कन्धे में गया समाय ॥
दहने हाथ पर वह बैठा है बांवीं पसली में निकला जाय ॥
आधा ज्वान रहा हौदे में आधा पड़ा रेत में जाय ॥
खटका भारी था दुर्जन का सो लाखन ने दिया मिटाय ॥
देखे लाखन चारों तरफ़ को सइयद कहीं दीखता नाय ॥
बोला लाखन पीलवान से सुबना सुनलो कान लगाय ॥
कहां पर लड़रहा खान मौलवी हमको कहीं दीखता नाय ॥
इस पर जबाव दिया सुबना ने और लाखनसे कहा सुनाय
एक मील उत्तर खूंटों में खान मौलवी पहुँचा जाय ॥
बोला लाखन जब ललकारा और सुबना से कहा सुनाय ॥
हथनी हूल देओ आगे को अब क्यों रक्खी देर लगाय ॥
लड़ रहा बेटा जहां सइयद का वहां हथनी को दो पहुँचाय
बोला सुबना जब ललकारा और लाखन से कहा सुनाय ॥
सावधान होकर तुम बैठो मैं भूरी को देऊं बढ़ाय ॥
बजा कुल्हाड़ा जब हथनी पर भूरी भरी रोस में जाय ॥
कोई घड़ी के अब अरसे में हथनी लगी बराबर जाय ॥
देखा घायल जब दुर्जन को लाखन बहुत खुशी हो जाय ॥
दई शाबाशी अब सइयद को और लाखन ने कहा सुनाय
अब तुम हट जाओ पीछे को देखो हाथ लखंसी राय ॥
देखके सूरत को लाखन की दुर्जन दिल में गया घबराय ॥

सुर्जन सिंह का हार मान कर खेत से भाग जाना

घाव कसक रहे हैं सुर्जन के जिनसे खून थमे है नाय ॥
पड़ी ना हिम्मत अब सुर्जन की ओट वार लखंसी राय ॥
इकले सहयद के मौंडे पर कुछ मेरी पार बसाई नाय ॥
दोहरे जोधा यहां पर आ गये अब कुछ रहा ठिकाना नाय
मुझको अगवां यह सूझे है यहां पर जान बचेगी नाय ॥
हाथी लौट गया सुर्जन का और यह हटा पिछाड़ी जाय ॥
निगाह बचाकर वहां दोनोंकी अपनी लेगया जान बचाय ॥
लशकर उखड़गया सुर्जन का कोई सरदार दीखता नाय ॥
बहुत से क्षत्री मरे खेत में बहुत से भागे जान बचाय ॥
भागते जावें लड़ते जावें अपनी जान को रहे बचाय ॥
पहुँचा सुर्जन जब बंगले में जहां राजा का लगा दरबार ॥
घायल देखा जब सुर्जन को सारे दहल गये सरदार ॥
बोला राजा जब ललकारा और सुर्जन से कहा सुनाय ॥
क्या गत बीती रनखेतों में जो तुम रहे खून में न्हाय ॥
कैसे घाव तुम्हारे आये हमको हाल देओ बतलाय ॥
हाथ जोड़कर सुर्जन बोला और राजा से कहा सुनाय ॥
हाल न पूछो तुम खेतों का हमसे हाल कहा ना जाय ॥
खान मौलवी के मौंडे पर अपना हाथी दिया मिलाय ॥
सात घाव दुशमन के आ गये जब भी गिरा खेतमें नाय ॥
जब यहां से मदद गई दुर्जन की फिर सहयद को घेरा जाय

मारते मारते वहां दुश्मन को बहुत दूर तक दिया हटाय ॥
फिर जो चढ़कर लाखनआया और वह डटा खेत में आय ॥
वीर थाह करके लशकर को वह दुरजन पर पहुँचा जाय ॥
लाखन वाले अब मौंडे पर दुरजन डटा सामने जाय ॥
ना कोई जीता काल बली से ना होनी से पार बसाय ॥
बहुत देर तक हुई लड़ाई जीता जंग कनौजी राय ॥
मुझसे लड़ रहा खान मौलवी लाखन भी वहांपहुँचा जाय ॥
दोनों जोधों के मौंडे पर इकला लड़ा खेत में जाय ॥
बारह घाव लगे देही में लोहा चाट बदन को जाय ॥
मानस हो तो पार बसाये उस हथनी से नहीं बसाय ॥
जुलम मार है उस हथनी की जो हाथी से सही ना जाय ॥
हथनी झपटी जब लाखनकी मेरे हाथी पर पड़ी अड़हाय ॥
हाथी उखड़ गया खेतों से और वह हटा पिछाड़ी जाय ॥
बहुत सा मारा पीलवान ने हाथी बढ़ा अगाड़ी नाय ॥
हमको खबर नहीं लशकरकी क्या गत बीती उन पर जाय ॥
बहुत से ज्वान मरे खेतों में बहुत से भागे जान बचाय ॥
इतनी सुनकर केहर बोला और दुरजन से कहा सुनाय ॥
अब तुम चले जाओ बंगले में मरहम पट्टी करो बनाय ॥
मैं देखूंगा उन ज्वानों को कैसे लड़ें बनाफल राय ॥
हुक्म सुनाया जब केहर ने सरदारों से कहा सुनाय ॥
जितना लशकर केहरसिंह का जल्दी कमरबन्द हो जाय ॥
बड़ी बड़ी तोपों का सजवाकर सब युरणों पर देओ चढ़ाय ॥

केहरसिंह का मैदान जंग में जाना

इतनी बात सुनी केहर की सबके दिल में गई इमाय ॥
अपने अपने अब लशकर को सबने जल्दी लिया सजाय ॥
हाथी घोड़े तोप रहकले और सब रफल हुईं तइयार ॥
पैदल पलटन और रिसाले सबने बांध लिए हथियार ॥
हाथी सजवा कर केहर ने उसके ऊपर हुआ सवार ॥
मुन्डे हौदे को घरवाया चारों तरफ चले तलवार ॥
बजा नकारा जब चलने का सारे हुए इकट्ठे आय ॥
गुम्मट बंध गया रजपूतों का कैसे घटा टोप हो जाय ॥
परा बांधकर अब लशकर का केहर ने दिया कूच कराय ॥
कोई घोड़ी के अब अरसे में दाखिल हुआ खेत में जाय॥
किला बांध दिया है तोपों का और चौबन्दी दी करवाय ॥
लगे मोरचे रन खेतों में कुछ तारीफ करी ना जाय ॥
बोला केहर जब ललकारा और कासिद से कहा सुनाय ॥
अभी चला जा तू लशकरमें जहां पर पड़े बनाफल राय ॥
जाकर कह दीजो ज्वानोंसे अब तुम सुनो बनाफल राय ॥
तीन लाख लशकर सङ्ग लेकर अपना खेत बुहारा आय ॥
जो दम रक्खा रजपूतों का अब तुम लड़ो खेत में जाय ॥
जो ना मन्शा हो लड़ने की यहां से कूच देओ करवाय ॥
नहीं तो लौट जाओ मोहबेको अब तक कुछ बिगड़ाहैनाय ॥
इतनी सुनकर कासिद चल पड़ाऔर कम्पूमें पहुँचा जाय ॥
लगी कचहरी जहां आल्हाकी कासिद वहां परपहुँचा जाय ॥
हाथजोड़ कर कासिद बोला ओ महाराज बनाफल राय ॥
मुझको भेजा केहरसिंह ने अब तुम सुनलो कान लगाय ॥
खड़ा क्षत्री रन खेतों में अपना मोरचा दिया लगाय ॥

छुटी रसोई रजपूतों की सय्यद रह गए मुगल पठान ॥
किसी ने खाया कोई बाकी रहा भूके रहे बहुत से ज्वान ॥
करी तय्यारी अब जोगा ने उनका खाना लिया सजाय ॥
बक्तर पहना अष्टधात का गोली लगे चीप हो जाय ॥
हाथी सज गयाहै जोगाका जिस पर आरही अजब बहार ॥
ध्यान लगाकर निरंकार का जोगा उस पर हुआ सवार ॥
परा बांध दिया फौजों का और चौबन्दी दी करवाय ॥
गुम्मट बंध गया रजपूतों का जैसे घटा टोप हो जाय ॥
कूच बोल दिया है जोगा ने सब लशकर को दिया बढ़ाय ॥
कोई घड़ी के अब अरसे में दाखिल हुआ खेत में जाय ॥
बोला जोगा अब खेतों में सरदारों से कहा सुनाय ॥
यहां पर रोको तुम फौजों को तोपके मोरचे देओ लगाय ॥
उन्धे लशकर केहरसिंह का इन्धे जोगा पहुँचा जाय ॥
हाथी बढ़ा कर अब जोगा ने फिर मोंडे पर दिया लगाय ॥
देखा लशकर जब जोगा का केहरसिंह ने कहा पुकार ॥
गोलन्दाजों को ललकारा मुन्शी तोपों के सरदार ॥
अरजुन गनपत मरे धोके में ना लड़ने की जानी सार ॥
पहले वार करो तोपों का फिर गोली की करो भरमार ॥
दूर से मारो अब दुशमन को ना कहीं बढ़ें अगाड़ी आय ॥
पड़े पलीता मेरी तोपों में अब क्यों रक्खी देर लगाय ॥
बांवे हाथ को पैदल पलटन दहने घोड़ों के असवार ॥
सबके आगे तोपें लग रहीं जिनकी जाय दूर तक मार ॥
सौ सौ तोपों की बाढ़ों में एक दम आग दई लगवाय ॥
पड़ा पलीता जब गुलदम का धुआं गया स्वर्ग में छाय ॥

पहले तोप चलीं केहर की धरती दहल दहल रह जाय ॥
यह गत देखी जब जोगी ने गोलन्दाजों ने कहा सुनाय ॥
तुम तो बैठे सुख नींदों में दुशमन ने दी तोप चलाय ॥
इतनी सुनकर गोलन्दाजों ने बत्ती जल्द दई दहकाय ॥
तोप तोप पर फिरे खलासी भिश्ती झुके बराबर जाय ॥
थेब पुचारे को तोपों पर सबको सीधा दिया कराय ॥
खोल के पेटी बारूदों की तोप के अन्दर दी भरवाय ॥
गज फेर कर फिर तोपों में गोला आगे दिया सरकाय ॥
हुक्म सुनाया जब जोगा ने अब तुम बत्ती दो दिखलाय ॥
पड़ा पलीता जब गुलदम का तोप में दीनी आग लगाय ॥
बड़ी बड़ी तोपें अष्टधात की जिनकी मार दूर तक जाय ॥
यह गत होगई रन खेतोंमें दिन की रात पड़ै दिखलाय ॥
जहां कोई गोला लगे पड़े में मुवाफिक चीलोंके मंडलाय ॥
गोला लगजा जिस हाथी के औधा पड़ा रेत में जाय ॥
गोला लगजा जिस घोड़े जैसे कला कबूतर खाय ॥
जाकर लगजा है चत्री के टटरी आसमान उड़ जाय ॥
गोला लगजा गोलन्दाज के वह धरती में जाय समाय ॥
जाकर गोला लगे तोप में टूट कर दो टुकड़े हो जाय ॥
खाली गोला पड़े जमीं पर धरती तीन कदम फट जाय ॥
तोप लड़ाई एक कोस की गोली आध कोस तक जाय ॥
बढ़ता जावे राघोमच्छ का चमके जोगा की तलवार ॥
बोला जोगा जब ज्वानों ले चत्री घोड़ों के असवार ॥
पैदल पल्टन रहो मौडे पर दहने बांवे झुको सवार ॥
छीन मोरचा लो दुशमन से अब मत करो जरासी वार ॥

तुम तो धावा करो इधर से और दुशमन पर पड़ो अड़राय॥
जाकर दाबू मैं सन्मुख से दुशमन हटे पिछाड़ी जाय॥
खबर नहीं है यह केहर को जोगा हटा पिछाड़ी जाय॥
सात कदम जब रहा मोरचा जोगा ने दिया हुक्म सुनाय॥
बढ़ो छत्री अब आगे को और दुशमन को घेरो जाय॥
यह मन मान गई ज्वानों के और हिरदे में गई समाय॥
पैदल पलटन बढ़ी अगाड़ी नंगी सूंत रहें तलवार॥
दहने बांवे झुके रिसाले जिन पर है भालों की मार॥
शीश हथेली पर रख लीना रटना लगी राम से जाय॥
तोपें चल रहीं जहां केहर की एक ही सङ्ग पड़े अड़राय॥
छीन मोरचा लिया तोपों का गोलन्दाज सब डाले मार॥
इतने खबर हुई केहर को जोगा ने दिया जुलम गुजार॥
हाथी बढ़ा कर अब केहर ने और ज्वानों से कहा सुनाय॥
कायर होकर तुम भागो हो रजपूती को दाग लगाय॥
बोली मारी जब केहर ने सबके दिलमें गई समाय॥
उन्धे फौज पड़ी केहर की उन्धे जोगा पहुँचा जाय॥

जोगा व केहरसिंह का मुकाबला

केहर वाले अब मोंडे पर जोगा डटा सामने जाय॥
दोनों छत्री झुके सामने जोधा एक से एक सिवाय॥
पैदल से तो पैदल बढ़ गए असवारों से अड़े सवार॥
चल रही जोड़ी पिस्तौलों की गोली निकलजाय उस पार॥
चली मगरबी आहन गरबी कोटा बून्दी की तलवार॥
कत्ता चला विलायत वाला जिसका जाय न खाली वार॥

हाथी सजगये घोड़े सजगये और सजगये शुतर सवार ॥
पैदल पलटन और रिसाले सबने बांध लिए हथियार ॥
गुम्मट बन्ध गया रजपूतों का जैसे घटा टोप हो जाय ॥
करी तइयारी अब रोड़ा ने रन का बाना लिया सजाय ॥

रोड़ासिह का मैदाने जंग में जाना

बोला रोड़ा जब ललकारा और नौकर से कहा सुनाय ॥
मेरे वास्ते तुरकी घोड़ा अब जल्दी से लाओ सजाय ॥
जब ये बात सुनी नौकर ने वह घोड़े को लाया सजाय ॥
पकड़ जीन को अब घोड़े की रोड़ा उस पर बैठा जाय ॥
बजा नकारा जब लशकर में सबका कूच दिया करवाय ॥
बोले चत्री जब लशकर में और आपस में रहे बतलाय ॥
बेटी नहीं ये काली दीखे मानस खानी बुरी बलाय ॥
ब्याह नहीं ये काल निशानी अपना खप्पर रही भरवाय ॥
खून की प्यासी है यह पैमा जो पीने से नहीं अघाय ॥
खप्पर भरने को पैदा हुई बलख बुखारे जनमी आय ॥
जब यह कुल में होय सुहागिन लाखों को दे रांड बनाय ॥
होनी होनी रहे है होकर और बिन हुए टले हैं नाय ॥
जो कुछ लिख दिया नारायणने उसको मेटसके कोईनाय ॥
घोड़ा बढ़ाया जब रोड़ा ने निरंकार का ध्यान लगाय ॥
परा बांधकर सब लशकर का और आगे को दिया बढ़ाय ॥
कोई घड़ी के अब अरसे में रन खेतों में पहुँचा जाय ॥
ना यह किसीसे बोला चाला नाकुछ किसीसे कहा सुनाय ॥
धावा बोल दिया पच्छिम से एक ही सङ्ग पड़ा अड़राय ॥

जैसे किसान खेत को काटे करता चला जाय मैदान ॥
यह गत करदी अब रोड़ा ने जिसका ना होसके बयान ॥
काटता जावे है लशकर को चमके रोड़ा की तलवार ॥
बहुत से ज्वान मरे जोगा के बहुतसे छोड़ भगे हथियार ॥
कठिन लड़ाई रोड़ासिंह की जो ज्वानों के बसकी नाय ॥
फौज उखड़ गई है जोगा की और वह हटी पिछाड़ी जाय
नजर घूम गई जब जोगा की और वह हटा पिछाड़ी जाय
इतने रोड़ा वहां पर पहुँचा और जोगा से कहा सुनाय ॥
सम्भल के बैठो अब होदे में तुमको जिन्दा छोड़ूं नाय ॥
दोनों भइयों को जब देखा जोगा गया सनाका खाय ॥
देखके सूरत अब जोगा की रोड़ासिंह ने कहा सुनाय ॥
हमने तुमको अब यह जाना मामा लगो इन्दलसी राय ॥
यार आशना को मरवावे घातो जात बनाफल राय ॥
औरों को भेजें मौंडे पर अपनी जान को रहे बचाय ॥
जो हैं बहादुर गढ़ मोहबे के जिनको जग जाने संसार ॥
वह क्यों ना आवें लड़ने को उनकी डूब गई तलवार ॥
लौटके जवाब दिया जोगा ने क्षत्री सुनलो कान लगाय ॥
गरभ की बातों को मत बोलो सदा बनी रहने की नाय ॥
शहर कसौंदी का गजराजा जिसकी कोई बराबर नाय ॥
बारह कोस तक नाग पवनिया जो उड़कर मानस कोखाय
बारह कोसतक शेर अरुहाथी किसीकी जहांना पार बसाय
मार के उनका खोज मिटाया और कासों में पहुँचे जाय ॥
भारी जोधा जो बूंदा था जिसको जग जाने संसार ॥
जितनी बूंद गिरें धरती पर उतने ही बूंदा हों तैयार ॥

उसको मारा नर ऊदलने मलखे का लिया व्याह कराय ॥
तुम क्या जानो उन ज्वानोंको अभी कुछपड़ा साबका नाय
बादशाह दिल्ली का नामी जिसका नाम पिथौरा राय ॥
इकले मलखे की दहशत से फाटक बन्द लिये करवाय ॥
बड़ा जानकर तू अपने को फूला अङ्ग समाता नाय ॥
क्या है मसाला तेरे ताऊ पर ओटे वार बनाफल राय ॥
क्यों बकवास करे मौंडे पर अपने ले हथियार लगाय ॥
मन के परखे तू खोल लीजो दिलका ले अरमान मिटाय ॥
इतनी सुनकर रोढ़ा जलगया गुस्सा भरा बदन में जाय ॥
इकले जोगा के मौंडे पर दोनों भइया पड़े अहड़ाय ॥
पहला वार किया रोढ़ा ने नंगी ठोक दई तलवार ॥
टोपी कट गई है बख्तर की और हौदे के हो गई पार ॥
सहटी मारी केहरसिंह ने फिर जोगा पर दई चलाय ॥
बांयी पसली में बैठी है सहटी गई बदन को खाय ॥
सहटी खेंच जोगा ने फेंकी दूसरी पेटी लई चढ़ाय ॥
सम्भल के बैठा अब हौदे में बेटा राघोमच्छ का राय ॥
धूप दक्खनी को धर खेंचा जिसका वार न खाली जाय ॥
कभी तो वार करे रोढ़ा पर कभी केहर पर देय झुकाय ॥
बड़े खिलाड़ी दोनों भइया जिनकी कोई बराबर नाय ॥
अपने अपने अब मौंडे पर दोनों वार को रहे बचाय ॥
दाव ना बैठा है ज्वानों पर किसी पर वार चले हैं नाय ॥
जैसे बादल में जल गरजे ऊपर घटा जोर कर जाय ॥
ऐसे उनमें जोगा छुपगया ज्यूं बादल में चांद छुप जाय ॥
दाबते दाबते अब जोगा को और खेतों से दिया हटाय ॥

छीन मोर्चा लिया दोनों ने जोगा दिल में गया घबराय ॥
एक होय तो लड़ूं सामने पर दो दो से नहीं बसाय ॥
किसको भेजूं मैं लशकर में मलखे पर दे खबर पहुँचाय ॥
इतनी सुनकर कासिद चल पड़ा और कम्पू में पहुँचा जाय
लगीं कचहरी जहां आल्हाकी हाथ जोड़कर कहा सुनाय ॥
जोगा गिर गया रनखेतों में ओ महाराज बनाफल राय ॥
दोनों बेटे हरनन्दन के जिनकी मार सही ना जाय ॥
छीन मोरचा लिया रोहा ने और जोगा को दिया हटाय ॥
केहर वाली अब झपटों में जोगा गया सनाका खाय ॥
जल्दी खबर लेओ जोगा की फिर क्या रुण्ड समेटो जाय ॥
इतनी सुनकर ताला बोला बेटा सुनो बनाफल राय ॥
पूत बिराने को मरवाओ तुमको शरम आवती नाय ॥
ऊंच नीच खेतों में होजाय और वहां जोगा मारा जाय ॥
क्या मुंह लेकर जाओ नैनागढ़ क्या राघो से कहो सुनाय
भर भर बोली जब वह मारे तुमसे बोल सहा ना जाय ॥
अपने बेटे को ब्याह लाये मेरे बेटे को आये गंवाय ॥
नील का टीका लगे तुम्हारे जीते जन्म मिटेगा नाय ॥
किसके पहरे अब तुम देखो अपने लो हथियार लगाय ॥
इतनी बात सुनी मलखे ने नङ्गी ली तलवार उठाय ॥
झपट के कपड़ों को पहना है रन का बाना लिया सजाय ॥
जिरह और बख्तर को पहना है ऊपर कबा लई कसवाय ॥
फौज कटीली नर मलखे की जो मरने से डरती नाय ॥
किसी के नौकर रुपये रोज के मलखे के सौ सौ के ज्वान॥
लशकर सजगया है मलखे का और सजगया वीर मलखान

कमरबन्द सब लशकर हो गया पैदल पलटन और सवार ॥
रन के दूलहा रन को सजगये सबने बांध लिये हथियार ॥
उन्ध बरनी नर ऊदल की पण्डा भीमसेन औतार ॥
करी तइयारी अब ऊदल ने दोहरे बांध लिये हथियार ॥
गाजी मनसुख पर मलखे चढ़ा रसबेदुल पर उदयचन्दराय ॥
बोला मलखे जब कल्लू से मैं मुन्शी का लेऊं बलाय ॥
सङ्ग में लेकर तुम लशकर को यहांसे कूच देओ करवाय ॥
कोई घड़ी के अब अरसे में हम खेतों में पहुँचें जाय ॥

ऊदल और मलखान का मैदान जंग में जाना

मारा चाबुक जब घोड़ों के घोड़े उड़े अम्बर में जाय ॥
काले बादल की लाली में जैसे बाज रहे मन्डलाय ॥
घड़ी ना गुजरी ना पल बीता दाखिल हुए खेत में जाय ॥
ऊपर से नीचे को देखें मलखे और उदयचन्द राय ॥
जहां पर लड़ रहे संग जोगा के रोढ़ा और केहरसिंह राय
दोनों टूट पड़े ऊपर से मलखे और उदयचन्द राय ॥
सर सर सर सर होती आवे जैसे कला कबूतर खाय ॥
कूदा कन्हैया कालीदहमें जिस दिन नथा नाग को जाय ॥
ऐसे ही कूदे दोनों भइया मलखे और उदयचन्द राय ॥
इतने लशकर वहां आ पहुँचा मुन्शी बढ़ा अगाड़ी जाय ॥
बोला मलखे जब ऊदल से भइया मेरे उदयचन्द राय ॥
बहुतसी फौज कटी जोगा की अफसर कोई दीखता नाय ॥

चारों टाप से घोड़ा मारे पांचवां मुंह से जाय चबाय ॥
आसपास के मुन्शी मारे बीच में मलखे छोड़े नाय ॥
इन्धे उन्धे दहने बांवे चमके मलखे की तलवार ॥
बहुत देर तक चली सरोही बहने लगी खून की धार ॥
ढाल टूट कर कछुए बनगई और वह तिरीं खूनमें जाय ॥
ऐसे म्यान बहें खूनों में जैसे नाग लपेटा खाय ॥
कोई २ सुमरे मां बापों को किसी का लगा राम से ध्यान
कोई कोई सुमरे है त्रियाको तेरे भाग से बच जाय जान ॥
कस्सीं खोदें और हल जोतें लकड़ी बेच करें गुजरान ॥
हमें ना मारो सिरसे वालो हम रोजगार करें फिर नाय ॥
भर भर चुल्लू अब खूनों के और माथे पर लिए चढ़ाय ॥
हम वैरागी हैं परदेशी आगे बद्रीनाथ को जाय ॥
हमको बेखता क्यों मारोहो हमको खबर रही कुछ नाय ॥
मलखे वाली अब झपटों में सब दल तिड़ोबिड़ी हो जाय ॥
कभी तो घोड़ा लगे सुरगमें और कभी पड़े गोल में जाय
हौदे हौदे पर दीखे है मलखे और उदयचन्द राय ॥
मारते मारते अब मलखे ने और पीछे को दिया हटाय ॥
दक्खिन लड़ाई में नर मलखे उत्तर गया उदयचन्द राय ॥
जहां पर लड़ रहे केहर रोड़ा ऊदल वहां पर पहुँचा जाय
हाथ पकड़ करके जोगा का और पीछे को दिया हटाय ॥
बोला जोगा अब रोढ़ा से अब तुम देखो नजर निहार ॥
ऊदल अब यहां खड़ा सामने क्षत्री मोहबे का सरदार ॥
अपने दिल में तूने जाना मेरी कोई बराबर नाय ॥
मनके परेखे अपने खोल ले दिलका ले अरमान मिटाय ॥

अन्जल उठ गया गढ़ मोहवे से सर पर मौत पुकारी आय
काल बली को सङ्ग में लेकर पहुँचा बलख बुखारे आय ॥
सम्भल के बैठो अब घोड़े पर दिलका लो अरमान मिटाय
कोई घड़ी के अब अरसे में तेरी जान बचेगी नाय ॥
लौट के जवाब दिया ऊदल ने और रोड़ा से कहा सुनाय
इसमें जरी भूंठ नहीं है तुमने ठीक दिया बतलाय ॥
और के धोके में मत रहियो रोड़ा सुनले कान लगाय ॥
बहुत से जोधा तुमने देखे देखो हाथ उदयचन्द राय ॥
पहले वार करो तुम अपना दिल का लो अरमान मिटाय
जो तुझे करना होसो करले बाकी कसर छोड़ियो नाय ॥
जो तूने कदम धरा पीछे को राजा हरनन्दन का नाय ॥
कौये मारे हैं बागों में बगले हने ताल पर जाय ॥
रण्डिया दुखिया को लूटा है पाला पड़ा मरद से नाय ॥
दो दो हाथ करो तुम मुझसे सारा हाल अभी खुलजाय ॥
नींव जमादी चन्देले ने रहा धरा बनाफल राय ॥
आन जो दे दी है आल्हा ने हमसे आन न मेटी जाय ॥
हा हा खाते को ना मारें ना भागते पर करें हम वार ॥
गिरा सेल हम नहीं उठाते पहले नहीं करें तलवार ॥
पहले चोट तुम अपनी करलो दिलका मेटलेओ अरमान ॥
मेरी चोटों में तुम रोड़ा पहुँचो सुरग लोक में जाय ॥
बात बात में गाली हो गई और बातों में हुई तकरार ॥
बातों बातों में दोनों में अब वहां चलने लगी तलवार ॥
सांग घुमाई फिर रोड़ा ने और ऊदल पर दई झुकाय ॥
बड़ा खिलाड़ी पटेबाज था जिसका नाम उदयचन्द राय ॥

बाग फेरदी है घोड़े की सेला पड़ा रेत में जाय ॥
खाली चोट पड़ी रोढ़ा की दिल में गया सनाका खाय ॥
बोला रोढ़ा जब ललकारा और ऊदल से कहा सुनाय ॥
क्या तेरी माता ने शिव सुमरा या तेरा बाप रहा इतवार ॥
मेरी चोटों से तू बच गया जानों नया लिया अवतार ॥
इतनी सुनकर ऊदल बोला और रोढ़ा से कहा सुनाय ॥
क्या तेरा सेला कच्चे लोहेका या ना कुरमा घड़ा लुहार ॥
सांग बने है मेरे मोहवे में जो बख्तर के हो जाय पार ॥
ऊदल रोढ़ा दोनों लड़ रहे अपना अपना वार बचाय ॥
दूर से देखा जब केहर ने ऐसा दाव लगे फिर नाय ॥
लाल कमान उठा पन्जे में तीर दकखनलिया चढ़ाय ॥
दांत बतीसों को घर दाबा और ऊदल पर दिया चलाय ॥
कान फोड़ कर अबघोड़े का सहटी निकल पार हो जाय ॥
बोला घोड़ा जब ऊदल का क्या सो गया उदयचन्द राय ॥
तू तो वार रोढ़ा के रोके केहर सहटी रहा चलाय ॥
बीच कान में मेरी बैठी और वह निकल पार हो जाय ॥
अब की चोटों में ना छोड़े दो में एक बचेगा नाय ॥
सहटी मारी फिर केहर ने वह जोगा ने देखी जाय ॥
हाथी हूल दिया आगे को और केहर पर पहुँचा जाय ॥
लई सरोही है जोगा ने पन्जे ली तलवार उठाय ॥
नजर घूम गई जब ऊदल की वह जोगा पर पहुँचा जाय ॥
जाय ललकारा है जोगा को और उससे यह कहा सुनाय ॥
तुमने युद्ध किया दोनों से अपना औसरा लिया चुकाय ॥
अब ना वार करो केहर पर अब तुम हटो पिछाड़ी जाय ॥

तुम देखो तमाशा अब ऊदलका मैं दोनोंसे करूं तलवार ॥
यह दोनों क्या याद करेंगे इरन्दन के राजकुमार ॥
मोठ बाजरा शामिल बोवें शामिल करें बनज व्यापार ॥
पर शाखे शामिल नहीं होने के चाहे लाख करो अवतार ॥
क्या है मसाला उन ज्वानों पर ओटे ऊदल की तलवार ॥
फिर ललकारा है रोड़ा को और केहरसे कहा सुनाय ॥
चोट दूसरी अब तुम करलो दिल का लो अरमान मिटाय ॥
नहीं कोई घड़ी के अब अरसे में बैठो स्वर्गलोक में जाय ॥
चोट दूसरीं करी रोडा ने और ऊदल पर दई झुकाय ॥
घोड़ा उड़ गया नर ऊदल का वह अम्बर में पहुँचा जाय ॥
दोनों भइया अब देखें हैं ऊदल कहीं दीखता नाय ॥
हंस कर रोडा अब कहने लगा केहर सुनलो कान लगाय ॥
चोट हमारी भारी बैठी ऊदल भागा पीठ दिखाय ॥
खटपट खटपट होती आवे जैसे कला कबूतर खाय ॥
रोडा वाले अब हाथी के घोड़ा लगा बराबर आय ॥
पिछली टाप रही धरती में दो मस्तक पर धरी जमाय ॥
सूंता तेगा जब ऊदल ने और पन्जे में लिया दबाय ॥
मारा घुमाकर हैं हौदे में और रोडा पर दिया झुकाय ॥
पहले मारा पीलवान को और धरती में दिया गिराय ॥
चार ज्वान जो थे हौदे में वह धरती में दिए गिराय ॥
जान के कोंढ़ा है रोडा को साला लगे इन्दलसी राय ॥
देख लड़ाई नर ऊदल की केहर दिल में गया घबराय ॥
देखने में तो मानस दीखे दाना बने खेत में आय ॥
जैसा नाम सुना ऊदल का निकला उससे बहुत सिवाय ॥

इकले ऊदल को झपटों में दोनों ज्वान गये घबराय ॥
तीसरा वार किया दोनोंने और तलवारको लिया उठाय ॥
मारी घुमाकर दोनों हाथ से और ऊदल पर दई चलाय ॥
कभी घोड़े पर कभी धरतीमें और कभी पेट तले होजाय ॥
चोट उका कर अब दोनों की ऊदल ले गया जान बचाय ॥
सम्भल के बैठा फिर काठी पर जिसका नाम उदयचन्दराय ॥
लिया गोलिया पानीपत का जो बख्तर को देय उड़ाय ॥
जब रग दाबी है घोड़े की वह केहर पर पहुँचा जाय ॥
मारा घुमाकर दोनों हाथसे और केहर पर दिया झुकाय ॥
काट छत्तरी डन्डे काटे चारों कलशे दिए गिराय ॥
सरद काट दी है हौदे की केहर पड़ा रेत में जाय ॥
बोला केहर जब रोडा से मैं भइया का लेऊं बलाय ॥
दोनों भइयों के मौंडे पर इकला रहा तलवार चलाय ॥
क्या रजपूती गिरवी धरदी क्या तलवार गई बल खाय ॥
कुछ यहो चत्री के ना जनमा ना हम हैं गीदड़ के लाल ॥
ऐसे यतन करो खेतों में जो दुशमन को डालैं मार ॥
बोला ऊदल जब ललकारा और केहर से कहा सुनाय ॥
पांव के पैदल को ना मारें अपना हाथी लेओ मगाय ॥
मन के परेखे अपने खोलो दोनों लो हथियार चलाय ॥
बोला केहर जब ललकारा और ऊदल से कहा सुनाय ॥
अपने जी से यह मत जाने मैंने हाथी डाला मार ॥
पूंछ पकड़ ली जब हाथी की केहर कूद हुआ असवार ॥
जब ललकारा हैं रोडा को अब क्यों रक्खी देर लगाय ॥
हाथी दाबो तुम दक्खन से मैं उत्तर में पहुँचूं जाय ॥

घेर के मारो अब ऊदल को मत कहीं निकल खेतसे जाय ॥
जब यह बात सुनी केहर की वह रोडा के गई समाय ॥
बगले मे घेरा ज्यों मैंढक को लंका घेर लई भगवान ॥
ऐसे ही घेर लिया ऊदल को दोनों झुके बराबर आय ॥
लाल कमान लई केहर ने रोडा ली बन्दूक उठाय ॥
सर सर सहटी केहर मारे वह ऊदल पर रहा चलाय ॥
ऐसे ही रोडा अब दक्खिन से अपनी रहा बन्दूक चलाय ॥
सहटो काटे है अघबर से और फल गिरे रेत में जाय ॥
ढाल अड़ाकर अपने मुंह पर गोली का दे वार बचाय ॥
कोई २ गोली लगे ढाल पर और कोई पड़े रेत में जाय ॥
कभी तो घोड़ादहने होजाय और कभी बांये को होजांय॥
कभी अटेरन पर घर फेरे और कभी मिले जमीं से जाय ॥
अब रग दाबी है घोड़े की घोड़ा उछल उछल रह जाय ॥
सौ तीरों का जो तरकश था सब केहरने दिया चलाय ॥
अनी ना बैठी कोई ऊदल पर उसके तीर लगा कोई नाय ॥
गोली ना रही जब रोडा पर खाली तोपदान रह जाय ॥
छाई उदासी अब दोनों पर सुरखी चेहरे की उड़ जाय ॥
बोला रोडा जब केहर से क्या कहीं ले गई मौत उठाय ॥
लड़ो लड़ाई तलवारों की और भालों को लेओ उठाय ॥
ऐसे नहीं जीतो ऊदल से दुशमन सहज मरेगा नाय ॥
सुनकर बातें अब दोनों की फिर ऊदल ने कहा पुकार ॥
धनधन बेटा हरनन्दन के तुमको धन्य घड़ी औतार ॥
नौलाख शहरों केजो मालिक कुछ खातिरमें लाते नाय ॥
इकले ऊदल की झपटों में ढूंडा खोज मिलेगा नाय ॥

हुई लड़ाई फिर दोनों की अन्धाधुन्ध चली तलवार ॥
खदबद खदबद तेगा चलरहा चलरही छनकछनक तलवार॥
झोके चल रहें हैं सांगों के जैसे हवा चले पुरवाय ॥
बोला घोड़ा जब खेतों में और ऊदल से कहा पुकार ॥
सौ सौहाथी का बल तुझमें अब कहां डूब गई तलवार ॥
क्या डर मानगया दुश्मनका और भगवानको दियाबिसार॥
और के धोके में मत रहियो तुझे आगे से देऊं बताय ॥
तू तो बातें करे प्यार की वह दोनों रहे घात लगाय ॥
यह मन मान गई ऊदल के और हिरदे में गई समाय ॥
उतर बछेरे से नीचे हुआ जिसका नाम उदयचन्द राय ॥
केहर वाले अब हाथी के ऊदल डटा सामने जाय ॥
सूंड़ पकड़ ली है हाथी की दोनों हाथ में लई दबाय ॥
ऐसे घुमाया है हाथी को जैसे मुगदर रहा घुमाय ॥
मारा घुमाकर जब हाथी को केहर पड़ा रेत में जाय ॥
लोट पोट कर केहर उट्ठा और रोडा से कहा सुनाय ॥
रोके रहियो तू दुशमनको मैं बङ्गले में पहुँचूं जाय ॥
जाकर खबर करूं राजा को और सारा दूं हाल सुनाय ॥
केहर भाग गया खेतों से अपनी ले गया जान बचाय ॥
नजर घूम गई जब केहर की और पीछे को देखा जाय ॥
मारते मारते यह गत करदी दल पूला सा दिया बिछाय ॥
फौज उखड़ गई है केहर की अपनी भागे जान बचाय ॥
बहुत से ज्वान मरे खेतों में और कुछ घुसे किलेमें जाय ॥
बढ़ गये छत्री गढ़ मोहबे के जिनकी मार सही ना जाय ॥
बोला मलखे जब कल्लु से मैं मुन्शी का लेऊं बलाय ॥

चौकस रहियो तुम मौंडे पर मत कहीं दुशमन पहुँचे आय ॥
अब मैं देखूं रनखेतों में जहां पर लड़े उदयचन्द राय ॥
घोड़ा बढाया नर मलखे ने और उत्तर में पहुँचा जाय ॥
ऊदल वाले अब मौंडे पर रोढ़ा रहा तलवार चलाय ॥
झपट के मलखे आगे बढ़ गया और ऊदल पर पहुँचाजाय॥
बोला मलखे जब ललकारा और ऊदल से कहा सुनाय ॥
क्या तुम खेल करो लड़कोंका यह नहीं है लड़नेकीसार॥
अब तुम हट जाओ आगे से देखो मलखे की तलवार ॥
इतनी बात सुनी ऊदल ने सुरखी गई बदन में छाय ॥
बोला ऊदल जब ललकारा और मलखे से कहा सुनाय ॥
देखो तमाशा तुम खेतों में तुमको कौन पड़ी परवाय ॥
सम्भल के बैठा है घोड़े पर निरंकार का ध्यान लगाय ॥
मार के चाबुक अब घोड़े के और हाथी से दिया मिलाय ॥
लई सरोही मानाशाही पन्जे ली तलवार उठाय ॥
मारी घुमाकर दोनों हाथ से और रोडा पर दई झुकाय ॥
गद्दा कट गई है है मखमल की ढालके टुकड़े दिए उडाय ॥
कड़ियां टूट गई बख्तर की और पन्जे में टहकी जाय ॥
होश बिगड़ गये हैं रोडा के मुंहका थूक बन्द हो जाय॥
इतने रोडा अब सम्भले था ऊदल सहटी दई चलाय ॥
सहटी निकल गई दहने को और वह पड़ी रेत में जाय ॥
फिर डाल कमनियाके गोशेको गलेमें उसके दिया पहनाय॥
मारा झटका जब ऊदल ने रोडा गिरा धरन पर जाय ॥
लोट पाट कर रोडासिंह ने फिर भुजबल पर ठोकी ताल ॥
अपने जी में यह मत जाने रोडा दिया धरन में डाल ॥

जस्सराज के लाल ॥
मेरी तेरी कुश्ती इनखेतों में बेटा ले अरमान निकाल ॥
मनके परेखे अपने खोलले दिलका ले अरमान निकाल ॥
बोला मलखे जब ललकारा और ऊदल से कहा सुनाय ॥
कहना करदो तुम रोडा का हमको रहे परेखा नाय ॥
अपने दिल में यह मत जाने मेरी कोई बराबर नाय ॥
इन्धे बेटा हरनन्दन का उन्धे डटा उदयचन्द राय ॥
दोनों जोधा मिले बराबर दिल का रहे अरमान निकाल ॥
रोडा दाबे जब ऊदल को साढे तीन कदम हट जाय ॥
ऊदल दाबे जब रोड़ा को सात कदम पीछे हट जाय ॥
कभीतो दोनों लड़ें बराबर और कभी गिरे धरनपर जाय ॥
भिड़ रूप दोनों का हो गया घुटने गढे रेत में जाय ॥
लड़ते लड़ते पहरों हो गए दो में एक गिरे है नाय ॥
छुटा पसीना जब दोनोंका जिन पर हाथ रपट रह जाय ॥
बोला मलखे जब ललकारा और ऊदलसे कहा सुनाय ॥
क्या तू भूल गया अमरा को या देवी को दिया भुलाय ॥
क्यों नहीं यादकरे आल्हाको जिसके नाम फतह होजाय ॥
इतनों सुनकर नर ऊदल ने जगदम्बा को लिया मनाय ॥
मनियादेव को जब सुमरा गुरू अमरा की आन लगाय ॥
छोड़ आसरा जिन्दगानीका फिर डटगया उदयचन्द राय ॥
लंगर पकड़ लिया रोडा और पन्जे में लिया दबाय ॥
पकड़ के पटक दिया धरती में और छाती पर बैठाजाय ॥
गरदन दाब लई रोड़ा की जब मलखे ने कहा सुनाय ॥
जान से मत मारो रोडा को ऊदल सुनले कान लगाय ॥
नाता मिट जाएगा साले का शिकवा करे पेमदे नार ॥

राज दण्ड तुम इसको दे दो तुमसे कहूं धरम की बात ॥
उस दिन छोड़ो तुम रोड़ा को डोला करै हमारे साथ ॥
यह मन मान गई ऊदल के और हिरदे में गई समाय ॥
दण्ड बांधकर अब रोडा की उल्टी मुश्कें लीं कसवाय ॥
जब ललकारा है जोगा को और ऊदल से कहा सुनाय ॥
अब इसे लेजाओ लशकर में सइयद की नजर गुजारोजाय॥
और जाकर कह देना चाचासे इसकोलो तुम कैद कराय ॥
चौकस रहियो तुम पहरेपर मत कहीं निकल बाहरै जाय ॥
बोला मलगे सब ज्वानों से अब तुम रहो बहुत हुशियार ॥
तोप बढ़ादी अब आगे को पीछे घोड़ों के असवार ॥
पहुंचा कैहर जब बङ्गले में और राजा . कहा सुनाय ॥
बड़े लड़इया है मोहवे के जिनकी मार सही ना जाय ॥
देखने में तो मानस दीखें दाना बने खेत में आय ॥
मलखे ऊदल दोनों भइया जिनकी कोई बराबर नाय ॥
लड़ते छोड़ा है रोडा को रन में फेंक रहा तलवार ॥
मुझको खबर नहीं पीछे की जाने किसने मानी हार ॥
तुम्हें बुलाने को आया हूं अब तुम सुनलो कान लगाय ॥
बिना तुम्हारे वहां पर जाये दुशमन सर होने का नाय ॥

रोड़ासिंह का गिरफ्तार होना और राजा हरनन्दन का मैदान जंग में जाना

जब यह बात सुनी कैहर की राजा भरा रोस में जाय ॥
खड़ा हो गया सिंहासन से नङ्गी ली तलवार उठाय ॥

पेटी बांधी सिंह खवन की जिस पर तेग रपट रह जाय ॥
दूसरे तबे जड़े बख्तर में जो छाती में रहे छिपाय ॥
फिर ललकारा पीलवान को और राजाने कहा सुनाय ॥
जन्द सजादे मेरे हाथी को अब कुछ काम देरका नाय ॥
मुन्डा हौदा धरो हाथी पर कलस सुनहरी दो धरवाय ॥
हाथी हज गया जब राजा का वह हौदे में बैठा जाय ॥
मारू बाजा जब बजने लगा फौजें हुई इकट्ठी आय ॥
अली गोलमें जब धोंसा बजा सबको मार ही मार सुहाय ॥
नौलख चत्री हरनन्दन के दल की नहीं पड़े शुम्मार ॥
आगे आगे पैदल पलटन पीछे घोड़ों के असवार ॥
चार कोस तक अब दल चौड़ा झण्डे लगे स्वर्ग में जाय ॥
कोई घड़ी के अब अरसे में दाखिल हुआ खेतमें जाय ॥
लशकर देखा जब मलखे ने और ऊदल से कहा सुनाय ॥
यह दल टूटा नन्दन का फौज ही फौज पड़े दिखलाय ॥
हम तो जाने थे पिरथी को भारी दिल्ली का सरदार ॥
उससे ज्यादा हरनन्दन है जिसके दल का नहीं शुम्मार ॥
हमको अगवां यह सूझे है डोला सहज मिलेगा नाय ॥
बोला ऊदल जब मलखे से भइया सुनो बनाफल राय ॥
अब तुम खबर करो कम्पू में हरनन्दन खेत बुहारा आय ॥
लौट के जवाब दिया मलखे ने मैं ऊदल का लेऊं बलाय ॥
ऐसी बातों को मत बोलो मेरे जामे में नहीं समाय ॥
इकले राजा के आने से अपने दिलमें गया घबराय ॥
देश देश के यहां राजा हैं छोटे और बड़े सरदार ॥
हंसी करेंगे हम दोनों की डर गये मोहबे के सरदार ॥

चौकस हो जाओ जम मौडे पर जो कुछ करे श्री भगवान ॥
दक्खन खूंठ में अब तुम पहुँचो उत्तर खूंट रहे मलखान ॥
बोला मलखे जब ललकारा सरदारों से कहा पुकार ॥
नौकर चाकर तुम्हें ना जानूं तुम तो लागो भाई हमार ॥
पानी रखलो गढ़ मोहबे का रखलो मां बापों का नाम ॥
यही मोरचा है आखिर का फिर कुछ नहीं पड़ेगा काम ॥
इतनी सुनकर अफसर बोले ओ रसनीत बनाफल राय ॥
नमक तुम्हारा हमने खाया जो काया में गया समाय ॥
तुम्हें छोड़ कर कहां जावेंगे और हम जीवेंगे कै साल ॥
नमक हरामी करेगा जो कोई वह नहीं है क्षत्रीका लाल ॥
चाहे उड़ादो तुम तोपों से चाहे फांसी दो लगवाय ॥
उजर नहीं है हम ज्वानों को चाहे जहां देओ अड़ाय ॥
बढ़ गये क्षत्री अब खेतों में आगे बढ़े बनाफल राय ॥
उन्धे फौज बढ़ी राजा की केहर झुका बराबर आय ॥
हुआ सामना जब दोनों को उल्टे डन्ड लेऊं कसवाय ॥
मलखे मलखे को ललकारा और ऊदल से कहा पुकार ॥
तुम घाती राजा हो मोहबे के तुमको शरम आवती नाय ॥
इकला करके तुम दोनों ने रोड़ा को लिया कैद कराय ॥
अब मैं देखूंगा दोनों को उल्टे डन्ड लेऊं कसवाय ॥
लौट के जवाब दिया मलखे ने और केहर से कहा सुनाय ॥
कुमक देख के अब दोऊ की और तू गया गरभ में छीन ॥
तुमसा बेहया नहीं दूसरा तुमको शरम आवती नाय ॥
छोड़के इकला तुम रोड़ा को अपनी भागे बचाय ॥
इतनी सुनकर राजा बोला और केहर से कहा सुनाय ॥

क्यों बकवाद करै दुशमन ने नाहक झगड़ा दिया बढ़ाय ॥
बत्ती डाल देओ तोपों में अब क्यों रक्खी देर लगाय ॥
लौटा केहर अब पीछे को और तोपों पर पहुँचा जाय ॥
गोलन्दाजों को ललकारा मैं ज्वानों का लेऊं बलाय ॥
ऐसी तोपों को तुम छोड़ो दुशमन खेत छोड़ भगजाय ॥
यह मन मानी गोलन्दाजों के और हिरदे में गई समाय ॥
पड़ा पलीता जब गुलदम का अगनी चमक चमक रह जाय ॥
तोपें चल रहीं हैं राजा की धुआ गया सुरग में छाय ॥
अजगर तोप चलीं राजा की जिनकी नहीं पड़े शुम्मार ॥
इन्बे तोप चली मोहदे की जिनकी जाय दूरतक मार ॥
उड़े गुब्बारे अब धुवे के सूरज गया धुन्द में छाय ॥
यह गत होगई हैं खेतों में दिन की रात पड़े दिखलाय ॥
इन्बे लड़ाई है तोपों की उन्बे करा बीन की मार ॥
बीच लड़ाई हथियारों की और वहां चलने लगी तलवार ॥
बोला ऊदल जब ललकारा मैं ज्वानों का लेऊं बलाय ॥
ज्वान बनाये हैं लड़ने को घर में बैठकर मरै बलाय ॥
घर में पड़ कर जो मर जावे उसका मांस चील ना खाय ॥
तेग के मुंह पर जो मर जावे सीधा पड़े सुरग में जाय ॥
गंगा धारा की परभी है तीरथ फिर मिलने का नाय ॥
फाग समय की सोली जानों खेलो अब तुम खुब अघाय ॥
उन्ये फौज बढ़ी केहर की जब मलखे ने देखा जाय ॥
बोला मलखे जब ऊदल से भइया सुनो उदयचन्द राय ॥
दुशमन आ पहुँचा मोंडे पर तुझे आगे से देऊं बताय ॥
हाथ जो डालो तुम राजा पर तुमको जेबा देता नाय ॥

उसकी बरनी है ताला से दोनों लड़ैं खेत में जाय ॥
पहला हमारा किया केहरने और ज्वानोंको दिया बढ़ाय ॥
लोहे की टट्टी वह दोनों हैं मलखे और उदयचन्द राय ॥
मारता आवे बढ़ता जावे बेटा हरनन्दन का राय ॥
बोला मलखे सरदारों से क्षत्री सुनलो कान लगाय ॥
दुशमन आगया अब मौडेपर अबक्यों रक्खी देर लगाय ॥
इतनी बात सुनी ज्वानों ने नङ्गी सूंत लई तलवार ॥
बढ़ गये क्षत्री गढ़ मोहबे के पैदल पलटन और सवार ॥
दहने बांवे बढे रिसाले पैदल झुके बीच में आन ॥
दहने रिसाले हैं कन्धारी बांवे असली मुगल पठान ॥
गांझ वाले हैं मौडे पर पीछा भंगड़ रहे दबाय ॥
अली गोल में झुके अफीमी जिनकी पलक खुले है नाय ॥
अली अली करके बढे रुहेले सइयद बढेऔर मुगल पठान ॥
हर हर करके क्षत्री बढ़ गये जिनका लगा राम से ध्यान ॥
पैदल से तो पैदल अड़ गये असवारों से अड़े असवार ॥
सूंड लपेटा हाथी हो गये हौदों की जा मिली कतार ॥
पीलबान आपस में लड़ रहे अपना अंकुश रहे चलाय ॥
धूप दक्खनी चली वहां पर लम्बी सैफ झड़ाका खाय ॥
चली मगरबी आहन गरबी रूमशाम की चली कटार ॥
चली सरोही मानाशाही कोटा बूंदी की तलवार ॥
सांगें चल रहीं नितियागढ़ की जो पसलीमें जाय समाय ॥
सरसर सरसर सहटी चल रही जैसे मघा नक्षत्र गहराय ॥
मेह के माफिक गोली बरसे धरती भंवर कली धह जाय ॥
खदबद खदबद तेगा चल रहा जिसकी मार सहीना जाय ॥

पड़ें भेड़िया ज्यों रेवड़ में चीरे फाड़ और खा जाय ॥
ऐसे ही लड़ रहे दोनों भइया मलखे और उदयचन्द राय ॥
ज्वान गरीबों को ना मारें ना बूढे पर करे तलवार ॥
ढूंढ ढूंढ कर उनको मारें जिन पर हो देखे तलवार ॥
नदी नरवदा का जल गरजे और गंगा को गरजे धार ॥
ऊदल मलखे की झपटों में छत्री छोड़ भगे हथियार ॥
एक को मारें दो मर जावें तीसरा दहशत से मर जाय ॥
नर मलखे की अब दहशत से पीछा फिरके देखे नाय ॥
जिस हाथी को ऊदल पकड़े हाथी गौंट खेत में जाय ॥
जौन से छत्री को पर झपटे उसका डाले खोज मिटाय ॥
हौदे हौदे पर दीखे है वटा बच्छराज का लाल ॥
बहुत से हौदे खाली कर दिये सरदारों को डाला मार ॥
देख लड़ाई नर ऊदल की राजा भरा रोस में जाय ॥
गुस्सा खाया जब राजा ने और फौजों पर पड़ा अड़हाय ॥
चारता आवे है फौजों को दिलका रहा अरमान निकाल ॥
नीचे मारे भूरी हथनी ऊपर राजा करे हलाल ॥
ऊदल वाले अब मौंड पर हाथी झुका सामने जाय ॥
जातेही वार किया राजाने और सहटी को दिया चलाय ॥
ऊदल हट गया है आगे से सहटी का दिया वार बचाय ॥
ना अपना वारकिया ऊदल ने राजा बहुत खुशी होजाय ॥
दिलमें राजा ने यह जाना अब डर गया उदयचन्द राय ॥
गरजा राजा अब हौदे में और ऊदल से कहा सुनाय ॥
धोके न रहियो राढ़ासिंह के उसको कैद लिया करवाय ॥
जाने न पाओ तुम खेतों से दोनों को लूं कैद कराय ॥

दोनों बेटों के बदले में सबका डालूं खोज मिटाय ॥
सुनके बातें अब राजा की मलखे भरा रोस में जाय ॥
ना ये बानासुर राजा है ना यह परशराम औतार ॥
ना यह है बेटा बाली का ना अंजनी का राज कंवार ॥
इन चारों में ना यह को जो यह हमको डाले मार ॥
जिस कर्ता ने इनको जनमा वही हमारा हैं करतार ॥
हमको मना किया सइयद ने करना नहीं जान के वार ॥
मना ना करता चाचा हमको देते अभी जान से मार ॥
ताना मारेगा फिर आल्हा हमसे बोल सहा ना जाय ॥
जो हमने मार दिया राजा को ताना समधी का मिटजाय ॥
बडा बनाया हैं राजा को छोटे बने बनाफल राय ॥
राजा बढ़ता जाय आगे को पीछे हटे बनाफल राय ॥
इतने हट गये है पीछे को कम्पू डेढ़ कोस रह जाय ॥
जोड़ी छूटी हलकारे की और कम्पू में पहुँची जाय ॥
जहां दरबार लगा आल्हा का बैठा जहां जगन्सी राय ॥
हाथ जोड़कर हलकारा बोला ओ महाराज बनाफल राय ॥
बलख बुखारे का हरनन्दन राजा डटा खेत में जाय ॥
मार मार कर सब फौजों को डेढ़ कोस तक दिया हटाय ॥
बड़ा लड़इया वह राजा हैं जिसके बल का नहीं शुम्मार ॥
ऊदल मलखे दोनों हारे उनसे नहीं झिली तलवार ॥
चौकस होजाओ तुम जल्दीसे अपने लो हथियार लगाय ॥
जब यह बात सुनी आल्हाने धक्का लगा कलेजे जाय ॥
ताला सइयद को ललकारा मैं चाचा का लेऊं बलाय ॥
जुलम बीत गये परलो होगई अबकुछ रहा ठिकाना नाय ॥

किसके पेरे अब तुम देखो यह सर पड़ी तुम्हारे आय ॥
जल्दी जाओ तुम खेतों में उनको धीर बन्धाओ जाय ॥
नहीं होय हंसाई सब मुल्कों में जग में थूकेगा संसार ॥
इकले राजा की झपटों में सब राजों ने मानी हार ॥
ब्याह के छोड़े हैं दुनिया में क्वारी मांग छोड़ते नाय ॥
क्या मुंह लेकर अब हम जावें क्या माता से कहें सुनाय ॥
करो तइयारी तुम जल्दी से अपने लो हथियार लगाय ॥
जाकर खबर लेओ दोनोंकी मत कहीं दोमें एक मर जाय ॥
जो कहीं मरगये ऊदल मलखे फिर क्यारुन्ड समेटो जाय ॥
इतनी बात सुनी ताला ने सुरखी गई बदन में छाय ॥
बैठा हो गया वह कुरसी से पन्जे ली तलवार उठाय ॥
क्यों घबरावे जस्सराज के तुमको कौन पड़ी परवाय ॥
देख बनेती मेरी खेतों में ना यह परशराम औतार ॥
राजा हरनन्दन के मोंडे पर चमके सइयद की तलवार ॥
फिर ललकारा है बेटों को शहजादों से कहा सुनाय ॥
अजन्द अली फरजन्द अली हुसेन अलीको लियाबुलाय ॥
शेख नूरदीन जमाल सइयद दोनों डटे सामने आय ॥
जान मौहम्मद खानमौलवी मौहम्मद अलीभी पहुँचाआय ॥

ताला सइयद का राजा हरनन्द के मुकाबले के वास्ते जंग में जाना

बाइस बेटे हैं सइयद के घर की तीन लाख तलवार ॥
दो से एक लड़े बलधारी जिनके बलका नहीं शुम्मार ॥

हुक्म सुनाया जब सइयद ने सबदल कमरबन्द हो जाय ॥
उल्टी बम्ब सब सीधी करदीं मारु बाजा दिया बजाय ॥
हाथी चढ़इया चढे हाथी पर और घोड़ों पर चढे सवार ॥
पैदल पलटन और रिसाले आगे चले छड़ी बरदार ॥
दबी बाईसी मुरके झन्डा घूमते जावें लाल निशान ॥
परा बांध दिया है फौजोंका जिसका ना हो सके बयान ॥
उठ गई आंधी अब पच्छिम से होता चला जाय अन्धकार
आगे जा रहे घोड़े वाले पीछे उसके शुतर सवार ॥
डबल कूच बोला ताला ने दाखिल हुआ खेत में जाय ॥
दाब किनारा लिया दक्खनका अपना मोरचा दिया लगाय
देख लड़ाई हरनन्दन की ताला गया सनाका खाय ॥
चार कोसतक लोहा बजरहा फौज ही फौज पड़े दिखलाय
बोला ताला जब मौंडे पर सब बेटों से कहा सुनाय ॥
गंगा धारा की परभी है फिर यह वक्त मिलेगा नाय ॥
जब यह बात सुनी बेटों ने उसके दिल में गई समाय ॥
अली २ करके सारे बढ़गये दिलमें खुदा को लिया मनाय
यह गत करदी सबने मिलकर एक ही सङ्ग पड़े अहड़ाय ॥
फिर ललकारा ताला सइयद को और बेटों से कहा सुनाय
धोके न रहियो तुम खेतों के दगा में पुरखा डाला मार ॥
चौकस रहियो तुम मौंडे पर सब बेटों से कहा पुकार ॥
अब मैं देखूं उन दोनों को मलखे और उदयचन्द राय ॥
जैसे भेड़िया पड़े रेवड़ में चीरे फाड़े और खा जाय ॥
ऐसे ही घुस गया वह फौजों में जिसका नाम तलंसी राय
जब रग दाबी है घोड़े की घोड़ा काल बरन हो जाय ॥

मारता जावे बढ़ता जावे भाला चमक चमक रह जाय ॥
कोई घड़ी के अब अरसे में वह मलखे पर पहुँचा जाय ॥
नजर घूमगई जब मलखे की उसको सइयद पड़ा दिखाय ॥
करी सलामी जब मलखे ने ताला ले गया शीश चढ़ाय ॥
बोला सइयद फिर मलखे से बेटा सुनो बनाफल राय ॥
मार मवासे बावनगढ़ के सब मोहबे से दिये मिलाय ॥
जितने राजा छत्रपति थे सबका डाला मान घटाय ॥
राजा हरनन्दन के मौंडे पर कैसे हटा पिछाड़ी जाय ॥
इह पर जबाव दिया मलखे ने चाचा सुनो तलन्सी राय ॥
बड़ा बनाया हरनन्दन को छोटे बने बनाफल राय ॥
मैं ना कमती हुं राजा से अब देखो मलखे का वार ॥
जैसा बाप लगे रोड़ा का वैसे ही पुरखा लगे हमार ॥
हमें मुनासिब ना ऐसा था जो राजा पर डालें हाथ ॥
तुम्हारी बराबर का राजा है उससे जाय करो दो हाथ ॥
राजा हरनन्द के मौंडे पर अब तुम हटो सामने जाय ॥
लौट के जबाव दिया सइयद ने और मलखेसे कहा सुनाय
कौन खूंट में ऊदल लड़रहा उसका हाल देओ बतलाय ॥
इस पर जबाव दिया मलखे ने चाचा सुनलो कान लगाय
पूरब खूंटों में ऊदल है अब तुम सुनलो कान लगाय ॥
जब से तेग चली खेतों में किसी को खबर किसी की नाय
इस पर जबाव दिया सइयदने और मलखे से कहा सुनाय
चौकस रहियो तुम खेतों में वह मैं तुमसे कहूं सुनाय ॥
दक्खिन खूंट में मेरे बेटे हैं अपना मोरचा रहे लगाय ॥
मैं जाकर देखूं नर ऊदल को पूरब खूंटमें पहुँचूं जाय ॥

लोभ की मारी जो दुनियां है क्षत्री गये लोभ में छाय ॥
छोड़ आसरा जिन्दगानी का सब रनशूर पड़े अड़राय ॥
इन्घे फौज बढ़ी ऊदल की उन्घे मलखे की बढ़ जाय ॥
इन्घे फौज बढ़ी सइयद की तीनों खूंटे लई दबाय ॥
बीच में घेरा हरनन्दन को और चौबन्दी ली करवाय ॥
अपने अपने अब मौंडे पर सारे झुके बराबर आय ॥

ताला सइयद और राजा हरनन्दन का मुकाबला

पैदल से तो पैदल अड़ गये ऊपर बाग थाम असवार ॥
चली बन्दूकें और पिस्तौलें गोली निकल जाय उस पार ॥
सूंड लपेटा हाथी हो गये हौदे मिले बराबर जाय ॥
छज्जे मिल रहे अम्बारी के जो आपस में रहे टकराय ॥
इन्घे ज्वान लड़े हरनन्द के उन्घे झुके बनाफल राय ॥
दोनों पल्ले मिले बराबर जोधा एक से एक सिवाय ॥
धूप दक्खनी चली वहां पर लम्बी सेफ झड़ाका खाय ॥
भाला चल रहा नागदमन का जो पसली में जाय समाय ॥
चली सरोही मानाशाही कोटा बूंदी की तलवार ॥
चला गोलिया पानीपत का जो बख्तर के निकले पार ॥
कटे मसूड़े हैं हाथी के कल्ले घोड़ों के कट जाय ॥
भुजबल थक गए हैं ज्वानों के बिना हाथ के पड़े दिखाय ॥
कत्ता चले विलायत वाला घोड़ा काटे मय असवार ॥
तेगा चल रहा बरदवान का जिस पर दो उङ्गल की धार ॥

इधर के क्षत्री उन्चे हो गये उधर के इन्चे पहुँचे आय ॥
छाती मिल गई रजपूतों की सीना मिला बराबर जाय ॥
दाव रहा ना तलवारों का पड़ गई पेशकब्ज की मार ॥
किसी की मूंठ चले दहने को किसी की बांवे निकले पार ॥
ऐसे रपटे हैं थौंदों में मछली रपट ताल में जाय ॥
यह गत करदी है खेतों में दिन की रात पड़ें दिखलाय ॥
नदी नर्वदा का जल गरजे ऊपर घटा जोर कर जाय ॥
ऊदल मलखे की गरजों में सब दल काई सा फट जाय ॥
जिस हाथी को ऊदल दाबे हाथी बैठ खेत में जाय ॥
असली क्षत्री गढ़ मौहबे के जिनको मार हीं मार सुहाय ॥
बोला ताला जब ललकारा और ज्वानों से कहा सुनाय ॥
कुम्भकरण और रावण हो गये जोधा मेघनाद कहलाय ॥
जरासिंध दुर्योधन हो गये जिनकी सौ भइयों की बांय ॥
मानस जाये की क्या गिनती जिस पर करें पखेरू छांय ॥
ऐसे बली हुए दुनियां में सबको लिया काल ने खाय ॥
स्वाद के कारण धरम छोड़ दे सङ्गत करे नीच से जाय ॥
जान के कारण रन से भागे उसे भी काल छोड़ता नाय ॥
बोली मारी जब ताला ने सब रनशूर पड़े अड़राय ॥
अपने पराये की सुध ना है सबको मार ही मार सुहाय ॥
आंधी उठ गई चौतरफा से केहर बहुत गया घबराय ॥
खेत छोड़ कर केहर भागा यह राजा ने देखा जाय ॥
बोला राजा जब केहर से मैं बेटों का लेऊं बलाय ॥
मैंने तो जाना शूरवीर हो कायर हुए खेत में आय ॥
लौट के जबाव दिया केहर ने दादा सुनलो कान लगाय ॥

आ गई आंधी है पच्छिम से या पूरब से दवा पहाड़ ॥
चारों खूंटमें लोहा बज रहा अब आंखों के खुले किवाड़ ॥
या तो दाने हैं लंका के जिनकी जात बनाफल राय ॥
मार मार के उन ज्वानों ने सब फौजों को दिया हटाय ॥
सहीशांझ तो सोवे गृहस्थी जोगी सोवे आधी रात ॥
ऊदल मलखे कभी ना सोवें ये दिन रात करें तलवार ॥
मानुस जाये वह ना दीखें कोई देवता पहुँचे आय ॥
देखने में तो लौंडे दीखें दाने बने खेत में आय ॥
जब यह बात सुनी राजा ने गुस्सा भरा बदन में जाय ॥
बोला राजा जब ललकारा पीलवान से कहा सुनाय ॥
बजे कुहाड़ा मेरे हाथी पर अब क्यों रक्खी देर लगाय ॥
मारा अंकुश जब हाथी के और आगे को दिया बढ़ाय ॥
ताला सइयद के मौंडे पर राजा डटा सामने जाय ॥
बोला राजा जब सइयद से ताला सुनलो कान लगाय ॥
धोके न रहियो तुम औरों के तुझे आगे से देऊं बताय ॥
जाने न पावे तू मोहबे तक मोहबा लाख कोस हो जाय ॥
लौट के जबाव दिया सइयद ने राजा सुनले कान लगाय ॥
गरभ की बातों को मत बोले सदा गरभ रहने का नाय ॥
गरभ किया था लंकापति ने लंका मिली गरद में जाय ॥
जब से गरभ किया सागर ने जल खारी कोई पीता नाय ॥
नहीं इन्साफ तेरे दिल में है तूने डाली शरम उतार ॥
क्या है मसाला तुझ दुशमन पर ओटे मलखे की तलवार ॥
बड़ा जानकर तुझको छोड़ा ना लौंडों ने डाला हाथ ॥
आपही हटगये है पीछे को और रख लई यहां तेरी बात ॥

बादशाह दिल्ली का नामी जिसकी सब शहरों में धाक ॥
तीर शब्दभेदी के उस पर सहटी लगे बोल के साथ ॥
आठ धवल और सोलह शूरमा शहजादों की नहीं शुम्मार
हुई लड़ाई जब मलखे से दिन और रात चली तलवार ॥
छत्तर काटा पिरथीराज का कलंगी पड़ी धरन में जाय ॥
ब्याह रचाया ब्रह्माजीतका उसका दिया वहां माम घटाय ॥
बांदी करके बेला छोड़ी जिनकी जात बनाफल राय ॥
छत्रपति और मुकुटबन्द थे सबके दन्ड लिये बन्धवाय ॥
पटहत भइया कोई ना छोड़ा सब हलजोता किये किसान ॥
जान कंगला तुझे छोड़ा था बलख बुखारे के दरम्यान ॥
जो धन रक्खो रजपूतीका अब तुम करलो दो दो हाथ ॥
जो तेरी मन्शा ना लड़ने की डोला करो हमारे साथ ॥
जब यह बात सुनी राजा ने गुस्सा गया बदन में छाय ॥
लई भगौती हरनन्दन ने नङ्गी ली तलवार उठाय ॥
बोला राजा जब ललकारा ताला सुनो हमारी बात ॥
लौट जीभ को भीतर करले अपने भींच बतीसों दांत ॥
ऐसी बातों को मत बोले मेरे जामे में नहीं समाय ॥
मार थपकड़े मुंह तोड़ डालु तेरा घोड़ा लेऊं छिनाय ॥
जिन्दा ना लौटे मौहबे को यहां तेरी जान बचेगी नाय ॥
बोला ताला जब ललकारा और राजा से कहा सुनाय ॥
काल बली को तु सङ्ग लेकर अब खेतों में पहुँचा आय ॥
सन्भल के बैठो अब हौदे में सर पर मौत पुकारी आय ॥
ज्वान गरीबों के मारे से इनका सेर चून घट जाय ॥
मेरी तेरी बरनी रनखेतोंमें सारा हाल अभी खुल जाय ॥

बातों बातों में झगड़ा हो गया और खेतों में हुई तकरार
सांग उठाई हरनन्दन ने जिसका वार न खाली जाय ।।
मारी घुमाकर दोनों हाथ से और ताला पर दई चलाय ।।
बड़ा खिलाड़ी पटेबाज था जिसका नाम तलन्सी राय ।।
काट पैंतरा गया दहने को सेला पड़ा रेत में जाय ।।
खाली वार गया राजा का दिल में गया सनाका खाय ।।
इन्हीं सांगों से गज काटे और घोड़ों को मारा जाय ।।
यही सांग अब धोका दे गई बेशक काल पुकारा आय ।।
बोला ताला जब ललकारा और राजा से कहा पुकार ।।
क्या तेरा सेला कच्चे लोहे का या ना कुरमी घड़ा लुहार
सांग बने हैं मेरे मोहबे में जो बज्जर में जाय समाय ।।
दूसरी चोट और तुम करलो दिल का लो अरमान मिटाय
उठा कमान लई राजा ने और पंजे में लई दबाय ।।
गोरी गोरी उङ्गलो से धर दावा गोशे से गोशा मिल जाय
खेंच कमान को नरघा करलिया रौंदा पड़ा कान पर जाय
पांव अड़ाकर अब हौदेमें और ताला पर दिया झुकाय ।।
कान फाड़ दिया है घोड़े का और पसली में निकला पार
बोला घोड़ा अब खेतों में और ताला से कहा पुकार ।।
अबकी चोटों में ना छोड़े दो में एक बचेगा नाय ।।
गीदड़ मौत मरे खेतों में क्यों मोहबे को दाग लगाय ।।
किसके पहरे तू देखे है अब क्यों रक्खी देर लगाय ।।
तब रग दाबी है घोड़े की घोड़ा काल बरन हो जाय ।।
पिछली टाप रही धरती में अगली हौदे से मिल जाय ।।
सूंता तेगा बरदवान का और सहयद ने लिया उठाय ।।

दांत बतीसों को घर दाबा और हौदे में दिया झुकाय ॥
पहले मारा पीलवाल को उसे धरती में दिया गिराय ॥
इतने राजा अब सिंभले था वार दूसरा दिया चलाय ॥
गद्दी कट गई है मखमल की ढाल के टुकड़े दिये उड़ाय ॥
कड़ियां झड़ गई हैं बख्तर की और पंजे पर टहकी जाय॥
सात पेच चीरे के कट गये जो भर माथे में गढ़ जाय ॥
देख लड़ाई अप ताला की राजा बहुत गया घबराय ॥
जब ललकारा है केहर को मैं बेटे का लेऊं बलाय ॥
धोके न रहियो तू औरों के तुझे आगे से देऊं बताय ॥
अब तुम भाग चलो झम्पूको यहां पर जान बचेगी नाय ॥
झपट के पकड़ो दरवाजे को किले के अन्दर पहुँचो जाय ॥
हुकम सुनादो गोलन्दाजों को वो तोपों को देंय चलाय ॥
जितनी तोपें किले के ऊपर बत्ती एक सङ्ग पड़ जाय ॥
यह मन मान गई के और हिरदे में गई समाय ॥
हट गया केहर अब पीछेको और लशकर में पहुँचा जाय॥
भागता देखा जब ऊदल ने वह केहर पर पहुँचा जाय ॥
नजर घूम गई नर मलखे की उसने घोड़ा दिया उड़ाय ॥
कोई घड़ी के अब अरसे में वह ऊदल पर पहुँचा राय॥
बोला मलखे जब ऊदल से भइया मेरे उदयचन्द राय॥
हा हा करते को ना मारो ना भगते को पकड़ो जाय ॥
गिरा सेल हम नहीं उठावें पहले तेग चलावें नाय ॥
आन जो देदी चन्देले ने हमसेआन न मेटी जाय ॥
मैंढ टूट जाय गढ़ मोहबे की फिर मरजाद बचेगी नाय ॥
तुम्हें मुनासिब ना ऐसा है जो भगते को पकड़ो जाय ॥

फौज उखड़ गई इरनन्दन की अब कोई धीर बंधइयानाय ॥
बहुत से ज्वान मरे खेतों में बहुत से भागे जान बचाय ॥
भिड रूप ज्वानों का हो गया अपने छोड़ भगे हथियार ॥
डाबते आवें हैं फौजों को चत्री मोहबे के सरदार ॥
यह नत देखी जब राजा ने पीलवान से कहा सुनाय ॥
बजे कुहाड़ा मेरे हाथी पर अब क्यों रक्खी देर लगाय ॥
घड़ी ना गुजारी ना पल बीचा दाखिल फाटक हर होजाय॥
हुकम सुनाया जब राजा ने गोलन्दाजों से कहा सुनाय ॥
पड़े पलीता सब तोपों में अब क्यों रक्खी देर लगाय ॥
हुकम सुनाया जब राजाने गोलन्दाजों से कहा सुनाय ॥
पड़े पलीता सब तोपों में अब क्यों रक्खी देर लगाय ॥
पड़ा पलीता जब गुलदम का धुवां गया स्वर्ग में छाय ॥
किला बना था वहां कैचीका गोला डेढ कोस तक जाय॥
उड़े गुब्बारे जब गुलदम के सूरज गया धुन्दमें छाय॥
अड़ अड़ करके तोपें चल रहीं बीच में बन्दूकों की मार ॥
फौजें उखड़ गईं मोहबे की तोपों की जब चल गई बाड ॥
बोला मलखे जब खेतों में और ताला से कहा सुनाय ॥
जुलम बीच गये परलो हो गई अब कुछरहाठिकानानाय ॥
तेग लड़ाई से ना हारें चाहे रोज चले तलवार ॥
उसकी तोप चलें ऊपर से किलेसे हो रही मार ही मार ॥
इस पर जबाब दिया सइयद ने मैं मलखे का लेऊं बलाय ॥
क्या रजपूती गिरवी धरदी क्या दम रहा बदन में नाय ॥
क्या तेरा घोड़ा बूढ़ाहो गया क्या गलरहा भुजों में नाय ॥
घोड़े उड़ने हैं मोहबे के आवे स्वर्ग में पहुँचेजाय ॥

अब रग दाबो तुम घोड़ों की जो बुरजों पर पहुँचे जान॥
जाकर मारो गोलन्दाजों को और धरती में देओगिराय॥
कोड़ा पटका जब घोड़ों पर अम्बर पंख दिये फैलाय॥
टूटे बछेरे गोलन्दाजों जैसे कला कबूतर खाय॥
दोनों पहुँच गये बुरजों पर मलखे और उदयचन्द राय॥
जैसे तोता आम को काटे और तम्बोली पान कोजाय॥
ऐसे ही झपटे दोनों भइया मलखे और उदयचन्द राय॥
बहुत से ज्वानों को वहां मारा बहुत से नीचे दियेगिराय॥
बहुत से भागे तोप छोड़कर अपनी ले गये जान बचाय॥
मार बन्द जब हुई तोपों की कहने लगा तलन्सी राय॥
बोला ताजा जब ललकारा और ज्वानों से कहा सुनाय॥
फाग महीने की होली है अब तुम खेलो खूबअघाय॥
बढ़ो चत्री अब आगे को दिनमें खो तुम लूट कराय॥
फौज कटीली गढ़ मोहबे की जो मरने से डरती हाय॥
जब यह बात सुनी सइयद की सबके दिलमें गई समाय॥
पैदल पलटन और रिसाले एक ही सङ्ग पड़े अड़ड़ाय॥
तोड़ मूसले को फाटक के और वो धंसे शहर में जाय॥
देखा फौजें जब रइयत ने दिल गई सनाका खाय॥
अव्वल मौडे पर बौना है डाकू कुरियल का सरदार॥
गली गली में पैदल हो गये कूंचे कूंचे में असवार॥
जहां दरबार लगा चौंपड़ का चमके बौना की तलवार॥
लूट दुकानें ली बौना ने जो कुरियल का था सरदार॥
चकिया चाल पड़ी घरघर में अब कोई रच्छा सात नाखाय॥
रइयत परजा सारी रोवे पैमा तेरा बुराहोजाय॥

शेर शीतला तुमको मर गईं सारी मर गईं भूल बलाय ॥
होते ही पैदा जो मर जाती रहता कोई परेखानाय ॥
ब्याह नहीं ये काल निशानी ऐसी हुई जगत में नाय ॥
ऐसी दुखिया का ब्याह होवे घर घर लूट दई करवाय ॥
ऊदल मलखे दोनों पहुंचे ताला बढ़ा अगाड़ी जाय ॥
पहरेदार पहरों पर मारे और बंगले में पहुँचे जाय ॥
देख के सूरत नर मलखे की बंगला सुन्नसान हो जाय ॥
मुंशी भागने लगे बंगले से बगल में वस्ता रहे दबाय ॥
बोले मुंशी जब बंगले में और मलखे से कहा सुनाय ॥
हम तो नौकर लिखने पढ़ने के कुछ तलवार चलावेंनाय ॥
तख्त के नीचे राजा घुस गया केहर भागा जान बचाय ॥
नजर घूमगई जब मलखे की और राजा को देखा जाय ॥
डाल कपनियां के गोशे को फिर राजा को लिया सरकाय ॥
जब यह देखा है सइयद ने वह मलखे पर पहुँचा जाय ॥
जैसा पिता लगे रोडा का वैसे ही अपना समझो जाय ॥
हाथ जो डालो तुम राजा पर तुमको जेबा देता नाय ॥
होय हंसाई सब मुल्कों में दुशमन हंसे पिथौरा राय ॥
जो तुम मारो अब राजा को सारा काम भंग होजाय ॥
जब यह बात सुनी राजा ने फिर मलखे से कहा सुनाय ॥
तुम नामी राजा के लड़के हो बेटा वच्छराज के लाल ॥
जब ऐसे शूर होय मोहबे में क्यों ना राज करे परमाल ॥
अपना करके मुझे छोड़ दो जिन्दा गुन भूलुंगा नाय ॥
डोला दे दूंगा बेटी का इन्दल का दूं ब्याह कराय ॥
हाथ पकड़ मलखे से बोला मैं बेटे का लेऊं बलाय ॥

ताबेदारी में हाजिर हूं मुझको कोई उजर है नाय ॥
बोला मलखे जब ललकारा और ज्वानों से कहा सुनाय ॥
जो कुछ लूट करी नगरी में तुमको माफ दई करवाय ॥
जो अब हाथ डाले रइयत पर उसके हाथ देऊं कटवाय ॥
जब ये बात सुनी ज्वानों ने हाथ लूट से लिया उठाय ॥
बजा नकारा जब जीतों का डंका पड़ा वम्बपर जाय ॥
मन का चाहा अब पूरा हुआ खुश हो गये बनाफलराय ॥
बोला राजा जब अब पूरा हुआ खुश होगये बजाफलराय ॥
रोढ़ा भैरों को तुम छोड़ो मैं फेरों का करूं सामान ॥
इतनी सुनकर नर मलखे ने जब सइयद से कहा बयान ॥
यह घाती राजा हमको दीखे घातें करे हमारे साथ ॥
रोढा भैरों को जो छोड़ें सारे बड़ें हमारे साथ ॥
काढ़ कुण्डली हरनन्दन से गंगा जली लई धरवाय ॥
बदन छिपावे कोढ़ी होवे उसको मारे गंगा माय ॥
जो कोई दगा करे आपस में उसकी कुली नरक में जाय ॥
गंगा बीच दई राजा ने किया इकरार बनाफल राय ॥
चल पड़ा राजा जब बंगले से दाखिल हुआ महलमें जाय ॥
आता देखा जब रानी ने पचरंग पलंग दिया बिछवाय ॥
हाथ जोड़ कर रानी बोली और राजा से कहा सुनाय ॥
क्या गत बीती रन खेतों में हमको हाल देओ बतलाय ॥
इस पर जबाव दिया राजा ने कामन सुनोपदमनी नार ॥
बड़े लड़इया मोहबे वाले जिनसे हार गई तलवार ॥
जुलम बीत गये परलो होगई अबकुछ रहा ठिकानानाय ॥
लशकर खप गया अपना सारा बेटे पड़े कैद में जाय ॥

मरे शूरमा रन खेतों में अफ़सर कोई रहा है नाय॥
डोला मागें है बेटी का जिनकी जात बनाफलराय ॥
जब तक डोला नहीं देने के बेटे छुटें कैद से नाय ॥
लौट के जवाब दिया रानी ने बालम कौन पड़ी परवाय ॥
बेशक दे दो तुम डोले को इसमें कोई परेखा नाय ॥
ऐसा घर नहीं मिलेगा उनकी कोई बराबर नाय ॥
जहां कहीं काम पड़े राजा का तेरी बिगड़ी में करे सहाय॥
यह मन मान गई राजा के और हिरदे में गई समाय ॥
रानी बोली हरनन्दन की फिर राजा से कहा सुनाय ॥
अब तुम कहदो उन राजों से फेरोंका ले सामान कराय ॥
सुनके बातें अब रानी की राजा बहुत मगन होजाय ॥
चल पड़ा राजा रनवासोंसे और बंगले में पहुँचा जाय ॥
बोला राजा जब सइयद से ओ महाराज तलन्सी राय ॥
एकादशी का मन्डा गड़ादें द्वादशी का लो ब्याह कराय ॥
त्रियोदशी को बिदा करूंगा डोला घरों मोहबे में जाय ॥
रोहा भैरों मेरे बेटों की अब तुम मुश्कें दो खुलवाय ॥
जब तक दोनों ना आवेंगे उन बिन काम होगया नाय ॥
यह मन मान गई लाला के और हिरदे में गई समाय ॥
हुकम सुनाया है दोनों को मलखे और उदयचन्द राय ॥
अब तुम लौट चलो लशकर को बेटा मेरे बनाफल राय ॥
यह मन मान गई दोनों के और हिरदे में गई समाय ॥
जीत के बाजे को बजवा कर वहां से कूंच दियाकरवाय ॥
चला तोपखाना कम्पू से पैदल पलटन और सवार ॥
लशकर लौट गया खेतों से पहुँचा आल्हा के दरबार ॥

दगी सलामी जब तोपों की खाली बाढ़ दई दगवाय ॥
सुन कर तोपों की आवाजें सारे राजा गये घबराय ॥
बड़े लड़इया गढ़ मोहबे के इनसे हार गई तलवार ॥
जहां पर डेरा था आल्हा का जांगी जहां लगा दरबार ॥
कुनबा सारा जहां पर बैठा कुछ तारीफ करी ना जाय ॥
उतर बछेरे से नीचे हुये मलखे और उदयचन्द राय ॥
करी सलामी जब दोनों ने आल्हा ले गया शीश चढ़ाय ॥
उतर के ताला भी घोड़े से और कुरसी पर बैठा जाय ॥
बोला लाखन जब मलखे से मैं मिन्तर का लेऊं बलाय ॥
क्या गत बीती रन खेतों में हमको हाल देओ बतलाय ॥
लौट के जबाब दिया मलखे ने ओ महाराज लखन्सीराय ॥
बड़ा लड़इया हरनन्दन है जिसकी मार सही ना जाय ॥
नौ लाख शहरों का मालिक है राजा हरनन्दन सरदार ॥
कई दिन तक लड़ा अकेला फिर ना उसने मानी हार ॥
अब इकरार किया राजा ने बीच में दई शारदा माय ॥
डोला दे दूंगा बेटी का इन्दल का दूं ब्याह कराय ॥
बोला सइयद जब आल्हा से बेटा सुनो बनाफल राय ॥
रोहा भैरों को तुम छोड़ो उनकी मुश्कें दो खुलवाय ॥
जब तक दोनों ना पहुँचेंगे वहां कुछ काम बनेगा नाय ॥
जब यह बात सुनी ब्रह्मा ने गुस्सा भरा बदन में जाय ॥
बोला ब्रह्मा जब सइयद से चाचा सुनो तलन्सी राय ॥
यह घाती राजा के बेटे हैं बिन धोके मानेंगे नाय ॥
जो तुमने छोड़ा इन्हें कैद से फिर यह लड़ें खेतमें आय ॥
जब यह बात सुनी ब्रह्मा की ऊदल काल बरन होजाय॥

लौट के जवाब दिया ऊदल ने ब्रह्मा सुनलो कान लगाय ॥
ऐसी बातों को मत बोलो मेरे जामे में नहीं समाय ॥
क्या कहीं मरगया ताला सइयद क्या मरगया जगन्सीराय ॥
क्या कहीं मरगया सिरसे वालाक्या मरगया उदयचन्दराय ॥
क्या है मसाला इन दोनों पर जो ये करें सामना आय ॥
बचन दे आये हम राजा को कैद से इनका देओ छुड़ाय ॥
इतनी बात सुनी ऊदल की सबके दिलमें गई समाय ॥
हाथ हथकड़ी पांव की बेड़ी गले का तौक दिया कटवाय ॥
कैद से छोड़ दिया दोनों को उनकी मुश्कोंदी खुलवाय ॥
हाल के चोकी मलियागिर को उनदोनोंको दियानिल्हाय ॥
नई पोशाकें उनको दे दीं और सब दिये हथियार मंगाय ॥
दिया इशारा खब्वासी को पानके बीड़े दिये मंगाय ॥
बोला सइयद जब रोड़ा से और भैरों से कहा सुनाय ॥
अब तुम जाकर घर को अपने अपना किला संवारो जाय ॥
करो तइयारी अब तुम जाकर दिन एकादशी पहुँचा आय ॥
बोला रोडा जब आल्हा से राजा सुनो बनाफल राय ॥
वायदा करके तुमसे जावे और बङ्गले पर पहुँचे जाय ॥
हम वहां से भेजें हलकाले को इसमें झूंठ जरा है नाय ॥
जाकर पम वहां करें तइयारी तुम अपना यहां करोसामान ॥
इतनी कह कर दोनों चलपड़ें अपने किले में पहुँचे आन ॥
करी सलामी पिता अपने को राजाले गया शीसचढ़ाय ॥
रोड़ा भैरों दोनों बोले और राजा से कहा सुनाय ॥
बड़े लड़इया मोहबे वाले जिनकी जात बनाफल राय ॥
मानस जाये की क्या गिनती हाथी खेत छोड़ भगजाय ॥

यही मुसीबत अब तुमको है राजा सुनलो कान लगाय ॥
देकर डोला अब जल्दी से किले को अपने लेओ बचाय ॥
इतनी सुनकर राजा बोला और बेटों से कहा सुनाय ॥
जो अब बात कही है तुमने मेरी गई समझ में आय ॥
जैसी मन्शा हो दोनों की मुझको कोई उजर है नाय ॥
करके मशवरा सब कुनबे से हलकारे को लिया बुलाय ॥
बोला राजा जब बङ्गले में हलकारे से कहा सुनाय ॥
अब तुम चले जाओ लशकर में जहां पर पड़े बनाफल राय
जाकर कह देना आल्हा से अपना नेग सम्हारो आय ॥
बहुत देर का काम नहीं है उनको यह देना समझाय ॥
जिन्हें मुनासिब वह समझेंगे अपने लावें संग लिवाय ॥
इतनी सुनकर हलकारे ने तुरत सांडनी लई सजाय ॥
कोई घड़ी के अब अरसे में वह लशकर में पहुँचा जाय ॥
देख कचहरी नर आल्हा की मुंह का थूक बन्द हो जाय ॥
सुरखी उड़ गई हलकारे की जरदी गई बदन में छाय ॥
अरे गुसइयां मेरे परमेश्वर करता भली बनाई आय ॥
काल के मौंडे पर आ पहुँचा चाहे जान बचे या नाय ॥
पांच कदम से करी कोरनिश धोरे जाकर शीश नवाय ॥
हाथ जोड़कर अरज गुजारी ओ रनजीत बनाफल राय ॥
तुम्हें बुलाया है राजा ने अपने नेग देओ मुगताय ॥
करो तइयारी तुम चलने की अब यहां देर लगाओ नाय ॥
जब यह बात सुनी कासिद से सबके दिल में गई समाय ॥
फूल बनाफल गड़गज हो गये और आपे में नहीं समाय ॥
बोले चत्री गढ़ मोहबे के और ताला से कहा सुनाय ॥

बहुत भीड़ का काम नहीं है चाचा सुनलो कान लगाय ॥
जौन शूरमा को तुम समझो उन ज्वानों को लेओ सजाय ॥
इतनी सुनकर ताला बोला बेटा सुनो बनाफल राय ॥
मामा जागन से तुम कहदो और लाखन से कहो सुनाय ॥
ब्रह्मा देवा सजें ये दोनों और ऊदल को संग लिवाय ॥
सिया भानजे की करनी है इन्द्रजीत को लेओ बुलाय ॥
ऊदल मलखे दोनों सज जाय संग में जाय तलन्सी राय ॥
सजो शूरमा अब घर घर के एक दो डेरे में रह जाय ॥
हाथ जोड़कर बौना बोला ओ रनजीत बनाफल राय ॥
कब कब आऊंगा मैं यहां पर बलख बुखारे पहुँचूं जाय ॥
मुझको ले चलो संग अपने में अब तुम देओ हुकम सुनाय
क्या मैं याद करूं कुरियल में बलख बुखारे पहुँचा जाय ॥
मैं भी जाय देखूं बङ्गले को जहां राजा का लगा दरबार ॥
इतनी सुनकर मलखे बोला डाकू कुरियल के सरदार ॥
जो तेरी मन्शा किला देखना तो हम ले जाय संग लिवाय
बदी करो जो वहां महलों में तेरा दूंगा शीश उड़ाय ॥
हाथ जोड़कर बौना बोला कसमें महादेव की खाय ॥
चाहे महलों में सोना पड़ा हो तो भी हाथ लगाऊं नाय ॥
इतनी सुनकर मलखे बोला और बौना से कहा पुकार ॥
बेशक संग में चलो हमारे डाकू कुरियल के सरदार ॥
फिर बुलवाया खूबी नाई को और वह डटा सामने आय ॥
करी सलामी सब राजों को हाथ जोड़कर कहा सुनाय ॥
जिस कारन को मुझे बुलाया अब तुम हाल देओ बतलाय
बोला मलखे जब खूबी से अब तू सुनले कान लगाय ॥

इन्दल के फेरों की तइयारी

जल्द सजाले तू इन्दल को अब कुछ काम देर का नाय ॥
पड़ गई चौकी बीच चौक में कलशा धरा सुनहरी लाय ॥
इन्दल बैठ गया चौकी पर केसर उबटना लिया मगाय ॥
मलकर उबटना अब इन्दल के फिर खूबी ने दिया निल्हाय
न्हाय धोयकर फारिग हो गया मंडलीक का राजकुमार ॥
खेंच जांघिये को इन्दल ने लंगर बांधा घुण्डी दार ॥
बख्तर पहना काशमीर का जिस पर तेग रपट रह जाय ॥
ताशबादली का चीरा है शमला पड़ा भुजों पर आय ॥
कान में कुण्डल कड़े बिराजें गले में माला करे बहार ॥
रतन जड़ाऊ बाले पहने सच्चे मोती करें बहार ॥
मौढ़ बांधकर अब इन्दल के पटका दे दिया हाथ कटार ॥
जूता मखमल का पहनाया जिस पर काम हासिए दार ॥
हीरा दमके है माथे पर जिस पर नजर जमे है नाय ॥
डाल दुशाला कन्धे ऊपर और इन्दल को दिया सजाय ॥
रोली चावल को मंगवाया और वह भरे थाल में लाय ॥
टीका काढ़ दिया पण्डित ने पान का बीड़ा दिया चबाय ॥
सजगया बेटा नर आल्हा का जिसका नाम इन्दलसी राय
एक हाथ में पटका ले लिया एक हाथ में लई कटार ॥

मौहबे वालों का फेरों के वास्ते जाना

बोला मलखे जब ऊदल से भइया सुनो बनाफल राय ॥
खबर भेजकर अब लाखनपर उसको जल्दी लेओ बुलाय ॥

जो जो ज्वान चलें फेरों पर अपने बांध लेओ हथियार ॥
हीरा धींवर खूबी नाई चिन्तामन हो गया तइयार ॥
दोनों बेटे मुक्खराम के मामा सजा जागन सरदार ॥
करी तइयारी इन्द्रजीत ने जिसको ब्याही सुरजदे नार ॥
कालनेम और देवी मरहटा सिंतर सजा लखन्सी राय ॥
ब्रह्मा ढेवा दोनों सज गये मलखे और उदयचन्द राय ॥
ताला सइयद की बरनी है बौना कुरियल का सरदार ॥
करी तइयारी अब आल्हा ने अपने बांध लिए हथियार ॥
बोला पन्डित जब नाई से चिन्तामन से कहा सुनाय ॥
जो सामान यहां फेरों का अब तुम सबको लेओ मगाय ॥
हाथी सजगया मोहबे वाला और प्रतसावत हुआ तैयार ॥
ब्रह्मा ढेवा ताला सइयद उसके ऊपर हुए सवार ॥
भूरी हथनी को सजवाकर उस पर चढ़ा लखन्सी राय ॥
भर भर थैली मोहर अशरफी अपने पास लई रखवाय ॥
सजी पालकी अब इन्दल की सोलह रहे कहार उठाय ॥
सच्चे मोतियों की झालर है हीराकनी दमकती जाय ॥
पांच पदारथ की कलंगी है शमला पड़ा भुजों पर आय ॥
हीरा दमके है माथे पर जिसकी चमक दूर तक जाय ॥
इन्दल बैठ गया पीनस में आगे धरी ढाल तलवार ॥
अपने अपने अब घोड़ों पर सारे ज्वान हुए असवार ॥
चले बनाफल जब लश्कर से नर मलखे से कहा सुनाय ॥
दगे सलामी अब तोपों की खाली बाढ़ देओ दगवाय ॥
दगी सलामी जब तोपों की बलख बुखारे गई आवाज ॥
खबर पहुँच गई हरनन्दन को आ गये मोहबे के सरदार ॥

ढोल और ताशे बजी नफीरी डङ्का पड़ा बम्ब पर जाय ॥
तुरई और नरसिंहा बज रहा मदनबेल रही झल्लाय ॥
एक तरफ हाथी गढ़ मोहबे का हाथी चला झूमता जाय ॥
एक तरफ हथनी है लाखन की जो रोके से रुकती नाय ॥
आगे आगे चोबदार है आसे बल्लम रहे उठाय ॥
बीच में पील्कह है इन्दल की चारों तरफ बनाफल राय ॥
अल्हड़ ज्वानी के मतवाले कुछ खातिर में लाते नाय ॥
कोई घड़ी के अब अरसे में बलख बुखारे पहुँचे जाय ॥
बोला राजा जब चन्दा से मैं मुन्शी का लेऊं बलाय ॥
फरश करादो तुम जल्दी से मोहबे वाले पहुँचे आय ॥
यह मन मानी जब मुन्शी के और हिरदे में गई समाय ॥
हरी बनातों के तकिये थे चारों तरफ दिये लगवाय ॥
फरश कराया है मखमलका और कालीन दिये बिछवाय ॥
फरश बिछा जब रनवासों में दाखिल हुए बनाफल राय ॥
रिंजिनरिंजिन झींगर बोले और जंगल में बोले मोर ॥
सोते पुरुष की तिरिया बोले अन्धेरे में बोले चोर ॥
सुनकर बाजा गढ़ मोहबे का जब राजा ने कहा सुनाय ॥
कोई घड़ी के अब अरसे में दरवाजे पर पहुँचे आय ॥
चकियाचाल पड़ी नगरी में चरचा नगरी में हो जाय ॥
सखियां खुशी करें पेमा की फूली अङ्ग में नहीं समाय ॥
अब हम देखें उन राजों को जिनकी जात बनाफल राय ॥
चढ़ गई त्रियां अठखम्बों पर कामन लगीं झरोखे आय ॥
बोला राजा जब रोहा से तुम पन्डित को लेओ बुलाय ॥
अब ना देर करो कारज में तुम्हें आगे से देऊं बताय ॥

यह राढ़ी राजा हैं मौहबे के इनका गुस्सा बुरी बलाय ॥
जब यह बात सुनी रोढ़ा ने उसके दिल में गई समाय ॥
जहां पर जगह पड़ी वेदी की सब सामग्री धरी मगाय ॥
हरे नारियल गिरी छुहारे कलशे धरे सुनहरी लाय ॥
घी के कुप्पों को मंगवाकर सारा धरा सामान मंगाय ॥
बोला रोढ़ा जब राजा से मैं ताऊं का लेऊं बलाय ॥
आये क्षत्री गढ़ मौहबे के दरवाजे पर पहुँचे आय ॥
नेग कराकर अब शर्वत का और खेतों का दूं निमटाय ॥
जब यह बात सुनी राजा ने उसके दिल में गई समाय ॥
कलशे सोने के मंगवाकर और धींवर को लिया बुलाय ॥
बोला राजा जब गंगा से पण्डित सुनले कान लगाय ॥
संग में जाओ तुम बहंगी के शर्वत का दो नेग कराय ॥
खांड घोलकर शर्वत करलियाऔर कलशोंमें दिया भरवाय
बाईस बहंगी बना शर्वत की कहारों को दो उठवाय ॥
गंगा पन्डित चला संग में हाथ में सोटा लिया उठाय ॥
कोई घड़ी के अब अरसे में दाखिल हुये चौक में जाय ॥
बोला बेटा चोबदार का ओ रनजीत बनाफल राय ॥
शर्वत भेजा है राजा ने अब तुम इसको लो धरवाय ॥
जब यह बात सुनी राजा ने दिल में बहुत खुशी हो जाय
अब तुम उतर जाओ घोड़ों से और फरश पर पहुँचे जाय
फरश बिछा जब दरवाजे पर बैठे सभी बनाफल राय ॥
चिन्ता पन्डित को बुलवाकर कहने लगा तलन्सी राय ॥
लेकर शर्वत पहले पीलो और बाकी को दो निमटाय ॥
जब यह बात सुनी पंडित ने दिलमें बहुत खुशी हो जाय

शर्बत ले पन्डित ने पी लिया बाक़ी सबको दिया पिलाय ॥
बोला वाला सब ज्वानों से बेटा सुनो बनाफल राय ॥
तीस अशरफी दो पण्डित को चींवर को दो कड़े पहनाय ॥
बोला मलखे जब पण्डित से मैं नेगी का लेऊं बलाय ॥
देर न करना अब कारज में गुजरे घड़ी घड़ी का वार ॥
लौट के जवाब दिया गंगे ने और मलखे से कहा पुकार ॥
कोई घड़ी के अब अरसे में खेत का दूंगा नेग चुकाय ॥
अब चले क्षत्री दरवाजे से दाखिल हुये महल में जाय ॥

राजा का बटेहरी देना

बोला राजा जब गंगे से मैं पण्डित का लेऊं बलाय ॥
क्या कुछ नेग मिला शर्बतका हमको हाल देओ बतलाय ॥
लौट के जवाब दिया पण्डित ने और राजा से कहा सुनाय
वह नामी राजा हैं मोहबे के उन पर कमी माल की नाय ॥
तुम करो तैयारी बटेहरी की यहां कुछ काम देर का नाय ॥
इतनी सुनकर जब राजा ने और रोड़ा से कहा सुनाय ॥
जो सामान किया खेतों का सबको करो इकट्ठा लाय ॥
यह मन मान गई रोड़ा के और हिरदे में गई समाय ॥
मैंमूंदी कमख्वाब नीमजरी थाल रेशमी धरे सजाय ॥
जोड़ा कलशों का मंगवाया थाल सुनहरी लिये मंगाय ॥
हीरा मोती नीलम पन्ना सब थालों में धरे सजाय ॥
मोहन माला कड़े सोने के सच्चे मोती धरे जमाय ॥
पांच अशरफी धरीं कुन्दन की बीच में हीरा करें बहार ॥
ताशबादली का चीरा है कान के कुण्डल धरे संवार ॥

मौहर अशरफी इतनी रखदीं जिनका ना हो सके बयान ॥
जैसा भारी यह राजा था वैसा ही खेत का किया सामान ॥
बोला राजा जब धींवर से मैं पनवा का लेऊं बलाय ॥
जो सामान रखा खेतों का इसको जल्दी दो पहुँचाय ॥
हेता नाई को बुलवाकर फिर राजा ने कहा सुनाय ॥
संग में जाओ तुम पवनाके अपना नेग लेओ वहां जाय ॥
जब यह बात सुनी राजा की सबने लिया सामान उठाय ॥
जहां पर बैठे मोहबे वाले वहां पर नेगी पहुँचे जाय ॥
इतना सामान दिया राजा ने जिसका ना हो सके शुमार ॥
केहर भैरों चले संग में कब्जा लिए ढाल तलवार ॥
कोई घड़ी के अब अरसे में दरवाजे पर पहुँचे जाय ॥
बोला आल्हा जब ताला से मैं चाचा का लेऊं बलाय ॥
सम्भल के बैठो तुम फरशों पर उनके नेगी पहुँचे आय ॥
दाहिनी तरफ को ब्रह्मा बैठा बांवे बैठा उदयचन्द राय ॥
दक्खन खूंट में ताला सय्यद दाढ़ी पड़ी धोंद पर जाय ॥
इक तरफ को ढेवा बैठा मामा बैठा जगन्सी राय ॥
सबके बीच में आल्हा बैठा उसकें धोरे इन्दलसी राय ॥
दहनी भुजा पर इन्द्रजीत है और बांवेको सियानन्द राय ॥
एक तरफ बैठा नौले मुन्शी धोरे कनवज का सरदार ॥
पहरेदार खड़े पहरों पर नंगी सूंत रहे तलवार ॥
जब यहां आ गये दोनों बेटे हरनन्दन के राजकुमार ॥
बैठ फरश पर अब दोनों ने सारा लिया सामान उतार ॥
राम राम आदाब बन्दगी और पालागन करी बनाय ॥
एक तरफ को केहर रोढ़ा एक तरफ भैरों बैठा जाय ॥

सामने बैठा गंगा पण्डित नेगी खड़े पिछाड़ी जाय ॥
थाल को लेकर अब गंगे ने रोली चावल दिये मिलाय ॥
मौंड बांध दिया है इन्दल के पटका दे दिया और कटार ॥
सेहरा छोड़ दिया माथेपर जिनकी जोत निकलजाय पार ॥
बढ़गया रोडा अब माथेपर जिनका जोत निकल जायपार ॥
जो कुछ लाया था सङ्ग अपने सबके धरा सामने जाय ॥
खोल के डिब्बे को जेवर के थाल के अन्दर धरा सजाय ॥
बोला रोडा जब ज्वानों से ओ महाराज बनाफल राय ॥
पण्डित बुलवालो तुम अपना नेग बटहरी लो करवाय ॥
जब यह बात सुनी आल्हाने चिन्तामन को लिया बुलाय ॥
चिन्ता पण्डित ने वहां आकर चावल लिये हाथमें ठाय ॥
गंगे चिन्ता दोनों बैठे सामने इन्दल बैठा जाय ॥
पढ़ पढ़ मन्तर अब वेदों के पण्डित उनको रहे सुनाय ॥
पढ़कर मन्तर अब पण्डित ने सारे नेग दिये करवाय ॥
पांच अशरफी ले गंगे ने चिन्तामन को दीं पकड़ाय ॥
लेकर अशरफी चिन्ता पन्डित दिलमें बहुत खुशी होजाय ॥
बोला पन्डित हरनन्दन का ओ रनजीत बनाफल राय ॥
अपने ध्यानों को बुलवालो अपना लेवें नेग कराय ॥
दिया इशारा नर ऊदल ने इन्द्रजीत को लिया बुलाय ॥
अब तुम बैठ जाओ आगे को अपना नेग लेओ करवाय ॥
जब यह बात सुनी ऊदल की इन्द्रजीत ने कहा सुनाय ॥
पहले टीका सियानन्द के पीछे करो हमारे जाय ॥
इस पर जवाब दिया मलखे ने इन्द्रजीत से कहा सुनाय ॥
पहले टीका होय तुम्हारे पीछे होय सियानन्द राय ॥

पहले टीका इन्द्रजीत को कंचन कड़े दिये पहनाय ॥
दूसरा टीका हुआ ध्यानेका जगनक और सियानन्द राय ॥
रतनजोत जड़ाऊ कंठा दे दिया मोहनमाला दई पहनाय ॥
सबके पीछे फिर पन्डित ने टीका किया इन्दलसी राय ॥
तास बादली का चीरा है शमला पड़ा भुजों पर आय ॥
कानके कुन्डल गलेकी माला और फिर कड़े दिये पहनाय ॥
सात पान का बीड़ा लेकर फिर इन्दल को दिया चढ़ाय ॥
जो सामान खेत का लाये सब रोडा ने दिया पकड़ाय ॥
बोला ताला जब मलखे से बेटा बच्छराज के लाल ॥
जो सामान मिला खेतों में अब तुम सबको लेओ संभाल ॥
जो यह नेगी आये मड्ड में सबको बिदा देओ करवाय ॥
जो जो नेग जिन्हों का होवे उनको जल्द देओ निमटाय ॥
यह मन मानी जब नर मलखेके और हिरदेमें गई समाय ॥
भर भर मुट्ठा मोहर अशरफी सब नेगी को दी पकड़ाय ॥
फूलके नेगी गड़गज होगये और आपस में रहे बतलाय ॥
यह भारी राजा हैं मोहबे के इनकी कोई बराबर नाय ॥
हाथ जोड़कर रोडा बोला ओ महाराज बनाफल राय ॥
नेग खेत का पूरा होगया अब तुम सुनलो कान लगाय ॥
तुम करो तइयारी बारौठी की इसमें देर लगाओ नाय ॥
इतनी कहकर चला वहा से मैं दाऊ का लेऊं बलाय ॥
बोला रोडा जब राजा से मैं दाऊ का लेऊं बलाय ॥
करो तइयारी बारोटी की नेग खेत का दिया निमटाय ॥
इस पर जवाब दिया राजा ने मैं बेटे का लेऊं बलाय ॥
अब तुम चले जाओ महलोंको अपनी मांसे कहो सुनाय ॥

इतनी सुनकर रोडा चल पड़ा शीश महलमें पहुँचा जाय ॥
हाथ जोड़कर रोडा बोला और माता से कहा सुनाय ॥
जो कुछ नेग हो बारौठी का सारा लो सामान मंगाय ॥
जब यह बात सुनी रानी ने और बांदी से कहा सुनाय ॥
देओ बुलावा सब नगरीमें और तिरियोंसे कहो यह जाय ॥
तुम्हें बुलाया पटरानी ने बारौठी का नेग कराय ॥
जो जो सहेली हैं पैमा की सारी लें सिंगार बनाय ॥
इतनी सुनके बांदी चल पड़ी और गलियोंमें पहुँची जाय ॥
फिरे घूमती गली गली में और तिरियों से कही यह बात ॥
तुम्हें बुलाया पटरानी ने जल्दी चलो हमारे साथ ॥
सज सज तिरियां अपने घरों से शीशमहल में पहुँचीआय ॥
कोई कोई चढ़ गई अटखम्बोंपर और कोई लगींझरोखेजाय॥
हम देखें तमाशा बारौठी का जब यहां आवें बनाफलराय ॥
रोडा चल पड़ा अब महलों से और बङ्गले में पहुँचाजाय ॥
हेता नाई को बुलवा कर जब यह उससे कहा सुनाय ॥
अभी चला जा तू कम्पू में और आल्हा से कहदे जाय ॥
तुम्हें बुलाया है राजा ने नेग बारौठी लो करवाय ॥
इतनी सुनके हेता चल दिया और कम्पू में पहुँचा जाय ॥
जहां बैठे मोहबे वाले हाथ जोड़कर कहा सुनाय ॥
तुम्हें बुलाया है राजा ने औ रनजीत बनाफल राय ॥
इतनी सुनके उठे बनाफल गुरू अमरा का ध्यान लगाय ॥
बोला मलखे जब कम्पू में और सहयद से कहा सुनाय ॥
कौन सन्त्री रहे डेरों में हमको हाल देओ सुनाय ॥
जिसका पहरा रहे यहां पर उसको खूब देओ समझाय ॥

बोला ब्रह्मा जब सइयद से मैं जात्रा का लेऊं बलाय ॥
कहो तो पैदल चलें यहां से कहो घोड़ों को लें सजवाय ॥
लौट के जवाब दिया ताला ने और ब्रह्मा से कहा सुनाय ॥
काम नहीं है सब घोड़ों का दो घोड़ों को लो सजवाय ॥
घोड़े पपइया को सजवालो और चतरङ्गी लो सजवाय ॥
जल्द सजाकर अब नौशेको और घोड़ी परदो लदवाय ॥
भर धर थैली मोहर अशरफी अब हौदे में दी भरवाय ॥
ताला बैठ गया हथनी पर संग में चला लखन्सी राय ॥
घोड़ी चतरङ्गी सजवाकर फिर नौशे को दिया बिठाय ॥
सजा के घोड़ों को सङ्ग लेकर पैदल चले बनाफल राय ॥
आगे घोड़ी नर इन्दल की छत्र को खुशी रहा उठाय ॥
दहने हाथ को ऊदल मलखे और बांये को लखन्सी राय ॥
इन्द्रजीत और सिया भानजा चिन्ता पण्डित भी तइयार ॥
ढेवा ब्रह्मा दोनों भइया बीच में मण्डलीक औतार ॥
नौले मुन्शी चला अगाड़ी चौबदार को सङ्ग लिवाय ॥
जागन मामा जगनेरी का और सङ्गमें चला बौनिया राय ॥

मोहबे वालों का बारौठो के लिये

रवाना होना

चले छत्री गढ़ मोहबे के लेकर अमर गुरू का नाम ॥
आस पास बल्लम की जोड़ी जिसमें जवाहरात का काम ॥

बाजा बज रहा तरह तरह का जंगी ढोल रहे भल्लाय ॥
तुरई और नरसिंहा बज रहा कुछ तारीफ करी ना जाय ॥
माती हथनी लाखन वाली भूरी चली झूमती जाय ॥
चढ़ी बरात अब नर इन्दल की सथके चले बनाफलराय ॥
ढोल और ताशे बजी नफीरी और नरसिंहा बजता जाय ॥
जितने बाजे थे मोहबे के सब आल्हा ने दिये बजवाय ॥
चार घड़ी के अब अरसे में दरवाजे पर पहुँचे जाय ॥
बोला ऊदल जब लाखन से अब क्यों रक्खी देर लगाय ॥
रइयत कोपी शहर पनाह की जिसकी नहीं पड़े शुम्मार ॥
भर भर मुट्ठी अब मोहरों की चारों तरफ करो भरमार ॥
क्या जानेगी यहां की रइयत ब्याहने आये बनाफलराय ॥
करो बखेर अब तुम फेरों की पहला नेग देओ करवाय ॥
यह मन मानी अब लाखन के और हिरदे में गई समाय ॥
दोनों हाथ से मोहर अशरफी चारों तरफ को रहा लुटाय ॥
बोली रइयत शहर पनाह की और आपस में कहा सुनाय ॥
भारी राजा यह मोहबे के इन पर कमी माल की नाय ॥
बढ़े बनाफल अब आगे को पहुँचे शीश महल तक राय ॥
रोड़ा केहर जब वहां बोले ओ महाराज बनाफल राय ॥
अब तुम ठहरो दरवाजे पर अपना नेग लेओ करवाय ॥
नेग दुवारे का जब हो जाय रनवासों में पहुँचो जाय ॥
घोड़ी घूम गई दरवाजे पर अब आल्हा ने कहा पुकार ॥
हो जाओ चौकस दरवाजे पर तुम नौशेसे रहो हुशियार ॥
इतनी सुनकर नरऊदल ने सब ज्वानों को लिया बुलाय ॥
किला बांध कर दरवाजे का बन्दोबस्त सब दिया कराय ॥

बोला ब्रह्मा जब सइयद से मैं जात्रा का लेऊं बताय ॥
कहो तो पैदल चलें यहां से कहो घोड़ों को लें सजवाय ॥
लौट के जवाब दिया ताला ने और ब्रह्मा से कहा सुनाय ॥
काम नहीं है सब घोड़ों का दो घोड़ों को लो सजवाय ॥
घोड़े पपइया को सजवालो और चतरङ्गी लो सजवाय ॥
जल्द सजाकर अब नौशेको और घोड़ी परदो लदवाय ॥
भर थर थैली मोहर अशरफी अब हौदे में दी भरवाय ॥
ताला बैठ गया हथनी पर संग में चला लाखनी राय ॥
घोड़ी चतरङ्गी सजवाकर फिर नौशे को दिया बिठाय ॥
सजा के घोड़ों को सङ्ग लेकर पैदल चले बनाफल राय ॥
आगे घोड़ी नर इन्दल की छत्र को खुदी रहा उठाय ॥
दहने हाथ को ऊदल मलखे और बांये को लाखनी राय ॥
इन्दजीत और सिया भानजा चिन्ता पण्डित भी तइयार ॥
देवा ब्रह्मा दोनों भइया बीच में मण्डलीक औतार ॥
नौले मुन्शी चला अगाड़ी चौबदार को सङ्ग लिवाय ॥
जागन मामा जगनेरी का और सङ्गमें चला बौनिया राय ॥

मौहवे वालों का बारौठी के लिये

रवाना होना

चले छत्री गढ़ मौहबे के लेकर अमर गुरू का नाम ॥
आस पास बल्लम की जोड़ी जिसमें जवाहरात का काम ॥

बाजा बज रहा तरह तरह का जंगी ढोल रहे झल्लाय ॥
तुरई और नरसिंहा बज रहा कुछ तारीफ करी ना जाय ॥
माती हथनी लाखन वाली भूरी चली झूमती जाय ॥
चढ़ी बरात अब नर इन्दल की सथके चले बनाफलराय ॥
ढोल और ताशे बजी नफीरी और नरसिंहा बजता जाय ॥
जितने बाजे थे मौहबे के सब आल्हा ने दिये बजवाय ॥
चार घड़ी के अब अरसे में दरवाजे पर पहुँचे जाय ॥
बोला ऊदल जब लाखन से अब क्यों रक्खी देर लगाय ॥
रइयत कोपी शहर पनाह की जिसकी नहीं पड़ै शुम्मार ॥
भर भर मुट्ठी अब मोहरों की चारों तरफ करो भरमार ॥
क्या जानेगी यहां की रइयत ब्याहने आये बनाफलराय ॥
करो बखेर अब तुम फेरों की पहला नेग देओ करवाय ॥
यह मन मानी अब लाखन के और हिरदे में गई समाय ॥
दोनों हाथ से मोहर अशरफी चारों तरफ को रहा लुटाय ॥
बोली रइयत शहर पनाह की और आपस में कहा सुनाय ॥
भारी राजा यह मौहबे के इन पर कमी माल की नाय ॥
बढ़े बनाफल अब आगे को पहुँचे शीश महल तक राय ॥
रोडा केहर जब वहां बोले ओ महाराज बनाफल राय ॥
अब तुम ठहरो दरवाजे पर अपना नेग लेओ करवाय ॥
नेग दुवारे का जब हो जाय रनवासों में पहुँचो जाय ॥
घोड़ी घूम गई दरवाजे पर अब आल्हा ने कहा पुकार ॥
हो जाओ चौकस दरवाजे पर तुम नौशेसे रहो हुशियार ॥
इतनी सुनकर नरऊदल ने सब ज्वानों को लिया बुलाय ॥
किला बांध कर दरवाजे का बन्दोबस्त सब दिया कराय ॥

फरश कराया है राजा ने और कालीन दिये बिछवाय ॥
ताश बादली के परदे को दरवाजे पर दिया लगाय ॥
तिरियां आईं रनवासों में जिनकी नहीं पड़े शुम्मार ॥
नेग दुवारे का होने लगा गाने लगीं पदमनी नार ॥
सज गई दुलहन जर रोढा की सारा लिया सिंगार बनाय ॥
सब सामग्री धरी थाल में और फाटक पर पहुँची जाय ॥
पूजा करके देवताओं की गौरी पुत्र को लिया मनाय ॥
सेवल करके नर इन्दल की रानी लौट महल को जाय ॥
नेग दुवारे का जब हो गया आगे बढ़े बनाफल राय ॥
शीश महल को पीछे छोड़ा रङ्गमहल में पहुँचे जाय ॥
फरश बिछा था जहां चौक में गद्दी तकिये दिये लगाय ॥
एक तरफ बैठे हरनन्दन के दूसरी तरफ बनाफल राय ॥
अपने पन्डित को बुलवा कर कहने लगा हरनन्दन राय ॥
मंढा छिदाओ तुम जल्दी से लगन महूरत पहुँचा आय ॥
इस पर जवाब दिया ब्रह्मा ने पन्डित सुनलो कान लगाय ॥
मंढा छिदावें हम सांगों का लोहा पूजा छटी में जाय ॥
अपने कुल की यही रीत है हमसे आस मिटेगी नाय ॥
सांग गाड़ दी ब्रह्माजीत ने ऊपर ढाल दई लटकाय ॥
बोला आल्हा चितामन से मैं पन्डित का लेऊं बलाय ॥
चौक पूर के तुम जल्दी से और चौकी को देओ बिछाय ॥
करो तइयारी तुम जल्दी अब क्यों रक्खी देर लगाय ॥
जो सामान हो बारौटी का सब थालों में धरो सजाय ॥
यह मन मानी जब पन्डित के और हिरदे में गई समाय ॥
हरे नारियल गिरी छुवारे रोली चावल लिये मंगाय ॥

डोरी कलाबे को मंगवा कर चौमुख दीवा धरा जमाय ॥
भरके कलसा गंगाजल का और परसा ने लिया उठाय ॥
फिर ललकारा है खूबी को जल्दी चौकी लाओ लिवाय ॥
जीता खाती खड़ा जहां पर हाथ में चौकी रहा उठाय ॥
बोला नाई जब ललकारा और खाती से कहा सुनाय ॥
लाओ चौकी तुम आगे को अब क्यों रक्खी देर लगाय ॥
बढ़ गया जीता अब आगेको दरवाजे पर पहुँचा जाय ॥
जहां तइयारी बारोठी की चौकी धरी वहां पर जाय ॥
जब ललकारा गंगे पण्डित चिंतामन से कहा पुकार ॥
लाओ पालकी अब आगे को और नौशे को लेओ उतार ॥
बढ़ी पालकी अब इन्दल की और वह लगी बराबर जाय ॥
रोडा बोला जब मुन्शी से अब तुम परदा लेओ कराय ॥
इतनी बात सुनी मुन्शी ने वह फाटक पर पहुँचा जाय ॥
डोरी खोल दई परदे की और फाटक पर दिया गिराय ॥
मन्तर पढ़ रहा गंगे पण्डित और नौशे को रहा बुलाय ॥
अब तुम उतर जाओ पीनससे और चौकी पर बैठो आय ॥
हाथ पकड़कर चिंतामन ने अब इन्दल को लिया उतार ॥
दोनों पण्डित मन्तर पढ़ रहे जब ताला ने कहा पुकार ॥
बोला सइयद जब लाखन से बेटा सुनो कनौजी राय ॥
करो खबर अब दरवाजे पर ऐसा वक्त मिलेगा नाय ॥
यह मन मानी जब लाखन के और हिरदे में गई समाय ॥
भर भर मुट्ठी मोहर अशरफी लाखन रहा बखेर कराय ॥
गुम्मट देखे जहां तिरियों का लाखन दे है मूंठ चलाय ॥
चार पहर तक सोना बरसा भुजबल थके कनौजी राय ॥

लोभकी मारो सारी दुनिया है सलकत सारी कहे सुनाय ॥
भारी राजा हैं मोहबे के जिन पर कमी माल की नाय ॥
बन्द अखेर हुई जब वहां पर वह द्वारे पर पहुँचे जाय ॥
अन्दर गुम्मट हैं तिरियों का बाहर खड़े बनाफल राय ॥
बोली रानी हरनन्दन की और तिरियोंसे कहा सुनाय ॥
कौनसी रानी करे आरता अब तुम सुनलो कान लगाय ॥

केहर की दुल्हन का आरता करना

इतनी सुन कर पटरानी से सबने मिलकर कहा सुनाय ॥
किसको हुकम तुम्हारा होवे उसको कोई उजर है नाय ॥
लौट के जवाब दिया तिरियों को पटरानी ने कहा सुनाय ॥
करे आरता बहू केहर की और किसी को चहिये नाय ॥
एक तो बेटी थी राजा की दूसरे रूप दिया करतार ॥
तीसरे रानी चढ़ती ज्वानी चौथे सोलह किये सिंगार ॥
सज कर रानी ऐसी हो गई जिस पर नजर जमे है नाय ॥
थाल मंगवा कर अब सोने का उसमें दीपक धरा जमाय ॥
रोली चावल को मंगवा कर पांच नारियल लिये मंगाय ॥
ग्यारह मोती सोलह हीरे थाल के अन्दर धरे सजाय ॥
थाल आरतेका जब सज गया दोनों हाथमें लिया उठाय ॥
गाती जावें चलती जावें दरवाजे पर हुँची जाय ॥
बोला मुन्शी जब ललकारा ओ रनजीत बनाफल राय ॥
तिरियां अब गईं दरवाजेपर अब तुम हटो पिछाड़ी जाय ॥
इस पर जवाब दिया मलखे ने मुन्शी सुनलो कान लगाय ॥
सबसे बड़ा जो यहां ताला था उसने हाथो लिया हटाय ॥

बड़े बड़े जो और यहां थे वह भी हटे पिछाड़ी जाय ॥
परदा पड़ा जो दरवाजे पर वह भी नाईं ने दिया हटाय ॥
एक तरफ पण्डित है राजा का गंगे डटा सामने जाय ॥
एक तरफ पंडित गढ़ मोहबे का पढ़ पढ़ मन्तर रहा सुनाय ॥
इन्चे त्रियां खड़ी द्वारे पर जिनमें एक से एक सिवाय ॥
उन्चे ज्वान खड़े मोहबे के जिनका रूप न वरना जाय ॥
पूजन हुआ जब गौरी पुत्र का चिन्तामन ने दिया कराय ॥
आगे बढ़ गई बहू केहर की जिसने करा आरता आय ॥
हुआ आरता जब इन्दल का तिरियां गावें मंगलाचार ॥
भर भर अंगूठे को रोलों से टीका किया पदमनी नार ॥
जो कुछ मन्शा थी देने की सबको दीना भेंट चढ़ाय ॥
पहले टीका किया पंडित का फिर ध्यानों के दिया कराय ॥
सबसे पीछे किया इन्दल के हीरा मोती भेंट चढ़ाय ॥
रतन जड़ाऊ माला दे दी कंचन कड़े दिये पहनाय ॥
जो कुछ नेग था बारोठी का जब कर चुके बनाफल राय ॥
सारे नेगी जो राजा के यहां पर हुए इकट्ठे आय ॥
बोला सइयद जब लाखन से बेटा सुनो कनौजी राय ॥
भर भर थैली मोहर अशरफी अब तुम धरो सामने लाय ॥
रोड़ा केहर नौले मुन्शी तीनों वहां पर बैठे जाय ॥
नेग जिन्हों का जो कुछ चहिए सबको यह देंगे निमटाय ॥
नेगजोग सब बारोठी का जब मुन्शी ने दिया चुकाय ॥
फूल के नेगी गदगज हो गये फूले अङ्ग समाते नाय ॥

इन्दल और पेमकुंवर के फेरों का बयान

बोला पण्डित हरनन्दन का और राजा से कहा सुनाय ॥
जल्द बुलाओ पेमकंवर को वक्त फेरों का पहुँचा आय ॥
सज गई बेटी हरनन्दन की जिसका नाम पैमदे नार ॥
एक तो बेटी थी राजा की दूसरे रूप दिया करतार ॥
तीसरे रानी उठती जवानी चौथे सोलह किये सिंगार ॥
सजकर पैमा ऐसी हो गई जैसे उगल पड़ी तलवार ॥
जितना गहना था राजा का सब पैमा को दिया पहनाय ॥
जिस चौकी पर इन्दल बैठा उस पर पैमा बैठी जाय ॥
पण्डित बैठ गया बरनीं पर रोली चावल लिये मंगाय ॥
पढ़ पढ़ मन्तर अब वेदों के नर इन्दल को रहा सुनाय ॥
तिरियां चढ़ गई अंटखम्बों पर कुछ छज्जों पर बैठी जाय ॥
कोई कोई देख रही नौशे को कोई लाखन से रही मुस्काय
कोई कोई देखे नर ऊदल को कोई मल्हा को रही बताय ॥
कोई २ त्रिया सियानन्द को वहां हाथों से रही बुलाय ॥
बोली त्रियां बलखबुखारे की अब तुम सुनो सियानन्द राय ॥
क्या तुम लगते हो नौशे के अपना हाल देओ बतलाय ॥
इतनी सुनकर उन त्रियों से कहने लगा सियानन्द लाल ॥
गांव हमारा मोहकमपुर है बेटा मुक्खराम का लाल ॥
नाम हमारा सियानन्द है अब तुम सुनलो कान लगाय ॥
लगूं ब्याना मैं नौशे का मामा लगें बनाफल राय ॥
बोला पण्डित हरनन्दन का चिन्तामन से कहा सुनाय ॥
होम रचाओ तुम जल्दी से वक्त फेरों का पहुँचा आय ॥
सब सामग्री को मंगवाया गौरी पुत्र को लिया मनाय ॥
होम रचाया जब पण्डित ने प्रकट हुई शारदा माय ॥

पकड़ी चुनरी पेमकंवर की पल्ला लिया इन्दलसी राय ॥
पांच अशरफी एक नारियल दोनों की दी अड़ लगाय ॥
पूजन करके नौ ग्रहों का रोली चावल दिये चढ़ाय ॥
पढ़ पढ़ मन्तर अब वेदों के पण्डित ब्याह रहा करवाय ॥
आगे आगे मण्डलीक का पीछे पेमा राजकंवार ॥
बेद रीति से फेरे फिर गये वहां पर आ रही अजब बहार ॥
बड़ी खुशी महलों में हो रही त्रियां गा रहीं मंगलाचार ॥
देख देख इन्दल की सूरत को कहने लगीं पदमनी नार ॥
धन धन बेटी हरनन्दन की तेरा धन्य घड़ी औतार ॥
कौन तपस्या तेरी पूरी हुई ऐसा मिला पति भरतार ॥
फेरे फिर गये जब इन्दल के सब खुश हुये बनाफल राय ॥
बहुत खुशी हुई नर इन्दल को फूला अङ्ग में नहीं समाय ॥
बोले नेगी जब ताला के ओ महाराज तलन्सी राय ॥
नेग जिन्हों का बाकी रहगया उनका नेग देओ निमटाय ॥
इतनी सुन चिन्ता पंडित को ताला ने दिया हुक्म सुनाय ॥
जो कुछ नेग होय जिस जिसका सबको दूना दो भुगताय ॥
भर भर थैली अब लाखन ने चौक में ढेर दिया करवाय ॥
पांच सात दसकी क्या गिनती एक एक थैली दो पकड़ाय ॥
जात कमीनों का हल्ला हुआ गुम्मट बन्धा द्वार पर आय ॥
बाट देख रहे कब निकलेंगे बाहर गढ़ मोहबे के राय ॥
बोली बांदी जब पण्डित से मैं गंगे का लेऊं बलाय ॥
अब तुम भेज देओ नौशे को अन्दर रानी रही बुलाय ॥
इतनी बात सुनी पण्डित ने जब इन्दल से कहा सुनाय ॥
अब तुम जाओ रनवासों में तुम्हें ठकुरानी रही बुलाय ॥

इतनी सुनकर मलखे बोला सियानन्द से कहा पुकार ॥
संग में जाओ तुम इन्दल के रहियो खबरदार हुशियार ॥
दोनों उठकर चले वहां से इन्दल और सियानन्द राय ॥
कोई घड़ी के अब अरसे में दाखिल हुये महल में जाय ॥
जो जो सहेली थीं पेमा की सारी हुईं इकठी आय ॥
कोई २ छेड़ रही इन्दल को कोई सिया से रही मुस्काय ॥
ना वह किसी से बोले चाले ना कुछ किसी से कहा सुनाय
चुप और चाप वहां पर बैठे इन्दल और सियानन्द राय ॥
ग्यारह मोती सोलह हीरे थाल के अन्दर धरे सजाय ॥
मौड़ खुलाई ठकुरानी ने इन्दल को दी भेंट चढ़ाय ॥
यहां की बातों को यहां छोड़ा अब तुम सुनो दूसरा हाल ॥
बोला ताला जब मलखे से बेटा बच्छराज के लाल ॥
बहुत देर का अरसा हो गया आया नहीं इन्दलसी राय ॥
जल्द बुलाओ तुम इन्दल को अब क्यों रक्खी देर लगाय ॥
यह मन मान गई मलखे के और हिरदे में गई समाय ॥
हेता नाई को ललकारा अब तू सुनले कान लगाय ॥
अभी चलाजा तू जल्दी से रनवासों में पहुँचो जाय ॥
सियानन्द और नर इन्दल को तुम जल्दी से लाओ बुलाय
इतनी बात सुनी नाई ने उसके दिल में गई समाय ॥
कोई घड़ी के अब अरसे में शीश महल में पहुँची जाय ॥
हाथ जोड़कर हेता बोला और इन्दल से कही यह बात ॥
तुम्हें बुलाया है आल्हा ने जल्दी चलो हमारे साथ ॥
इतनी सुन हेता नाई से दोनों ने दिया कूच कराय ॥
आगे आगे इन्दल हो लिया पीछे चला सियानन्द राय ॥

जहां पर बैठे मौहबे वाले जब वहां दोनों पहुँचे आय ॥
बोला मलखे जब ताला से मैं चाचा का लेऊं बलाय ॥
फटी पपीड़ी अब दिन निकला वक्त सुबह का पहुँचाआय ॥
करो तइयारी अब रुखसत की तुम राजा से कहो सुनाय ॥
ये मन भानी जब सइयद के और हिरदे में गई समाय ॥
बोला सइयद इरनन्दन से ओ महाराज भंगेले राय ॥
काम यहां का सब हो बीता बाकी कोई रहा है नाय ॥
करो तइयारी तुम रुखसत की अबक्यों रक्खी देर लगाय ॥
इतनी बात सुनी ताला की सबके दिल में गई समाय ॥
केहर रोड़ा दोनों बोले और ताला से कहा सुनाय ॥
अबतुम चले जाओ लशकरको अपनीकरो तइयारी जाय ॥
कोई घड़ी के अब अरसे में हम तुमको लेगे बुलवाय ॥
इतनी सुनकर चले वहां से छत्र मौहबे के सरदार ॥
अपने अपने अब घोड़ों पर सारे कूद हुए असवार ॥
उठा पालकी जब इन्दल की वहां से कूच दिया करवाय ॥
कोई घड़ी के अब अरसे में अपने लशकर पहुँचे जाय ॥
बोला राजा शीश महल के और रोड़ा से किया बयान ॥
अब तुम जाकर रंग महल में करदो रुखसत का सामान ॥
जो कुछ मन्शा हो देने की सब असबाब लेओ मंगवाय ॥
हीरे मोती और जवाहर सबका ढेर देओ करवाय ॥
जो कुछ नेग रहा हो बाकी सब महलों में लो भुगताय ॥
डोला सजवा कर पैमा का उस पर खबर देओ पहुँचाय ॥
इतनी सुनकर केहर चलदिया और महलोंमें पहुँचा जाय ॥
बोला केहर पटरानी से मैं माता का लेऊं बलाय ॥

जो सामान होय रुखसत का सबको जल्दी लेओ मंगाय ॥
इतनी सुनकर पटरानी ने सारा लिया सामान मंगाय ॥
केहर चल दिया है महलों से और बंगलेमें पहुँचा जाय ॥
बोला केहर जब गंगेसे मैं पन्डित का लेऊं बलाय ॥
अब क्यों देर करो रुखसत में सारा लो सामान मंगाय ॥
भेज हलकारे को जल्दी से उनपर खबर देओ पहुँचाय ॥
इतनी सुन गंगे पन्डित ने सारा लिया सामान मंगाय ॥
दोनों बोले केहर भैंरों चोबदार से कहा सुनाय ॥
अब तुम चले जाओ जल्दीसे जहां पर खड़े बनाफल राय ॥
यह जाय कहियो उन ज्वानोंसे जत्री सुनो बनाफल राय ॥
करो तइयारी तुम रुखसत की तुमको राजा रहा बुलाय ॥
संग में अपने इनको लाना वहां पर देर लगाना नाय ॥
चल पड़ा बेटा चोबदार का और लशकर में पहुँचा जाय ॥
जहां दरबार लगा आल्हाका दाखिल हुआ वहांपर जाय ॥
हाथ जोड़ हलकारा बोला और ाला से कही ये बात ॥
तुम्हें बुलाया है रुखसत को अब तुम चलो हमारे साथ ॥

मोहबे वालों का रुखसत के वास्ते रवाना होना

इतनी बात सुनी ताला ने जब मलखे से कहा सुनाय ॥
करो तइयारी अब चलने की अपने बांध लेओ हथियार ॥
घर घरके सब करो तइयारी अब कुछ देर लगाओ नाय ॥
जितने राजा आये यहां पर सबको लेचलो संग लिवाय ॥

बोला ऊदल जब ललकारा चाचा सुनो तलन्सी राय ॥
और भरोसे में मत रहियो तुम्हें आगे से देऊं बताय ॥
घाती राजा हरनन्दन है उसका कोई भरोसा नाय ॥
चौकस होकर चलो यहांसे मत कहीं वहां झगड़ा होजाय ॥
इतनी सुनकर नर ऊदल से कालनेम ने कहा सुनाय ॥
इन बातों को मतना बोलो तुमको जेवा देता नाय ॥
नहीं शूरमा वहां कोई ऐसा जो कोई करे सामना आय ॥
केहर भैंरों दोनों भइया रोढ़ा की क्या पार बसाय ॥
फिर ललकारा देवी मरहैटा और ऊदल से कहा पुकार ॥
क्या रजपूती गिरवीं धरदी क्या कहीं बेच हुई तलवार ॥
क्या है मसाला हरनन्दन पर ओटे वार हमारा आय ॥
सामने जो कोई पड़े तुम्हारे सबका डाले खोज मिटाय ॥
बोला आल्हा जब मलखे से मैं भइया का लेऊं बलाय ॥
दहने बांवे घर के रहना वहां पर काम गैर का नाय ॥
नहीं भरोसा मुझे किसी का तुमसे हाल कहूं समझाय ॥
चौकस रहियो सब राजों से ना कोई दुशमन मिल जाय ॥
यह मन मान गई मलखे के और हिरदे में गई समाय ॥
जो कुछ बात कही आल्हा ने वह ऊदल को दी पकड़ाय ॥
हीरा धींवर को ललकारा जल्द पालकी करो तइयार ॥
खूबी नाई को समझाया रहियो खबरदार हुशियार ॥
सज गये क्षत्री गढ़ मोहबे के सबने बांध लिये हथियार ॥
जितने राजा थे नौथारी सब चलने को हुए तइयार ॥
हाथ जोड़कर बौना बोला श्री रनजीत ब्रह्माफल राय ॥
कब कब जाऊं बलख दुखारे फिर कोई आनद नाय ॥

फरश हुआ जब रनवासों में दाखिल हुए बनाफल राय ॥
अपने अपने अब मौके से बैठे ज्वान फरश पर जाय ॥
एक तरफ छत्री हरनन्दनके एक तरफ मोहबे के सरदार ॥
केहर भैरों दोनों भइया मन में कर रहे सोच विचार ॥
बोला राजा जब ललकारा और मुन्शी से कहा सुनाय ॥
जो सामान होय रुखसत का सब महलों में लो मंगवाय ॥
फरश कराकर तरह तरह के गद्दे तकिये दो लगवाय ॥
आगे आगे कुरसी डालो पीछे मूंढे देओ बिछाय ॥
चौकी डालो मलियागिर की जिस पर नौशा बैठे आय ॥
तख्त डाल दो सब राजों को ऊपर दो कालीन बिछाय ॥
भारी राजा हैं मोहबे के जिनको जग जाने संसार ॥
इन्हें बिठाओ तुम खातिर से पान के बीड़े करो तैयार ॥

समधियों की मिलाई

एक तरफ बैठे मोहबे वाले जिनकी जात बनाफल राय ॥
दूसरी तरफ बैठे महलों में छत्री हरनन्दन के राय ॥
गङ्गा पन्डित परसा धींवर दीना नाई पहुँचा आय ॥
सोने चांदी के थालों को बाहर धरा चौक में लाय ॥
बोला मलखे चिन्तामन से मैं पण्डित का लेऊं बलाय ॥
जो सामान यहां देने का सब थालों में धरो सजाय ॥
इतनी सुन चिन्ता पण्डित ने दीनी नाई से कहा सुनाय ॥
जो सामान था रुखसत का सब जल्दी से लिया मंगवाय ॥
जोड़े जनाने और मरदाने सारी मेवा लीं मंगवाय ॥
कूजे मिसरी के मंगवाकर सातों भरीं मिठाई लाय ॥

कंघी बरछी हाथी दांत की शीशा हलबी दिया मंगाय ॥
रतन जड़ाऊ जो कंठा था थाल के अन्दर धरा सजाय ॥
रोली मैंहदी और कलावा सब चीजों को लिया मंगाय ॥
नेगी बुलवाकर राजा ने सब महलों में दिया पहुँचाय ॥
यह तो नेग हुआ मोहबे का जो करदिया बनाफल राय ॥
और नेग जो बाकी रह गया करने लगा भंगेला राय ॥
सबसे पहले चिन्तामन के भैरों ने दिया तिलक लगाय ॥
सात अशरफी पांच नारियल पण्डित को दिये भेंट चढ़ाय ॥
बोला मुन्शी हरनन्दन का और ताला से कहा सुनाय ॥
पहले मिलनी हो मानों की अपने ध्याने लो बुलवाय ॥
इन्धे मान खड़े राजा के हाथ में भेंट को रहे सम्भाल ॥
उन्धे ध्याने गढ़ मोहबे के इन्द्रजीत और सियानन्द राय ॥
फिर बुलवाया है नौशे को और पटरे पर लिया बिठाय ॥
मोहर अशरफी हीरा मोती जवाहरात सब दिये मंगाय ॥
भेंट में देकर के इन्दल को उसकी गोद दई भरवाय ॥
टीका कर दिया है नौशे का पान का बीड़ा दिया चबाय ॥
बोला मलखे जब ललकारा चाचा सुनो तलन्सी राय ॥
जितने राजा आये संग में सबके टीका दो करवाय ॥
यही मुनासिब हमको चहिये अब तुम सुनलो कान लगाय
पहले टीका उनके हो जाय पीछे होय बनाफल राय ॥
इतनी बात सुनी ताला ने उसकी गई समझ में आय ॥
इसमें मलखे झूंठ नहीं है तुमने ठीक दिया बतलाय ॥
कालनेम और देवी मरहटा नर लाखनको लिया बुलाय ॥
भूरा भांकड़ा और हीरासिंह दोनों बड़े बराबर आय ॥

जितने राजा थे न्योथारी सारे हुए इकट्ठे आय ॥
रोड़ा केहर और मुन्शी ने सबके टीका दिया कराय ॥
बोला राजा अब सइयद से श्रो महाराज तलन्सी राय ॥
पहले निमट लेश्रो घरकों से फिर समदौला लो करवाय ॥
इतनी सुनकर ताला बोला और ऊदल से कहा सुनाय ॥
जिसका टीका बाकी रहगया अपना अपना लो करवाय ॥
ब्रह्मा ढेवा की बरनी है ऊदल और वीर मलखान ॥
मामा जागन के टीका हुआ नौले मैंनपुरी चौहान ॥
टीका हो गया सब ज्वानों के जब मलखे ने कहा पुकार ॥
बाकी रह गया नेगजोग से डाकू कुरियल का सरदार ॥
यह मन मानी जब केहर के और हिरदे में गई समाय ॥
सबसे पीछे बाना चोर के भैरों ने दिया तिलक कराय ॥
बोला गंगे जब दुर्गा से मैं मुन्शी का लेऊं बलाय ॥
समधी समधीकी मिलनी है तुम दोनों को देश्रो मिलाय ॥
इतनी सुनकर मुन्शी बोला ओ रनजीत बनाफल राय ॥
जिसे मुनासिब अब तुम जानो हरनन्दन से देश्रो मिलाय
इस पर जवाब दिया मलखे ने मुन्शी सुनलो कान लगाय
जब से मर गये पिता हमारे सइयद की गये गोद बिठाय ॥
बाप से ज्यादा हमें सइयद हैं जिसका नाम तलन्सी राय ॥
जो कुछ नेग होय समधी का ताला की दो भेंट चढ़ाय ॥
लौटके जवाब दिया तालाने और मुन्शी से कहा सुनाय ॥
वन्श बनाफल का मालिक है राजा चन्द्रवन्श परमाल ॥
सारे मोहबे का मालिक है बावन राजों का सरदार ॥
पहले टीका उसको चहिए जिसको जग जाने संसार ॥

इतनी सुन ताला सइयद से कहने लगा भंगेला राय ॥
उजर नहीं है कुछ राजा को दोहरे टीके लो करवाय ॥
मोहर अशरफी हीरे मोती थाल के अन्दर धरे सजाय ॥
यह तो भेंट है चन्देले की अपनी भी अब लो करवाय ॥
भेंट चन्देले की सइयद ने नर जागन को दी पकड़ाय ॥
यह दे दीजो चन्देले को जब मोहबे में पहुँचो जाय ॥
दूसरी भेंट ताला सइयद की जब राजा ने करी सम्भाल ॥
इतना माल दिया तालाको जिसका कहा जाय ना हाल ॥
दोनों समधी जब मिलनेलगे लाखन भुका बराबर जाय ॥
वार फेर करके ताला पर दीना नाई को दिया पकड़ाय ॥
बीस अशरफी मिली नाई को दिलमें बहुत खुशी होजाय
यह ढङ्ग देखा जब नाई ने लालच गया मुंह पर छाय ॥
झपट के शीशा लिया हाथमें और वह बढ़ा अगाड़ी जाय
जहां पर बैठे केहर भैरों उनके धरा सामने जाय ॥
देखके शीशे को भैरों ने और मुन्शी से कहा सुनाय ॥
जो कुछ नेग होय शीशे का तुम नाई को दो निमटाय ॥
यह मन मानी जब मुन्शी के और हिरदे में गई समाय ॥
तीस अशरफी ले मुन्शी ने खुबी नाई को दीं पकड़ाय ॥
नेग बिदा का सारा हो गया बाकी कोई रहा है नाय ॥
नेग नेगियों का अब रह गया सारे हुये इकट्ठे आय ॥
एक तरफ बैठे केहर भैरों लाखन बैठ सामने जाय ॥
खोल-२ थैली मोहर अशरफी दोनों ने दिया ढेर लगाय
जितने नेगी थे मोहबे के केहर भैरों रहे भुगताय ॥
जितने नेगी थे राजा के सब लाखन ने दिये निमटाय ॥

नेग भुगत गया दोनों तरफ का बाकी रहा किसीका नाय
बोला सइयद जब राजा से ओ महाराज अंगेले राय ॥
बहुत देर का अरसा हो गया वक्त दोपहर का पहुँचाआय
करो तइयारी अब रुखसतकी हमको बिदा देओ करवाय ॥
इतनी सुनकर राजा बोला और मुन्शी से कहा सुनाय ॥
जल्द सजाकर अब डोले को तुम पेमा को दो बिठलाय ॥
यह मन मानी जब मुन्शी के और हिरदे में गई समाय ॥
हेता नाई को बुलवाकर और उससे यह कहा सुनाय ॥
करो तइयारी तुम जल्दी से तुम पेमा को लाओ सजाय ॥
जो सामान हो संग जानेका सबको धरो चौक में लाय ॥
पनवा धींवर को ललकारा अब तुम सुनलो कान लगाय
जल्द सजाकर अब डोले को रङ्ग महल में दो पहुँचाय ॥
यह मन मानी जब पनवा के और हिरदे में गई समाय ॥
डोला सजवाकर पेमा का सब सामान दिया लदवाय ॥
सब्जसुर्ख मखमल के परदे जिनमें हवा न झोका खाय ॥
सच्चे मोतियों की झालर है हीराकनी दमकती जाय ॥
जड़े सितारे रङ्ग बिरंगे जैसे तारे करें बहार ॥
सजगया डोला रानी पेमा का जिसमें सोलह लगे कहार
हेता पहुँचा रनवासों में बैठी जहां पेमदे नार ॥
हाथ जोड़कर अरज गुजारी ठकुरानी से कहा सुनाय ॥
डोला आगया शीश महल में अब क्यों रक्खी देर लगाय
कपड़े पहनाकर पेमा को तुम डोले में दो बिठलाय ॥
हुई तइयारी अब महलों में सजने लगी पेमदे नार ॥
एक तो बेटी थी राजा की दूसरे रूप दिया करतार ॥

रइयत टूटी शहर पनाह की जिसका ना हो सके शुमार ॥
बोला सइयद जब ललकारा और लाखनसे कहा पुकार ॥
ऐसी घड़ी नहीं मिलने की ऐसा वक्त मिलेगा नाय ॥
थैली खोलो तुम मोहरों की और हौदे में लो भरवाय ॥
यह मन मानी जब लाखन के और हिरदे में गई समाय ॥
भर भर मुट्ठी अब मोहरों की लाखन रहा बखेर कराय ॥
रइयत रेजा चारों तरफ से जब लाखन पर पड़ी अड़राय
मोहर अशरफी की उन सब पर लाखन देहै मूंठ चलाय ॥
बोला ऊदल जब लाखन से मितर सुनो कनौजी राय ॥
फिर कब आवें बलख बुखारे ऐसा वक्त मिलेगा नाय ॥
जितनी सहेली थीं पेमा की सारी झुकीं बराबर आय ॥
दोनों हाथ से मोहर अशरफी उनके ऊपर दो बरसाय ॥
इतनी सुनकर नर लाखन ने हाथ में थैली लई उठाय ॥
उत्तर दक्खिन पूरब पच्छिम चारों तरफ रहा बरसाय ॥
ऐसी बखेर करी लाखन ने भुजबल थके कनौजी राय ॥
जरदी छाय गई गलियों में पीली सड़क पड़ै दिखलाय ॥
लोभ की मारी सारी दुनियां खलकत गई लोभ में छाय ॥
कहीं-२ हाथ पड़े रइयत के किसी के हाथ लगे कुछ नाय
जो कोई गिर जावे धरतीमें उससे उठा जाय फिर नाय ॥
अपना बिराना कोई न जाने किसीकी खबर किसीको नाय
केहर भैरों दोनों दौड़े और लाखन से कही यह बात ॥
क्या पत रक्खेगी गंगाजी या अब लाज तुम्हारे हाथ ॥
बन्द बखेर करो जल्दी से भ्रो महाराज कनौजी राय ॥
गुम्मट मचखाना कहीं खलकतका मतकोई बिनामौत मरजाय

डेरे उखड़ गये कम्पु से सब असबाव लिया लदवाय ॥
चला तोपखाना मोहबे का और वह बढ़ा अगाड़ी जाय ॥
अपने अपने अब लशकर का सबने दीना कूच कराय ॥
बोला ताला जब ललकारा बेटा सुनो बनाफल राय ॥
खबरदार डोले पर रहियो पहरे डबल देओ लगवाय ॥
खटका भारी है दुशमन का मत कहीं छापा मारे आय ॥
दूल्हा दुल्हन तो ब्याह रचावें और कोई मरे बराती नाय ॥
नहीं भरोसा और किसी का घर के करो चौकसी जाय ॥
इस पर जवाब दिया मलखे ने चाचा सुनो तलन्सी राय ॥
जिसको हुकम तुम्हारा होवे वह डोले पर पहुँचे जाय ॥
लौटके जवाब दिया ताला ने अब तुम सुनलो कान लगाय
एक तरफ जाओ तुम डोले के एक तरफ रहे उदयचन्द राय
एक तरफ भेजो सियानन्द को एक तरफ ब्रह्मा पहरेदार ॥
करो चौकसी तुम डोले की हरदम रहो बहुत हुशियार ॥
इतनी बात सुनीं चारों ने उनके दिल में गई समाय ॥
रानी पेमा के डोले पर चारों डटे बराबर जाय ॥
एक तरफ लशकर हैं मलखे का एक तरफ ऊदलके असवार
एक तरफ फौजें हैं ब्रह्मा की नङ्गी सूंत रहे तलवार ॥
बोला ऊदल जब लाखन से मैं मितर का लेऊं बुलाय ॥
सदा सभी से कनवज वाला आगे चले कनौजी राय ॥
क्या तेरी हथनी बूढ़ी हो गई या तेरे भुजबल में बल नाय
अब क्यों हट गये तुम पीछे को क्यों ना हथनी देओ बढ़ाय
इतनी बात सुनी लाखन ने सुरखी गई बदन में छाय ॥
जब ललकारा है ऊदल को मितर सुनलो कान लगाय ॥

जो तुम जानो अपने दिल में अब कुछ काम हमारा नाय
हुक्म सुनादो हम दोनों को अपने किले संवारें जाय ॥
इस पर जवाब दिया आल्हा ने नर्मा सुनो धरम की बात ॥
जिसको चलना हो मोहबे में वह अब चलो हमारे साथ ॥
जिसको जल्दी घर जाने की बेशक जाओ कूच कराय ॥
उजर नहीं है हम लोगों को ताबेदार बनाफल राय ॥
जाकर तुमने बलख बुखारे हम पर बहुत किया एहसान ॥
इज्जत रखली गढ़ मोहबे की सबका भला करें भगवान ॥
छूट गईं फौजें सब राजों की पैदल पलटन और सवार ॥
लाखन जागन देवी मरहठा कालनेम हो गया तैयार ॥
करके बन्दगी सब राजों को और ताला को शीश नवाय ॥
अपने अपने अब लशकर का सबने कूंच दिया करवाय ॥
चले बनाफल गढ़ मोहबे को मोहबा डेढ़ कोस रह जाय ॥
हुक्म सुनाया नर मलखे ने खाली बाढ़ देओ दगवाय ॥
यह मत मान गई ज्वानों के और हिरदे में गई समाय ॥
सौ सौ तोपों की बाढ़ों में एकदम आग दई लगवाय ॥
दगी सलामी जब तोपों की धुन्दूकाल दिया मचलवाय ॥
सुन धधकारें अब तोपों की घबरा गया चन्देला राय ॥
भारी फिकर हुआ राजा को दिलमें सोच सोच रह जाय ॥
क्या तो आ गये मोहबे वाले या कोई दुशमन पहुँचा आय

बनाफलों का मोहबे में दाखिल होना

इन ही बातों के अरसे में चोबदार वहां पहुँचा जाय ॥
करी बन्दगी चन्देले को चरनों में दिया शीश नवाय ॥

देखके सूरत त्रोबदार की राजा बहुत खुशी हो जाय ॥
राजी खुशी कहो लौंडों की हाल ब्याह का देश्रो सुनाय ॥
हाथ जोड़ हलकारा बोला राजा मोहबे के सरदार ॥
अमन चैन सब रहा लशकर में ब्याह कर लाये पैमदे नार
इतनी सुनकर हलकारे से खुश हो गया राजा परमाल ॥
सात अशरफी पांचों कपड़े माला दई गले में डाल ॥
इतने में लशकर श्रा पहुँचा श्रौर श्रा गये बनाफल राय ॥
हाथी बन्ध गये हाथीखानों में घोड़े बन्धे थान से जाय ॥
कमरें खोली सब ज्वानों ने हथियारों को धरा संवार ॥
रानी पेमा के डोले को दरवाजे पर धरा उतार ॥
रानी दिवला श्रौर मलन्दे मछला भी वहां पहुँची आय ॥
भेज बुलावा शहर पनाह में सब त्रियों को लिया बुलाय ॥
गुम्मट बन्ध गया रङ्ग महल में कानों भनक पड़े है नाय ॥
बड़ी खुशी महलों में हो रही नाच रङ्ग सब रहे कराय ॥
बाहर दान दिया राजा ने अन्दर दिया मछलदे नार ॥
जंग जीतकर ऊदल ब्याह लाये करता धन्य घड़ी श्रौतार ॥
आल्हा ऊदल ब्रह्मा ढेवा मलखे श्रौर तलन्सी राय ॥
जहां दरबार लगा राजा का दाखिल हुए वहां पर जाय ॥
करी बन्दगी सब लड़कों ने राजा ले गया शीश चढ़ाय ॥
सबसे आगे ताला सहयद जब वह बढ़ा अगाड़ी जाय ॥
आता देखा जब सहयद को बैठा हुआ चन्देला राय ॥
भुजा पकड़ ताला सहयदकी श्रौर छाती से लिया लगाय ॥
बोला राजा जब सहयद से श्रो महाराज तलन्सी राय ॥
जो कुछ बीता बलख बुखारे हमको हाल देश्रो बतलाय ॥

लौट के जबाव दिया सइयद ने राजा सुनो चन्देले राय ॥
भारी राजा हरनन्दन है जिसका हाल कहा ना जाय ॥
पहली लड़ाई हुई खेतों में गनपत जोधा दिया भगाय ॥
दूसरी लड़ाई के होने में सबको पत्थर दिया बनाय ॥
मलखे जाकर बबरी वन से गुरू को लाया संग लिवाय ॥
आकर फतह करी अमरा ने जादू को लिया कैद कराय ॥
पीछे लड़ाई हुई खेतों में राजा सुनलो कान लगाय ॥
तीनों जोधा उसके मारे और धरती में दिए गिराय ॥
जो बेटे थे हरनन्दन के उनकी लीनी कैद कराय ॥
फिर जो जोग भरा राजा ने वह खेतों में पहुँचा आय ॥
होश बिगाड़ दिये ऊदल के मलखे बहुत गया घबराय ॥
खबर हुई जब यह लशकरमें हम सारे वहां पहुँचे जाय ॥
लौंडे फैले चारों तरफ को दल पूला सा दिया बिछाय ॥
मैंने मोरचा लिया राजा से उसके डटा सामने जाय ॥
बहुतसी फौज कटी राजा की कुछ इन्घे के मरे ज्वान ॥
ऐसी जंग मची राजा से जिसका नहीं हो सके बयान ॥
हार मानकर राजा भागा पीछा फिर कर देखा नाय ॥
फतह तुम्हारी करी राम ने सब कामों को दिया बनाय ॥
सुलह हो गई जब राजा से झगड़ा राड़ रहा कुछ नाय ॥
ब्याह रचाया फिर इन्दल का और सब नेग लिये करवाय
यहां की बातोंको यहां छोड़ा अब आगे का सुनो बयान ॥
सजकर त्रियां शहरपनाह की रङ्ग महल में पहुँची आय ॥
डोला देखा जब पेमा का फूली अङ्ग में नहीं समाय ॥
बोली मछला जब पौंपा से दौरानी का लेऊं बलाय ॥

जो कुछ नेग होय द्वारे का उसको जल्दी दो निमटाय ॥
इतनी सुनकर फुलवा बोली और मछला से कहा सुनाय ॥
रोली चावल और कलाया दीवा चौमुख लेओ मंगाय ॥
थाल सुनहरी को मंगवाकर उसमें सबको धरो सजाय ॥
दूब के नाल और हरा नारियल तुम जल्दीसे लेओ मंगाय
सात अशरफी थाल में रखकर सातों धरो मिठाई लाय ॥
थोड़ा चुन थाल में रखकर रोली चावल लो रखवाय ॥
सब चीजें मंगवा मछला ने उनको धरा चौक में लाय ॥
जितनी तिरियां थी महलों में गाने लगीं मंगलाचार ॥
थाल उठा लिया अब हाथों में जिसका नाम सुरजदे नार
ढोल और ताशे बजी नफीरी और नरसिंहा बजताजाय ॥
पहुँची तिरियां दरवाजे पर आगे परदा लिया कराय ॥
पूजन करके वहां सुरजा ने सारे नेग दिये करवाय ॥
निकला रानी जब डोले से आगे खड़ा इन्दलसी राय ॥
वह चुनरी जो वक्त फेरों के जिसमें दी थी ग्रह लगाय ॥
एक हाथ में आंचल पकड़ा एक में ली तलवार उठाय ॥
करा आरता जब सुरजा ने खुश हो गई मजलदे नार ॥
आगा घेर कर अब इन्दल का कहने लगी सुरजदे नार ॥
नेग हमारा जो कुछ होवे भावी देओ मछलदे नार ॥
जब यह बात सुनी सुरजाकी सोचने लगी पदमनी नार ॥
बोली फुलवा जब ललकारी और मछला से कहा पुकार ॥
इसका नेग अभी तुम दे दो इन बातों का नहीं उधार ॥
यह मन मान गई मछला के और हिरदे में गई समाय ॥
अपने गले की मोहन माला जब सुरजा को दी पहनाय ॥

नेग द्वारे का सब करके और महलों में पहुँची जाय ॥
कोई मुंह देखे रानी पेमाका कोई हंस हंसकर रही बतलाय
धन धन बेटा ओ आल्हा के तुमको धन्य धन्य अवतार ॥
जैसा सुन्दर यह इन्दल हैं वैसी ही मिली पेमदे नार ॥
मिल गई जोड़ी हंस हंसनी की इनको रूप दिया करतार ॥
जैसे व्याह हुआ इन्दल का मैंने लिखकर किया तइयार ॥
अलराकिम और खाकसार है फिदवी मटरूलाल अत्तार ॥
मेरठ शहर शौराब दरवाजा और शाहघाशा का बाजार ॥

॥ समाप्त ॥

...र ॥
...द नार ॥
आयल ... नार ॥
नेग हमारा जो कुछ होवे भा... ...नी नार ॥
जब यह बात सुनी सुरजाकी सोचने लगी ...
बोली फुलवा जब ललकारी और मछला से कहा पुकार ॥
इसका नेग अभी तुम दे दो इन बातों का नहीं उधार ॥
यह मन मान गई मछला के और हिरदे में गई समाय ॥
अपने गले की मोहन माला जब सुरजा को दी पहनाय ॥